गुरु सुदर्शन जन्म शताब्दी वर्ष

2022-23

सूर्योदय से...

...सूर्यास्त तक

जय जिनशासन प्रकाशन

संघ शास्ता पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. का संक्षिप्त परिचय

जन्म तिथि	:	4 अप्रैल 1923, वैशाख बदी तृतीया (संवत् 1980), प्रातः 6.15 बजे
स्थान	:	रोहतक, बावरा मोहल्ला (हरियाणा)
पितामह	:	श्री जग्गूमल जी म.
पिता	:	श्री चंदगीराम जी (एडवोकेट)
माता	:	श्रीमती सुन्दरी देवी
दीक्षा	:	18 जनवरी 1942, माघ सुदी दूज (संवत् 1998)
दीक्षा स्थान	:	संगरूर (पंजाब)
दादगुरु	:	बहूसूत्री श्री नाथूलाल जी म.
गुरुदेव	:	व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव श्री मदन लाल जी म.
गुरुभाई	:	बाबा श्री जग्गूमल जी म. तपस्वी श्री बद्री प्रसाद जी म. सेठ श्री प्रकाश चन्द्र जी म. भगवन् श्री राम प्रसाद जी म. पूज्य श्री राम चन्द्र जी म.

...शेष आखरी कवर पेज पर

...शेष पहले कवर पेज से

शिष्यरत्न	:	गणाधीश श्री प्रकाश चन्द्र जी म. संघनायक 'शास्त्री' श्री पद्म चन्द्र जी म. कृपानाथ श्री शान्ति चन्द्र जी म. संघाधार श्री विनय चन्द्र जी म. बहुश्रुत श्री जय मुनि जी म. संघ संचालक श्री नरेश चन्द्र जी म. आदि – 29
विचरण क्षेत्र	:	हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, जम्मू, राजस्थान
भाषा ज्ञान	:	हिंदी, प्राकृत, संस्कृत, उर्दू, फ़ारसी, पंजाबी, गुजराती, अंग्रेजी
देवलोक गमन	:	25 अप्रैल 1999 सांय 6.15 बजे
स्थान	:	शालीमार बाग, दिल्ली
कुल आयु	:	76 वर्ष 21 दिन
संयम पर्याय	:	57 वर्ष 3 मास 7 दिन
विशेषताएं	:	श्रमण निर्माता, जैन-जैनेतर ग्रन्थों के अधिकारिक विद्वान, विनय-सेवा-वात्सल्य करुणा की प्रतिमूर्ति, अद्वितीय प्रवचनकर्ता, अद्भुत संघ अनुशास्ता, कवि हृदय, अप्रतिबद्ध विहारी, समाचारी के सुदृढ़ पालक, लक्षाधिक उपासकों के धर्माचार्य आदि संख्य-असंख्य विशेषताओं के स्वामी।

महामंत्र नवकार

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्व साहूणं

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं

गुरु सुदर्शन
जन्म शताब्दी वर्ष
2022-23

सूर्योदय से...

...सूर्यास्त तक

जय जिनशासन प्रकाशन

श्री सुदर्शन गुरवे नमः

नव संस्करण :– 4 अप्रैल 2022
सर्वाधिकार © प्रकाशक

प्रकाशक / प्राप्ति स्थान :–
रविन्द्र जैन
जय जिनशासन प्रकाशन
212, वीर अपार्टमैन्टस्, सैक्टर 13,
रोहिणी, दिल्ली-110 085
Mob: +91-98102 87446
Email : jaijinshaasanprakaashan@gmail.com

मुद्रक :–
सिस्टम्स् विज़न, नई दिल्ली
Mob: +91-98102 12565
Email: systemsvision96@gmail.com

SURYODAYA SE SURYAAST TAK

अर्थ सौजन्य (संयुक्त):–

ला. शील कुमार जैन
S/o ला. लखमी चन्द जैन,
(कसून वाले)
पंचकूला (हरियाणा)

एवम्

श्री दीपक जैन, श्री अनिल जैन
– ऋषभ विहार (दिल्ली) द्वारा
अपनी माता स्व. जगमति जी
एवं पिता स्व. श्री रमेश जैन
(काछवा वाले) की स्मृति में।

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

विषयक्रम

प्रकाशकीय v
गुरु-स्मरणाष्टकम् vii
गुरु सुदर्शन वन्दना ix
गुरु सुदर्शन चालीसा xiii
सूर्योदय से सूर्यास्त तक 1

प्रथम प्रहर 3
1. परिवार-परिचय 3
2. धर्मावतार का अवतरण 9
3. घायल बचपन 13

द्वितीय प्रहर 19
1. शिक्षा और दीक्षा 19
2. साधुत्व के प्रारंभिक वर्ष 26
3. मिले सहयोगी गुरुभ्राता 30
4. दिल्ली में दी दस्तक 37
5. गुरुत्व की भूमिका पर 46
6. नगर-नगर और गाँव-गाँव 52
7. पंजाब पदार्पण 67
8. गुरु बिछोह के क्षण 72

तृतीय प्रहर 79
1. संघ संचालन की ओर 79
2. जब पधारे राजस्थान 86
3. उत्तर भारत में पुनः आगमन 98
4. लहराई गुरुदेव की यशः पताका 104
5. पंजाब का जागा सौभाग्य 114
6. हरियाणा पधारे हरि हर 126

7. श्रमण निर्माता गुरुदेव 139
8. संघ की अपूरणीय क्षति 156
9. दिल्ली में लगा दरबार 175
10. राह, राही और रहवर 190
चतुर्थ प्रहर 207
1. ढलते सूरज का तेज 207
2. छिपते सूर्य की लालिमा 219
परिशिष्ट 239
1. गुरुदेव के बाद संघ व्यवस्था 239
2. गुरु-सुदर्शन-संघ-स्तुति 243
3. पूज्य गुरुदेव के चातुर्मासों की सूची 244
4. भगवन् श्री जी के संवेदना पत्रः 246
5. तेरे दर पे दी दस्तक 249
6. पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के सुशिष्य-रत्न (संघस्थ) ... 250
7. गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के प्रशिष्य-रत्न (संघस्थ) 252
8. घटनाएं जो इतिहास बन गई 254
9. गुरु सुदर्शन उवाच 283

प्रकाशकीय

संघ शास्ता शासन प्रभावक पूज्य गुरुदेव श्री श्री 1008 श्री श्री सुदर्शन लाल जी म. का जन्म शताब्दी वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। उसी हर्ष की अनुभूति करते हुए **'सूर्योदय से सूर्यास्त तक'** पुस्तक का नवसंस्करण आपके समक्ष है। पूज्य गुरुदेव के देवलोक गमन को 23 वर्ष बीत रहे हैं। आज भी उनका जीवन हर मन को आह्लादित और धर्म के अमृत से आप्लावित कर रहा है।

पूज्य गुरुदेव ने उत्तर भारत की स्थानकवासी समाज को सुरक्षित रखने के लिए पंजाब परंपरा की प्राचीन समाचारी का पालन किया और करवाया। क्षीण होती श्रद्धाओं को सुरक्षित रखा और बढ़ाया। आपने आभिजात्य कुलों में जन्में अनेकानेक बालकों को शिष्य बनाया। जिनशासन के मुकुट में उन हीरों को जड़ कर जिनशासन को सुशोभित किया।

पूर्व में भी पूज्य गुरुदेव का जीवन चारित्र सन् 1999 में 'महावीर मिशन विशेषांक' के रूप में प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात् 2008 में संघनायक महाप्रभावी 'शास्त्री' गुरुदेव श्री पद्म चन्द्र जी म. के निर्देशन में ला. शीलकुमार जी (कसूण वाले) के माध्यम से पुस्तक रूप में कई संस्करण निकले। गुरुदेव के जीवन चारित्र का आज तक भी भक्तजन आगमवत् पारायण करते हैं।

श्रद्धालु जनता की निरंतर पुरजोर मांग को देखते हुए अब पुनः गणाधीश गुरुदेव श्री प्रकाश चन्द्र जी म. एवं संघाधार गुरुदेव श्री विनय चन्द्र जी म. की छत्र छाया में बहुश्रुत गुरुदेव श्री जयमुनि जी म. द्वारा लिखित पुस्तक का लघु आकार नवसंस्करण आपके हाथों में है। बहुश्रुत गुरुदेव का लेखन प्रमाणिक, संदेह रहित, उच्च स्तरीय है। अतः इन्हीं की देख-रेख में एवं गुरु सुदर्शन संघ के वर्तमान संघ संचालक गुरुदेव श्री नरेश मुनि जी म. के दिशा-निर्देशन में पुस्तक को कुछ परिवर्तित, संक्षिप्त एवं संशोधित किया गया है।

हमारा सौभाग्य है जो हमें विरासत में मिली गुरुसंघ की कृपाओं को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करके आप सभी तक पहुँचाने का सुअवसर मिला

दवा में कोई खुशी नहीं है और खुशी जैसी कोई दवा नहीं है।

—गुरु सुदर्शन

है। इस चारित्र लेखन के प्रकाशन में सकल गुरु संघ के महामुनियों एवं महासाध्वियों की कृपाओं के हम आभारी हैं।

धर्मनिष्ठ परिवार माता स्व. श्री जगमति देवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री रमेश जी जैन (काछवा वालों) के सुपुत्र श्री दीपक जी एवं अनिल जी जैन का भी धन्यवाद करते हैं जिन्होंने पुस्तक के संयुक्त सौजन्य में अपनी गुरुभक्ति का परिचय दिया है। सन् 1997 के संघ संचालक गुरुदेव श्री नरेश चन्द्र जी म. के कृष्णा नगर (जमना पार, दिल्ली) चातुर्मास के दौरान, इस परिवार में गुरुभक्ति-श्रद्धा की लौ जगी। जिसके फलस्वरूप तपस्वी रत्न गुरुदेव श्री सुधीर मुनि जी म. के सुशिष्य श्री अक्षय मुनि जी म. को गुरु चरणों में अर्पित कर के इस परिवार ने अपना और मुनि संघ का गौरव बढ़ाया है।

अब पुनः ला. शील कुमार जी जैन की गुरु भक्ति एवं भावना का सम्मान करते हुए अर्थ सौजन्य का सौभाग्य इन्हें भी दिया गया है। जीवन के प्रारंभिक क्षणों से ही ये गुरु सुदर्शन के अनन्य उपासक रहे हैं। आज तलक भी इनकी गुरु-भक्ति व संघ-निष्ठा बखूबी बरकरार है। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती मूर्तिदेवी इन्हीं के संग गुरु सेवा भावना के रंग में रंगी हुई हैं। दोनों सुपुत्र श्री सुरेश जैन एवं श्री राजकुमार जैन के साथ-2 सारा ही परिवार गुरु कृपा का विशेष कृपापात्र है। धन्यवाद है इनको, जिन्होंने पुनः गुरु-श्रद्धा का परिचय देकर 'गुरु संघ' की कृपा पाई है।

पुस्तक प्रकाशन में 'सिस्टम विजन' के प्रभारी मान्य श्री विक्रम आदित्य जी का भी धन्यवाद करते हैं जिन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर पुस्तक को भव्य रूप प्रदान किया है।

गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष पर इस पुस्तक का घर-2 में पठन-श्रवण-मनन और चिन्तन हो। हर जैन एवं जैनेतर श्रद्धालुवर्ग को पुस्तक पढ़ने की प्रेरणा देकर गुरु चरणों में श्रद्धा अर्घ्य भेंट करें। पुस्तक पढ़कर कोई नया 'धर्मक्रांतिकारी महापुरुष' बनें, इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ...

"जय जिनशासन प्रकाशन"

रविन्द्र जैन

खुश रहने की सलाह देने से बेहतर खुश रहने की वजह बनना है।

—गुरु सुदर्शन

गुरु-स्मरणाष्टकम्

(ध्वनि-भक्तामर प्रणत्त मौलि...)

1. **रोहीतके जनिरभूत् सुकुले च गर्गे,**
यः सुन्दरी-स्तन-पयः मधुरं पपौ च।
जग्गूमलाङ्क-पद-चन्दगि-दृष्टि-पूतः,
वन्दे सुदर्शन गुरोः शुभपाद-युग्मम् ॥

जन्म लिया रोहतक नगरी में जैन गर्ग-कुल के भूषण,
माँ सुन्दरी और पिता चन्दगी का चमकाया हृदयांगण।
जग्गूमल बाबा की गोद और चरण कमल में पले सदा,
गुरु सुदर्शन के चरणों की भाव वन्दना सौख्य-प्रदा ॥

2. **बाल्ये विहाय जननी त्रिदिवं प्रयाता,**
वैराग्य-सौध-शिखरं लघु प्राप्तुकामः।
दीक्षां दधौ मदन-लाल-गुरोः समीपे,
वन्देसुदर्शन-गुरोः शुभपाद-युग्मम् ॥

बाल्य काल में माता उनको छोड़ स्वर्ग में चली गई,
आयु बढ़ते-बढ़ते उनकी दृष्टि बनी वैराग्यमयी।
मदन लाल गुरुदेव चरण में दीक्षा-हेतु गए तदा,
गुरु सुदर्शन के चरणों की भाव-वन्दना सौख्य-प्रदा ॥

3. **मेधा बलेन पठितो निखिलोऽपि शास्त्रः,**
शास्त्रानुसारि चरितं फलितं ततोऽभूत्।
आचार-सार-कलितः प्रसृतः प्रचारः,
वन्दे सुदर्शन-गुरोः शुभपाद-युग्मम् ॥

पढ़े सभी आगम गुरुओं से, प्रतिभा से पाया निष्कर्ष,
आगम के अनुसार आचरण का जीवन में था संस्पर्श।
था आचार प्रचार एक-सा, भाषा उनकी सार्थपदा,
गुरु सुदर्शन के चरणों की भाव-वन्दना सौख्य-प्रदा ॥

4. **जातोऽनुयायि-वर्गः श्रुत-शील-शाली,**
शिष्याः प्रदिष्टविधिना विनयं प्रपन्नाः।
संतर्पितो बहुजनः करुणार्द्र-दृष्ट्या,
वन्दे सुदर्शन-गुरोः शुभपाद-युग्मम् ॥

श्रावक वो तैयार किए, जो ज्ञान शील से शोभित थे,
शिष्य बनाए विनयवान् जिनको गुरुवचन प्रमाणित थे।
करुणा-शील बने दुखियों पर, मेटी लाखों की विपदा,
गुरु सुदर्शन के चरणों की भाव-वन्दना सौख्य-प्रदा ॥

5. **आराधना जिन-विभोस्तव लक्ष्यमासीत्,**
विज्ञापनं गुणगणस्य न ह्यमासीत्।
सामायिके प्रतिदिनं बहवो विलग्नाः,
वन्दे सुदर्शन गुरोः शुभपाद-युग्मम् ॥

वीतराग-वाणी आराधन था जीवन का लक्ष्य रहा,
निजगुण का विज्ञापनकारी नहीं एक भी शब्द कहा।
उनकी प्रेरणा से सामायिक करते वृद्ध-युवक प्रमदा,
गुरु सुदर्शन के चरणों की भाव-वन्दना सौख्य-प्रदा ॥

6. **कष्टान् सहिष्णुरभवत् प्रभविष्णु-भावः,**
संत्यज्य देह-ममतां समतां स वव्रे।
स्वाध्याय-दान-निरतो विरतो विभावात्,
वन्दे सुदर्शन-गुरोः शुभपाद-युग्मम् ॥

कष्ट-सहिष्णु थे, जनता पर था प्रभाव उनका भारी,
तन की ममता छोड़ बने थे शांति-क्षमा-समता-धारी।
ज्ञानध्यान से वृत्ति बनाई निर्लोभा निर्मोह-मदा,
गुरु सुदर्शन के चरणों की भाव-वन्दना सौख्य-प्रदा ॥

सामने वाले को बदल डालने में जितना मजा है उतना बदला लेने में नहीं है।
—गुरु सुदर्शन

7\. क्षान्ति-क्षमार्जव-सुमार्दव-लाघवत्वे,
लीनो निरन्तरमसौ परमात्मतत्त्वे।
मूर्छां विहाय जगतः प्रयतः स्वधर्मे,
वन्दे सुदर्शन-गुरोः शुभपाद-युग्मम् ॥

क्षमा, सरलता और मृदुलता, लाघव उनमें बसे हुए,
मुक्तिभाव परमात्मभाव के दीपक रक्खे चसे हुए।
आत्मभाव में लीन रहे थे, छोड़ी सब तृष्णा दुखदा,
गुरु सुदर्शन के चरणों की भाव-वन्दना सौख्य-प्रदा ॥

8\. त्यक्त्वा तनुं त्रिदश-लोकमसौ प्रपेदे,
अस्मान् शुचा विलपतोऽद्य तु नाम पाति।
तीर्थं बभूव खलु सम्प्रति शालिमारः,
वन्दे सुदर्शन-गुरोः शुभपाद-युग्मम् ॥

देवलोक में गए तभी से धरा अनाथ हुई सारी,
नामस्मरण करके उनका दुख भुला रही है फुलवारी।
"सुदर्शन तीर्थ" है शालीमार, ये भक्तजनों की है श्रद्धा,
गुरु सुदर्शन के चरणों की भाव-वन्दना सौख्य-प्रदा ॥

गुरु मदन स्तुति

जिनकी ज्ञान-प्रभाओं से प्रत्येक दिशा आलोकित है,
जिनके भाषण से मिथ्यामति कितनी हुई निराकृत है।
धर्म-चरण की दृढ़ता दी जिनके संयम ने जन-2 को,
उमड़ा मन गुरुवर वाचस्पति मदन मुनि के वंदन को ॥

गुरु सुदर्शन स्तुति

निज पवित्र चारित्र के कारण गुरुवर-सा पाया गौरव,
है समाज-जागृति का कारण जिनके प्रवचन का सौष्ठव।
तुच्छ लाभ के लिए शिथिलता संयम में न जिन्हें भाई,
उन श्रद्धेय सुदर्शन गुरुवर की सेवा है सुखदाई ॥

खानदानी वही है जो खाने से पहले दान करे।
—गुरु सुदर्शन

गुरु सुदर्शन वन्दना

(ध्वनि-तुम तरण तारण...)

1. जो संयमी मुनिराज थे और संघ-संचालक रहे,
सत्यरक्षक क्षमासिंधु, श्रेष्ठ जिनको सब कहें।
दीन जन पर थी कृपा और पूर्ण मंगलभावना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शनलाल जी को वंदना ॥

2. इस आर्यभारत देश में गुंजित रहा शुभ नाम है,
जा चुके हैं किन्तु बाकी यशः-पुञ्ज ललाम है।
जिस महर्षि ने सदा की रत्नत्रय की साधना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

3. अज्ञान की अग्नि बुझाई, ज्ञान की दी रोशनी,
लोक पर उपकार करने की जिन्हें थी धुन घनी।
इन्द्रियाँ व मन किए काबू, लिए अनुचर बना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

4. जो शास्त्र-वर्णित साधु-चर्या में रहे हरदम डटे,
सन्मार्ग जो पकड़ा कभी उस से नहीं पीछे हटे।
'जिन-मार्ग पर चलते रहो', देते रहे ये प्रेरणा,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

5. संसार-नदिया में चले थे धार के प्रतिकूल जो,
दुःख-सागर पार करने में रहे मशगूल जो।
शरणागतों की कर सके जो हर तरह से पालना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

6. था जिस्म छोड़ा, देवलोकों में बसे जाकर मगर,
हृदय में मेरे उपस्थित रहते हैं आठों प्रहर।

जो शेष बचा है उसे ही विशेष बनाइए अन्यथा अवशेष तो होना ही है।
—गुरु सुदर्शन

जिन के बल पर हो सका संभव हृदय का थामना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

7. तीर्थंकरों जैसी सभा के दृश्य दिखलाए हमें,
देखने शोभा उमड़ते थे सभी आश्चर्य में।
इसलिए भक्तों ने की जिनमें प्रभु की कल्पना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

8. नयन-युगल से जिनके पल-पल छलकती करुणा रही,
सबका हित हो, जिन के मन ने सर्वदा चाहा यही।
चन्द्रवत् जीवन खिला होता रहा था चान्दना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

9. जिन के हृदय में सब गुणों ने वास आकर के किया,
शोभा बढ़ी चमके स्वयं जीवन को भी चमका दिया।
सर्वगुण-सम्पन्न की छिटकी शुभाशय-ज्योत्स्ना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

10. सम्पर्क से जिनके निराशाग्रस्त दुःखित लोक भी,
हर्षित हुए संचार आशा का मिला सब को सही।
इस भूमि के श्रृंगार थे और सरल थे जो आत्मना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

11. अध्यात्म की शिक्षा प्रथम देकर किया तैयार है,
फिर किया दीक्षित, बनाए सब मुनि हुशियार हैं।
की जिन्होंने जैन शासन की प्रभूत प्रभावना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

12. जो आगमों के ज्ञान से परिपूर्ण थे, व शान्त थे,
ज्ञान दिनकर, कर्म-अरिदल के लिए कृतान्त थे।

लोभ का ईलाज तृप्ति में है, प्राप्ति में नहीं।

—गुरु सुदर्शन

सब कषायों पर विजय पाई, हुई आराधना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

13. जिनके चरण में आचरण का लाभ मिलता ही रहा,
और भविक-जन को सदा सद्ज्ञान मिलता ही रहा।
जो गुप्त करते थे तपस्या, यश कमाया था घना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

14. आ द्वेष में निन्दा, स्तुति खुश हो किसी ने की अगर,
विकृत नहीं जिनकी हुई आत्मिक स्थिति सुनकर मगर।
समभाव को और धैर्य को धारा, कठिन है धारना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

15. जो दूसरों के स्वल्प दुख में भी पिघलते ही रहे,
पर कष्ट अपने पर पड़े तो वीर बन कर के सहे।
थे दयालु, काम जिनका पार भव से तारना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

16. शुभदर्शनों से शांति मिलती हर मनुज को थी सदा,
हो गया मंगल, लिया शुभनाम भावों से यदा।
गण-प्रमुख थे, विघ्न करते दूर, देते सान्त्वना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

17. गंभीरता में मात जिनसे अम्बुधि भी खा गया,
आकाश भी छोटा पड़ा, यश जिनका इतना छा गया।
क्षमा भी अक्षम हुई करके क्षमा का सामना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

18. संसार सागर पार करने के लिए नौका बनी,
चरण-सेवा जिन की भव्यों के लिए भवतारिणी।

कीमत दोनों की चुकानी पड़ती है—बोलने की भी, चुप रहने की भी।
—गुरु सुदर्शन

थे गुणी, जिन से नहीं थी पाप की संभावना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

19. वाचस्पति गुरुदेव के उत्तराधिकारी शिष्य थे,
बुद्धि विलक्षण थी बड़ी, श्रुतज्ञान के कोष्ठक भरे।
श्रेष्ठ मुनिवर थे, सदा चर्या में थे सुस्थिरमना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

20. आडम्बरों से दूर रहते, सादगी में ही ढले,
जो पूर्वजों ने पथ दिया, उस पर निरन्तर ही चले।
क्रांति की भ्रांति मिटी, की शांति की शुभ स्थापना,
पूज्य गुरुवर श्री सुदर्शन लाल जी को वंदना ॥

'गुरु सुदर्शन स्तुति'

पावन दर्शन नाम सुदर्शन, कितना प्यारा-प्यारा है।
भव-सागर में डूब रहे जो, उनके लिए किनारा है॥
कष्ट नष्ट हो जाते ऐसा, आशीर्वाद तुम्हारा है।
शरणा गुरुवर मिला आपका, ये सौभाग्य हमारा है।
नाम आपका लेकर ही हम, कार्य शुरु सब करते हैं।
हाथ जोड़कर भक्ति भाव से, शीश चरण में धरते हैं॥

कई बार झूठ इतने बड़े हो जाते हैं कि वो हकीकत को भी छोटा कर देते हैं।
—गुरु सुदर्शन

गुरु सुदर्शन चालीसा

दोहा :– **महावीर भगवान के शासन के श्रृंगार।**
संघशास्ता थे गुरु करते पर उपकार ॥
गुरु मदन की वाटिका खिला सुदर्शन फूल।
पतित पावनी आत्मा मत जाना तुम भूल ॥
गुरुवर के तप त्याग का, सब जग करे बखान।
उनके शुभ उपदेश से, मिलता सम्यग् ज्ञान ॥

ध्यान लगा गुरुवर को ध्याऊँ, जो मांगू सो ही फल पाऊँ।
मिले रोशनी मिटे अन्धेरा, जिस पर तुमने तेज बखेरा ॥

तुम चरणों पर शीश झुकाऊँ, तेरा यश मैं सदा ही गाऊँ।
दुःखी जनों का काज संवारा, महा पापियों को भी तारा ॥

गुरुवर तेरा तेज निराला, तुमको ध्यावे किस्मत वाला।
माता सुन्दरी के थे जाये, पिता चन्दगी के लाल कहाये ॥

संगरूर शहर में संयम धारा, बुलंद होता गया सितारा।
गुरु मदन की आँख का तारा, नाथू गुरु ने दिया सहारा ॥

तुम-सा तपी न कोई देखा, जो बदले कर्मों की रेखा।
क्रोध मान को दूर भगाया, माया लोभ निकट नहीं आया ॥

जिसने गुरुवर तुमको जाना, उसने गुरुवर तुमको माना।
जो हृदय से आपको ध्यावे, दुनिया में यश नाम कमावे ॥

जैन धर्म के मोती थे तुम, आत्म ज्ञान की ज्योति थे तुम।
तुम सबके दुःख हरने वाले, खाली झोली भरने वाले ॥

जय-जय कार करे जो तेरा, भव-भव का मिट जाए फेरा।
जिसपर तुमने नजर जमाई, उसकी सोई दुनिया जगाई ॥

जिस घर तुमने चरण टिकाए, खुशियों के अम्बार लगाये।
तेरी महिमा बड़ी निराली, तेरा वचन जाए न खाली ॥

‘खुशी’ एक ऐसी चीज है जो आपके पास न हो तो भी आप दूसरे को दे सकते हो।
—गुरु सुदर्शन

बत्तीस शास्त्रों के तुम ज्ञाता, परमत के भी थे व्याख्याता।
तुम थे सब के जानन हारे, भव सागर से तारण हारे ॥

सबको एक नजर से जाना, राव रंक का भेद न माना।
अटल इरादे रखने वाले, मनोभाव को पढ़ने वाले ॥

धर्म ध्यान का पाठ पढ़ाते, सबको सत् का पथ दिखलाते।
गुरुवर के सब शिष्य हैं प्यारे, सत्यशील संयम में न्यारे ॥

अमृतमयी थी तुम्हारी वाणी, कल्याणी गुण गण की खानी।
गुरु चरण में ध्यान लगाओ, मन वाञ्छित फल सब ही पाओ ॥

जो तेरी रहमत को पाएं, ज्ञान ध्यान में बढ़ते जाएं।
गुरुवर मेरे कष्ट निवारो, दया दृष्टि से मुझे निहारो ॥

गुरुवर सब कुछ तेरे अर्पण, जैन धर्म के तुम हो दर्पण।
सकल संघ मिल महिमा गाएं, श्री चरणों में शीश झुकाएं ॥

पूजे गुरुवर ये जग सारा, रहे दमकता तेज तुम्हारा।
तेरी आज्ञा धर्म हमारा, तुझ पर सारा जीवन वारा ॥

पाकर तुम-सा साधक पावन, धन्य हुआ जग का यह आंगन।
सुदर्शन चालीसा कवच निराला, इसको पहने भागों वाला ॥

निशदिन पढ़े सदा मन लाए, करे निर्जरा कर्म खपाए।
श्रद्धा पूर्वक जो भी ध्याता, शान्ति समाधि सम्पत्ति पाता ॥

धन दौलत के भरे भण्डार, बंद चले सब कारोबार।
शालीमार से स्वर्ग सिधारे, देवलोक को हो गए प्यारे ॥

शासन प्रभावक संयम की मूर्ति, कभी न होगी तुम्हारी पूर्ति।
जो गुरुवर का पढ़े चालीसा, बनता जीवन बिस्वाबीसा ॥

दोहा– जो नर करता भाव से, नित उठ कर यह पाठ।
उसके घर बरते सदा, सभी तरह के ठाठ ॥
शुध्द भाव से ये पढ़ें, प्रतिदिन जो नर नार।
आनन्दमय जीवन बनें, मिले मुक्ति का द्वार ॥

अपने बच्चों को इतना भी लायक न बनाओ कि वो आपको नालायक समझने लग जाएं।
—गुरु सुदर्शन

सूर्योदय से सूर्यास्त तक

दूरं यान्तु निशाचराः शशिकराः क्लेशं लभन्तान्तराम्,
उद्योतं कलयन्तु हन्त न चिरं खद्योतका द्योतले।
ध्वान्तं ध्वंसमुपैतु हंस-निवहः पद्माकरे शाम्यतु,
प्राची-पर्वत-मौलि-मण्डन-मणिः सूर्यः समुज्जृम्भते ॥

पूर्व दिशा में उदयाचल में सूर्य देवता पधारे हैं, इसलिए सभी निशाचर भाग जाएंगे, चन्द्रमा की किरणें फीकी पड़ जाएँगी, जुगनू भी प्रकाश नहीं फैला सकेंगे तथा सारा अन्धेरा भी दूर भाग जाएगा। पर हाँ, कमलवन में राजहंसों को अवश्य ही शान्ति प्राप्त होगी।

आपने इस छन्द में सूर्य देवता की स्तुति पढ़ी। सूर्य समस्त ब्रह्माण्ड-मण्डल की उज्ज्वलतम मणि है, ज्योतिश्चक्र का केन्द्र है, पूर्व दिशा के माथे का सिन्दूर है। दिन, रात, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, युग और कल्प-भेद का व्यवस्थापक है, चराचर सृष्टि का जीवन है, प्राण है और सर्वस्व है। ये अनन्त प्रकाश, ऊर्जा और उष्मा का एकमात्र स्रोत है। इसके उदय से सर्वत्र आशा और आस्था का संचार होता है और अस्त होने से सब जगह अंधेरा छा जाता है।

सूर्य के समान ही तेजस्वी, ओजस्वी, यशस्वी और वर्चस्वी थे हमारे आराध्य, संघशास्ता, शासन-प्रभावक, संघ-शिरोमणि, महामहिम, चरित-नायक, पूज्य गुरुदेव श्री श्री 1008 श्री सुदर्शन लाल जी म. सा.। वे अपने नाम से भी, काम से भी, द्रव्य से भी और भाव से भी 'सुदर्शन' थे। वे सूर्य देवता के उदय और अस्त को अपने विराट् व्यक्तित्व में समेटे हुए थे। उनका पावन जन्म 4 अप्रैल 1923 को सूर्योदय के समय हुआ और निधन 25 अप्रैल 1999 को सूर्यास्त के समय। इसीलिए उनकी सम्पूर्ण जीवन-गाथा को भी हमने 'सूर्योदय से सूर्यास्त तक' इस नाम से अभिहित किया है।

प्रातः लोगस्स एवं शाम को नमोत्थुणं का पाठ करने वाला कभी भूखा नहीं रहेगा।
—गुरु सुदर्शन

एक दिवस के चार विभाग होते हैं जिनको चार प्रहर भी कहते हैं। इन प्रहरों का विभाग-कर्ता भी सूर्य ही है। प्रथम प्रहर में सूर्य मन्द, द्वितीय में तीव्र, तृतीय में तीव्रतर और चतुर्थ में पुनः शान्त-शीतल हो जाता है। गुरुदेव का जीवन भी इसी प्रकार चारों प्रहरों का मंगल संगम-स्थल ही था। पाठकगण! इसके पीछे छिपे भावों को हृदयंगम करने का प्रयास करें और श्रद्धा, भक्ति एवं आस्था से गुरुदेव की जीवन-गंगा में नहाकर अपने आपको पवित्र करें।

गुरु सुदर्शन स्तुति

(तर्ज-भारत की नैया के आधार)

श्रद्धा से वन्दन बारम्बार श्री गुरुदेव सुदर्शन,
कर गए हैं लाखों का उद्धार .... ॥टेक॥

1. *बचपन में मां गुजरी थी, बाबा ने नींव धरी थी,*
   चाची से पाया सच्चा प्यार ॥
2. *मन में वैराग्य जगा था, फिर तो सौभाग्य जगा था,*
   लिया मदन गुरु को धार ॥
3. *विद्या और ज्ञान बढ़ाया, सेवा का लाभ कमाया,*
   प्रवचन था मोहक धुआंधार ॥
4. *युवकों को धर्म सिखाया, कईयों को शिष्य बनाया,*
   पाई थी गहराई विस्तार ॥
5. *ऐसी शिक्षा फैलाई, पैदा न होवे लड़ाई,*
   रखते थे समता का व्यवहार ॥
6. *देखा संघर्ष कहीं पर, पहुंचे तत्काल वहीं पर,*
   मेटी थी हृदयों की तकरार ॥
7. *पुण्य के भण्डार भरे थे, खाली सब पूर्ण किए थे,*
   करते हैं याद सभी नर-नार ॥

जो साधु जितना स्वाध्याय एवं मौन में रहता है वह उतना ही समाधि में रहता है।
—गुरु सुदर्शन

प्रथम प्रहर

1. परिवार-परिचय

पूज्य गुरुदेव का जन्म हरियाणा प्रान्त के रोहतक नगर में हुआ। प्राचीन समय में दिल्ली के उत्तर-पश्चिम में रोहतक, महम, हाँसी, हिसार, भटिण्डा एवं फिरोजपुर तक के विस्तृत भूमि-भाग में जैनों का प्रभुत्व था। लेकिन कालक्रम से विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमण स्वरूप जैनों का अपने मूल स्थान से पलायन, धर्मान्तरण और समाजान्तरण हुआ। एक समय ऐसा भी था जब रोहतक में अन्य कोई धर्म-स्थान या ठाकुरद्वारा आदि नहीं था, केवल स्थानकवासी जैनों का ही प्रचार-प्रसार था। 500 वर्ष पूर्व रोहतक शहर के बाबरा मोहल्ले में भावड़ों (ओसवाल जैनों) के लगभग 500 घर थे। भावड़ा शब्द ही बिगड़कर आज का 'बाबरा' बना है। भावड़े जैन कालान्तर में पंजाब आदि प्रदेशों में स्थानान्तरित हो गए। वर्तमान में हरियाणा के अधिकांश जिलों में जो जैन हैं, वे अग्रवाल जैन हैं। गुरुदेव का जन्म भी अग्रवाल जैन परिवार में हुआ। हम इनके खानदान को पूर्णतः जैन तो नहीं कह सकते, क्योंकि मूलतः वह वैष्णव सनातनी खानदान ही था। आज भी उनके विवाह-सम्बन्ध प्रायः जैनेतर परिवारों में ही अधिक होते हैं।

गुरुदेव के पारिवारिक जन रोहतक आने से पूर्व पास ही मदीना गाँव में रहते थे। लगभग 250 वर्ष पूर्व एक सद्‌गृहस्थ ला. हरकिशन लाल जी मदीना से चलकर रोहतक के बाबरा मोहल्ले में आकर बसे। जिस गली में आकर वे रहे, वह गली भी धीरे-2 'मदीन वाली गली' कहलाने लगी। उनकी वंश परम्परा इस प्रकार हैः—

> साधक के कषाय जितने कम होंगे साधना उतनी ही उत्कृष्टता की ओर होगी।
> —गुरु सुदर्शन

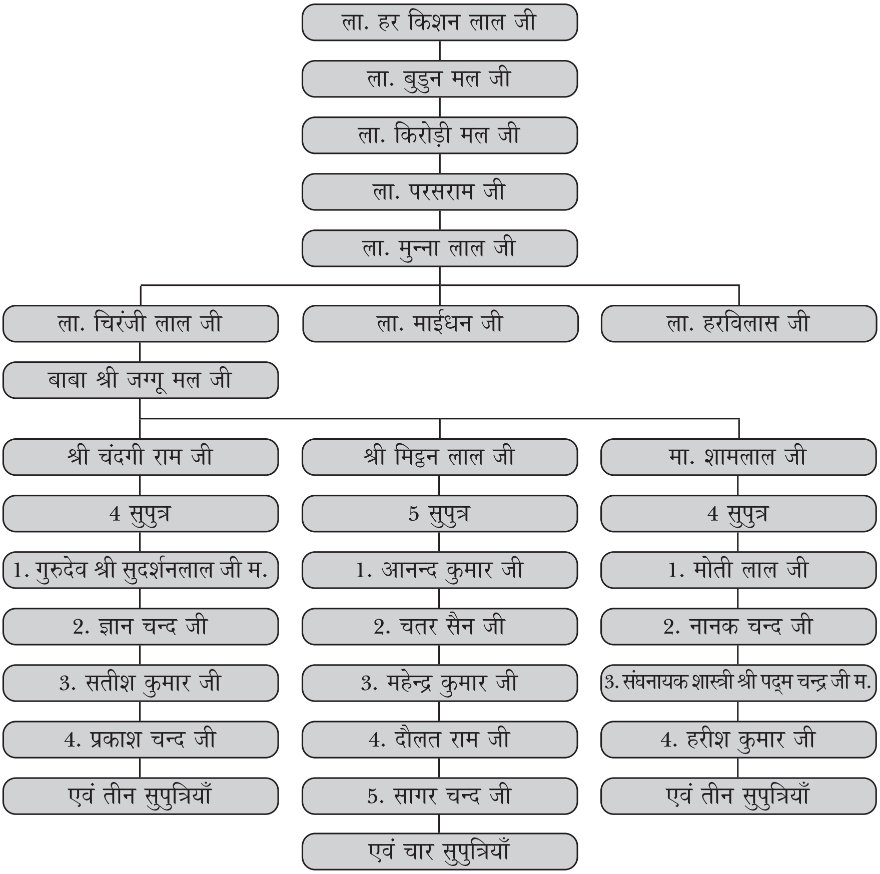

गुरुदेव के परिवार में सर्वप्रथम ला. बुड्ढन मल जी रोहतक में जैन मुनियों के सम्पर्क में आए। परिवार में श्री राजाराम जी, कृपाराम जी आदि तो विधिवत् सामायिक-संवर भी करते थे। गुरुदेव के बाबा श्री जग्गू मल जी तो जैन धर्म, जैन समाज और जैन संस्कारों में पूरी तरह रच-पच गए थे। उनका जीवन 'रघुवंश' में उल्लिखित रघुवंशियों के आदर्श का मूर्तिमान् अनुकरण ही था, यथा–

'शैशवेऽभ्यस्त-विद्यानां, सन्तानाय गृहमेधिनाम्।
वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां, योगेनान्ते तनुत्यजाम्' ॥

साधक को गंभीरता एवं श्रावक को मर्यादा शोभा देती है।
–गुरु सुदर्शन

अर्थात् बचपन में विद्या पढ़ी, केवल सन्तान-प्राप्ति हेतु ही यौवन में विवाह रचाया, प्रौढ़ आयु में संन्यास लिया और अन्त में समाधि-संथारा-पूर्वक देहत्याग किया।

उनका जन्म सं. 1942 (सन् 1885) में रोहतक में हुआ। जन्मदाता पिता थे ला. चिरंजी लाल जी, परंतु ये अपने चाचा श्री माईधन जी के यहाँ गोद चले गए थे। यद्यपि उन की स्कूली पढ़ाई नगण्य थी, वे केवल अपना नाम ही लिख पाते थे, पर धर्मश्रद्धा उनमें कूट-कूटकर भरी थी। समाज-सेवा का शौक था। व्यवसाय के प्रति रुचि कम और धर्मध्यान व गुरुभक्ति में अधिक थी।

बाबा जी में धन की लिप्सा नहीं थी। दुकान थी, थोड़ा-बहुत घी का व्यापार था। अपनी सन्तान को उन्होंने हर दृष्टि से योग्य और सुसंस्कृत बनाया। जब उनकी आयु कुल तीस वर्ष की थी, तो पत्नी का निधन हो गया। बच्चों की देखभाल की जिम्मेवारी उन्हीं पर आ गई। पुनर्विवाह के बहुत से प्रस्ताव आए पर सब दबावों को नकारते हुए यावज्जीवन के लिए तीन स्कन्ध ग्रहण कर लिए– 1. ब्रह्मचर्य व्रत 2. कच्ची पक्की हरी वनस्पति का त्याग और 3. रात्रि चौविहार। उस समय में, इस इलाके में ऐसे कठोर व्रत विरले लोग ही ले पाते थे। उनके तीन सुपुत्र थे। बड़े श्री चन्दगीराम जी को एम.ए., एल.एल.बी. पास करा के वकील बनाया। मध्यम श्री मिट्ठन लाल जी को व्यापार में डाला और छोटे श्री शाम लाल जी को सफल अध्यापक बनाया। बाबा जी ने शुद्ध आहार-व्यवहार और दृढ़ अनुशासन के रूप में अपने पैतृक दायित्व को भी निभाया।

रोहतक शहर में चारित्र चूड़ामणि श्री मयाराम जी म. के लघुभ्राता श्री रामनाथ जी म. लम्बे समय तक स्थिरवास रहे। मध्याह्न में प्रवचन होता था। बाबा जी खुद प्रवचन में सामायिक करते तथा घर में सबको प्रवचन में उपस्थित होने का निर्देश दिया हुआ था। उनके तीनों पुत्र रोज सामायिक करते थे। एक दिन उन्होंने प्रवचन के मध्य, पीछे मुड़कर देखा

घर के बड़े समय पर सही बात का अंकन करें तो बात की गहराई व छाप अधिक पड़ेगी।
–गुरु सुदर्शन

कि मिट्ठन लाल नहीं आया। बड़े उद्विग्न हुए। चौराहे पर आए। देखा कि वह मित्रों के साथ ताश खेलने में मशगूल है। भरी महफिल में उसे कान पकड़ कर उठाया और डाँटा, 'मिट्ठन! तुझे शर्म नहीं आती? गुरु महाराज कथा कर रहे हैं और तू ताश खेल रहा है।' बस फिर क्या था, ताश की बाजी छोड़कर मिट्ठन सीधा कथा में उपस्थित हो गया।

बाबा जी ने पंजाब परम्परा के पूज्यपाद श्री मयाराम जी म. से गुरुधारणा ली और वहीं उनकी श्रद्धा नींव जमी। बाबा जी स्वयं तो रोहतक में स्थिरवासी संतों के चरणों में निरंतर सामायिक-संवर की आराधना करते ही थे साथ ही तीनों सुपुत्र श्री चन्दगी रामजी, मिट्ठनलालजी एवं मा. शामलाल जी से भी करवाते थे। जहां बाबा जी की धर्म एवं धर्मगुरुओं पर पूर्णतः आस्था थी, वहीं परिवार के धार्मिक संस्कारों पर भी पूर्णतः निगाह थी। एक बार बाबू चन्दगी राम जी वकील को उन दिनों चली नई-नई फल-सब्जी लाल टमाटर लाने पर कहा– "हो न हो ये गैर शाकाहारी पदार्थ है।" जब वकील साहब ने पूरी अनुनय-विनय से विश्वास दिलाया और पूरी छानबीन की तब बाबाजी को तसल्ली हुई। तीनों पुत्रों की शादी के बाद परिवारों के खिंचाव को देखा तो एक रात तीनो बेटों और बहुओं को अपने पास बिठाकर सारा बंटवारा कर दिया। अपने पास मात्र एक सोने का कण्ठा रखा। वो भी अपने लिए नहीं बल्कि अपने लाडले, होनहार सुपौत्र ईश्वर (गुरु सुदर्शन) के लिए। रोहतक में आने वाले गुरु दर्शन हेतु श्रद्धालुओं की सेवा भी बाबाजी के हाथ में थी। बाबा जी अपनी समाज को उस बेटी की तरह मानते थे जिससे कुछ लेना नहीं बल्कि देना ही देना है। एक दिन बालक ईश्वर (गुरुदेव) ने दर्शनार्थी सेवा में से बचे हुए कुछ लड्डू-पूरी आदि बिना पूछे खा लिए। बाबा जी को पता लगा तो इतना ख्याल हुआ कि अपने सुप्रिय पौत्र को डांटा तथा स्थानक के दान पात्र में डालने हेतु पैसे दिए। शिक्षा भी दी और भविष्य हेतु एक संदेश भी दिया। आज की वर्तमान समाज और समाज प्रमुख इन घटनाओं से शिक्षाएँ ले सकते हैं।

> जन्मदाता, विद्यादाता एवं धर्मदाता की सेवा सदा फलदायी होती है।
>
> –गुरु सुदर्शन

कई बार बाबा जी में उनके घर के किसी कुलदेवता (पित्तर) का शक्तिरूप में प्रवेश हो जाता था तो वे एक विलक्षण सी समाधि में चले जाते। पत्नी के निधन के बाद बाबा जी की जब दीक्षा की भावना बनी तो घर के दुःखद भविष्य का भी अस्पष्ट सा आभास होने लगा था। वो अक्सर फरमाते थे "मुझे पता था कि मेरे जीते जी मेरे 2 जवान बेटे, 2 बहुएं और एक पोता मर सकता है। अतः आर्त्तध्यान से बचने हेतु मोह का पर्दा हटाना ही होगा। उसके लिए दीक्षा ही कारगर उपाय है।" इसी के साथ-2 अपने ज्येष्ठ पौत्र ईश्वर के लिए दीक्षा का मार्ग साफ करना भी उनका दीक्षा लेने का एक कारण बना। घर के बड़े थे, जिम्मेदार थे अतः घर से आज्ञा मिलना भी आसान नहीं था। एक बार लुधियाना में आचार्य श्री आत्माराम जी म. के श्री चरणों में ज्ञान ध्यान हेतु गए, साधु प्रतिक्रमण सीखा और पुनः घर लौट आए। उनके लिए उनका गोदनामा निरस्त होना भी वरदान बन गया तथा बड़े गुरुदेव व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म. के चरणों में नारनौल में दीक्षा के लिए आ गए। तब उनकी आयु 51 वर्ष 6 माह 3 दिन थी। 23 फरवरी 1937, तदनुसार माघ सुदी त्रयोदशी संवत् 1993 मंगलवार के शुभ दिन नारनौल शहर में दीक्षा ग्रहण कर ली। दीक्षा प्रसंग पर चाँदनी चौंक के प्रमुख श्रावक श्री गोकुल चन्द्र जी जैन 'नाहर' ने बड़े गुरुदेव को अर्ज करी– ये वृद्ध हैं, इनकी सेवा का ध्यान भी जरूर रखना। वाचस्पति गुरुदेव ने उस मौके फरमाया– "सेवा की मेरी जिम्मेवारी भी है और सेवा करने वाला भी आ जाएगा।" इन वचनों पर भी भविष्य में बालक ईश्वर (गुरुदेव) ने समय पाकर फूल चढ़ाए। बाबा श्री जग्गूमल जी म. तपस्या-सरलता-निश्छलता-स्नेहवृत्ति-निर्लेपता एवं कठोर संयम भावना की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने 12 वर्षों तक लगातार विभिन्न ग्राम नगरों में विचरण किया एवं अंतिम के 9 वर्ष दिल्ली चाँदनी चौंक में स्थिरवासी रहे। वे दिन भर में 7 द्रव्य से अधिक नहीं लगाते थे। हांसी चातुर्मास में पांच अठाईयां की। अधिकांश दवाईयों का त्याग रखते थे। 10 मई 1959

> सत्पात्र ही झुकेगा एवं झुके बगैर भरना कठिन है।
>
> –गुरु सुदर्शन

को चाँदनी चौंक की धरा पर संथारापूर्वक आत्म लीन होकर देह त्याग किया। वो महान् बाबा अपने पीछे छोड़ गए थे अपने ही महान् तप और संयम की अमर कहानियां तथा अपनी प्रतिमूर्ति रूप अमूल्य धरोहर दो दीक्षित पौत्र– पूज्य गुरुदेव जी म. एवं पूज्य शास्त्री जी म.।

पूज्य गुरुदेव के पिता बाबू चन्दगीराम जी धर्मनिष्ठ सिद्धांतवादी एवं अद्भुत स्मरण शक्ति के धनी थे। वकालत में प्रथम स्थान पर रहे तभी तो तत्कालीन वाइसराय लार्ड विलिंगटन से दो स्वर्ण पदक प्राप्त किए। उन्होंने गर्मी की छुट्टियों में वाचस्पति गुरुदेव के चरणों में 1 महीने में पूरा "उत्तराध्ययन सूत्र" याद कर लिया। एक घंटे में 80 गाथाएं याद कर लेते थे। उनकी धर्मरुचि देखकर बड़े गुरुदेव ने फरमाया था– "बाबू जी आपको इतनी लगन है, लगता है आपके परिवार में दीक्षा होगी।" वकील बनने के बाद कोर्ट से आकर प्रतिदिन सामायिक करना उनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग था।

पूज्य गुरुदेव जी की मातु श्री सुंदरीदेवी जी, दिल्ली के पास नजफगढ़ की थी। इनका स्वभाव भी नाम के अनुरूप सुंदर व शालीन था। सनातन परिवार से होने के बावजूद शीघ्र ही जैनत्व के संस्कारों में ढल गई। संतों को निर्दोष आहार-पानी का दान देने में सजग रहती थीं। इनके मधुर स्वभाव से घर के बड़े सभी प्रसन्न थे। कहावत है कि "अच्छी चीज तो खुदा के दरबार की धरोहर होती हैं" अतः वो देवी भी ज्यादा समय तक जीवित न रह सकी। द्वितीय प्रसूति में एक पुत्र को और जन्म देकर कुछ ही दिनों में परलोक सिधार गई, 3 दिन बाद वो शिशु भी शांत हो गया। पीछे रह गए निर्मातृक 4 वर्षीय बालक ईश्वर (हमारे गुरुदेव)। पूज्य गुरुदेव के पिता जी ने भी 48 वर्ष की अल्पायु ही पाई।

"जिंदगी हमारी यूं ही सितम हो गई,
खुशी न जाने कहाँ दफन हो गई ॥"

ख्यालात के अमीर मिलने मुश्किल हैं। कोठी कार वाले अमीर बहुत हैं।
–गुरु सुदर्शन

2. धर्मावतार का अवतरण

4 अप्रैल 1923 तदनुसार वैशाख बदी तृतीया, संवत् 1980 के दिन प्रातः 6:15 बजे सूर्योदय के समय मीन लग्न में बाबू चन्दगी जी की धर्मसहाया सुंदरी देवी की कुक्षि से धर्म सूर्य का उदय हुआ। सनातन संस्कारानुसार ईश्वर कृपा मानकर बालक का नाम 'ईश्वर' रखा। सवा साल का वो बालक अपने बाबा के साथ जैन स्थानक में संतों के चरणों में लेटता-बैठता। सरकता-2 आगे बढ़ कर पात्रों से गिरे पानी को चाटता तो संत हंसते और कहते कि जग्गू! तेरे पोते ने हमारा पानी पी लिया, अब तो ये हमारा हो गया।

"जानता हूँ कि काबिल नहीं हूँ मैं,
पर देना हौंसला कि काबिल बन सकूँ,
इन राहों पर चलना है बड़ा मुश्किल,
पर देना जज़्बा कि हुक्म की तामील बन सकूँ ॥"

माँ की असामयिक मृत्यु से गुरुदेव का बचपन बुरी तरह से घायल हो गया। अब बालक के लिए घर में बचा ही क्या था? लेकिन ये पीड़ाएं ही शायद महानता के बीज अपने में समेटे हुए थी। गुरुदेव प्रारम्भ से ही गंभीर प्रकृति के धनी थे। मां की मृत्यु ने जीवन को और संजीदा बना दिया था।

ये मुझे चैन क्यों नहीं पड़ता,
क्या एक ही शख्स था जहान में?

पिता जी के पुनर्विवाह से बेशक अस्थायी बहार उनके जीवन में आ गई थी। पर मन में एक गहरी उदासी और रिक्तता भी स्थायी रूप से बस गई थी। बाबा जी के दुलार में गुरुदेव को माँ-बाप और बाबा इन तीनों संबंधों का ही सुख मिलता था। बाबा जी तो उन्हें 'ईश्वर' की

> जिस दिन अपनी कोई भूल नज़र न आए, समझो वो दिन बेकार गया।
> —गुरु सुदर्शन

बजाय 'सुख दर्शन' कहते थे क्योंकि उन्हें इनके दर्शन से सुख मिलता था। 'सुदर्शन' यह स्थायी नाम तो उन्हें वाचस्पति गुरुदेव ने ही दिया, सम्यग् दर्शन – सुदर्शन को आधार बनाकर।

गुरुदेव का कुछ प्रारंभिक अध्ययन जैन स्कूल रोहतक में हुआ। वैसे गुरुदेव की स्कूली शिक्षा अनियमित-सी रही। कभी रोहतक तो कभी दिल्ली। इस कारण वे तीव्र मेधा के धनी होते हुए भी कुछ विषयों में असाधारण योग्यता प्राप्त न कर पाए। फिर भी गणित-इतिहास-भूगोल एवं अंग्रेजी उनके प्रिय विषय थे। अर्थशास्त्र पर तो इतना गजब का अधिकार था कि दसवीं में पढ़ते हुए ही उन्होंने Economics made Easy नामक पुस्तक लिखी जो मा. शामलाल जी के नाम से छपी। रोहतक के 'वैश्य स्कूल' और दिल्ली के 'महावीर जैन स्कूल' में शिक्षा ली। बचपन में ही मिले संस्कारों के कारण गुरुदेव पान, ताश, बीड़ी, सिगरेट, सिनेमा आदि से कोसों दूर थे। रामलीलाओं में भी देशभक्ति और संस्कृति से जुड़े नाटक ही देखने जाते थे। पर दिल्ली में रहते हुए भी गुरुदेव ने लालकिला, कुतुब मीनार आदि कभी नहीं देखे, और न ही प्रतिवर्ष जैन स्थानक चाँदनी चौंक के नीचे से निकलने वाला 26 जनवरी का जलूस देखा।

हमें अपनी हद में रहना पसंद है,
अब लोग इसे Ego समझते हैं तो हम क्या करें ॥

गुरुदेव का स्वास्थ्य प्रारंभ से ही अच्छा नहीं रहा। जिसका कारण ये भी हो सकता है कि गुरुदेव को बचपन से ही क्रीड़ा और व्यायाम की रुचि नहीं थी। खुराक भी नियमित और पोषक नहीं थी। पाचन शक्ति प्रायः मन्द होने के कारण सेहत उभर नहीं पाई फिर भी बुद्धि की तीव्रता के कारण वे अपनी क्लास के 'मोनीटर' भी रहे।

गुरुदेव का धार्मिक विकास पूज्य बाबा जी के कारण तो हुआ ही, रोहतक में दीर्घ काल से स्थिरवासी मुनिराजों का संसर्ग भी इसमें वरदान

आगम सब व्यथाओं का ईलाज है।
–गुरु सुदर्शन

सिद्ध हुआ। पारिवारिक परंपरा के कारण शिवालय भी जाते। विशेषकर मंगलवार को अवश्य मंदिरों में जाते। पुजारी भी उनके लिए प्रसाद सुरक्षित रखता। वह सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता था, गुरुदेव के शरीर लक्षणों को देखकर कई बातें बताई जो बाद में सत्य सिद्ध भी हुईं। एक अन्य ज्योतिषी ने गुरुदेव का हाथ देखकर कहा– ये घर में रहेगा तो ऊंचा पद पाएगा और घर छोड़ेगा तो ऊंचा साधु बनेगा क्योंकि जन्मपत्री में 'राजयोग' है।

सन् 1932 में राजस्थान से पधारे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म. से रोहतक में बाबा जी के कहने पर 'समकित' (गुरु धारणा) ली। आयु बढ़ने के साथ-साथ गुरुदेव एक आसन से कई-2 सामायिक करने के अभ्यासी हो गए। बचपन में ही गुरुदेव ने धर्म की पाठशाला में सामायिक के पाठ (अर्थ सहित) पच्चीस बोल आदि सीखे और कई ईनाम जीते।

मां के चले जाने से जीवन में आई शून्यता की पूर्ति उन्होंने संत सेवा और धर्म श्रद्धा से करनी शुरू कर दी। कई बार याद करते थे गुरुदेव वो दिन जब वो स्वयं कुल 3 वर्ष के थे– मां की गोद में ठाकुर द्वारे में गए। पुजारी ने दोनों को प्रसाद दिया। आते समय गुरुदेव के हाथ से पेड़ा छूट कर नीचे गिर गया, रोने लगे तो मां ने अपने हाथ वाला पेड़ा दे दिया। इस तरह की घटनाएं याद करके गुरुदेव भावुकता से भर जाते थे।

तेरे बगैर यूं सुलग रही है जिंदगी,
जैसे लकड़ी कोई अधजली छोड़ दे ॥

बाबा जी को गुरुदेव से असीम ममता और स्नेह था। एक बार रोहतक में साम्प्रदायिक दंगे हुए। मस्जिद के आगे से हिंदुओं का जलूस निकल रहा था। बैण्ड-बाजे बज रहे थे। तभी मुसलमानों ने पथराव किया, साम्प्रदायिक उन्माद बढ़ गया। एक दर्जी मारा गया। उसकी शहादत में पुलिस ने गोलियां बरसाईं। गुरुदेव भी भीड़ में थे। किसी तरह बचकर अपने परम मित्र हंसराज के घर चले गए। इधर गोलियों की बारिश के

ज्ञानवान् बनने की अपेक्षा चारित्रवान् बनना श्रेष्ठ है।
–गुरु सुदर्शन

बीच बाबा जी अपने पोते को ढूंढते रहे, रात हो गई। वे हंसराज के घर मिले। बाबा जी ने उस मौके उपालंभ देते हुए कहा– 'तेरे मोह में मैं तो मरा जा रहा हूँ और तू यहाँ छिपा बैठा है।'

गुरुदेव को बाबा जी से सच्चा प्यार और हंसराज जैसा अच्छा यार मिला। हंसराज और गुरुदेव दोनों ने इकट्ठे ही साधु बनने की ठानी पर घरवालों ने हंसराज का विवाह कर दिया। एक दिन हंसराज यमुना में स्नान करने गया तो वहीं डूब गया। उसकी अकस्मात् मृत्यु से गुरुदेव सन्न रह गए। मृत्यु की भीषणता और जीवन की क्षण भंगुरता का गहरा अहसास हुआ। सारी रात चिता के पास खड़े रहे और संकल्प ले लिया– "अब मैं दीक्षा अवश्य लूंगा"।

रोहतक एवं दिल्ली विराजित संतो के दर्शन-प्रवचन श्रवण से गुरुदेव की वैराग्य भावना और अधिक पुष्ट हुई। पंजाब केसरी श्री प्रेमचंद जी म. की सिंह गर्जनाएं उन्होंने खूब सुनीं। आसन अग्रिम पंक्ति में बिछता था। एक बार एक अन्य भाई ने वो आसन हटाकर अपना आसन बिछाना चाहा तो श्री प्रेमचन्द जी म. ने बीच में ही टोक दिया– "ये आसन मत हटा, ये जग्गू के पोते का है।"

पूज्य श्री अमीलाल जी म. की कहानियां, योगिराज श्री रामजीलाल जी म. के भजन तथा तपस्वी श्री निहालचन्द जी म. की सरल जीवन शैली गुरुदेव को बहुत भाती थी। तपस्वी श्री निहालचन्द जी म. तो गुरुदेव से इतने खुश थे कि दवाई भी उन्हीं के हाथ से लेते थे। पूज्य श्री शांतिस्वरूप जी म. भी उनकी सेवा में थे। अतः गुरुदेव को उनसे भी अनेक चीज़ें सीखने को मिली।

अपनी चिंता अपने ही विचारों से खत्म होगी।

—गुरु सुदर्शन

3. घायल बचपन

गुरुदेव दिल्ली में पढ़ाई के लिए गए तो वहां उन्हें मास्टर शामलाल जी की शीतल छत्रछाया एवं चाची कलावती की प्यार भरी गोद मिली। चाँदनी चौंक, अच्छा स्कूल, निरंतर मुनिराजों की चरण-शरण तथा मास्टर जी का कुशल मार्गदर्शन मिला। गुरुदेव के सुखी जीवन के लिए ये पर्याप्त था। इसी बीच सन् 1937 में बाबा जी की अचानक दीक्षा हो गई। गुरुदेव एकदम सकते में आ गए। ममता के सारे सूत्र छिन्न भिन्न हो गए।

न जाने ऐसा कौनसा रिश्ता है तुमसे?
हजारों अपने हैं मगर याद तुम ही आते हो।

इन्हीं यादों के वशीभूत गुरुदेव अपने चाचा के साथ वाचस्पति गुरुदेव के चरणों में अपने बाबा जी के पास रिवाड़ी पहुंचे। बाबा जी म. के चरण पकड़ कर रोते रहे, पूछते रहे— "आप मुझे छोड़कर साधु क्यों बने?" जब काफी समय हो गया तो वाचस्पति गुरुदेव का इशारा पाकर बाबा जी बोले— "मैंने दीक्षा तेरे लिए ली है। अब तेरा रास्ता खुल गया है। मैं साधु बन गया हूँ, अब तू भी तैयारी कर।" ये शब्द गुरुदेव के लिए चिंतामणि बन गए। अंधेरे में रोशनी जगमगा गई, दिशा स्पष्ट हो गई और विचार संकल्प बन गया।

अगर रो पड़ूं तेरे सामने मैं किसी दिन,
तो समझ लेना बर्दाश्त करने की हद थी ॥

इसी दौरान एक बार गुरुदेव जैन स्कूल के छात्र समूह के साथ बिरला मंदिर दिल्ली में गांधी जी के दर्शन करने गए। सब पंक्तिबद्ध दर्शन कर रहे थे। गांधी जी चरखा कात रहे थे। गुरुदेव के मन में विचार उभरा कि गांधी जी मेरे सिर पर हाथ धर दें तो मेरी भावना सफल हो जाए। जैसे ही गुरुदेव का नंबर आया, चरखे से धागा टूट

वक्ता बनने की अपेक्षा दृढ़ संयमी बनना कल्याणदायी है।
—गुरु सुदर्शन

गया। गुरुदेव ने प्रणाम किया तो गांधी जी का हाथ सिर पर आ गया।

चाची कलावती गुरुदेव के प्रति काफी दयाशील तो थी पर उन दिनों कलावती जी के भाई सीताराम जी गोयल भी वहीं रहकर पढ़ रहे थे। अतः भाई के प्रति बहन का अधिक लगाव स्वाभाविक था। उन्हें गृहकार्य से मुक्त रखा जाता था। पढ़ाई का समय अधिक दिया जाता था। गुरुदेव से गृह कार्य भी करवाए जाते थे। छुट्टियां होने पर गुरुदेव रोहतक आ जाते। पिता जी की साइकिल चलाते कभी पंक्चर हो जाता तो डाँट भी खाते।

अपनी वैराग्य भावना को अंतिम रूप देने के लिए गुरुदेव ने दिल्ली, बारादरी को अपना मुख्य केन्द्र बना लिया। वहाँ बड़े-2 त्यागी-तपस्वी-प्रावचनिक मुनिराज पधारते। तपस्वी श्री रोशनलाल जी म. की संयम साधनामय जीवन-चर्या से गुरुदेव प्रभावित हुए। परस्पर अंग्रेजी में वार्तालाप करते। जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म. एवं आचार्य श्री खूबचंद जी म. की भी सेवा खूब की। एक बार गुरुदेव के वैराग्यपूर्ण गंभीर जीवन को देखकर आचार्य श्री खूबचन्द जी म. ने कहा– "सुदर्शन, हमारा शिष्य बन जा" गुरुदेव ने विनम्रभाव से कहा– "दीक्षा तो मैं वहीं लूंगा जहां मेरे बाबा जी हैं पर आपके प्रति भी मेरी श्रद्धा-धर्मानुराग पूरा है।" पूरा दिन सामायिक स्वाध्याय, आत्म चिंतन में व्यतीत होता। जब वे कुल 8 वर्ष के थे तो संवत्सरी से पहले दिन उनको भिरंडों ने काट लिया। मन में संवत्सरी के पौषध की चिंता थी। नवकार मंत्र पढ़ने लगे, सोजिश नहीं आई। आराम से पौषध हुआ पर पारणे वाले दिन सोजिश आ गई। धर्म क्रियाओं पर गुरुदेव की अगाध श्रद्धा थी। उनके विचारानुसार दसवीं कक्षा का एक पेपर काफी खराब हुआ। उस उदासी को दूर करने के लिए नवकार महामंत्र का भावपूर्ण स्मरण किया और आश्चर्य ये हुआ कि उस पेपर में भी पूरे अंक मिले। अपनी श्रद्धानुसार उन्होंने ये नवकार मंत्र के जाप का परिणाम माना।

फल वही सुरक्षित है जो पत्तों से ढका है, साधक वही सुरक्षित है जो इन्द्रियों को गुप्त रखे।
—गुरु सुदर्शन

मैट्रिक पास करके गुरुदेव रोहतक लौट आए। आगे पढ़ने का मन नहीं था। पिता जी की इच्छा उन्हें जज बनाने की थी पर उन्होंने अपना संकल्प बता दिया तो पिता जी मौन हो गए। पिता जी एक दिन कहने लगे– "देख ईश्वर! मुझे स्वयं भी भृगुपुरोहित के अध्ययन से दीक्षा की प्रेरणा मिलती है। परन्तु परिवार और समाज के व्यवहार के नाते तो मैं तुझे रोकूंगा पर मन से नहीं।" कई स्थानों से रिश्तों की पेशकश भी आई पर इंकार कर दिया। एक व्यक्ति तो संयोगवश गुरुदेव के पास ही आ गया और बोला– "वकील साहब का बेटा कैसा है?" गुरुदेव उसका आशय समझ गए। झट से उत्तर दिया– वो तो बावला है, सारे दिन मुंहपत्ती लगाए बैठा रहता है। आगन्तुक चला गया। गुरुदेव प्रसन्न हुए कि चलो एक बला टली।

उन्हीं दिनों पंजाब केसरी आचार्य श्री कांशीराम जी म. बंबई जाते हुए रोहतक पधारे। घरों में दर्शन देने जा रहे थे तो गुरुदेव भी साथ थे। घर पधारने की विनति की। आचार्य श्री जी को पता चला– ये जग्गूमल जी का पोता है, अतः घर पधारे। आहार भी ग्रहण किया। गुरुदेव की श्रद्धा में अभिवृद्धि हुई।

एक बार गुरुदेव दुकान पर बैठे थे। बाबू जी कोर्ट में थे। जैन समाज के कुछ गणमान्य व्यक्ति चन्दा लेने हेतु आए। गुरुदेव ने सबसे जय जिनेन्द्र की। गुरुदेव ने तुरंत अपनी जेब से 50 रूपए निकाल कर दिए और कहा बाकी सामाजिक चंदा आप बाबू जी से ले लेना। बचपन से ही उनके हृदय में समाज के प्रति पूरी कर्तव्यनिष्ठा थी। जब वे वैश्य स्कूल में पढ़ते थे तो बिहार में भूकम्प आया था। तब भी गुरुदेव ने अपने गुल्लक की सारी राशी भूकंप राहत कोश में दान कर दी थी।

ये तो चन्द जल्वे हैं जो झलक आए हैं।
रंग और भी बहुत हैं जिंदगी के गुलशन में ॥

अब गुरुदेव का ध्यान दीक्षा की अनुमति लेने में ही लग गया था

आत्मा सत् चित् आनन्दस्वरूप है एवं शरीर मांस मल का ढेर, अतः शरीर का मान नहीं करना।
–गुरु सुदर्शन

अतः एक दिन अपनी सारी पुस्तकें, कपड़े, कुछ स्व अर्जित रुपये, स्वहस्त लिखित ज्ञान संग्रह की डायरियां आदि ट्रंक में लेकर चुपचाप घर से चल दिए। ये भी नहीं पता था कि वाचस्पति गुरुदेव एवं बाबा जी म. कहां हैं। हांसी में तपस्वी श्री निहालचन्द्र जी म. के पास पहुंचे। हिसार में श्री कस्तूरचन्द्र जी म. के पास फिर सिरसा में तपस्वी श्री केसरीचन्द जी म. के पास रुके। वे एकलविहारी एवं कठोर चर्या के धारक मुनिराज थे। वहीं से पता चला कि वाचस्पति गुरुदेव जी म. फिरोजपुर विराजमान हैं। वहाँ पहुंचे।

दिले नादां की जिद्द है कि तेरा साथ रहे,
मर्जी ए वक्त ये है कि बिछुड़ना ही होगा ॥

वाच. गुरुदेव ने घर पर समाचार भिजवा दिया। पता चलते ही गुरुदेव के नाना श्री किरोड़ीमल जी एवं चाचा जी आए और जबरदस्ती घर ले गए। चलते समय बहुसूत्री गुरुदेव ने मुट्ठी बंद करके पक्के रहने की प्रेरणा दी। गुरुदेव समझ गए।

अपने बाबा की आँखों के तारे हो तुम,
किसी और के लिए टूट मत जाना ॥

गुरुदेव जिस समय घर पहुंचे तो सारी स्थिति की गंभीरता को समझा। हर कोई उनको हतोत्साहित करने की कोशिश करता रहा। घर की धोबिन, नाईन, जमादारनी तक भी आकर समझाने लगी। एक रोज गुरुदेव ने मेहतरानी से पूछा "तुझे क्या दिक्कत है?" वह बोली। "जब तेरी शादी होगी तो मुझे भी कुछ न कुछ मिलेगा।" गुरुदेव समझ गए, उसे एक चाँदी का सिक्का देकर संतुष्ट किया; फिर तो वो भी दीक्षा के लिए दुआएं मांगने लगी।

नहीं गिरता गिराने से किसी के।
अजब तकदीर का लिखा हुआ है ॥

शिथिल साधक को संभालने वाला तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन करता है।
—गुरु सुदर्शन

गुरुदेव को ननिहाल भेजा गया। वहां भी वैराग्य भाव दब न सका। ननिहाल में दुकान पर बैठा दिया ताकि काम धंधे में मन लग जाए। गुरुदेव को सामान के भावताव की जानकारी नहीं थी अतः औने-पौने दामों पर बेचने लगे। मामा को चिंता हुई तो गुरुदेव को यहाँ से भी छुट्टी मिल गई।

मेरी राह च कंडे सूटन बालियां दी बड़ी मेहरबानी।
संभल-संभल के चलन दी जिन्हां ने आदत पा दित्ती ॥

गुरुदेव रोहतक आ गए और हो गए सामायिक में लीन। एक दिन इकट्ठी ही 17 सामायिकों का पच्चक्खान ले लिया। मन में चिन्तन था– ये बाधाएं कब दूर होंगी। सामायिक में ही अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। इसे समाधि कहें या स्वप्न दर्शन ये तो स्पष्ट नहीं हो सका पर गुरुदेव को अपनी दिवंगत माँ के दर्शन हुए। जो गुरुदेव को सशरीर उठाकर स्वर्ग ले गई – स्वर्ण शिला पर बैठाकर नृत्य दिखाया – स्नेह दिया एवं आशीर्वाद रूप वचन कहे कि "अब तू चला जा– तेरा काम बन जाएगा। कोई दिक्कत आए तो मुझे याद करना। मैं तेरे ऊपर अपनी छाया रखूंगी।" गुरुदेव एकदम चौंके। बात समझ आ गई। अपना दृढ़ निश्चय एक पत्र में लिखा। 15 पृष्ठ का वह पत्र अपने आप में ज्ञान वैराग्य प्रधान द्वादश भावनाओं का एक दस्तावेज था। पिता जी की फाईल में वो पत्र रखकर चल दिए पटियाला की ओर, वाचस्पति गुरुदेव के पावन चरणों की ओर... अपने बाबा जी की ओर...।

कोई साया न शज़र याद आया,
थक गए जब पांव तो तेरा ही दर याद आया ॥

घरवाले वहां भी पहुंचे पर इस बार बाबा जी ने मजबूत Stand लिया और कहा– "तुम इसे इतना तंग क्यों कर रहे हो। इस पर मेरा

बड़ों की बात झुठलाने वाले की किस्मत झूठी हो जाती है, जन सम्मान प्रमुख हो जाता है, तो आत्मकल्याण पीछे रह जाता है। –गुरु सुदर्शन

भी अधिकार है, ये यहीं रहेगा।" घरवालों को झुकना पड़ा। घर आकर आज्ञा पत्र भेज दिया। इस प्रसंग से प्रारंभ हो गया गुरुदेव के जीवन का नूतन अध्याय।

बचा लिया मुझे तुफां की मौज ने वरना,
किनारे वाले तो सफीना डूबो देते मेरा ॥

काल के करारे प्रहार ने शासन प्रभावक, संघ शास्ता श्री सुदर्शन लाल जी म. जैसे महामुनीश्वर की युगोद्धारक चेतना को देह-गेह से भिन्न कर दिया। सन् 1949-50 के दौरान दिल्ली मेरी अस्वस्थता के कारण उनकी विनय-सरलता-सजगता सेवा भावना आज भी दिल में सरसब्ज है।

–आचार्य नानेश-रामेश के भाव
राजेन्द्र बराला (उदयपुर)

श्रद्धेय श्री सुदर्शन लाल जी म. केवल पंजाब के ही नहीं, अपितु समस्त जैन समाज के लिए गौरवस्वरूप थे। उनका प्रवचन-कौशल एवं वचनसिद्धि अनुकरणीय थी। हृदय की विराटता इतनी थी कि उनके लिए कोई पराया नहीं था। जिनशासन के प्रति वे सर्वतोभावेन समर्पित थे। उत्तर भारत में विचरण करने वाली सभी चारित्रात्माओं को उनका सहयोग, सहकार व मार्गदर्शन सदैव मिलता था।

– आचार्य श्री सुदर्शन जी म. की ओर से
रतन लाल गोखरू (गुलाब पुरा)

शिथिल साधक को चेताने वाले शब्द ही आगम, गीता, गुरुग्रन्थ अथवा भगवद् वाणी हुआ करती है।
–गुरु सुदर्शन

द्वितीय प्रहर

1. शिक्षा और दीक्षा

आसमां को ज़िद्द है अगर बिजलियां गिराने की,
हमें भी ज़िद्द है आशियां यहीं बनाने की ॥

पटियाला आने पर गुरुदेव ऐसे चिंतामुक्त हो गए जैसे वर्षों का नहीं भव-भवों का भार उतरने लगा हो। योग्य शिष्य की प्राप्ति पर वाचस्पति गुरुदेव तो प्रफुल्लित थे ही सर्वाधिक प्रसन्नता मिली बहुसूत्री गुरुदेव श्री नाथूलाल जी म. को। वो ही गुरुदेव को संयमानुकूल प्रशिक्षण देते थे। एक दिन पूछने लगे, "दीक्षा क्यों ले रहे हो?" गुरुदेव ने सरलता से कहा, "मेरे बाबा जी ने ली है इसलिए ले रहा हूँ।" विचारों को खूबसूरत मोड़ देते हुए बहुसूत्री जी म. ने फरमाया– "बाबा जी तो आपके भवसागर तरने में निमित्त मात्र हैं। अतः आप सदा इस दोहे के भावों को ध्यान में रखना–

छूटूं पिछले पाप से, नवां न बांधु कोय,
श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय ॥

अभी पटियाला में गुरुदेव को 5-6 दिन ही हुए थे। बहुसूत्री जी म. ने पूछा– " 'न सराहना न विसराना' ये कहां लागू होता है?" गुरुदेव ने सोचकर बताया कि "भिक्षाचरी में लाए हुए भोजन के प्रति ये उक्ति लागू होती है अर्थात् स्वादिष्ट भोजन की प्रशंसा नहीं करनी एवं अरुचिकर की निंदा नहीं करनी" इसी के साथ-2 उसी दिन गुरुदेव ने

> यदि संयम में मन शिथिल है तो 3 बातों का ध्यान रखें– स्वाध्याय, तपस्या, आलोचना।
> –गुरु सुदर्शन

आहार पानी के 47 दोष याद करके अपने बड़ों को सुना दिए। बड़ों को प्रसन्नता मिली। ऐसे पावनतम दादा गुरुदेव के सान्निध्य में वैरागी बनते ही गुरुदेव धर्मशास्त्रों के अध्ययन-स्मरण एवं पारायण में जुट गए। शीघ्र ही प्रतिक्रमण, नवतत्त्व, 26 द्वार, दशवैकालिक सूत्र तथा अन्य सामग्री कण्ठस्थ कर ली। साधु प्रतिक्रमण केवल डेढ़ दिन में याद कर के सबको चमत्कृत कर दिया। पितृ परंपरा एवं गुरु परंपरा दोनों से ही बौद्धिक क्षमता का समर्थ भंडार गुरुदेव को मिला। बाबू चन्दगी जी 1 घंटे में 80 गाथाएं एवं वाचस्पति गुरुदेव 60 गाथाएं याद कर लेते थे, तो उसी क्रम में गुरुदेव ने भी 40 गाथाएं याद करके दिखाईं। पटियाला में ही वैराग्य काल के दौरान गुरुदेव के पैर में हल्की सी चोट लगी तो नजदीक ही डॉक्टर से पट्टी कराने गए। एक दिन डॉ. ने आग्रह पूर्वक कहा– "मैं तुम्हें गोद लेना चाहता हूँ"। गुरुदेव आशंकित हो गए एवं पुनः गए ही नहीं। चोट धीरे-2 स्वतः ही ठीक हो गई।

सन् 1941 का वाचस्पति गुरुदेव का चातुर्मास अहमदगढ़ मण्डी एवं बहुसूत्री जी म. का 40k.m. के अंतर से धूरी में था। हर रविवार गुरुदेव धूरी दर्शन करने जाते। बहुसूत्री जी म. उनके आने पर ही प्रवचन प्रारंभ करते। जहां प्रवचनों में आगमों का नवनीत उंडेलते वहीं बाद में संयम की शिक्षाओं से झोली भरते। इसी दौरान वाचस्पति गुरुदेव ने उनमें छिपी हुई विचक्षणता को उभारने के लिए आज्ञा दी– "कोई भजन लिखो" उस समय गुरुदेव ने जो भजन लिखा। उसे देखकर वाचस्पति गुरुदेव आश्चर्यचकित रह गए एवं एक कड़ी स्वयं की ओर से जोड़कर उस पर मोहर लगा दी...

वही भजन–

> गुरुओं का ध्यान है पूजा हमारी,
> आज्ञा में चलना है अर्चा हमारी ॥टेक॥

विद्या पाने का लक्ष्य है सत्य को पाना।
–गुरु सुदर्शन

1. गुरुओं की पूजा प्रभु की है पूजा,
   गुरुओं से बढ़कर नहीं कोई दूजा
   गुरु काट देते हैं अन्तर बिमारी।
2. गुरु की कृपा बिन सफल हो न साधक
   गुरु की कृपा बिन न झड़ते हैं पातक,
   गुरु के चरण में छिपी सिद्धि सारी।
3. गुरु ब्रह्मा विष्णु गुरु शिव शंकर,
   वही पूज्य बनता जो गुरु चरण किंकर
   किंकर वही बनता न हो जो अहंकारी।

वाचस्पति गुरुदेव द्वारा जोड़ी कड़ीः

4. दीक्षा भी लोगे संयम भी पाले
   जीवन में तेरे लगेंगे रंग निराले
   भजन देख पुलकित है आत्मा हमारी...।

यह पुण्य प्रसंग विजय दशमी के शुभ दिन का है।

वैराग्य काल में गुरुदेव को तत्कालीन उपाध्याय श्री आत्माराम जी म. की भी चरण सेवा का सौभाग्य मिला।

गुरुदेव की दीक्षा विषयक शीघ्र भावना को जानकर वाचस्पति गुरुदेव ने संगरूर क्षेत्र को चुना। माघ सुदी द्वितीया सं. 1998 अर्थात् 18 जनवरी 1942 रविवार के शुभ दिन दीक्षा महोत्सव हुआ। जिसमें गुरुदेव के साथ ही गणी श्री श्यामलाल जी म. के परिवार में वैरागी कस्तूरचन्द्र जी की एवं उपाध्याय श्री आत्माराम जी म. के धर्म परिवार में भी एक दीक्षा हुई। 33 महामुनिराजों के विराजने से संगरूर सारे उत्तर भारत का केन्द्र बन गया। संगरूर में वाचस्पति गुरुदेव के अनन्य भक्त श्री खूबचन्द जी जैन रहते थे, जिनका संगरूर राजघराने में भी काफी प्रभाव था। दीक्षा में हाथी, बैण्ड, झाकियाँ तथा जुलूस की अन्य चीजें राजघराने से ही आई थी। उन्हें देख गुरुदेव को बाल्यकाल की एक सुषुप्त घटना का स्मरण हो

> बदी जल्दी फैलती है, प्रसिद्धि देर से। पर नेकी की सौरभ ठोस होती है।
> —गुरु सुदर्शन

आया। जब गुरुदेव 6-7 वर्ष के होंगे, तब रोहतक में प्रातः काल गुरुदर्शन को गये। संतों ने नियम करवाया "आज हाथी की सवारी नहीं करनी।" जैसे ही गुरुदेव नियम करके नीचे उतरे तो देखा स्थानक के सामने ही अस्थल बोहर के बाबा मस्तनाथ के डेरे का हाथी बच्चों की भीड़ लिये घूम रहा है और चार-चार आने में सवारी करवा रहा है। गुरुदेव का बाल मन भी मचल गया। नियम याद आया तो संतों के चरणों में पहुँचे। आशा थी इजाज़त मिलेगी पर शिक्षा मिली कि "लिया नियम कभी नहीं तोड़ना।" पुनः नीचे आये तो महावत ने कहा। "चल तुझे दो आने में ही करवा देता हूँ—**"जहा लाहो तहा लोहो।"** गुरुदेव ने फिर ऊपर देखा तो महावत ने मुफ्त में ही सवारी करवाने की पेशकश की। गुरुदेव फिर ऊपर गये तो संत हंसकर बोले "अरे! ये क्या हाथी है, तू तो कभी राजा के हाथी की सवारी करेगा।" ये सुनकर गुरुदेव का मन बदला और वहीं गुरु चरणों में बैठ गए।

ढूंढ लिया है खुद में ही सुकून, ये ख्वाहिशें तो खत्म होने से रही।

आज गुरुदेव उस घटना को याद करके गद्गद हो रहे थे।

दीक्षा का भाषण भी गुरुदेव ने स्वयं ही लिखा था, जो ओजस्वी एवं ज्ञान गर्भित था। लगभग आधा घंटा धारा प्रवाह बोलते रहे। बीच में ध्वनि यंत्र बंद हो गया पर गुरुदेव की आवाज़ उस मौके भी आखिरी तक सुनाई देती रही। दीक्षा का पाठ पढ़ाया उपाध्याय श्री आत्माराम जी म. ने एवं गुरु बने नवयुग सुधारक, व्याख्यान वाचस्पति, पूज्यपाद श्री मदनलाल जी म.। दीक्षा पर परिवारिक सदस्य उपस्थित नहीं हुए। अतः धर्म के माता-पिता बनने की रस्म ला. रघुवीरसिंह जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मनभरी देवी ने अदा की।

दीक्षा की प्रथम रात्रि वाचस्पति गुरुदेव की आज्ञा पाकर उपाध्याय श्री आत्माराम जी म. की चरण सेवा में पहुँचे। उपाध्याय श्री जी ने गुरुदेव के ऊपर शिक्षा रूपी खजाना बिखेरते हुए फरमाया "आपकी दीक्षा

आवेश को रोकना बड़ा कठिन है, इसे विनीत ही रोक सकता है।
—गुरु सुदर्शन

से पूर्व यहां 33 मुनिराज थे और बाद में 36 हो गये अर्थात् 33 में दोनों अंकों का रुख एक दिशा में है अतः आप भी सदा गुरुदेव के पीछे-2 ही अनुचर होकर चलना। 36 के अंक में दोनों का रुख अलग-2 दिशा में है। अतः आप भी अपना रुख संसार से भिन्न दिशा में रखना। इससे आपको दीक्षा लेने का वास्तविक फल मिल जायेगा। इसी के साथ अन्य 3 शिक्षायें भी फरमाईं– 1. गुरुओं से कुछ छिपाना नहीं। 2. अपनी मर्जी नहीं चलानी। 3. जिस श्रद्धा भावना से आज दीक्षा ली है उस भावना को सदा बनाये रखना। इस तरह ढेरों आशीर्वाद लेकर गुरुचरणों में पहुंचे तदनन्तर अपने दादा गुरुदेव श्री नाथूलाल जी म. की सेवा में उपस्थित हुये।

विणएण नरो, गंधेण चंदणं, सोमयाइ रयणीयरो,
महुर रसेण अमयं, जण पियत्तं लहइ भुवणे ॥

ये गाथा देते हुए श्री बहुसूत्री जी म. ने गुरुदेव को फरमाया– "जैसे चन्दन अपनी सुगंध से, चन्द्रमा अपनी सौम्यता से तथा अमृत अपनी मधुरता से जन प्रिय होता है ऐसे ही मनुष्य अपने विनय गुण से जन-जन का प्रिय बनता है"।

श्री बहुसूत्री जी म. ने गुरुदेव को एक अन्य गाथा देकर कहा– "इसकी माला करनी है और रात को कोई स्वप्न आये तो हमें बताना"। प्रातः गुरुदेव ने बतलाया कि स्वप्न में दिखा कि जैसे सौम्याकार चन्द्रमा गगन मण्डल से उतर कर मेरे मुख में प्रवेश कर रहा हो। बहुसूत्री जी म. ने पूछा चन्द्रमा सम्पूर्ण था या अपूर्ण? गुरुदेव ने उपयोग पूर्वक बताया 'बिल्कुल पूर्ण तो नहीं– लगभग पूर्ण था।' तब बहुसूत्री जी म. ने सिर पर हाथ फिराया और आशीर्वचन कहे– "सुदर्शन जी! आपका यश चन्द्रमा की भान्ति सर्वत्र फैलेगा, आप अपने जीवन में आचार्य तो नहीं बनोगे पर आपकी सम्पदा आचार्यों से कम भी नहीं होगी। बड़ों के वे बोल आगे चलकर सत्य प्रमाणित हुए।

भाषा का विवेक जिसे आ गया, वह कहीं अपमानित नहीं होगा।
–गुरु सुदर्शन

तेरी मस्जिद में वाइज़ खास है मौक़ात रहमत के,
हमारे मयकदे में दिन रात रहमत बरसती है ॥

एक सप्ताह पश्चात् गुरुदेव की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापन चारित्रारोहण) धूरी में हुई। हर रत्नाधिक मुनिराज गुरुदेव से प्रसन्न था। 12 फरवरी 1942 को वाचस्पति गुरुदेव ने स्वयं ही प्रश्न पूछकर उत्तर देते हुए फरमाया– "देखो सुदर्शन जी! संयम लेने का एक मात्र लक्ष्य मोह विजय हो अतः 3 बातें ध्यान रखना– 1. रसना इन्द्रिय को जीतना। 2. मन में मान प्रतिष्ठा का कीड़ा न लगने देना। 3. संसार को समभाव से देखना, राग द्वेष के भावों से नहीं।

धूरी से वाचस्पति गुरुदेव पटियाला पधारे– वहां तपस्वी श्री खजानचन्द्र जी म. विराजमान थे, जो प्रभावक मुनिराज थे। संयमी जीवन था। वाचस्पति गुरुदेव ने फरमाया– जाओ सुदर्शन जी! तपस्वी श्री खजानचन्द्र जी म. के चरणों में, अपना खजाना भर लो। गुरुदेव पहुंचे तो तपस्वी जी म. ने कहा– अच्छा! वाचस्पति जी म. के सुशिष्य सुदर्शन जी आए हैं। गुरुदेव ने विनति करी कि "गुरुदेव! मुझे कुछ शिक्षा की कृपा करो" ऐसा कहकर तपस्वी जी म. के चरण दबाने लगे, तपस्वी जी म. ने फरमाया– "तो लो सुनो 1. वचनों को सह 2. मन की कह 3. चरणों में रह 4. नाम न चह 5. रौ में न बह 6. ईर्ष्या में न दह 7. न कर विग्रह 8. न कर संग्रह 9. मन की न चह।" इस तरह सूत्रों का खुलासा करते रहे और लगभग एक घंटा ज्ञान बरसाते रहे। चरण सेवा करके गुरुदेव जब वाचस्पति जी म. के चरणों में आये और बताया तो वाचस्पति गुरुदेव फरमाने लगे– सुदर्शन मुनि! तेरी पुण्यवाणी है जो इतना खज़ाना मिला है। इस खज़ाने को संभाल कर रखना।

इस तरह वाचस्पति गुरुदेव के तेजोमय आभामण्डल से जीवन का कण-2 आलोकित हो रहा था। तभी अचानक एक अकल्पित सी घटना घटित हो गई। उसी साल गर्मी के मौसम में गुरुदेव श्री बहुसूत्री जी म.

व्यापारी अपने ही कर्म से मरता है। उसकी चतुराई के कारण उसे कोई मार नहीं सकता, चाहे वो सरकार ही क्यों न हो। –गुरु सुदर्शन

खरड़ में अस्वस्थ हो गये और लगा कि अंतिम समय निकट है। उन्होंने वाचस्पति गुरुदेव को खबर भिजवाई कि– "सुदर्शन मुनि जी को मेरे पास सेवा में भेज दो।" वाचस्पति जी म. ने गुरुदेव को बुलाया और कहा– "देख सुदर्शन! तू कितना सौभाग्यशाली है कि गुरु म. ने तुझे बुलाया है, हमें नहीं।" सभी वरिष्ठ मुनिराज खरड़ पहुंचे और बहुसूत्री जी म. ने समाधि पूर्वक संथारे के साथ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी, 23 जून 1942 के दिन अपनी लीला समेट ली। वाचस्पति गुरुदेव ने मन की विह्वलता व भार दूर करने के लिये उस मौके प्रतिवर्ष 32 आगम चितारने का संकल्प लिया।

तर्ज– यदि भला किसी का...

गुरुओं के गुरु, नाथों के नाथ, श्री नाथूलाल महाराज हुए।
नहीं धन से धनी, संयम से धनी, राजाओं के अधिराज हुए ॥टेक॥

1. *उदयपुर राजपुताने में, लिया जन्म था ग्राम पलाने में,*
   वो दुग्गड़ ओसवाल कुल में, धार्मिक योद्धा जांबाज हुए ॥
2. *गुरु मयाराम शिष्यानुशिष्य, गुरु छोटेलाल के प्रमुख शिष्य,*
   संयम श्रुत में उनकी आकृति, और उनकी ही आवाज हुए ॥
3. *नहीं पद से उनकी प्रतिष्ठा थी, पद की ही उनसे प्रतिष्ठा थी,*
   बहुसूत्री पद हुआ सुप्रतिष्ठ, ऐज़ाज़ों के वो ऐज़ाज़ हुए ॥
4. *थे सहज भाव के संत सरल, था परम दयालु हृदय तरल,*
   थे विनयवंत भगवन्त संघ की, हस्ती वो पाए नाज़ हुए ॥
5. *वो हताश जनों की आशा थे, आश्वासन की परिभाषा थे,*
   उलझे हृदयों के समाधान, लाचारों के चारासाज़ हुए ॥
6. *छिपा उनसे कोई रहस्य ना था, सिखलाने में आलस्य ना था,*
   थोकड़े पाठ-प्रतिक्रमणों के, शिक्षण थे बे-अन्दाज हुए ॥

अगर अच्छाई की दिखावट भी करोगे तो वो भी कभी न कभी सुसंस्कार बन जाएगी।
–गुरु सुदर्शन

2. साधुत्व के प्रारंभिक वर्ष

सन् 1942 का चातुर्मास गुरुदेव का सढौरा हुआ। सायं कालीन प्रतिक्रमण के बाद वाचस्पति गुरुदेव एवं योगीराज श्री रामजीलाल जी म. की शरीर वैयावृत्य करना उनका नित्यक्रम था। दोनों महापुरुषों की एक-एक घंटा वैयावृत्य करके जो पसीना निकलता था उसे गुरुदेव 'रसायन' कहते थे। इसी चातुर्मास में रोहतक से बाबू चन्दगीराम जी गुरु दर्शन हेतु आये। गुरुदेव की दीक्षा के बाद प्रथम बार ही आये थे। वाचस्पति गुरुदेव के चरणों में वंदना कर बैठे और बातचीत में पूछा कि– "क्या सुदर्शन मुनि जी आपकी विनय करते हैं?" वाचस्पति गुरुदेव ने प्रसन्नता पूर्वक कहा– "बाबूजी! एक ही प्रश्न में आपने शास्त्रों का सार व पूरा जीवन पूछ लिया! सुदर्शन जी मेरी खूब विनय करते हैं, मेरी आत्मा इनसे बहुत प्रसन्न है। गुरु मुख से शिष्य (पुत्र) की प्रशंसा सुनकर बाबूजी को संतुष्टि मिली। कुछ देर बाद वाचस्पति गुरुदेव से आज्ञा ले कर गुरुदेव के चरणों में भी आए और बैठे। पर कोई सांसारिक बात या पुरानी चर्चा नहीं की। केवल इतना पूछा– "संयम में मन लगा?" गुरुदेव ने कहा– "गुरुदेवों की कृपा है"। फिर कुछ आगम शिक्षाएं दी और कहा "मुझे जो वाइसराय के हाथों दो गोल्ड मेडल मिले हैं वे इस मुनि जीवन की तुलना में सर्वथा निस्सार हैं। अतः संयम में आगे बढ़ते रहना।" इतना कहकर वाचस्पति गुरुदेव के चरणों में आ गए।

पर्यूषणों से पूर्व गुरुदेव अस्वस्थ हो गए थे, कई दिन बुखार रहा। लोच के दिन भी आ रहे थे। व्याधि की तीव्रता को देखते हुए बड़ों का विचार बना कि मुनि नवदीक्षित हैं, रुग्ण हैं अतः क्षुरमुण्डन करा दें। बाद में योग्य प्रायश्चित्त दे देंगे। पर गुरुदेव ने तो दृढ़तापूर्वक लोच करने का संकल्प दोहराया भी एवं पूरा भी किया। **'देहदुक्खं महाफलं'** मुनि के लिये शरीर को साधना, कष्ट देना भी कल्याणकारी ही है।

> सरल नयन एवं सुंदर वचन वालों के पास आत्मा का धन होता है।
>
> –गुरु सुदर्शन

ए आंधियों! तुमने दरखतों को गिराया होगा,
क्या गुल से लिपटे इस भंवरे को गिरा पाओगी?

चातुर्मास के पश्चात् वाचस्पति गुरुदेव अपने मुनि मंडल सहित विचरण करते हुए बलाचौर होकर पंचकूला पधारे। वहां श्री जैनेन्द्र गुरुकुल का वार्षिक अधिवेशन था। वहीं पर दिल्ली चाँदनी चौंक का श्री संघ 1943 के चातुर्मास की विनति लेकर आया। समाज प्रमुखों के साथ आए श्री बद्रीप्रसाद जी ने वाचस्पति जी म. को अलग से निवेदन किया कि– "आप दिल्ली पधारो, मैं निवृत्ति की ओर बढ़ रहा हूँ तथा अपने दोनों पुत्रों के साथ श्री चरणों में दीक्षा लेना चाहता हूँ।" वाचस्पति गुरुदेव ने भी भविष्य को देखते हुए 1943 का चातुर्मास दिल्ली करने का मन बना लिया।

इधर 1942 में गांधी जी ने भारत छोड़ो आन्दोलन की घोषणा की थी। उसके बाद देशभर के साथ दिल्ली में भी दंगे हुए जिस कारण श्री बद्रीप्रसाद जी ने अपने दोनों सुपुत्रों श्री प्रकाशचन्द्र जी एवं श्री रामप्रसाद जी को दिल्ली से अपने गांव रिण्ढाणा-बणवासा भेज दिया था। वाचस्पति गुरुदेव के दिल्ली प्रवेश के पश्चात् उन्हें वापस बुला लिया। वाचस्पति गुरुदेव जनता जनार्दन के बीच ज्यादा घिरे रहते अतः उन दोनों किशोर बालकों को गुरुदेव को सौंपते हुए फरमाने लगे– "सुदर्शन जी! इन दोनों का जीवन निर्माण करो, वैराग्य भाव भरने के साथ-2 धार्मिक अध्ययन भी करवाना है।" गुरुदेव ने भी उस आज्ञा का अक्षरशः पालन किया। दोनों के अध्यापन के साथ-2 गुरुदेव का स्वयं का अध्ययन भी निर्बाध चलता रहा। कई बार आधी-2 रात को भी जागकर स्वाध्याय करते। चांदनी रात में नए श्लोक एवं गाथाएं याद करते। इस प्रकार संस्कृत व्याकरण, न्याय, छंद, काव्य, साहित्य का अध्ययन निरंतर हो रहा था।

सन् 1944 में बिहार के सुप्रसिद्ध संस्कृत प्राध्यापक श्री शुकदेव

अगर बड़ों को गुस्सा दिला रहे हो तो समझो अपने ही पुण्य का क्षय कर रहे हो।
—गुरु सुदर्शन

जी पाठक ने गुरुदेव को पढ़ाया। उन्होंने गुरुदेव को संस्कृत व्याकरण व न्याय का तलस्पर्शी ज्ञान दिया। जो अध्ययन सामान्यतया चार वर्षों में पूर्ण होता है उसे गुरुदेव ने एक ही वर्ष में पूर्ण कर दिया। पंडित जी द्वारा दिया गया सारा काम गुरुदेव पूर्ण रूपेण करते, कभी शिकायत का मौका नहीं दिया।

अब तक गुरुदेव ने लगभग 3 वर्षों में ही संस्कृत की लघुसिद्धांत कौमुदी, सिद्धांत कौमुदी, अमरकोष, भट्टिकाव्य, तर्क संग्रह, न्याय मुक्तावली, दशवैकालिक, नन्दी, उत्तराध्ययन, आचारांग सूत्र का प्रथम श्रुतस्कंध, सुखविपाक, अनुत्तरोववाई एवं अन्य कई ग्रंथ अर्थ सहित कण्ठस्थ कर लिए तथा उनको चितारने की भी पूर्ण व्यवस्था बनाई। बाद में जब उन्हें चश्मा लेना पड़ा तो इस आशंका से कि भविष्य में नेत्र ज्योति ही मंद न हो जाए इसलिए सारा अंतकृतद्शांग सूत्र भी याद कर लिया ताकि पर्यूषण पर्वों में सुनाया जा सके। गुरुदेव की स्मरण शक्ति अपने आप में बेजोड़ थी।

उसी वर्ष आचार्य प्रवर श्री कांशीराम जी म. बम्बई आदि विचरण करके दिल्ली पधारे तो वाचस्पति गुरुदेव के नेतृत्व में उनका शाहाना स्वागत हुआ। आचार्य श्री जी का बलिष्ठ शरीर उस समय पूरी तरह झटक गया था। उस दिव्य पुरूष की एक झलक पाने को सैकड़ों साधु-साध्वी लालायित थे। जब वे बिरला मंदिर से सदर बाजार पधारे उस मौके उनकी डोली उठाने का सौभाग्य गुरुदेव को भी मिला। आचार्य श्री जी वाचस्पति गुरुदेव के संयमनिष्ठ, तपोमय, बेलाग, बेखौफ, आदर्श व्यक्तित्व से प्रभावित हुए और फरमाने लगे– "मेरे बाद पंजाब के आचार्य पद की बागडोर आप संभालें या अपने शिष्य सुदर्शन मुनि को ये दायित्व सौंपें।" वाचस्पति गुरुदेव ने विनम्रतापूर्वक दोनों ही बातों से इंकार कर दिया। इतनी लघु दीक्षा पर्याय में ही आचार्य श्री जी ने गुरुदेव की क्षमताओं को परख लिया था।

> जैसे गला हुआ पान का एक पत्ता सबको खराब कर देता है।
> ऐसे ही एक दोष भी आत्म पतन का कारण बन सकता है। –गुरु सुदर्शन

वाचस्पति गुरुदेव का सन् 1944 का चातुर्मास सदर बाजार दिल्ली में था। गुरुदेव का उस वर्ष का चातुर्मास श्री फूलचन्द जी म., श्री मूलचंद जी म. एवं बाबा श्री जग्गूमल जी म. की सेवा में यू.पी. के बड़ौत नगर में हुआ।

दुआएँ इकट्ठी करने में लगा हूँ मैं,
सुना है दौलतें और शोहरतें साथ नहीं जाती ॥

तर्ज– तेरे चेहरे से नज़र नहीं हटती...

श्रद्धा भक्ति से गुणगान गायें, श्री जग्गूमल जी म. के,
श्री चरणों में शीश झुकाएँ, श्री जग्गूमल जी म. के ॥

1. *जन्म से ही मुनियों की, सेवा में लीन थे,*
गृहस्थ धर्म साधना में, परम प्रवीण थे,
भाव ऊँचे कहाँ तक सुनाएँ...।

2. *गृह भार छोड़ा लिया, संयम का भार था,*
वृद्धावस्था में ठाना, साहस अपार था,
धैर्य स्थैर्य आदि गुण अपनाएं...।

3. *वाचस्पति गुरु जी के, शिष्य वे प्रथम थे,*
त्यागी वैरागी सरल, आत्मा परम थे,
तप और जप से कुछ सीख पाएं...।

4. *संयम शुद्ध लिया, शुद्धतर था पाला,*
मिट्टी से स्वर्ण जैसा, सार निकाला,
गुण रत्नों को कैसे भुलाएं...।

दौलत पाकर विरली ही आत्माएं टिकी रहती हैं वर्ना दौ+लत यानि दो ऐब तो अवश्य आ ही जाते हैं – अहंकार व कुव्यसन। –गुरु सुदर्शन

3. मिले सहयोगी गुरुभ्राता

18 जनवरी 1945 को नारनौल में 'मनोहर सम्प्रदाय' के आचार्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी म. के सान्निध्य में दो दीक्षाओं का आयोजन रखा गया था। वाचस्पति गुरुदेव भी अपने स्नेह संबंधों के कारण मुनि परिवार सहित वहां उपस्थित थे। श्री बद्रीप्रसाद जी इस अवसर को बिल्कुल सहज एवं निर्दोष मानकर अपने दोनों होनहार और बुद्धि सम्पन्न सुपुत्रों सहित नारनौल पहुँच गए। उसी समय यू.पी. के सिरसली गांव के बारहव्रती श्रावक श्री रामचन्द्र जी भी दीक्षा की भावना लेकर वाचस्पति गुरुदेव के चरणों में पहुंचे हुए थे। इस प्रकार 18 जनवरी 1945 को वाचस्पति गुरुदेव के चरणों में चार दीक्षाएं संपन्न हो गईं। गुरुदेव जी म. को इस अवसर पर सर्वाधिक प्रसन्नता हुई क्योंकि उस मौके पर गुरुदेव को श्री बद्रीप्रसाद जी म. के रूप में पितृ-तुल्य गुरु भ्राता मिले और दोनों सुपुत्रों के रूप में अपने सहयात्री गुरु भाई मिले। दीक्षा की प्रथम रात्रि में ही गुरुदेव ने श्री बद्रीप्रसाद जी म. (तपस्वी जी) से उनको आयु ज्येष्ठ व अनुभवी मानते हुए निवेदन किया की– "आप मेरे पिता समान हैं और आज से आपके दो नहीं 3 बेटे हैं। मैं आपकी हर भावना का ध्यान रखूंगा।" इतिहास गवाह है गुरुदेव ने तपस्वी जी म. की हर भावना पर फूल चढ़ाए। यह भी संघ का गौरवपूर्ण अध्याय रहा कि तपस्वी जी म. ने भी गुरुदेव की किसी इच्छा को नहीं टाला। गुरुदेव के मन में श्री प्रकाशचन्द्र जी म. एवं श्री रामप्रसाद जी म. दोनों के प्रति आत्मीयता इतनी गहरी, सच्ची एवं स्थायी थी कि कहीं भी कृत्रिमता का अंश नहीं उभरा। इन दोनों ने अपने गुरु भ्राता को सहजभाव से गुरु रूप में ही स्वीकार कर लिया।

सन् 1945 का चातुर्मास वाचस्पति गुरुदेव का हांसी में हुआ। एक बार शाम को वाचस्पति गुरुदेव बाहर दिशा से स्थानक लौटे। गुरुदेव ने

> श्रावक साधु के वेष को पूजता है पर वेष की इज्जत साधु को रखनी है।
> –गुरु सुदर्शन

स्वागत किया। पैर पौंछे और पाटिए तक साथ आए। वाचस्पति गुरुदेव ने एकदम लोक भाषा में आदेश फरमाया– “सुदर्शन मुनि! अब से तुम भी कमाओ और खाओ!” गुरुदेव बात की गहराई को नहीं समझे तो वाचस्पति गुरुदेव ने ही फरमाया– “अब तुम प्रवचन करना प्रारंभ कर दो ताकि समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त हो।” गुरुदेव ने प्रवचन के क्षेत्र में आने के लिए तहत् कह दिया। इस बात से वाचस्पति गुरुदेव को आंतरिक खुशी मिली। फरमाने लगे– सुदर्शन, तूने एक बार भी इंकार नहीं किया अतः तुझे कथा में पूर्ण सफलता मिलेगी।” उसी वक्त वाचस्पति गुरुदेव ने उनको व्याख्यान के संबंध में कुछ आवश्यक निर्देश दिए जो गुरुदेव के लिए जीवन भर ब्रह्मवाक्यवत् पालनीय रहे। यथा– 1. शास्त्र का पन्ना हाथ में रखना इससे उत्सूत्र प्ररूपणा नहीं होगी। 2. कोई वचन शास्त्र विरुद्ध निकल जाए तो वापस लेने में संकोच नहीं करना। तुरन्त ‘मिच्छामि दुक्कडं’ बोलना। 3. गृहस्थों को कोई कठोर शब्द नहीं कहना। 4. कोई अभद्र मजाक नहीं करना।

गुरुदेव ने प्रवचन सामग्री का भी संग्रह खूब किया। आवाज भी बड़ी सरल, स्पष्ट, बुलंद, गंभीर एवं सुरीली थी। प्रवचन में श्री तपस्वी जी म. साथ जाते थे।

गले पे उनके थी खुदा की बरकत,
जब बोलते तो रोशनी सी होती थी ॥

उस युग में वाचस्पति गुरुदेव के प्रवचनों की सर्वत्र धूम थी। हांसी चातुर्मास में संवत्सरी के दिन हजारों श्रोताओं के बीच निरंतर 8 घंटे का प्रवचन भी अद्‌भुत एवं अभूतपूर्व था। बाहर बादल बरसते रहे एवं हॉल में वाचस्पति गुरुदेव बरसते रहे। उस चातुर्मास में ये भी कमाल था कि शुरू में जब गुरुदेव प्रवचन फरमाते तो कुल 3-4 श्रावक ही सामायिक किए होते थे। भीड़ धीरे-2 बढ़ती थी अतः कथा का तार पूरा नहीं बंध पाता। जब वाचस्पति गुरुदेव पधारते तो सारा हॉल भर जाता

ऋषियों, व्यापारियों, समाज एवं स्त्रियों में ईर्ष्या की अग्नि बढ़ती ही जा रही है।
—गुरु सुदर्शन

था। इस तरह थोड़े श्रोताओं को देखकर गुरुदेव का हौंसला कमजोर पड़ जाता। एक दिन उन्होंने वाचस्पति गुरुदेव से स्थिति का जिक्र किया तो वाचस्पति गुरुदेव फरमाने लगे– "क्यों फिक्र करता है? आज 3 श्रावक आते हैं। वो भी समय आएगा जब 3-3 हजार श्रोता आया करेंगे।

आशीर्वाद रूप वचन सुनकर गुरुदेव का मन खिल गया। प्रवचन क्षेत्र में गुरुदेव ने जितनी बुलंदियों को छुआ, जनता को आकर्षित किया वो अपने आप में एक मिसाल है। हजारों की भीड़ में भी जब गुरुदेव प्रवचन शुरू करते तो सर्व प्रथम अपने गुरुदेव की स्तुति रूप मंगलाचरण करते तो यों लगता मानों ये कह रहे हों– "गुरुदेव! ये सब भीड़ें तो आपकी ही देन हैं वर्ना मेरे पास तो 3-4 श्रावक ही थे।" हांसी चातुर्मास के दौरान एक दिन वाचस्पति गुरुदेव पूछने लगे– "जितनी सामग्री मैं चार दिन में सुनाता हूँ, तुम एक ही दिन में सुना देते हो, इतनी सामग्री कहां से आएगी?" गुरुदेव ने चरणों पर हाथ लगा कर कहा– "गुरुदेव! इन चरणों से आएगी।" उस मौके वाचस्पति गुरुदेव के रोम-2 से आशीर्वाद बरसा।

सन् 1946 में गुरुदेव का चातुर्मास पूज्य श्री मूलचन्द जी म., स्वामी श्री फूलचन्द जी म. तथा बाबा श्री जग्गूमल जी म. की सेवा में अहमदगढ़ मण्डी (पंजाब) के लिए निश्चित हुआ परंतु कारणवश दोनों बड़े संतों को मूनक बुलवा लिया गया। वहां रह गई बाबा-पोते की अमर जोड़ी।

बस तुम हाथ थामे रहना!
मैं कभी नहीं पूछूंगा जाना कहां है?

वाचस्पति गुरुदेव अपने उदीयमान शिष्य की क्षमताओं के प्रति पूर्णतः आश्वस्त थे कि चातुर्मास में किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी और हुआ भी वही। चातुर्मास का सारा भार गुरुदेव के ऊपर था। प्रवचन को रुचिपूर्ण बनाने के लिए गुरुदेव ने "शीलश्री" कथानक को काव्यबद्ध किया। हिंदी एवं उर्दू की शायरी का पर्याप्त प्रयोग करना गुरुदेव के प्रवचन का स्थायी स्तंभ था। इस प्रकार गुरुदेव ने अपने पहले ही

राम राज्य में मर्यादा थी एवं कृष्ण महाराज नीति से काम लेते थे पर अब न मर्यादा है न नीति। अब तो समाज में अराजकता है। –गुरु सुदर्शन

चातुर्मास में धूम मचा दी। सभी श्रोता उनमें एक उदीयमान-देदीप्यमान नक्षत्र की छवि देखने लगे। अनेकानेक प्रसंगों पर उनकी स्तुतियां और प्रशस्तियां पढ़ी गई। गुरुदेव ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। नए कथानक, नए भजन, नई-2 उपमाएं गुरुदेव के प्रवचन की विलक्षणता थी। बाबा जी म. स्वयं गुरुदेव के साथ पाट पर विराजते और ध्यान रखते।

चातुर्मास की सफलता के बाद विदाई के दिन श्रावक जंगीरीमल जी ने अपना वक्तव्य देते हुए कुछ इस तरह कहा— "ए तां साड्डी छात्ती सी, जो तुहाड्डा प्रवचन झेल गए" (ये तो हमारी ही छाती थी जो आपका प्रवचन झेल गए) ये सुनकर गुरुदेव तनिक घबरा से गए एवं अपने बाबा जी म. की ओर देखने लगे। तभी श्रावक जी ने बात पूरी करते हुए आगे कहा— "जे साड्डी थां कोई होर हुंदा, तां साधु बनके पट्टे उत्ते हुंदा" (अगर हमारी जगह कोई ओर होता हो दीक्षा लेकर पट्टे पर बैठा होता) ये सुनकर गुरुदेव की जान में जान आई।

चातुर्मास की सफलता के बाद वाचस्पति गुरुदेव ने एक और कृपा बरसाई। एक दिन फरमाने लगे— "इस साल तुझे कल्पवृक्ष की छाया में रहना है यानि संघ के आराध्य गणावच्छेदक श्री बनवारीलाल जी म. की सेवा में मूनक रहना है। उनकी कृपा प्राप्त करनी है। उनकी सेवा कभी खाली नहीं जाती।" अपने जीवन काल के 76 वर्षों में "स्वर्णिम काल" के रूप में उन्होंने 1947 का वर्ष ही उल्लिखित किया। उस समय श्री बनवारीलाल जी म. की नेत्र शक्ति क्षीण हो गई थी अतः एक संत की सतत आवश्यकता उन्हें हर वक्त रहती थी। तपस्वी श्री फकीरचंद जी म. एवं बाबा जी म. की सेवा का भी सारा भार गुरुदेव ही वहन करते थे। 3 समय आहार लाना, पानी लाना, प्रवचन करना, स्वाध्याय सुनाना आदि हर कार्य व्यवस्थित एवं नियमित होता था। बहुधा गुरुदेव फरमाते थे— "मैं मशीन की तरह काम करता था"। उन दिनों एक बार गुरुदेव को बुखार हो गया। बड़ों को तकलीफ न हो अतः बताया भी नहीं। यदि

> शुभ चिंतन से दूसरे के अशुभ चिंतन को बदला जा सकता है।
>
> —गुरु सुदर्शन

दवाई लेते तो किससे पूछकर? शाम तक सारा बदन टूटने लगा। जब शाम को श्री बनवारीलाल जी म. को निवृत्ति हेतु हाथ का सहारा देकर ले जाने लगे तो पता चला कि हाथ गरम है। पूछा, क्या बात है? तो बताया कि बुखार-सा है। बोले– बताया क्यों नहीं? गुरुदेव बोले, बड़ों को तकलीफ न हो इसलिए नहीं बताया। श्री बनवारीलाल जी म. ने कहा कोई बात नहीं अब चादर ओढ़ कर लेट जाओ। फिर हाथ फेरा, मांगलिक सुनाई। गुरुदेव लेट गए। जोरदार पसीना आया और ज्वर उतर गया। बड़ों की कृपा बिमारी पर भी भारी पड़ी।

मूनक क्षेत्र पूर्वजों की तपोभूमि रही है। ओसवाल एवं अग्रवाल जैनों के काफी घर होने के बावजूद जैन स्थानक नहीं था। आपसी रंजिशें समाज को आगे बढ़ने नहीं देती थी। बड़े-2 संत भी मामला सुलझा नहीं पाए थे। गुरुदेव की प्रवचन कला, व्यवहार कुशलता, विनम्रता, ओजस्विता, कर्मठता और उत्साह शक्ति ने सभी को झिंझोड़ कर रख दिया। गुरुदेव की निष्पक्ष व दूरदृष्टि से लोगों की विचारधारा में परिवर्तन आने लगा। अतः वर्षों की रुकावटें दूर हो गई। सभी हैरान थे कि जो कार्य बड़े-2 धुरन्धर मुनिराज नहीं कर सके, वो पंचवर्षीय दीक्षा पर्याय के इस मुनि ने कर दिखाया। तपस्वी श्री फकीर चंद जी म. उस मौके मेहरबान होकर फरमाने लगे– "सुदर्शन मुनि के क्या कहने, ये तो एक दिन आचार्य भी बन सकता है।" मूनक के मौलिक परिवर्तन से संतुष्ट होकर वाचस्पति गुरुदेव ने चातुर्मासोपरांत कहा था कि– "सुदर्शन! जितनी छोटी उम्र में तेरा पुण्य उदय में आया है इतना मैंने कहीं और नहीं देखा है।"

गुरुदेव की संयम मर्यादा के प्रति जागरुकता का एक प्रसंग मूनक के ही प्रधान जगदीश राय जी सुनाया करते थे कि मैं बाजार से सब्जी का थैला ला रहा था। सामने से तपस्वी श्री फकीरचन्द्र जी म. एवं गुरुदेव आ रहे थे। मैंने वंदना की। तपस्वी जी ने मेरी वंदना ले ली, पर गुरुदेव चुपचाप आगे बढ़ गए। जब तपस्वी जी म. ने पूछा कि "श्रावक जगदीश राय वंदना कर रहा था तूने ध्यान नहीं दिया।" तो गुरुदेव ने निवेदन

यदि सामायिक नहीं करते तो समझो अभी भगवान् का धर्म नहीं फरसा।
—गुरु सुदर्शन

किया "उस समय श्रावक जी के हाथ में कच्ची सब्जी थी।" तब तपस्वी जी म. ने सरलता पूर्वक कहा– "ये तो मेरे से ही गलती हो गई।"

मूनक की समाज अपनी ही समाज के एक युवक मंगूमल की प्रवृत्तियों से शर्मिंदा रहती थी। व्यंग की भाषा में उसे "सर्वगुणसंपन्न" कहते थे। गुरुदेव उसके घर पहुंचे। उसे स्थानक लाए। प्रवचन व सामायिक में बढ़ाया, सब कुव्यसन छुड़वाए। वही श्रावक प्रतिक्रमणधारी आदरणीय श्रावक बन गया।

एक रोज गुरुदेव ने श्री बनवारीलाल जी म. से पूछा– "आप मेरी सेवा से संतुष्ट तो हो ना? कोई कमी हो तो फरमा देना। मैं तुरंत सुधार लूंगा। श्री बनवारीलाल जी म. भाव विभोर होकर फरमाने लगे– "तुझसे मेरी आत्मा प्रसन्न है, ठण्डी है। मेरा मन गवाही देता है कि तेरे हाथों अनेक भव्य आत्माओं का निर्माण होगा।" गुरुदेव भी इस आशीर्वादमय अनमोल थाती को पाकर धन्य हो गए।

सन् 1946 के अंत में एक दिन गुरुदेव ने श्री बनवारीलाल जी म. को निवेदन किया कि "मुझे रात को स्वप्न आया है कि पश्चिम दिशा में जैसे भयंकर आग लगी हुई है" श्री बनवारीलाल जी म. फरमाने लगे– लगता है देश में झगड़े होंगे और खून बहने की संभावना है। सन् 1947 में देश की आजादी नजदीक दिखने लगी परंतु देशवासियों को उसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी। सर्वत्र हिंसा का नंगा नाच हुआ। उन दिनों गुरुदेव प्रवचनों के माध्यम से शांति और सद्भाव का उपदेश फरमाते और कहते, "मूनक वालों इस धरती पर शांति का देवता बैठा है। किसी का बाल भी बांका नहीं होगा। तुम भी शांति रखना। मूनक प्रायः शांत रहा और हिंसा से मुक्त रहा। वहां के श्रावक लाला विलायतीराम जी जैन जो RSS के मुख्य कार्यकर्त्ता थे, उनकी ड्यूटी लगाई कि यहां के प्रत्येक मुसलमान की रक्षा तुम्हें करनी है। एक मुस्लिम रांगड़ों के अमीर परिवार पर कुछ लोगों की निगाह थी पर विलायतीराम जी के प्रभाव के कारण कोई गलत हरकत न हुई और वो परिवार सुरक्षित पाकिस्तान पहुँच गया। वहां पहुंचकर हसन मुहम्मद का

> युवा वर्ग को व्यापार में लगाने से पूर्व धर्म व्यापार (सामायिक) में लगाना चाहिए।
> –गुरु सुदर्शन

पत्र विलायतीराम जी के पास आया जिसमें लिखा था, उस जैन पीर की मेहरबानी से और आपकी मदद से हम जान माल सहित सुरक्षित ठिकाने पहुँच गए हैं, उन्हें हमारा सलाम कहना।" मूनक वालों के मुख से गुरुदेव की यशोगाथाएं सुन-2 कर वाचस्पति गुरुदेव हर्ष विभोर हो जाते, रोम-2 पुलकित हो जाता।

गुरुदेव का सन् 1948 का चातुर्मास सुनाम क्षेत्र में स्वीकृत हुआ। तपस्वी श्री नेकचन्द जी म., बाबा श्री जग्गूमल जी म., श्री रामेश्वर दास जी म. एवं गुरुदेव जी म. के लिए सुनाम क्षेत्र बिल्कुल नया था। वाचस्पति गुरुदेव संगरूर क्षेत्र को अधिमान देते थे। वहां कई चातुर्मास भी हुए। अब तक सुनाम गुरु परंपरा से जुड़ा हुआ नहीं था। गुरुदेव के चातुर्मास में उस क्षेत्र का यश, गौरव और वर्चस्व बढ़ा। चातुर्मास का उत्साह क्रांति में परिवर्तित हो गया। जैनों के अलावा अजैनों की जो श्रद्धाएं बनी वो पूरे इलाके के लिए अभूतपूर्व थी एवं अश्रुतपूर्व भी। गुरुदेव दो समय प्रवचन करते, हर कोई दीवाना हो रहा था। श्वेतांबर मूर्तिपूजक आचार्य श्री नित्यानंद जी म. की माता जी की उस समय तक शादी नहीं हुई थी। प्रति दिन प्रवचनों में आती व वैराग्यपूर्ण प्रवचन सुनकर कहा करती– "अगर मैं लड़का होती तो आपके चरणों में दीक्षा लेती।" (बाद में उन्होंने साध्वी दीक्षा ली और सन् 1995 में लुधियाना में गुरुदेव के दर्शन भी किए)। सुनाम चातुर्मास में जैन समाज का जो रूप निखरा उससे संगरूर चातुर्मास हेतु विराजित वाचस्पति गुरुदेव भी अति प्रभावित एवं प्रमुदित हुए।

गुरुदेव का सन् 1949 का चातुर्मास वयोवृद्ध श्री अमीलाल जी म., तपस्वी श्री नेकचन्द जी म. सरीखे संतों की सेवा में जींद निर्धारित हुआ। इस चातुर्मास में गुरुदेव ने नौ दिन का तप भी किया जिससे श्री संघ में भी खूब लहर आई और घर-2 में तप हुआ।

जरूर कोई कशिश थी क़लाम में तेरे,
वरना हर कोई यूं तलबगार न होता ॥

समिति - गुप्ति की साधना - आराधना करना उत्कृष्ट साधना करने के समान है।
–गुरु सुदर्शन

4. दिल्ली में दी दस्तक

पूज्यपाद बाबा श्री जग्गूमल जी म. की शारीरिक क्षमता धीरे-2 विहारों के लिए क्षीण होती जा रही थी अतः बड़ों का विचार बना कि इनके सुदीर्घ वास के लिए दिल्ली बारादरी (चांदनी चौंक) उपयुक्त रहेगी। 26 जनवरी 1950 को श्री बाबा जी म. को लेकर गुरुदेव दिल्ली पधार गए और सदर बाजार से चाँदनी चौंक प्रवेश किया। उन्हीं दिनों राजस्थान के आचार्य प्रवर श्री गणेशीलाल जी म. का भी दिल्ली पर्दापण हो रहा था। पूज्य गुरुदेव ने सकल समाज को संगठित करके आचार्य श्री जी का भव्य प्रवेश कराया। गुरुदेव के विनीत, सेवाभावी और गुणग्राही स्वभाव ने आचार्य श्री जी को भी प्रभावित किया। स्वास्थ्य कारणों से आचार्य श्री जी को वहां एक वर्ष तक विराजना पड़ा। गुरुदेव तो विराजित थे ही। आचार्य श्री जी गुरुदेव को अपने मुनियों के समान प्यार और दुलार देते थे। गुरुदेव जी म. भी उनके चरणों में घंटों बैठे रहते। एक दिन आचार्य श्री ने गुरुदेव से अपने मुनियों के विषय में पूछा तो गुरुदेव ने निष्पक्ष भाव से अर्ज किया कि आपके श्री नानालाल जी म. बहुत उत्तम मुनिराज हैं। ये आपके धर्मवंश को आगे बढाएंगे। आचार्य श्री जी गुरुदेव के इस निष्कर्ष से परम संतुष्ट हुए। इतिहास गवाह है कि आचार्य श्री जी के धर्मसंघ को पूज्य श्री नानालाल जी म. ने खूब दिपाया व आगे बढ़ाया।

राजस्थान से आने वाले श्रावकों को आचार्य श्री जी कहते— "इनका व्याख्यान सुनो क्योंकि 'मेरो व्याख्यान जूनो (पुराना) है, इनको नवो (नया) है।" गुरुदेव ने बारादरी स्थित 'महावीर जैन लाइब्रेरी' की अधिकतम पुस्तकों को पढ़ा। तब तक तो वे जन संपर्क से बहुत दूर थे। उस वर्ष संवत्सरी पर अद्भुत रंग था। अगले दिन भी वर्षा होती रही। अतः चौविहार बेला हो गया। आचार्य श्री जी के विहार के बाद गुरुदेव जी म. अपने बाबा जी म. के साथ कोल्हापुर रोड पधारे। सन् 1951 का

साधु को ढिलाई में सहयोग देने वाले महापापी हैं।

—गुरु सुदर्शन

चातुर्मास वहीं हुआ। श्री नानालाल जी म. भी रुग्ण अवस्था के कारण कोल्हापुर रोड़ ही विराजित रहे। इस तरह, दोनों परम्पराओं का घनिष्ठ स्नेह पनपता रहा। प्रवचन आदि का सारा दायित्व गुरुदेव ही वहन करते थे। एक दिन अचानक बाबा जी म. को 105 डिग्री बुखार हो गया। दवाई का त्याग था ही। शरीर एकदम निढाल हुआ तो गुरुदेव जी म. अनेक कुशंकाओं से ग्रस्त हो गए। आंखों में आंसू भर लाए क्योंकि वाचस्पति गुरुदेव सुदूर पंजाब में थे। बाबा जी म. ने देखा तो बोले– "घबराता क्यों है? जा लिकड़ा (थर्मामीटर) ले आ। चार बजे देख लेना बुखार ठीक हो जाएगा।" गुरुदेव जी म. क्या बोलते? तीन बजे अचानक बाबा जी म. को जोरदार पसीना आया और चार बजे तक बुखार उतर गया। बाबा जी म. फिर बैठे और बोले– "सुदर्शन! मैं अभी कहीं नहीं जाता, तेरे चेले बनाकर ही जाऊंगा।" गुरुदेव जी म. को अपने बाबा जी के वचनों पर पूर्ण श्रद्धा थी अतः आश्वस्त हो गए।

इस चातुर्मास के अंत में गुरुदेव को अपैण्डिक्स की तकलीफ हुई। शल्य चिकित्सा के अलावा और कोई चारा नहीं था। जब वाचस्पति गुरुदेव ने सेवा के लिए भण्डारी श्री बलवंतराय जी म. को नियुक्त किया तो सबने आश्चर्य माना। श्री भंडारी जी म. वर्षों से वाचस्पति गुरुदेव के साथ ही उनकी हर इच्छा आवश्यकता का ध्यान रख रहे थे। अब तो उनका वहां रहना इसलिए भी परमावश्यक था क्योंकि वाचस्पति गुरुदेव स्थानकवासी मुनियों को एक सूत्र में आबद्ध करने हेतु 1952 के सादड़ी (राजस्थान) सम्मेलन में पंजाब के प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में जा रहे थे। समय अल्प और सफर ज्यादा था अतः ऐसे में एक समर्थ सेवा-पारायण मुनिराज तो होना ही चाहिए पर युवा मुनि का स्वास्थ्य बाह्य प्रभावों से प्रभावित ना हो ये ध्यान रखना भी जरूरी था। अतः अपने प्रिय सुशिष्य की सेवा के लिए वाचस्पति गुरुदेव ने अपने प्रिय सेवाभावी मुनिराज को छोड़ा। निरंतर तीन वर्षों तक श्री भंडारी जी म. पूज्य गुरुदेव पर अपनी सुखद छाया बरसाते रहे।

> सर्वप्रथम अपने ज्ञान अनुसार अपनी भूल पकड़ो, फिर गुरु के ज्ञान से और फिर दुनिया के कहने से। –गुरु सुदर्शन

सन् 1952 का चातुर्मास पुनः चाँदनी चौंक में ही हुआ। इस बार प्रवचन की कमान योगीराज श्री राम जी लाल जी म. के हाथों में रही। श्री योगीराज जी म. की वात्सल्य पूर्ण छाया तले गुरुदेव जी म. पूर्णतः प्रसन्न व समाधि में रहे। सन् 1952 से 1958 तक निरंतर 8 वर्ष वहीं बाबा जी म. की सेवा में स्थिरवासी रहे। उस मौके वहां पर धर्म श्रद्धा का बीज वपन गुरुदेव के हाथों हुआ। युवा पीढ़ी के जीवन को दिशा मिली। धर्म, धर्मगुरु और धर्मस्थानक से उनको जोड़ा। जो उत्साह शक्ति उनमें भरी वह अद्‌भुत थी। गुरुदेव ने स्वयं अपने ज्ञान-क्षितिज का भी खूब विस्तार किया। वहां स्थित 'महावीर जैन लाइब्रेरी' की प्रायः हर उपयोगी पुस्तक पढ़ डाली। महान् शास्त्रज्ञ श्रावक श्री मोहनलाल जी गंधी से गुरुदेव ने तीस आगमों का (चन्द्र प्रज्ञप्ति, सूर्य प्रज्ञप्ति को छोड़) कई बार पारायण किया। सन् 1953 के चातुर्मास में श्री तपस्वी जी म., श्री सेठ जी म. एवं भगवन् श्री जी ने भी श्रावक जी से आगमों की वाचना ली। श्रावक जी को पढ़ाते-2 कई बार नींद की झपकी भी आ जाती थी पर उनका आगमों पर इतना अधिकार था कि उस स्थिति में भी शास्त्र पाठ अस्खलित रूप से चलता रहता था। गुरुदेव ने जीवनपर्यंत श्रावक जी का उपकार माना।

चाँदनी चौंक के बड़े-2 श्रावक गुरुदेव के प्रवचनों से प्रभावित थे। गुरुदेव बारादरी में कोई भी आगन्तुक संत आते तो कथा उन्हीं को सौंपते और कहते कि "हम तो यहां हैं ही, आप कथा फरमाएं।" सब ओर गुरुदेव के प्रवचनों की धूम थी। बारादरी के 8-9 वर्षीय प्रवास के दौरान गुरुदेव ने प्रायः प्रतिदिन ही प्रवचन किया और प्रतिदिन ही नया विषय, नई सामग्री, नई कहानी, नई कविताएं सुनाई। सब का आधार आगम मूलक होता और श्रोता सुनकर चकित हो जाते थे। यदि कभी गुरुदेव को नजला-जुकाम हो जाता, गले पर दबाव पड़ जाता तो भी प्रवचन करने की कोशिश रहती। श्री बाबा जी म. का भी आग्रह रहता था कि "प्रवचन सुनाओ भले ही आगम की दस गाथा सुनाकर आ जाना।" संघ

> शास्त्र तो जड़ हैं इन्हें प्राणवान् गुरु बनाते हैं यदि दोनों नहीं संभाल पाए तो कुदरत ही ठीक करेगी।
> —गुरु सुदर्शन

की सेवा का अनमोल अवसर नहीं खोना चाहिए। सन् 1991 में गुरुदेव ने अपनी लिखी सामग्री की 20-25 डायरियां फड़वा कर परठवा दी कि बाद में मेरे नाम से कोई प्रकाशित न करवा दे।

गुरुदेव का चिंतन और आचरण बड़ा विलक्षण था। प्रवचन कला में सिद्ध हस्त और ख्याति प्राप्त होने के बावजूद भी गुरुदेव को इस उपलब्धि पर कोई अभिमान नहीं था। उनमें निरंतर विकास की आशा रहती अतः उन्होंने चाँदनी चौंक में शुरू से ही वहां के कुछ गंभीर, सुविज्ञ एवं हितैषी श्रावकों की ड्यूटी लगा रखी थी कि कथा विषयक किसी भी प्रकार का सुझाव हो तो निस्संकोच कह देना ताकि उसका परिष्कार हो सके। गुरुदेव प्रवचन को साध्य नहीं बल्कि शासन-प्रभावना का साधन मात्र मानते थे। प्रवचन सुनाते समय भी यही भाव रखते कि "मैं अपने को सुना रहा हूँ, श्रावक तो निमित्त मात्र हैं।" विनम्रता का सूचक ये वाक्य "गुरुदेवों की कृपा से जो मुझे मिला आपके समक्ष रखूंगा" भी गुरुदेव ने ही प्रारंभ किया। गुरुदेव ने दिल्ली में गांधी साहित्य का भी काफी अध्ययन किया। जिसका प्रभाव अन्त तक उनके प्रवचनों में झलकता रहा।

यद्यपि गुरुदेव के प्रवचनों का विश्लेषण या मूल्यांकन करना सर्वथा असम्भव है, क्योंकि वे अपने आप में बेजोड़ थे, फिर भी कुछ बिन्दुओं पर गौर करने से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं–

1. उनकी वाणी स्पष्ट और तेज थी। कितनी भी भीड़ क्यों न हो, अन्त तक एक-2 अक्षर साफ सनाई देता था। 2. विषय बहुत सरल और सर्वजनग्राह्य होता था। कोई भी प्रसंग हो, उसमें अपनी आत्मीयता उंडेल देते थे। 3. समाज-जागरण के अनमोल सूत्र प्रस्तुत करते थे। 4. भाषा शब्दाडम्बर से रहित, हृदय को छूने वाली होती थी। 5. विभिन्न दिवसों सामायिक-दिवस, तपस्या-दिवस, बाल-दिवस, महिला-दिवस, मित्र-मिलन-दिवस आदि के आयोजनों द्वारा समाज में नई

> गोचरी कला के साथ-साथ मुनि को आत्म साधना की कला आनी भी जरूरी है।
> –गुरु सुदर्शन

चेतना का संचार करते थे। 6. सभी धर्मों के, विशेषकर रामायण के प्रसंग निष्पक्ष भाव से सुनाते थे। 7. हास्य रस का पुट भी बराबर डालते थे। सभी आयुवर्गों में शायद ही कोई श्रोता ऐसा हो, जिसका मन हास्यरस से न गुदगुदाता हो। 8. अपने व्यक्तिगत जीवन एवं पूज्य मुनिराजों के जीवन-प्रसंगों का प्रचुरता से उल्लेख करते थे। 9. भजन, दोहे, शेर आदि काव्य-विधाओं का सहारा लेते थे। सब श्रोता जब उनके पीछे-2 बोलते। तो अजीब सी लहर आ जाती थी। 10. सामाजिक रूढियों और कुरीतियों पर स्पष्ट और सारगर्भित चोट करते थे। 11. एक मूल कथा प्रारम्भ करके दस अवान्तर कथाएँ प्रक्षिप्त कर दें, तो भी मूल कथा को नहीं भूलते थे। प्रवचन के अतिरिक्त श्रोताओं के लिए आकर्षण का जो कारण बनता था, वह थी गुरुदेव की स्मरण-शक्ति। उनकी धर्म-सभा में जो भी व्यक्ति एक बार आ जाता था, उसका नाम एवं पूरा परिचय उन्हें सदा के लिए याद हो जाता था। इससे श्रावक-वर्ग का उनसे आत्मीयता-पूर्ण सम्बन्ध बन जाता था।

गुरुदेव के प्रवचनों से हजारों भव्य जनों के जीवन में मोड़ आया। सैंकड़ों का अन्तर्मन वैराग्यभाव से भावित हुआ तथा अनेकों ने संसार छोड़कर दीक्षा ग्रहण की। दिल्ली प्रवास में गुरुदेव को अपने गण के अतिरिक्त भारत भर के अन्य सम्प्रदायों के मुनियों के पावन दर्शन भी हुए। गुरुदेव सबकी विनय करते एवं सबके प्रति मधुर व्यवहार रखते थे। ऐसे महापुरुषों की श्रृंखला में आचार्य श्री गणेशीलाल जी म., श्री नानालाल जी म., आचार्य श्री हस्तीमल जी म., ज्योतिषाचार्य श्री कस्तुरचन्द्र जी म., मालव प्रान्तीय श्री विनय मुनि जी म., उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म. एवं तपस्वी श्री रोशनलाल जी म. प्रमुख थे। सदर बाजार में विराजित सरलात्मा श्री भागमल जी म. एवं पं. रत्न श्री त्रिलोकचन्द्र जी म. के दर्शन तो गुरुदेव बहुधा करते ही रहते थे। उनका लोच करने भी गुरुदेव ही जाया करते थे। गुरुदेव को लोच के लिए आया देखकर श्री त्रिलोकचन्द जी म. हंसकर कहते "हमारा नाई आ गया।" गुरुदेव

गोचरी कला हेतु राग द्वेष ना हो, रूप में ना उलझे एवं अनर्गल न बोले।
—गुरु सुदर्शन

दोनों हाथों से लोच करने में सिद्धस्थ थे। एक बार तो रात्रि में ही स्वयं अपना लोच किया। छह घण्टे लगे। मूर्तिपूजक आचार्य विजयेन्द्र सूरि जी के लोच करने भी गुरुदेव कई बार गए। इस तरह सभी गुरुदेव से प्रसन्न एवं प्रभावित होते थे।

जीवन के हर मोड़ पर गुरुदेव ने अपने संयम और गुरुजनों की संयम परंपरा का ध्यान रखा। श्री बाबा जी म. भी गुरुदेव का पूरा ख्याल रखते थे। चाँदनी चौंक का आबाल-वृद्ध इस तथ्य की सहर्ष गवाही देता है कि अपनी भरपूर जवानी की उम्र में भी गुरुदेव दिल्ली में लगातार 9 साल विराजे पर जल में कमल की तरह रहे, निर्लेप निसंग। **"जहा पोम्मं जले जायं णोवलिप्पइ वारिणा"** के मूर्तिमान उदाहरण थे गुरुदेव।

कोई नहीं लगा सका उनके कद का अंदाजा,
वो आसमां थे पर सर झुकाए रहते थे ॥

सन् 1953 में गुरुदेव को टाईफाइड बुखार हो गया। चातुर्मास का समय निकट था। बारिशें प्रारंभ हो गई थी। जींद विराजित तपस्वी श्री बद्रीप्रसाद जी म. को पधारने की विनति की गई। श्री तपस्वी जी म. का चातुर्मास कसून माना हुआ था परंतु सेवा के किसी भी अवसर से वे चूकते नहीं थे। गुरुदेव से तो उनकी गहरी आत्मीयता थी अतः किसी भी कष्ट की परवाह न करते हुए तीनों मुनिराज दिल्ली की ओर चल पड़े। कई रातें तो स्टेशनों पर ही काटीं और दिल्ली पहुँच कर सेवा की कमान संभाल ली और प्रवचन की कमान संभाली आगम रत्नाकर गुरुदेव श्री रामप्रसाद जी म. ने।

रोई शबनम गुल हंसा गुञ्चा खिला मेरे लिए,
जिससे जो कुछ बन सका, सबने किया मेरे लिए ॥

सन् 1953 में गुरुदेव के श्री चरणों में कई बालक वैराग्य भाव लेकर आए। गुरुदेव सब को धर्म शिक्षा देते। मुख्य रूप से गुरुदेव के चरणों

मां का प्यार कुएं के पानी सम स्वच्छ एवं निर्मल स्रोत है जबकि पिता का प्यार तालाबवत् है।
—गुरु सुदर्शन

में आने वाले श्री प्रकाशचन्द्र जी म., शास्त्री श्री पद्मचन्द्र जी म. एवं श्री शांतिमुनि जी म. थे। उनके साथ कई और बालक भी आए पर वे दीक्षा तक नहीं पहुँच पाए। श्री प्रकाशचन्द्र जी म. को अपनी माता श्रीमती चमेली देवी जी एवं पिता श्री पन्नालाल जी भंसाली से प्रोत्साहन मिला तो दीक्षा के भाव जागृत हुए। गुरु चरणों में इन्होंने हिन्दी की 'रत्न', 'प्रभाकर' तथा संस्कृत की 'विशारद' परीक्षा उत्तीर्ण की। इनके समकाल ही श्री पद्म मुनि जी म. का आगमन हुआ। जो गुरुदेव के चाचा मा. शामलाल जी जैन तथा श्रीमती कलावती जी के अंगजात थे। पूज्य गुरुदेव अपने गृह त्याग से पूर्व जाते-2 इनको चांदी का एक रुपया देकर गए थे। शायद वही आकर्षण इन्हें इधर खींच लाया था। श्री पद्मचन्द्र जी की बुद्धि बड़ी कुशाग्र थी। उन्होंने संस्कृत की 'शास्त्री' परीक्षा उत्तीर्ण की और भविष्य में 'श्री शास्त्री जी म.' के नाम से ही प्रसिद्ध हुए। श्री शांति मुनि जी म. नगूरां ग्राम के समृद्ध सेठ श्री सरूपचन्द्र जैन के सुपुत्र थे। ये भी गुरुदेव के चरणों में लगभग सन् 1956 में आए और ज्ञान ध्यान गुरु सेवा और आराधना से स्वयं को योग्य बनाते रहे।

सन् 1956 में चाँदनी चौंक में मालव केसरी उपा. श्री कस्तुरचन्द्र जी म. पधारे। वे ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान् थे। गुरुदेव के जीवन से प्रभावित होकर एक बार इन्होंने गुरुदेव को ज्योतिष संबंधी सम्पूर्ण ज्ञान देने की भावना प्रकट की परंतु गुरुदेव की विशेष रुचि नहीं थी। गुरुदेव को ज्योतिष पर विश्वास तो था और कुछ आवश्यक ज्ञान भी था पर कभी प्रमुखता नहीं दी। संयम-समाचारी की ओर ही विशेष ध्यान रखा।

1953 से लेकर 1960 तक चाँदनी चौंक में बारादरी की प्रबन्ध व्यवस्था को लेकर सामाजिक विवाद रहा परंतु गुरुदेव पूर्णतः उन बातों से अछूते रहे। गुरुदेव की ये विशेषता रही कि कभी प्रतिकूल प्रसंगों में भी अपना मानसिक संतुलन नहीं खोते थे। हर एक से अपना व्यवहार मधुर रखते हुए अपनी संयमीय मर्यादाओं के प्रति भी पूर्णतः जागरूक रहते थे।

> भगवान् ने मां को इसलिए बनाया क्योंकि उसमें ईश्वर सम ममत्व है और
> वह हर जगह मां के रूप में विद्यमान है। —गुरु सुदर्शन

बारादरी चाँदनी चौंक सभी मुनिराजों के लिए अपरिहार्य क्षेत्र था। उसी क्रम में श्री सुशील मुनि जी म. भी अनेक बार वहां आते। गुरुदेव का उनसे आदर पूर्ण संबंध था परंतु बाह्य प्रवृत्ति पसंद नहीं थी। एक बार संयुक्त प्रवचन के दौरान गुरुदेव ने साधु जीवन में संयम की आवश्यकता पर बल देते हुए फरमाया "यदि मछली को जीना है तो पानी में रहना पड़ेगा, अन्यथा उनका जीना असंभव है, ऐसे ही साधु के जीवन की कीमत भी संयम से ही है।" गुरुदेव धारा प्रवाह बोलते चले गए और भीड़ सुनती चली गई। श्री सुशील मुनि जी गुरुदेव के तर्क को नहीं काट सके। एक बार उन्होंने गुरुदेव से निवेदन किया कि "आपका प्रभाव सर्वत्र है, आप मुझे सहयोग दें। 30 जनवरी गांधी जयंति को मैं अहिंसा दिवस के रूप में मनाना चाहता हूँ।" पूज्य गुरुदेव ने फरमाया– "अहिंसा दिवस की सार्थकता तब है, जब आप संवत्सरी और महावीर जयंती के प्रसंगों पर सरकार से पशु हिंसा बंद करवाएं। अन्यथा इस तरह राजनीति करने का कोई अर्थ नहीं है।" उनके पास कोई माकूल जबाव नहीं था अतः यह विषय यहीं समाप्त हो गया।

कुछ लोग हमें गिराने की सोचते हैं,
शायद उन्हें हमारी नीवों का अंदाजा नहीं ॥

चाँदनी चौंक में विराजित रहते गुरुदेव के पास वाचस्पति गुरुदेव के अनेकों कृपापूर्ण और वात्सल्य दृष्टि से भरपूर पत्र आते ही रहते थे। उन्हीं पत्रों के कुछ शब्द जो एक गुरु और शिष्य का आत्मीयतापूर्ण संबंध दर्शा रहे हैं। पूज्य वाचस्पति गुरुदेव ने एक बार लिखा–

मुनि सुदर्शन जी।

सप्रेम सुख-शांति।

श्रावक निहालचन्द जी के पत्र से मालूम हुआ कि तुमने बहुत सूझबूझता से काम लिया है। उसे पढ़कर मन नाच उठा।

बच्चे का भार सदैव मां की भूमि पर होता है– बच्चे वही बनते हैं जो मां बनाती हैं,
संस्कारित मां के पुत्र सदा उत्तम होते हैं। –गुरु सुदर्शन

रक्त बढ़ गया। तुम्हारे जैसा सुयोग्य शिष्य पाकर मैं अपने को भाग्यशाली समझता हूँ। तुमने उत्तरदायित्त्व स्वयं संभालकर मेरा बहुत-सा भार हल्का कर दिया है। तुम श्री मयाराम जी म. से लेकर गुरुदेव तक के और उपस्थित साधु मण्डली के मण्डन हो। मैं तुम्हारी उत्तरोत्तर उन्नति व विकास का इच्छुक हर समय रहता हूँ।

–मदन मुनि

इस तरह के पत्र और भावों को पढ़कर आज भी मन रोमांचित हो उठता है। हृदय से निकलता है "धन्य है ऐसे गुरु और धन्य है ऐसे शिष्य रत्न"।

तर्ज– ये गोटे दार लहंगा...।

शासन शिरोमणी गुरुवर, सुदर्शन लाल हैं,
जप तप और संयम की ये, सच्ची मिसाल है,
चर्या है उत्तम इनकी, जीवन कमाल है ॥टेक॥

1. सम्यग् दर्शन ज्ञान तथा चारित्र धर्म को धारा, धोया कलिमल सारा,
गुण नियमों के दृढ़ पालन से, बेड़ा पार उतारा-2
आगम के बल से काटा, कर्मों का जाल हैं...।

2. पावन गुरुदेवों की पावन परंपरा को पाला, पूरा सार निकाला,
जगह-जगह पर नए खून से भी, उसको भर डाला-2
बदली हवाएँ लेकिन, बदली न चाल है...।

3. मुनि मंडल को सदा दिया है संयम का दृढ़ संरक्षण, सबको किया विचक्षण,
शांति-क्रांति के अग्रदूत हैं, धन्य आपको भगवन्-2
शरणागत वत्सल करते, सबको निहाल है...।

मां तप का फल है, दया का सागर है, देवी वह है जिसमें से दया रस टपकता है।
–गुरु सुदर्शन

5. गुरुत्व की भूमिका पर

सन् 1958 में आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म. का दिल्ली पदार्पण हुआ। गुरुदेव ने दरिया गंज जाकर उनका श्रद्धाभाव से स्वागत किया और चाँदनी चौंक लेकर आए। उनके साथ आए वयोवृद्ध बड़े श्री अमरचन्द जी म. भी थे। वे एकांत में बैठते थे। एक रात गुरुदेव उनके चरणों में गए तो पूछा– "आप क्या कर रहे हो? वे फरमाने लगे– "मैं अपने कांटे निकाल रहा हूँ।" गुरुदेव उनके पैर देखने लगे तो वे बोले–"मैं आत्मा के शल्य निकाल रहा हूँ।" गुरुदेव समझ गए कि इनका आशय आत्मा में लगे कषाय के शल्यों (कांटों) से है। गुरुदेव बड़े प्रभावित हुए और जीवन भर इस प्रसंग का उल्लेख करते रहे।

पूज्य गुरुदेव चाँदनी चौंक के युवकों में सामायिक-स्वाध्याय की जो लौ जगाई थी वह उस समय स्थानकवासी समाज में पहली मिसाल थी। गुरुदेव सप्ताह में एक दिन प्रवचन में स्वाध्याय ही सिखाते थे। भक्तामर, कल्याण मंदिर, वीर स्तुति, नमि पवज्जा तथा अन्यान्य तात्त्विक विषयों को कण्ठस्थ करवाते थे। गुरुदेव की इस शिक्षा पद्धति से प्रभावित होकर आचार्य श्री हस्तीमल जी म. ने राजस्थान पधार कर शिक्षण अभियान चलाया और भरपूर लाभ दिया। गुरुदेव द्वारा सिखाई गई धर्म सामग्री का संकलन मास्टर शामलाल जी ने किया जो बाद में 'अल्पबोध', 'सरलबोध', तथा 'धर्मबोध' इन तीन पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हुई। वाचस्पति गुरुदेव ने इस योजना को अच्छा समझा पर साथ में एक आज्ञा भी भिजवाई कि "किसी संस्था का निर्माण नहीं करना"। इसलिए गुरुदेव ने कभी किसी स्वाध्याय संघ की स्थापना नहीं की। यह धार्मिक प्रशिक्षण बाद के वर्षों में 1959 में बड़ौत चातुर्मास के दौरान कक्षा और परीक्षा के रूप में स्थापित हुआ।

वैरागी प्रकाश चन्द्र जी, पद्म चन्द्र जी एवं शांति चन्द्र जी की त्रिवोणी परिपक्वता की ओर बढ़ रही थी। अनेक वर्षों से विद्या एवं

गुरु यदि कठोर भाषा में बोले तो अपना पुण्य उदय समझिए।
—गुरु सुदर्शन

वैराग्य भाव के अभ्यास के उपरान्त तीनों ही विरक्तों की दीक्षा का शुभ प्रसंग आया तो गुरुदेव ने रोहतक विराजित व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव के चरणों में दीक्षा देने के लिए दिल्ली पधारने की विनति की। अन्यान्य कारणों से वाचस्पति गुरुदेव दिल्ली पधारने के इच्छुक नहीं थे परन्तु गुरुदेव ने पुनः निवेदन किया– "आपके सान्निध्य में ही दीक्षा होंगी। जब आप श्री जी पधारेंगे तब ही ये महान् काम संपन्न होगा।" अंततः अपने प्रमुख विनयवान् शिष्य के अनुनयपूर्ण आग्रह को वाचस्पति गुरुदेव ने अधिमान दिया और आने की स्वीकृति फरमा दी। पूज्य श्री कस्तूरचन्द्र जी म. से दीक्षा का मुहूर्त निकलवाया गया, जो कि माघ सुदी त्रयोदशी संवत् 2014 (2 फरवरी 1958) का निकला। दिल्ली आने से पूर्व वाचस्पति गुरुदेव महासाध्वी श्री सुंदरी देवी जी म. के चरणों में होने वाली साध्वी भागवंती जी म. की दीक्षा के लिए बुटाना पधारे। रास्ते में तपस्वी श्री बद्रीप्रसाद जी म. को पैर में चोट लगी। अतः चाहकर भी 26 जनवरी से पूर्व दिल्ली नहीं पधार सके। जब पधारे तो बहार आ गई। योगीराज श्री राम जी लाल जी म. ने अमींनगर सराय से एवं पूज्य श्री मूलचन्द जी म., श्री फूलचन्द जी म. ने मुजफ्फरनगर से पधार कर दीक्षा की शोभा बढ़ाई।

गुरुदेव की इच्छा तो यही थी कि तीनों मुमुक्षु बन्धु वाचस्पति गुरुदेव के ही शिष्य घोषित हों, परंतु उन्होंने स्पष्ट फरमा दिया कि "आगे से मैं अपने शिष्य नहीं बनाऊंगा अतः तुम्हारे ही बनेंगे।" गुरुदेव को उनकी आज्ञा माननी पड़ी। 2 फरवरी 1958 के शुभ दिन बारादरी के पीछे गांधी ग्राउंड में वाचस्पति गुरुदेव के हाथों तीनों वैरागी दीक्षित हो गए श्री प्रकाशचन्द्र जी म., श्री पद्मचन्द्र जी म. एवं श्री शांतिचन्द्र जी म.। सभा की अध्यक्षता अमृतसर के सुश्रावक श्री हरजस राय जी जैन को अर्पित की गई। पुत्र दीक्षा के भावुक वातावरण में भी मास्टर शाम लाल जी ने मंच संचालन किया। संघ वृद्धि पर चहुं ओर से मंगल बधाइयाँ मिली। तीनों नवदीक्षितों ने बारादरी आकर श्री बाबा जी म. को

आत्मा से कर्म लिप्त ना हो तो आत्मा परमात्मा है।
—गुरु सुदर्शन

वन्दना की। उन्होंने तीनों को दुलार दिया और तभी भविष्य द्रष्टा ऋषि के समान एक उद्घोष भी किया– "मैं इनके साथ केवल एक चातुर्मास और करूंगा, दूसरा नहीं।" उस शुभ वेला पर ये शब्द सुनकर सब स्तब्ध रह गए।

दीक्षा की प्रथम रात्रि में तीनों नवदीक्षितों को गुरुदेव के हाथों सौंपते हुए वाचस्पति गुरुदेव फरमाने लगे– "सुदर्शन! तेरे शिष्य बना दिए हैं, आगे और बनेंगे। दो बातों का ध्यान रखना– 1.अपना जीवन ऐसा बनाए रखना जिससे शिष्यों के मन में तेरी प्रतिष्ठा बनी रहे। 2.अपने शिष्यों में ऐसी भावना भरना कि तेरे पास बैठने में और अपना दिल खोलने में संकोच न करें। ऐसा होने पर ही गुरु-शिष्य के संबंध हितरूप और मंगलरूप होंगे।"

तीन दीक्षाओं के पश्चात् वाचस्पति गुरुदेव जी म. दिल्ली के कुछ क्षेत्रों को पावन करते हुए यू.पी. में बड़ौत पधार गए। पूज्य गुरुदेव जी म. श्री बाबा जी म. की छत्र-छाया में नव मुनियों के नव-निर्माण में जुट गए। उनको आगम-अध्ययन के साथ-2 संघ-प्रभावना के निमित्त प्रवचन आदि में भी प्रेरित किया। हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी में बोलने का उनको अभ्यास भी कराया। श्री शास्त्री जी म. से प्रथम चातुर्मास में ही कल्प-सूत्र की वाचना करवाई। बारादरी धर्म-ध्यान का केन्द्र बनी ही हुई थी।

तभी मई सन् 1959 को श्री बाबा जी म. अचानक पौड़ियों में गिर पड़े। संथारे का जिक्र करने लगे। उनको मृत्यु का कोई भय नहीं था। डेढ़ माह पूर्व उन्होंने दो नए वस्त्र मंगाए थे एक चादर, एक चोलपट्टा। गुरुदेव से कहा– "अभी सी दे।" गुरुदेव ने तुरन्त सिलाई की। फिर बाबा जी म. कहने लगे कि 'मेरे मरने के बाद इन्हें मेरे शरीर पर डाल देना।' गर्मी की अधिकता होने के कारण गुरुदेव जी म. उनको संथारा कराने का साहस नहीं जुटा पाए। श्री बाबा जी म. ने फरमाया– 'मेरी ढीली तबीयत के समाचार गुरु महाराज को मत देना, उन्हें तकलीफ

जो शिष्य सुपात्र है वह दो बातें कभी नहीं करेगा– 1. गुरु की अविनय 2. गुरु की निंदा
–गुरु सुदर्शन

होगी। मेरे कुल दस दिन शेष रह गए हैं। मेरे जाने के बाद दिल्ली में मत रुकना, जल्दी विहार कर देना। रुकोगे तो कष्ट पाओगे'। अक्षय तृतीया 10 मई की रात को श्री बाबा जी म. ने स्वयं संथारा ग्रहण कर लिया। गुरुदेव उनकी सेवा में थे। छोटे मुनियों को गुरुदेव ने जगाया। ग्यारह बजे के बाद अचानक शरीर में काफी पसीना आया और वह दिव्य आत्मा औदारिक शरीर को छोड़कर वैक्रिय शरीर धारण करने के लिए दिव्य देवलोकों में चली गई। अपनी अनथक सेवाओं से अपने आराध्य श्री बाबा जी म. का ऋण अदा करके भी गुरुदेव उनके वियोग-जन्य दुःख से आक्रान्त थे। जिन हाथों से माता की ममता, पिता का संरक्षण, बाबा का दुलार और गुरु का अनुशासन मिला था तथा जिनके भरोसे गृहत्याग किया था और जिनके लिए जीए थे, आज उनके चले जाने पर मन पर जो वज्रपात हुआ, उस पीड़ा को मन ही मन समेट कर गुरुदेव हर व्यवस्था को पूर्ववत् संभालने में तत्पर हो गए।

तेरे अहसान का बदला, चुकाया जा नहीं सकता,
प्यार इतना दिया तूने, भुलाया जा नहीं सकता ॥

किसी की मामूली-सी पीड़ा भी जिनको सहन नहीं होती थी, वे अपनी इस विराट् पीड़ा को कैसे झेल पाए, इस जटिल प्रश्न का उत्तर केवल गुरुदेव का धीरोदात्त जीवन ही है। तभी तो कवि ने कहा है—

वज्रादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति ॥

अर्थात् महापुरुषों के जीवन जहाँ फूल के समान कोमल होते हैं, वहाँ अवसर पड़ने पर वज्र से भी कठोर हो जाते हैं। उनको समझ पाना बड़ा मुश्किल है।

श्री बाबा जी म. के दिवंगत होने पर वाचस्पति गुरुदेव जी म. की भावनाओं को अभिव्यक्त करता हुआ गुरुदेव श्री रामप्रसाद जी म. का

चाहे आगम गाथा याद ना हो, इतिहास पढ़ो ना पढ़ो पर संयम धारण जरूर करो।
—गुरु सुदर्शन

पत्र एक 'मास्टरपीस' के रूप में पठनीय हैः—

"श्रद्धेय श्री सुदर्शन लाल जी म.,

सविनय चरण वन्दना। पत्र मिला। महाराज श्री के विछोह से होने वाली नैसर्गिक अन्तर्वेदना को जब मैं आपके अपने शब्दों में पढ़ रहा था, तो मन कुछ भर-2 आता था। सम्बन्धों के सम्पर्क में इस प्रकार की मनः स्थिति हो ही जाती है। आपके जीवन-भर की चिर चिरन्तन छाया अकस्मात् विलीन हो गई, यह सर्वानुभूत सत्य है। पर इस छाया में रहते-2 आप स्वयं लघु नहीं, विशाल छाया बने हैं, जिसकी तराई में कुछ और अंकुर भी विकास की आशा लिए पल्लवित हो रहे हैं, यह उससे अधिक और प्रबल तथ्य है। वियोगमूलक पूर्व सत्य को ये भावी उत्तर-सत्य अपने में समेटकर सुखद बनाएगा, क्यों न हम ऐसी आशा करें? हमारे पूर्वाचार्यों ने अवश्यंभावि-भावत्वात् का कितना प्रशस्त समाधान दे दिया है। आप जैसे समर्थ पुरुषों की सहिष्णुता तथा कर्मठता मेरे जैसे लघुतरों के लिए सदातन आदर्श रही है। परिस्थितियों के इस रूपान्तर में भी हम आपसे यही आशा कर सकते हैं। विहार की कोई विकलता, विस्वलता अपेक्षित नहीं है। सहज रूप से चलने में ही आनंद है। हम और आप कुछ भी तो दूर नहीं है। स्वास्थ्य को प्रधानता देते हुए ही इधर कदम उठाना चाहिए। आपके इस भीषण ग्रीष्मकालीन विहार की कठिनाइयों की चर्चा हम प्रायः कर लेते हैं। शेष सुख-शान्ति। चातकों की नई उड़ान के लिए अनेक-2 प्रोत्साहन। योग्य सुख-शान्ति-वंदन। गुरुदेव तथा अपनी ओर से मिले-जुले रूप में लिख गया हूँ।

बच्चों की जेब आरंभ से ही भरने वाले मां बाप को सोचना चाहिए कि ज्यादा जेब भरना बच्चों को अपने से दूर करना है। —गुरु सुदर्शन

यद् गतं तद्गतं तत्र का चिन्तना,
तत्र यत् सद्गतं तत्कृते कामना।

एतदनेनाथवा साम्प्रतं,
चिन्तनीयं सदा यद् गतं तद् गतम् ॥

जो जा चुका, सो जा चुका, उसकी क्या चिन्ता करनी।
हाँ, उसमें जो अच्छा है उसके लिए कामना करनी चाहिए।
अथवा अब तो यही सोचना उचित है कि जो गया, सो गया।

'प्रसाद'

'महान् क्रियोद्धारक पूज्य श्री लवजी ऋषि जी म. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री हरिदास जी म. ने अपने तपोपूत जीवन से उत्तरी भारत में सत्य-मार्ग का शंख बजाया और निराडम्बरी साधना का पथ-प्रदर्शित किया। बीसवीं सदी के अंतिम वर्षों में जबकि भौतिकता की चकाचौंध ने कतिपय साधकों को भी दिग्भ्रमित सा बना दिया, उस विकट परिस्थिति में भी श्रद्धेय श्री सुदर्शन लाल जी म. ने पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश आदि प्रान्तों में पूर्ण दृढ़ता के साथ शुद्ध मार्ग की आराधना करते हुए सम्यक ज्ञान का प्रकाश फैलाया।

–आचार्य श्री हीराचन्द जी म. के भाव
नौरतन मेहता (बीकानेर)

मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ गुण है कि 'वह मन का गुलाम न बने'।
–गुरु सुदर्शन

6. नगर-नगर और गाँव-गाँव

पूज्य श्री बाबा जी म. को खोकर गुरुदेव जी म. शीघ्रातिशीघ्र गुरु-चरणों में पहुँचना चाहते थे पर महासाध्वी श्री मोहनदेई जी म. के चरणों में श्री राजकुंवरी जी म. की शिष्या श्री सुलक्षणा जी म. की दीक्षा होनी थी। उनका दीक्षा पर उपस्थित रहने के लिए काफी आग्रह था। वस्तुतः उनकी वैराग्य-भावना के पीछे भी गुरुदेव के प्रवचन ही कारण बने थे। गुरुदेव वहाँ रुक तो गए, पर पहले तो श्री प्रकाश मुनि जी म. बीमार हुए। जब वे कुछ ठीक हो गए, तो फिर गुरुदेव स्वयं बीमार हो गए। अन्ततः 31 मई को विहार सम्भव हो सका। विदाई के दिन जो जनता-जनार्दन उमड़ा, वह क्षेत्र के इतिहास में अभूतपूर्व था। लगभग पाँच हजार की जनमेदिनी श्रद्धा, समर्पण और वियोगजन्य पीड़ा के भाव समेटे चरणों में बिछी पड़ी थी। लाल किले पर आकर वर्षा हो गई। लोगों में चर्चा हुई कि गुरुदेव के विहार में मानों आसमान भी आँसू डाल रहा है। आधा घंटा बाद वर्षा रुकी। धूप खिली, कदम बढ़े और गांधीनगर तक सब साथ आए। वहाँ के लक्ष्मी सिनेमा में दो प्रवचन करके गुरुदेव ने यू.पी. के लिए प्रस्थान किया। गर्मी का भीषण परीषह था। नवदीक्षित मुनियों के लिए तो ये प्रथम ही अनुभव था। सैंकड़ों दिल्ली-वासी जौहरियों के लिए इतनी भयंकर गर्मी में चलना अग्निपरीक्षा सरीखा था, पर क्या मजाल कि कोई पीछे मुड़ा हो। गुरुदेव तो ऐसे अवसरों पर सागर-वर-धीर, वीर और गम्भीर रहते ही थे।

यू.पी. में बामनौली गाँव में गुरुदेव जी म. ने अपने पूज्य गुरुदेव के पावन दर्शन किए। इसी धरा पर 45 वर्ष पूर्व वाचस्पति गुरुदेव की दीक्षा हुई थी। दर्शन करके मन का भार हल्का किया। आज्ञा मिली कि इस बार सन् 1959 में बड़ौत चातुर्मास करना है। वाचस्पति गुरुदेव का चातुर्मास पास ही 25 कि.मी. दूर कांधला के लिए स्वीकृत हो चुका था।

सुपात्र की जितनी प्रसिद्धि बढ़ेगी उतनी विनय शीलता एवं संकोच बढ़ेगा
एवं कुपात्र की प्रसिद्धि जितनी बढ़ेगी उतना अहम् एवं उद्दंडता बढ़ेगी। –गुरु सुदर्शन

चातुर्मास बैठने से पूर्व गुरुदेव ने कुछ ग्राम, नगरों में विचरण किया। वह स्वल्प प्रवास जन जागरण की दृष्टि में महाप्रभावक कहा जा सकता है। एक जगह ऐसी भी दबी जबान से चर्चा हुई थी कि सुदर्शनमुनि जी का अभी अपने क्षेत्रों में चातुर्मास करा लो, कुछ समय के बाद तो इनके चातुर्मास काफी महंगे हो जाएँगें।

अपने शिष्य द्वारा प्रवर्तित धर्म-चक्र को देखकर वाचस्पति गुरुदेव की आत्मा भी परम प्रमुदित थी। उस वर्ष के बड़ौत और कान्धला, दोनों चातुर्मास मानों एक होकर रह गए थे। प्रातः प्रवचन बड़ौत होता, मध्याह्न में कान्धला में। इससे दर्शनार्थियों को भी सुविधा रही। दिल्ली में प्रारम्भ किए धर्मशिक्षण अभियान को गुरुदेव ने बड़ौत में और अधिक गति और व्यवस्था प्रदान की।

दर्शनार्थी भाइयों का बसें लेकर संयुक्त रूप से आने का क्रम भी इसी वर्ष प्रारम्भ हुआ, क्योंकि दिल्ली की जनता गुरुदेव के दर्शनों के लिए बहुत बेताब रहती थी।

दिल्ली-प्रवास के शुरू के वर्षों में गुरुदेव ने जनता का अधिक परिचय नहीं किया। किसी बहन का नाम पूछने का तो प्रश्न ही नहीं था। बाद के वर्षों में कुछ-2 परिचय करने लगे थे। पर इधर यू.पी. में तो परिचय नया ही था। गुरुदेव की स्मरण-शक्ति बड़ी विलक्षण और अद्‌भुत थी। प्रवचन में सैंकड़ों आदमी भी नए होते, तो बाद में एक-2 कर उनका नाम पूछते और अगले रोज बिना किसी त्रुटि के उनके नाम बोलकर उनको सम्बोधित कर देते थे। ऐसी चमत्कारिक प्रतिभा का दर्शन अन्यत्र कम ही मिल पाता है। उस चातुर्मास में सुश्रावक श्री इलमचन्द जी की सुपुत्री कु. सुदर्शना जी ने गुरुदेव के चरणों से सम्यग् दर्शन, ज्ञान और यम-नियमों की पूंजी अर्जित की। दिल्ली दरियागंज के सुश्रावक श्री अरिदमन जी के सुपुत्र श्री सुकुमाल चन्द जी की धर्मसंगिनी बनकर कुल और समाज को इस देवी ने नया रूप प्रदान

साधु भगवान् के एजेंट हैं जो जीव को आंतरिक प्रकाश दिखाते हैं, बाह्य नहीं।
—गुरु सुदर्शन

किया है। इस देवी के जीवन का कण-2 गुरुदेव जी म. के मार्गदर्शन का ऋणी है।

सुदर्शना जी का भाई जिनेन्द्र जैन उस वर्ष आठवीं क्लास में पढ़ रहा था। लगन तो थी ही। प्रतिदिन सामायिक करता। एक दिन पूज्य गुरुदेव ने उसे 'मंगल वाणी' प्रदान की। साथ ही उस पर लिख दिया "डाक्टर जिनेन्द्र जैन"। बालक प्रसन्न हो गया। आगे चलकर उसने मेडिकल के लिए टैस्ट दिया, पर Admission के समय प्रवेश-सूची में नाम न आकर Waiting में रह गया। मन पर मायूसी आई। पर गुरुदेव के लिखे का भरोसा था। पहली लिस्ट से एक छात्र हट गया और उसे प्रवेश मिल गया। फिर तो एम.एस. करके दिल्ली में अपना विख्यात 'जैन नर्सिंग होम' बनाया। राजनीति की पौड़ियां चढ़ी और राज्यसभा में एम.पी. बना। एक छोटे-से शब्द की इतनी लम्बी यात्रा की कल्पना करके रोमांच-सा होता है।

'शरीरं व्याधिमन्दिरम्', रोग न जाने कब उभर जाए। ऐसा ही हुआ। गुरुदेव जी म. को हल्का बुखार, दुर्बलता, अरुचि होने लगी। डॉ. महेश्वरी से जांच करवाने पर ज्ञात हुआ कि प्लुरसी है। इस रोग में फेफड़ों में पानी भर जाता है। उपचार के साथ-साथ विश्राम की भी सख्त जरूरत थी। मुख्य प्रवचनकार स्वयं थे। बाकी सब संत छोटे-2 थे। रोग के कारण गुरुदेव ने स्वयं तो प्रवचन नहीं किया, पर श्री प्रकाश मुनि जी म. को पूरा प्रवचन लिखकर देते और इस कला में प्रशिक्षित करते थे। एक माह तक प्रवचन से विश्राम लेकर भी गुरुदेव ने विश्राम नहीं किया। प्रकारान्तर से सक्रिय ही रहे।

जिस डॉ. महेश्वरी से गुरुदेव ने इलाज करवाया, वे भी गुरुदेव के भक्तों में अपने को मानने लगे। एक दिन डा.सा. प्रतिदिन की भाँति गुरुदेव के समक्ष बैठे थे। डा.सा. को एक ओर बुलाकर कहा कि आज 15 ता. है (सितम्बर अथवा अक्तूबर मास)। आप नियम कर लें कि 30

सच्चा साधक सस्ते आत्म विज्ञापन से बचे।

—गुरु सुदर्शन

ता. तक वाहन का प्रयोग नहीं करना। डा.सा. ने गुरुदेव की बात मान ली। फिर भी पक्का करने के लिए गुरुदेव ने उनकी धर्मपत्नी को भी कहा। 27 ता. को उनकी धर्मपत्नी आवश्यक कार्य से पीहर चली गई। 29 ता. को बड़ौत से तीन किलोमीटर पर स्थित बावली गाँव के कुछ लोग आए। कहने लगे कि हमारा नौजवान लड़का बीमार है। आप चलकर देख लें। डॉ. महेश्वरी मेरठ से नई पढ़ाई करके लौटे थे। उनका यश काफी हो गया था। अतः समीपवर्ती गाँव के लोग भी उन्हीं से उपचार करवाना पसन्द करते थे। डॉक्टर सा. को चलने को मजबूर होना पड़ा। एक कि.मी. ही गए होंगे, मोटर साईकिल फिसल गयी और वे एक झटके से जमीन पर गिर गए। गहरी चोट आई। उन्हें मेरठ ले जाया गया, पर वहाँ पहुँचने से पहले ही दम तोड़ गए। उस भीषण त्रासदी से लगभग सारा बड़ौत आहत हुआ। जब गुरुदेव एवं समाज के भाई उनके घर संवेदना प्रकट करने पधारे, तो उनकी धर्मपत्नी ने गुरुदेव के द्वारा कराए नियम की सबको जानकारी दी।

चातुर्मास में जो धर्म-शिक्षा का भव्य कार्यक्रम चला, उसकी पूर्णता के रूप में परीक्षा का आयोजन किया गया। बच्चे, युवा, वृद्ध, महिलाएं सबने परीक्षा में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। श्री नरेश मुनि जी म. के पिता श्री वकील मुनि जी म. उस समय बड़ौत में नगरपालिका में सर्विस कर रहे थे। वे भी उस शिक्षा, परीक्षा के प्रमुख छात्र थे। वे अपनी ज्ञान-धारा और वैराग्य-भावना का प्रथम उद्‌गम उस चातुर्मास को ही मानते थे। धार्मिक परीक्षा में सारा बड़ौत उमड़ पड़ा। बड़ा हृदयंगम दृश्य था। 900 विद्यार्थियों ने धार्मिक परीक्षा दी थी।

चातुर्मास की विदाई पर अनेकानेक काव्यों, भजनों, गीतिकाओं के माध्यम से जनता ने अपने भाव प्रस्तुत किए थे। उनमें से डॉ. चेतन लाल जी द्वारा प्रस्तुत की गई कविता में पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. तथा उनके गुरुदेव वाचस्पति श्री मदन लाल जी म. को जो कि

आत्मा की रगड़ से उच्च विचार उत्पन्न होते हैं, उच्च विचारों की स्थिरता से ज्ञान प्राप्त होता है।
—गुरु सुदर्शन

कांधला में विराजमान थे धन्यवाद दिया गया था। निःसन्देह इस काव्य के रचयिता हैं— गुरुवर्य श्री रामप्रसाद जी म.।

ज्ञान-गरिमा के महत् आगार तुमको धन्यवाद
मूर्ति संयम तेज की साकार तुमको धन्यवाद ॥

1. **थे बुझे सब दीप अंधियारा प्रबलतम छा रहा था,**
उत्पथों के शून्य में जीवन भटकता जा रहा था।
उस अंधेरे में मिला आलोक का वह पुंज हमको,
दूसरों को जगमगाने के लिए जो जा रहा था।
जगमगाती रोशनी की धार तुमको धन्यवाद।
जो है इस ज्योति के भी आधार उनको धन्यवाद ॥

2. **जिन्दगी की नाव भटकी थी विकल्पों के भंवर में,**
दिख न सकता था किनारा वारिपथ के इस डगर में।
हिम्मतें यों डूबती थी, डूबकर खो ही न जाएं,
पर मिला संवल-सहारा अब तुम्हारे क्रान्त स्वर में।
कर दिया बेड़ा हमारा पार तुमको धन्यवाद।
जो तुम्हारे भी हैं खेवनहार उनको धन्यवाद ॥

3. **जैन शासन के खजाने क्यों न मालामाल हों?**
इस तरह के रत्न हों, जब इस तरह के लाल हों।
अब कहें क्यों कर हमारे पास कुछ भी है नहीं,
जगमगाती जब कि ऐसे हीरकों की माल हों।
गुण-ग्रथित अनमोल मुक्ताहार तुमको धन्यवाद।
जिनके रत्नों का है ये भण्डार उनको धन्यवाद ॥

4. **जिनकी करुणा की लहर इस क्षेत्र को लहरा रही है,**
पल्लवित पुष्पित बनाकर सब तरह सरसा रही है।
तृप्ति होने को नहीं, फिर भी सर्व प्रकार से,

यदि गुरु/प्रभु से प्राप्त प्रकाश को हम पसंद नहीं करते तो हम भी उल्लू हैं।
—गुरु सुदर्शन

सींच कर इस क्षेत्र को ये आज गंगा जा रही है।
उमड़ती बहती हुई जल-धार तुमको धन्यवाद।
जिस भगीरथ का है ये उपकार उनको धन्यवाद ॥

5. प्रार्थना है हम पे यों उपकार करते ही रहेंगे,
भावना है हम पे यों आभार करते ही रहेंगे।
हम न दें कुछ भी तुम्हें, आप दें सब कुछ हमें,
इस तरह इकतरफा ये व्यापार करते ही रहेंगे,
है किया अब तक यही व्यापार तुमको धन्यवाद।
जिनसे तुमको भी मिला शत बार उनको धन्यवाद ॥

सन् 1959 में पश्चिमी यू.पी. के छोटे से इलाके में हमारी परम्परा के चार चातुर्मास थे। कांधला में वाचस्पति गुरुदेव ठाणे-3, बामनौली में श्री मूलचन्द जी म., श्री फूलचन्द जी म. ठाणे-2, अमीनगर सराय में पं. श्री रणसिंह जी म. तपस्वी श्री बद्री प्रसाद जी म. ठाणे-4, तथा बड़ौत में पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. ठाणे-5 से धर्मोद्योत कर रहे थे। रचनात्मकता की दृष्टि से बड़ौत बहुत ऊँचाईयों पर पहुँचा। चातुर्मास के बाद चारों चातुर्मासिक गुरुजनों का मिलन होना ही था। केन्द्रीय स्थान बड़ौत ही था। गुरुदेव को सब का स्वागत करने का सौभाग्य मिलना था। पर चातुर्मास के बाद वहाँ रुक नहीं सकते थे, क्योंकि कल्प पूरा हो रहा था। अतः चातुर्मास-पूर्ति के अगले दिन ही हिलवाड़ी के लिए विहार कर दिया। चन्द दिनों में ही बामनौली से पूज्य श्री मूलचन्द जी म. तथा स्वामी श्री फूलचन्द जी म. बड़ौत मण्डी में पधार गए। तब गुरुदेव जी म. भी मण्डी में पधार गए। वाचस्पति गुरुदेव के कदम भी बड़ौत की ओर बढ़ रहे थे। बड़ौत के समीपवर्ती गाँव बावली में ठहरे हुए थे, तभी पूज्य गुरुदेव ने श्री प्रकाश चन्द्र जी म. तथा श्री पद्म चन्द्र जी म. को श्री चरणों की सेवा में भेज दिया। अगले दिन शाहाना अंदाज में बड़ौत मण्डी में प्रवेश हुआ। अमीनगर सराय से भी चारों पूज्य गुरु भगवन्तों

क्रोधी जितना एकांत में रहेगा आत्मा को उतनी ही शांति रहेगी।
—गुरु सुदर्शन

का पदार्पण हो गया। इस तरह बड़ौत मण्डी में 14 महामुनियों का मंगल मिलन हुआ। 14 मुनियों के लिए स्थानक छोटा होने के कारण मुसद्दीलाल की धर्मशाला में मुनिसंघ का विराजना हुआ। फिर शहर में सभी का पदार्पण हुआ। सब की जुबान पर बड़ौत चातुर्मास के चर्चे थे। वाचस्पति गुरुदेव के लिए इससे ज्यादा और क्या आत्मीय संतुष्टि देने वाली बात हो सकती थी?

सुश्रावक श्री त्रिलोक चंद जी जैन (हिलवाड़ी वाले) जो श्री नरेश मुनि जी म. के दादा थे, उन्होंने श्री मूलचन्द जी म. से पूछा कि चातुर्मास तो पिछले वर्ष वाचस्पति गुरुदेव का भी हुआ इस वर्ष श्री सुदर्शन जी म. का हुआ पर जो लहर इस चौमास में आई वो पहले नहीं देखी गई। तो श्री मूलचंद जी म. ने कहा कि श्री सुदर्शन मुनि जी म. की पुण्यवाणी का कोई अंदाजा नहीं है।

यू.पी. के गाँव-2 में ये लालसा थी कि गुरुदेव जी म. हमारे यहाँ फरसना करें। इस सिलसिले में मलकपुर वालों का तो बहुत ही आग्रह था, अतः गुरुदेव ने एक सप्ताह के लिए वहां का कार्यक्रम बना लिया। वहाँ स्थानीय और दिल्ली वासियों ने ठाठ लगा दिये। प्रवचन रात को ही होता था। उसी प्रसंग पर वाचस्पति गुरुदेव भी वहाँ पधार गए। फरमाने लगे 'आज रात को मैं भी प्रवचन करूँगा।' बड़ौत वाले श्रद्धालु-जन भी भारी संख्या में पहुँच गए। वाचस्पति गुरुदेव ने जितना ओजस्वी, जोशीला और बुलन्द प्रवचन वहाँ किया, उसकी तुलना कुछ इने-गिने प्रसंगों से ही की जा सकती है। यहाँ तक कि बड़ौत वालों ने भी कहा "ऐसा जोश गत वर्ष के पूरे चौमासे में भी नहीं देखा"। एक सहज भाव का समुल्लास था वह प्रसंग।

जब करेगा दिल तभी तो गुनगुनाया जाएगा।
आपके आदेश से हमसे न गाया जाएगा ॥

एक दो रात में करामात सी करके वाचस्पति गुरुदेव छपरौली

क्रोध की आग से संयम भी कोयला हो जाता है।
—गुरु सुदर्शन

पधार गए। पूज्य गुरुदेव जी म. ने गाँव को और भी सींचा।

जिस रोज गुरुदेव छपरौली पहुँचे, उसी दिन वाचस्पति गुरुदेव ने हरियाणा-प्रवेश के लिए प्रस्थान कर दिया। मार्ग में यमुना महानदी थी। पुल आदि की कोई व्यवस्था न होने से नौका का सहारा लिया। गुरुदेव जी म. अपने पूज्य गुरुओं का प्रत्युद्गमन-विदाई करने यमुना-तट तक गए। उस किनारे गुरु, इस किनारे शिष्य, पर दोनों का मन विपरीत किनारों पर था।

गच्छति पुरः शरीरं, धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः।
चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य ॥

अर्थात् शरीर आगे जा रहा था, पर मन पीछे भाग रहा था। हवा के विरुद्ध ले जाए जाने वाले झण्डे का दण्ड आगे बढ़ रहा होता है और ऊपर का वस्त्र पीछे की ओर झांकता रहता है।

छपरौली में महावीर-जयंती मनाई गई। पूरे इलाके में अपनी किस्म की वह पहली ही महावीर-जयंती थी। उसमें सारे इलाके के जैन परिवारों ने भाग लिया था। करीबन 3-4 हजार की जनता ने गुरुदेव के सान्निध्य में प्रभु वीर को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

सारा ईलाका गुरुदेव की बाट जोह रहा था। गाँव-2 में जैन परिवार थे अतः गुरुदेव ने निर्णय लिया कि कोई गाँव छोड़ना नहीं। सर्वत्र प्रभावना हुई, प्रभाव फैला। उस विचरण के दौरान घटित एक-दो रोचक वाकये उल्लेखनीय हैं। 1. किरठल गाँव से विहार की तैयारी थी। दो परिवारों की विनति को मान देकर उनके घर दर्शन देने चले गए। अन्य श्रावकों ने भी विनति करनी शुरू कर दी पर गुरुदेव ने टाल दिया क्योंकि विहार का समय हो रहा था। इस पर श्रावकों को न जाने क्या सूझी, जयकारे लगाने शुरू कर दिए और शोर मचा दिया कि 'गुरु म. ठहर गए, ठहर गए' बड़ी उलझन भरी स्थिति थी। श्रावकों ने खुद ही विनति की

जिन घरों में लड़ाई होती है उन घरों में पुण्य घटने लगता है मानो आचार के फुई आ गई।
—गुरु सुदर्शन

और खुद ही मान ली। अन्ततः गुरुदेव को उसी मानी हुई विनति को पूरा करना पड़ा तथा एक प्रवचन और दिया। 2. लिसाड़ गाँव में प्रवचन किया। अगले रोज विहार करना था। सुबह बाहर निकलने लगे तो देखा कि भक्त श्रावकों ने बाहर से ताला लगा रखा था। श्रावक बाहर खड़े थे। कहने लगे कि ठहरोगे, तो ताला खोलेंगे, नहीं तो बन्द। ऐसी निर्दोष भक्ति के आगे तो भगवान् झुक ही जाते हैं। लिसाड़ वालों को जब एक दिन का और वरदान मिला, तब ताला खुला। मानतुंगाचार्य के ताले खुलने का राज भी संभवतः यही होगा। **याच्ञामेकान्त-भक्तानां स्वामिनः खण्डयन्ति न**—एकान्त भक्तों की भावनाओं का स्वामी कभी तिरस्कार नहीं करते।

गुज़रे हैं तेरे बाद भी कुछ लोग इधर से,
तेरी नक्श-ए-पा ना गई राह गुज़र से ॥

यू.पी. भ्रमण के बाद हरियाणा जाना निश्चित ही था। एक तो उधर ही चातुर्मास की संभावना थी, दूसरे वाचस्पति गुरुदेव के दर्शन भी करने थे। क्योंकि कुछ दिन पूर्व उन्हें हृदय की दिक्कत हो गई थी। हरियाणा जाने के लिए यमुना पार करनी पड़ती थी और उस युग में दिल्ली के बाद कहीं भी पुल नहीं था। नौका का सहारा लेना पड़ता था। सभी संत इसी विधि से यमुना पार करते थे। इसलिए पुनः बड़ौत, मलकपुर और छपरौली पधारे। नौका का आश्रय लेना पड़ा, आपवादिक स्थिति थी। फिर उसका शास्त्र-सम्मत दण्ड-प्रायश्चित्त किया गया।

हरियाणा प्रवेश

पूज्य गुरुदेव और शिष्यमण्डली के लिए वो इलाका सर्वथा नवीन था। सरल, सीधे, ग्रामीण लोगों में श्री मयारामजी म. के प्रत्येक मुनि के प्रति जो सहज श्रद्धा का झरना बहता था उससे गुरुदेव जी म. प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। राकसेड़ा गाँव में आए। जिस दिन वहां से विहार किया, उस दिन एक स्मरणीय घटना घटी। कुछ प्रजापति श्रावक साथ थे। गुरुदेव ने सब श्रावकों को मंगल-पाठ सुनाकर विदा कर दिया। कच्चे

जितना बर्दाश्त का मादा होगा उतना ही जीवन फौलादी बनता जाएगा।
—गुरु सुदर्शन

रास्ते पर चढ़े। आगे कहीं मुड़ गए। पूछा, 'फलां गाँव का रास्ता किधर जाता है'। बताया गया, 'इधर'। उधर चले कुछ दूर जाकर फिर रास्ता पूछा, फिर किसी ने बता दिया। दो घण्टे बाद एक गाँव में पहुँचे पर वह वही गाँव निकला 'राकसेड़ा'। **'हम जहाँ से थे चले, क्या फिर वहीं आना हुआ। आज का यह दृश्य कुछ लगता है पहचाना हुआ'**। धरती गोल है, ये लौकिक सिद्धान्त उस दिन तो सही साबित हो ही गया। ठहर गए वहीं पर। अगले दिन चले। पर पूरी सावधानी के साथ कि कहीं दोबारा राकसेड़ा न पहुँच जाएं। आज ठीक ठिकाने 'देहरा' गांव में पहुँच गए। एक-2 दिन लगाते हुए मतलौडा पहुंचे।

अगले ही दिन सफीदों में पूज्य गुरुवर श्री वाचस्पति जी म. के चरणों में पहुँचे। तपती गर्मी में भी गुरु-कृपा का अमृत-मेघ बरसा। वाचस्पति गुरुदेव का स्वास्थ्य सुधार पर था। वहाँ से गुरुदेव को चातुर्मास स्थल रोहतक की ओर प्रस्थान करना था। ग्रीष्म अपने यौवन पर था। समय स्वल्प था, अतः छोटे मार्ग से हाट-गंगाना होते हुए बुटाना पधारे। स्थानक साताकारी था। स्थानक के नीचे वाले भाग में एक अधेड़ उम्र के श्रावक चारपाई पर लेटे रहते थे। अस्वस्थ थे। गुरुदेव उनको मंगलपाठ सुनाते। उनका नाम था ला. श्री मोतीराम जी। सन् 1957 के अन्त में जब वाचस्पति गुरुदेव बुटाना पधारे थे तब साध्वी भगवंती जी म. की दीक्षापाठ के बाद ही ला. मोतीराम जी की धर्मपत्नी सोना देवी का देहान्त हो गया था। और संयोग देखिए, पूज्य गुरुदेव के रहते हुए ही ला. मोतीराम जी का भी देहावसान हो गया। उन्हीं पूतात्माओं की सबसे छोटी संतान श्री हुक्म चन्द जी पूज्य गुरुदेव के चरणों में 1964 में वैरागी बने तथा 1967 में दीक्षा ग्रहण की। आज वे ही संघाधार पूज्य श्री विनय मुनि जी म. के नाम से विख्यात हैं। ये अपनी सौम्य, शान्त जीवन शैली से सारे मुनिमण्डल और श्रावक-समाज को धन्य कर रहे हैं।

गुरुदेव को एक मुकाम और छूना था। रोहतक पहुँचने से पूर्व वह

चिंता को चिंतामणि बनाना ज्ञानी का लक्षण है।

—गुरु सुदर्शन

मुकाम था रिढाणा गाँव, क्योंकि उस भूमि को 'तपोधनी त्रिवेणी' की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त हुआ था। वहाँ की मिट्टी की सौंधी-2 महक को मन में बसाया। अपने गुरुभ्राताओं के महान् जीवन के प्रति शुभकामना की और चले जुलाना की ओर। पर ये क्या? नहर पार करते ही जोरदार आंधी ने घेर लिया। बचाव का कोई साधन नहीं। पहले तो शरीर पर पसीना खूब था और हवा भी आई तो धूल लेकर। शरीर का एक-2 रोम धूल से लथपथ हो गया। 'जल्ल-मल' परीषह को सहते हुए जुलाना पहुँचे। फिर रोहतक की ओर प्रस्थान किया।

श्री वाचस्पति गुरुदेव ने सन् 1960 का चातुर्मास सोनीपत मण्डी स्वीकार किया था। तब सोनीपत में जैन स्थानक नहीं था। अग्रवाल धर्मशाला में ही चातुर्मास बिताया। उस वर्ष गुरुदेव का चातुर्मास रोहतक में स्वीकृत हुआ। रोहतक गुरुदेव की जन्म भूमि है। शैशव-काल की सैंकड़ों-हजारों स्मृतियाँ गुरुदेव के एवं जनता के मानस-पटल पर तैर रही थीं।

रोहतक में शहर का क्षेत्र पुराना और मण्डी का नया है। गुरुदेव का चौमासा मण्डी में था। चातुर्मास प्रवेश से पहले दिन गुरुदेव शहर के बाहर 'गोकर्ण' नामक रमणीय स्थल पर ठहरे हुए थे। वहाँ रात्रि में गुरुदेव को एक आश्चर्यकारी स्वप्न आया कि रोहतक का निचला हिस्सा (शहर को छोड़कर सारा रोहतक) भीषण बाढ़ से घिरा हुआ है। स्वप्न-दर्शन से हृदय कुछ आशंकित हुआ। फिर अपने पूज्य गुरुदेवों का स्मरण किया और पाठ किया। अन्तःकरण में ध्वनि गूंजी, 'होनहार को टाला नहीं जा सकता, पर तुम पर कोई आँच नहीं आएगी'। गुरुदेव ने सर्वथा निर्भार होकर मंगल प्रवेश किया और जनता को अधिकाधिक धर्माराधन की प्रेरणा दी। उस वर्ष नगर में 19 जून को प्रवेश हुआ था। चातुर्मास में बाढ़ आई। इस कारण 19 तारीख के प्रति गुरुदेव के मन में शंका-सी बैठ गई। जीवन-भर वे 19 ता. को कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ

शिकायती मनुज की आत्मा कमजोर हो जाती है क्योंकि उसे अपने पर विश्वास नहीं होता।
—गुरु सुदर्शन

करने से बचते रहे। गुरुदेव के प्रवचनों से सारे नगर में धार्मिक तूफान-सा आ गया। रोहतक शुरू से ही सम्प्रदाय-निरपेक्ष नगरी रही है। दिगम्बर, श्वेताम्बर, सनातनी एवं अन्य सभी कौमें प्रवचन में आती हैं। पूज्यपाद चारित्र-चूडामणि श्री मयाराम जी म., वाचस्पति गुरुदेव श्री मदन लाल जी म., योगिराज श्री रामजी लाल जी म. एवं आचार्यप्रवर श्री कांशीराम जी म. ने रोहतक के रंग देखे थे और इस बार बारी थी रोहतक के ही लाल मुनि सुदर्शन लाल जी की। अपनी जन्मभूमि का ऋण उतारने आए थे गुरुदेव। इतना जन-सम्मर्द लम्बे अरसे से रोहतक वासियों ने नहीं देखा था। समाज-सुधार गुरुदेव का मुख्य विषय था। दहेज-प्रथा के विरुद्ध एक आन्दोलन-सा चला। पूरा अग्रवाल समाज उसकी परिधि में आ गया। गुरुदेव की वाणी की बुलन्दी, मधुरता और भावप्रवणता, तार्किकता और सर्वांगीणता से सारे शहर का जनमानस हिल उठा। भीड़ का अंदाजा लगाना मुश्किल हो गया था। हजारों व्यक्तियों ने जीवन पर्यन्त दहेज न लेने का नियम लिया, जिसे बहुतों ने निभाया भी। एक वृद्धा प्रतिदिन प्रवचन में आती पर भीड़ होने से बैठने में परेशानी मानती। उठते समय ऐलान करके जाती कि 'कल प्रवचन में बिलकुल नहीं आऊंगी।' पर अगले दिन फिर आ जाती। रोज मना करती पर रोज आती। एक दिन किसी ने पूछा लिया, 'माताजी, आप तो कल मना कर रही थी, फिर क्यों आई?' वह बोली-'क्या करूँ, जब टाइम होता है तो 'सुदर्शन' की आवाज कानों में गूंजने लगती है और मैं अपने को रोक नहीं पाती।

गुरुदेव बाहर दिशा को जा रहे थे। साथ में एक पुराना जैन मित्र भी था। सड़क पर गुरुदेव के परिवार का पुराना जमादार (भंगी) खड़ा था। वह गुरुदेव के चरण स्पर्श करना चाहता था, पर हीन जाति का होने से मन में शंकित भी था। साहस करके चरण छूने की आज्ञा मांगी। गुरुदेव ने सहर्ष दे दी। चरण छू लेने के बाद गुरुदेव ने उससे तीन चीजों की मांग की— 1. शराब नहीं पीना 2. मांस नहीं खाना 3. खरगोश का शिकार नहीं करना (वस्तुतः उनके परिवार में हिंसा के नाम पर केवल

> इज्ज़त को हजम करना भी बड़ा मुश्किल है।
>
> —गुरु सुदर्शन

खरगोश ही मारा जाता था)। उसने तीनों ही नियम सहर्ष ले लिए। एक भंगी द्वारा चरण-स्पर्श करने पर उस सहगामी भाई ने बाद में गुरुदेव से ऐतराज किया। तब गुरुदेव ने बेलाग शब्दों में उससे कहा, 'मैं तेरे जीवन की डायरी भी जानता हूँ। तू मेरे साथ-2 चल रहा है, तो तू भी जीवन भर के लिए शराब न पीने का और पर नारी के पास नहीं जाने का नियम ले ले!' इस पर वह आनाकानी करने लगा, तो गुरुदेव ने उसे डाँटते हुए उपालम्भ दिया कि 'तुझसे तो वह भंगी ही अच्छा है।' इस पर वह भाई भी प्रबुद्ध हुआ।

रोहतक चातुर्मास में भी गुरुदेव ने पूरी द्रुत गति से प्रशिक्षण-अभियान को आगे बढ़ाया। स्वल्पकालीन लाभ तो सैंकड़ों ने लिया। दीर्घकालीन लाभ लेने वालों में थे श्री राजकुमार जी जैन आई.ए.एस.। ये उस समय करनाल में जज लगे हुए थे। गुरु-दर्शनार्थ रोहतक आए। 'धर्म-बोध' ले गए। याद करके परीक्षा दी। तब से प्रारम्भ हुआ उनका स्वाध्याय-क्रम आज भी अभग्न रूप में चल रहा है।

रोहतक की रौनकों की गूंज सारे हरियाणा में थी। संवत्सरी पूरे उत्साह के साथ मनाई गई। उसके बाद वर्षा की अधिकता के कारण ड्रेन न. आठ में पानी का स्तर बढ़ने लगा। गुरुदेव को अपना स्वप्न सत्य होने का खतरा महसूस होने लगा। शहर के सम्भ्रान्त लोग ड्रेन का पानी देखने और वहाँ पिकनिक मनाने के लिए जाने लगे। गुरुदेव के कोमल मन को ये बहुत अखरा। उन्होंने प्रवचन में ललकार लगाई, 'क्यों सज-धज कर पानी देखने जाते हो? समय आने वाला है जब तुम्हारे घरों और दुकानों तक भी पानी आएगा।' ये सुनकर लोग चौंक उठे। घरों और दुकानों के सामान को यथासंभव सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाने का प्रयास किया। कुछ दिन बाद सचमुच वही घटित हुआ। ड्रेन नं. आठ टूट गया। पानी शहर की ओर बढ़ने लगा। सारे शहर में तरह-2 की अफवाहें थी। केवल एक ही चर्चा थी कि 'पानी यहाँ तक पहुँच गया, वहाँ तक पहुँच गया'।

परीषहों के हमला करने पर आत्मा सावधान रहे तो आत्मा विजयी हो जाती है।
—गुरु सुदर्शन

गुरुदेव के मन में पूरा निश्चय था कि केवल बाबरा मोहल्ला ही सुरक्षित रहेगा। श्रावकों ने कई बार गुरुदेव से स्थानक छोड़कर अन्यत्र पधारने का आग्रह किया पर गुरुदेव ने हर बार यही फरमाया कि 'अभी चिन्ता मत करो, हम समय रहते ही स्थान परिवर्तन कर लेंगे'। एक दिन अचानक ही गुरुदेव ने सन्तों से तैयार होने और उपधि-उपकरण समेटने का आदेश दिया। सन्त एकदम तैयार हो गए। सवा तीन बजे स्थानक से उतरे। चार बजे शहर की स्थानक में पहुँचे। वहाँ स्थान स्वल्प होने से ला. सीताराम धर्मदास जी गांधरा वालों के मकान में उतरे। इधर पाँच बजे सारा रेलवे रोड़ बाढ़ के पानी से जल-मग्न हो गया। गुरुदेव का सपना इस रूप में अपना रंग दिखा रहा था।

उसी समय एक भीषण दुर्घटना भी होते-2 बची। उसकी लपेट में सारा शहर आ सकता था। सरकारी कॉलेज की प्रयोगशाला में दुनिया का सर्वाधिक घातक विष 'पोटैशियम साइनाइड' बर्तन (जार) में भरा रखा हुआ था। उसकी ओर किसी का ध्यान नहीं गया। गुरुदेव को पता लगा। उन्होंने बाबूलाल आदि कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के माध्यम से प्रशासन को सक्रिय कर उस जहर को वहां से हटवाया। उस महापुरुष ने इस तरह अपनी जन्म-भूमि की रक्षा की। दीपावली से पूर्व 17 अक्टूबर के दिन पुनः मण्डी में पधार गए। अनाज मण्डी में सार्वजनिक प्रवचन हुआ। 4-5 हजार की श्रद्धालु जनता ने अपने धरती पुत्र की सिंह-गर्जना सुनी।

रोहतक चातुर्मास सम्पन्न करके गुरुदेव गोहाना पधारे। इधर वाचस्पति गुरुदेव भी सोनीपत श्रीसंघ की रचना करके गोहाना पधारे। पतित-पावनी गंगा विराट् सागर में विलीन हो गई। वाचस्पति गुरुदेव का हृदय अपने शिष्य की फैलती हुई यशःसौरभ से सुवासित था। एक दिन अन्तरंग वार्तालाप के प्रसंग में वे फरमाने लगे, 'सुदर्शन! मुझे खुशी है कि तू दोनों बाढ़ों से बच गया। एक पानी की बाढ़ से, दूसरी जनता की बाढ़ से। पानी की बाढ़ की अपेक्षा जनता की बाढ़ से बचना ज्यादा

ये तीन गुण महानता की ओर ले जाते हैं— अभय, अखेद, अद्वेष।
—गुरु सुदर्शन

कठिन है। वो काम तूने कर दिया, इसलिए मेरी आत्मा तुझसे प्रसन्न है'।

गुरुदेव जी म. के ऊर्वर मस्तिष्क में संघ-संरचना की एक योजना काफी दिनों से उत्पन्न हो रही थी। वे चाहते थे कि वाचस्पति गुरुदेव के महान् व्यक्तित्व से प्रभावित सुपोषित हरियाणा-संभाग के क्षेत्रों का एक संगठन बनाया जाए। उस संगठन की समग्र रूप-रेखा तैयार करके उन्होंने अपने गुरुदेव जी म. के चरणों में अर्पण कर दी। वाचस्पति गुरुदेव उस नूतन संकल्पना से प्रभावित तो बहुत हुए, पर उसे क्रियान्वित करने के लिए सहमत नहीं हुए। कहने लगे कि 'नूतन संगठन के निर्माण से क्षेत्रों में श्रावकों का विभाजन हो जाएगा, अतः श्रावक-समाज को पूर्ववत् ही चलने दें।' पूज्य गुरुदेव ने अपने गुरुओं की भावना को सकारात्मक रूप से स्वीकार किया और सदा के लिए उस योजना को निरस्त कर दिया अपनी कल्पनाओं से भी बड़ों की आज्ञा को अधिमान देना जानते थे गुरुदेव।

'मंगलाचरण'

पूज्य आचार्य अमर सिंह जी, याद हमें नित आते हैं,
संयम मेरु मयाराम गुरु, मदन लाल मन भाते हैं।
शासन नायक गुरु सुदर्शन, करुणा घन बरसाते हैं,
हाथ जोड़ और मान मोड़ हम, सबको शीश झुकाते हैं।

शुद्ध भाव से धर्म ध्यान करने वाला कभी भूखा नहीं रहता।
—गुरु सुदर्शन

7. पंजाब पदार्पण

पूज्य गुरुदेव जी म. अपने गुरुदेव के श्री चरणों में जींद विराजमान थे। वाचस्पति गुरुदेव को कुछ हृदय की तकलीफ रहने लगी थी। उन की भावना थी कि मैं पंजाब-भ्रमण करूँ तथा अपने शिष्य सुदर्शन मुनि जी को भी पंजाबी क्षेत्रों का परिचय करा दूं।

गुरुदेव ने तपस्वी जी म. को फरमाया कि– "हमारी इच्छा है कि गुरुदेव के सामने पंजाब देख लें।" इस पर श्री तपस्वी जी म. भी सहमत हो गए। वे गुरुदेव की हर इच्छा को अधिमान देते थे। मूनक की ओर विहार हुए।

वाचस्पति गुरुदेव को अधिक सफर नहीं बढ़ाना था, अतः बांगर के गाँव में गुरुदेव पधारे। यहाँ के ग्राम्य वातावरण का आनन्द लिया और जन-जागरण का महनीय कार्य संपन्न किया। भक्ति प्रधान ग्रामों को तृप्त कर हांसी हिसार गए। उकलाना ओर मध्यवर्ती अनेक गाँवों का स्पर्श करते हुए नरवाना पधारे। टोहाना से मूनक पधारे। वहाँ का उत्साह दर्शनीय था।

वाचस्पति जी म. की इच्छा थी कि अपने शिष्य का चातुर्मास जालन्धर कराऊँ। जालन्धर उस मौके पंजाब का बड़ा विशाल और केन्द्रीय क्षेत्र था। वहाँ की समाज गुरुदेव से और उनकी क्षमता से परिचित नहीं थी, अतः उनके चातुर्मास के प्रति अनुत्सुक दिखाई दी। अन्ततः वाचस्पति गुरुदेव का सन् 1961 का चातुर्मास जालन्धर तय हुआ। गुरुदेव का चातुर्मास अमृतसर करवाने का मन बना पर उस समय अमृतसर श्रीसंघ भी विभाजित था। पार्टीबाजी पूरे जोरों पर थी। अतः शीघ्र निर्णय नहीं लिया, सोचा कि अमृतसर जाकर ही स्थिति का आकलन करेंगे और फिर निर्णय लेंगे।

> संस्कार, विचार एवं आचार से मानव जीवन की कीमत बढ़ती है।
>
> –गुरु सुदर्शन

पंजाब की ओर प्रस्थान हुआ। वाचस्पति गुरुदेव का लाडला पाला-पोसा पंजाब। गुरुदेव जी म. के लिए काफी कुछ नया, अछूता पंजाब।

मूनक से वाचस्पति गुरुदेव ने बुढलाडा, मानसा, बरनाला का रास्ता लिया और गुरुदेव जी म. के लिए उन्होंने सुनाम, संगरूर, धूरी, मलेरकोटला, अहमदगढ़ आदि क्षेत्रों को सिंचित करने का आदेश दिया। रायकोट में मिलने का प्रोग्राम बनाया। जहाँ-2 विचरण हुआ, कहीं भी विषमता प्रतीत नहीं हुई। वही पुराना श्रद्धा-भाव, वही हार्दिक समर्पण। मुनियों से भी मिलन होता रहा। मलेरकोटला में श्री राजमल जी म. के दर्शन हुए। अहमदगढ़ में श्री प्रेमचन्द जी म., श्री फूलचन्द जी म. 'श्रमण' जी के चरण-स्पर्शन का सौभाग्य मिला।

पूज्य गुरुदेव जी म. को अब अमृतसर जाकर चातुर्मास आदि के संबन्ध में निर्णय करना था। समय थोड़ा रह गया था। अतः लम्बे-2 विहार करने अनिवार्य हो गए थे। जीरा में श्री शास्त्री जी म. की गर्दन में तीव्र दर्द भी हो गया। पर रुकने का वक्त नहीं था। दर्द को झेलते-2 चल दिए। अपरिचित-सा इलाका था। मक्खू, हरिके-पत्तन से आगे छोटा सा गाँव है-बुर्ज। वहाँ मध्याह्न में पहुँचे। एक महन्त (बाबा) का डेरा ठहरने का ठिकाना बना। आटे की चक्की से निकलता हुआ गर्म पानी लिया। गाँव से कुछ रोटियां मिल गईं। गुजारा हो गया। पट्टी जाकर शास्त्री जी म. को दवा दिलाई और उन्हें दर्द से राहत मिली।

अमृतसर पधारना था। समाज दो विभागों में विभक्त था। पूज्य गुरुदेव सर्वप्रथम चौरस्ती अटारी वाली स्थानक में पधारे। प्रवचन और जीवन, संयम और व्यवहार, जोश और होश का अद्भुत समन्वय देखकर अमृतसरवासी चातुर्मास के लिए परम आग्रहशील हो गए। गुरुदेव जी म. ने भी उपयुक्त वातावरण देखकर चातुर्मास का मन बना लिया तथा वाचस्पति गुरुदेव को सूचित कर दिया। समाज गई और स्वीकृति हो गई।

> सहयोग भावना मानवता का सूत्र है एवं असहयोग भावना शैतानियत का सोपान है।
> —गुरु सुदर्शन

यों तो गुरुदेव जी म. के लिए अमृतसर बिल्कुल नया था। पर दिल्ली में इन लोगों का आना रहता था, अतः बहुतों से पुराना परिचय था। संपर्क बनने में देरी नहीं लगी। चौरस्ती अटारी का स्थानक चातुर्मास के लिए अधिक अनुकूल नहीं होने से 'जैन भवन' में ठहरने का सामूहिक विचार बना। चातुर्मास प्रारम्भ होने में अभी कुछ दिन शेष थे। अतः उन बचे दिनों का सदुपयोग करने के लिए जंडियाला गुरु पधार गए। फिर वहाँ से चातुर्मासार्थ प्रवेश किया।

वाचस्पति गुरुदेव की कृपा तथा अपना विवेक, दोनों ने मिलकर अमृतसर समाज का रंग बदलना शुरू कर दिया। गुरुदेव का स्वभाव था कि कभी किसी को अपना विरोधी नहीं मानते थे। कोई अधिक आए, कम आए, या न आए, सबको वे अपना ही समझते थे। सब घरों में दर्शन देने जाना, सब घरों से गोचरी लाना और सबसे प्रेम से बोलना। गुरुदेव का ऐसा जबरदस्त आकर्षण था। दोनों ग्रुप आने लगे तो आते ही रहे। गुरुदेव निष्पक्ष भी थे निर्भीक भी। किसी बड़े से बड़े चौधरी से दबते भी नहीं थे और अपनी बात भी साफ कह देते थे। उनके मुखारविन्द से एक ब्रह्मघोष हमने भी कई बार सुना है "इज्जत करेंगे छोटे बालक की भी, पर खुशामद नहीं करेंगे खुदा की भी। यदि हमें खुशामद ही करनी होती, तो घर में रहकर अपने माँ-बाप की करते।"

सामाजिक विभाजन के बावजूद सबने गुरुदेव के प्रति समान श्रद्धा-भक्ति का परिचय दिया। जब उनकी ओजस्वी वाणी निहित स्वार्थी तत्वों को ललकारती तो हृदय-भूमिका गहराई तक हिल जाती थी। कुछ लोग जालन्धर जाकर वाचस्पति गुरुदेव से भी संकेत करते कि सुदर्शन मुनि जी बहुत कठोर कहते हैं, ऐसा कहते हैं, वैसा कहते हैं आदि। इस पर वे फरमाते कि "सुदर्शन मुनि की जगह मैं बोल रहा हूँ, वो जो कुछ कह रहा है, सही कह रहा है और मेरी आज्ञा से कह रहा है"। उनकी ओर से इतना ठोस समर्थन देखकर श्रावक भी चुप हो जाते। पूज्य वाचस्पति

> घर की औरत गंभीर रहे तो घर स्वर्ग सदृश बन जाता है।
>
> —गुरु सुदर्शन

गुरुदेव जहाँ अपने शिष्य का इतना सम्मान और समर्थन करते, वहाँ कुछ जायज बातों को गुरुदेव तक पहुंचा भी देते थे और सावधानी रखने की हिदायत भी दे देते थे। ऐसे करुणा-वरुणालय गुरुओं का आलम्बन और संरक्षण पाकर कौन शिष्य अपने को धन्य-भागी नहीं कहेगा?

हरियाणा के बुटाना गाँव के एक भाई श्री किशोरी लाल जी ने अमृतसर गुरुदेव के चरणों में जाकर 41 दिन की दीर्घ तपस्या की। समाज में श्रद्धा का विशेष भाव उमड़ा। चातुर्मास सम्पन्नता पर जो विहार की रौनक थी, वह पूज्य गुरुदेव के कर्तृत्व की मुँह बोलती तस्वीर थी। ऐसी-2 भीड़ें इतिहास में कभी-कभार ही होती हैं। अमृतसर से चलकर भले ही गुरुदेव जण्डियाला पधार गए, पर अमृतसर वालों ने तो जण्डियाला भी अमृतसर बना दिया।

कपूरथला पधारे। वहीं वाचस्पति गुरुदेव का भी पदार्पण हुआ। वह क्षेत्र छोटा होते हुए भी महान् पुरुषों के समागम से महान् हो उठा। वहाँ के प्रमुख श्रावक श्री पृथ्वी राज जी पंजाब के असरदार व्यक्तियों में से एक थे। सामायिक-संवर की रुचि इतनी थी कि पाँच सामायिक किए बिना मुँह से पानी छूते भी नहीं थे। वाचस्पति गुरुदेव की संयम-दृष्टि के समर्थक थे। विश्वस्त चर्चाओं में अंतरंग थे। वहाँ से करतारपुर होते हुए जालन्धर पधारे। जालन्धरवासी वाचस्पति गुरुदेव के तो दीवाने थे ही, जब गुरुदेव के व्यक्तित्व, वक्तृत्व, और कर्तृत्व को समझा, सुना और देखा, तो भौंचक्के रह गए। उन्हें याद आया कि वाचस्पति गुरुदेव ने मूनक में कहा था कि सुदर्शन मुनि का चातुर्मास मुझसे भी सवाया होगा। उनकी वह वाणी शत-प्रतिशत सत्य थी। जालन्धर में एक कल्प किया। उसी दौरान पूज्य गुरुदेव ने मण्डी फैण्टनगंज में भी प्रवचन किया और एक लघु क्षेत्र का श्रीगणेश हो गया। फैण्टनगंज में हरियाणा संभाग के अग्रवाल जैन रहते हैं। ओसवाल जैनों के बीच उनका अस्तित्व विलीन-प्रायः रहता था। उन्हें चातुर्मास में विशेष पहचान मिली थी और अब पूज्य गुरुदेव

जिस प्रकार औरतों के आंसू पुरुषों को आकर्षित कर लेते हैं उसी प्रकार भक्तों के सच्चे आंसू भगवान को अपनी ओर खींच लेते हैं। —गुरु सुदर्शन

ने वहाँ प्रवचन करके उस पहचान को सार्वजनिक मान्यता दिला दी। उन दिनों जालंधर में श्री ज्ञानचन्द जी जज लगे हुए थे। वे हमेशा रात को ही दर्शन करने आते। एक बार गुरु म. ने पूछा– 'रात को क्यों?' उत्तर दिया– 'आपके बचाव के लिए। दिन में आऊँगा तो श्रावक लोग सिफारिश करने के लिए आपको परेशान करेंगे।'

तर्ज– ऐ मेरे दिले नादां...

गुरु मदन की यादों के, हम दीप जलाते हैं,
ज्योर्तिमय जीवन की, जयकार बुलाते हैं ॥टेक॥

1. कोई साथी बने उनको, संयम ही तो प्यारा था,
कोई साथ न दे उनको, संयम का सहारा था,
संयममय जीवन के, संस्मरण सुनाते हैं...।

2. यदि संघ बनाना है, मत अपनी चलाओ तुम,
यदि अपनी चलानी है, मत संघ बनाओ तुम,
यही उनका नजरिया था, हम याद दिलाते हैं...।

3. था सत्य का पक्ष लिया, और पक्ष सभी छोड़े,
था सत्य ही लक्ष्य बना, और लक्ष्य सभी छोड़े,
पर्वत-सी ऊँचाई को, हम शीश झुकाते हैं...।

4. जो चरणों में आ बैठा, अपनत्व से भर डाला,
दी एक वो चिंगारी, जो बनती गई ज्वाला,
पा चरणों की रज हम, भी खुशबख्त कहाते हैं...।

यद्यपि कई बार बड़ों की बातों को अपना मन नहीं मानता तो भी
समय पर वही बातें प्रकाश पुंज बन जाया करती हैं। –गुरु सुदर्शन

8. गुरु बिछोह के क्षण

सन् 1961 के अंतिम माह में पंजाब का जैन समाज चिंता के कोहरे में लिपटा जा रहा था। लुधियाना विराजित आचार्य प्रवर श्री आत्माराम जी म. का स्वास्थ्य प्रायः क्षीण होता जा रहा था। श्रमण संघ के प्रमुख मुनिराज तथा साध्वियाँ दर्शनों के लिए लुधियाना प्रस्थानरत थे। इसी परिप्रेक्ष्य में जालंधर विराजित पूज्य गुरुदेव के मन में विचार कौंधा कि हमारे मुनिसंघ को भी आचार्य श्री जी के दर्शन करने चाहिये। वाचस्पति गुरुदेव के निकटतम श्रावक श्री केसरदास जी से इस विषय में चर्चा की। इस चिन्तन बीज को लेकर श्रावक जी सुलतानपुर लोधी वाचस्पति गुरुदेव की खिदमत में पहुँचे। गुरुदेव के विचारों से अवगत कराया। वाचस्पति गुरुदेव सहमत तो थे परंतु पिछले 5 वर्षों से कुछ ऐसी आंधियाँ चली थीं कि पत्ता-2 बिखर रहा था। अतः गुरुदेव नहीं चाहते थे कि कोई तनाव बढ़े या आचार्य श्री जी को असमाधि हो। श्रावक केसरदास जी के साथ पुनः प्रमुख श्रावकों ने आकर विनति की तो वाचस्पति गुरुदेव ने फरमाया– "हमें आचार्य श्री जी के दर्शनों से कोई ऐतराज नहीं है पर हम वहां से दो आश्वासन चाहते हैं। प्रथम ये कि हम स्थानक से भिन्न किसी निकटवर्ती मकान में ठहरें तथा दूसरा ये कि श्रमण संघ के संबंध में कोई चर्चा न हो। शिष्ट मण्डल ने लुधियाना जाकर आचार्य श्री जी से अन्तरंग वार्तालाप करके पूरा आश्वासन ले लिया और वाचस्पति गुरुदेव को स्थिति से परिचित करवा दिया। वाचस्पति गुरुदेव ने भी स्वयं के साथ-साथ सकल 12 ठाणों सहित लुधियाना जाने का मन बना लिया। पूज्य गुरुदेव का विचार साकार हो गया और दोनों सिंघाडों का फिल्लौर में मिलन हुआ। वाचस्पति गुरुदेव ने फरमाया– "हमें वहाँ दर्शनों तक ही सीमित रहना है, प्रवचन नहीं करना।" पंजाब भर में खबर हो चुकी थी। आचार्य श्री जी के साथ पंडित श्री शुक्लचंद्र जी म., पंजाब केसरी

> पेंसिल को सीमा में छीलो नहीं तो सुरमा चूर-चूर हो जाएगा अतः अति बुरी है।
> –गुरु सुदर्शन

श्री प्रेमचन्द जी म., श्री रघुवरदयाल जी म., 'श्रमण' श्री फूलचन्द्र जी म., पं. श्री हेमचन्द्र जी म., श्री ज्ञान मुनि जी म., श्री विमल मुनि जी म. जैसे नामवर दिग्गज संत मौजूद थे। सभी में एक उत्सुकता थी, एक आशा थी पर किन्हीं दिमागों में कुटिलता भी रही होगी। 15 जनवरी का दिन था और 16 कि.मी. का सफर। वृद्ध, थकी और वातावरणीय दबाव से बोझिल काया लेकर वाचस्पति गुरुदेव अपने धीरोदात्त कदमों से लुधियाना की ओर बढ़े। कई वरिष्ठ मुनिराज अगवानी के लिए दूर तक आए। दोपहर बाद 3 बजे के लगभग स्थानक पहुंचे। आचार्य श्री जी को धूप सेंकने के लिए सबसे ऊपर छत पर लिटाया हुआ था। 60-70 साधु-साध्वी झलक पाने के लिए बेताब थे। वाचस्पति गुरुदेव ने सश्रद्ध, सविधि घुटने टिकाकर आचार्य श्री जी को वंदन किया। फिर दैवसिक, सांवत्सरिक क्षमापना की। चिरकाल पश्चात् मिलन की भावुकता आंखों में तैर रही थी। समय अल्प था। सर्दी के दिनों में सूर्य अस्त जल्दी होता है। आचार्य श्री को पुनः वंदन कर वाचस्पति गुरुदेव स्थानक के निकट अग्रवाल धर्मशाला में आकर ठहर गए। उन्हीं दिनों श्री सत्येन्द्र मुनि जी म., श्री लखपत राय जी म., तथा श्री पद्म मुनि जी म. जो संयम प्रधान शैली के समर्थक थे, वाचस्पति गुरुदेव के साथ धर्मशाला में ठहरे। श्रमण श्री फूलचन्द जी म. धर्मशाला में पधारे तथा वाचस्पति गुरुदेव को संकेत रूप में निवेदन किया– "जरा सावधानी रखना क्योंकि कुछ लोग बखेड़ा भी कर सकते हैं।" वाचस्पति गुरुदेव ने फरमाया कि "हम अपनी ओर से कोई प्रतिकूल अवसर नहीं देंगे।" प्रतिदिन दोपहर बाद सकल मुनि मण्डल स्थानक में दर्शनार्थ पहुँच जाता था। आचार्य श्री जी का स्वास्थ्य शिथिलतर होता जा रहा था। मुनि संघ उस युगपुरुष की अलौकिक आभा में स्वयं को कृतार्थ मान रहा था।

बड़ों को देखकर झुक जाता है ये सर अपना,
अभी तक कायम हैं रवायतें अपनी ॥

बड़ों की भूल एकांत में कहनी चाहिए, यदि भूल करते समय टोकोगे
तो आप उनकी आशातना कर रहे हो। –गुरु सुदर्शन

पारस्परिक मिलन से पूर्व स्नेह भी उमड़ा। परस्पर खिमत्त-खिमावणा भी हुई, और चर्चाएं भी समाप्त हुई। पाँच दिन का वह दर्शन प्रवास अपेक्षाकृत शांत वातावरण में पूर्ण हो गया। आदत के अनुसार चर्चा करने वालों ने कोशिशें भी की पर सब बातें स्पष्ट थी ही। 20 जनवरी को विहार करके वाचस्पति गुरुदेव मुनि मण्डल के साथ फगवाड़ा की ओर पधार गए। 30 जनवरी 1962 के रोज अशुभ समाचार मिला कि आचार्य श्री जी का देवलोक गमन हो गया। वाचस्पति गुरुदेव ने उस दिन उपवास रखा। दिन भर किसी से नहीं बोले। उनके शिष्य वर्ग के लिए 'संवेदना पत्र' भिजवाया।

आचार्य श्री जी के बाद जनता को अपनी श्रद्धा के केन्द्र वाचस्पति गुरुदेव ही नजर आए। मिथ्या भ्रांतियों का कोहरा क्रमशः विलीन हो गया। अब विहार यात्राओं की बारी थी। गुरुदेव का सन् 1962 का चातुर्मास होशियारपुर के लिए स्वीकृत हुआ। चातुर्मास से पूर्व हिमाचल प्रदेश की यात्रा की। नालागढ़ पहुंचकर भाव बना कि शिमला भी फरसा जाए। अतः अदम्य उत्साह मन में लिए चल दिए शिमला के धार्मिक हिम को पिघलाने। शिमला में ठहरने के लिए गैण्डामल हेमराज वालों ने 'जैन आश्रम' बना रखा था। गुरुदेव वहीं विराजे। जब गुरुदेव ने वहां के श्रावक ला. निरंजन दास जी को प्रवचन आदि की व्यवस्था करने को कहा तो वो हंसकर बोले, "गुरुदेव! यहां तो सब संत टूरिस्ट (सैलानी) के तौर पर आते हैं। दो-चार दिन रुक कर चले जाते हैं।" गुरुदेव ने स्पष्ट कहा– "हम Tourist नहीं हैं, कथा करेंगे तभी यहाँ ठहरेंगे।" श्रावक ने गुरु आज्ञा स्वीकार करके प्रवचन की व्यवस्था बनाई। आश्चर्य तो तब हुआ जब श्रोताओं की संख्या धीरे-2 बढ़ने लगी और 24 दिन के उस प्रवास काल में 300 तक श्रोताओं की संख्या पहुँच गई।

शिमला से वापसी का मार्ग सोलन, कसौली, कालका वाला पकड़ा। सोलन में गुरुदेव की संसारिक बहन विद्या का परिवार रहता था। भाई

पुण्य तीन कारणों से पैदा किया जाता है– सेवा, इष्ट स्मरण, शुभ भावना।
—गुरु सुदर्शन

को अपने घर आया देख बहन की भावना का पार नहीं था। पर पूज्य गुरुदेव ने संसारिक संबंधों को कभी अहमियत नहीं दी। **"सब अपने या कोई न अपना, जग को समझा झूठा सपना।"** वहां से पंचकूला पधारे। सर्वत्र भक्ति की बहार रही। गुरुदेव होशियारपुर चौमास के लिए चले।

उधर वाचस्पति गुरुदेव फरीदकोट चौमास के लिए जीरा शहर पधारे वहां वाचस्पति गुरुदेव को आहार के पश्चात् गले में चुभन हुई। उन्होंने भगवन् श्री को गला दिखाया। भगवन् श्री ने देखा कहा– "मामूली छाला है।" पर वाचस्पति गुरुदेव ने कहा–ये मामूली नहीं है कैंसर का छाला है। मेरी उम्र एक वर्ष की रह गई है।" सन् 1962 में जीरा शहर में ही पहले स्वयं वाचस्पति गुरुदेव ने, बाद में डाक्टरों ने घोषणा कर दी कि इनके गले में कैंसर है। ऑप्रेशन न करवाने का उनका निश्चय था। सन् 1962 का उनका चातुर्मास फरीदकोट में हुआ। गुरुदेव का होशियारपुर में था। होशियारपुर क्षेत्र गुरुदेव को शांतिसमाधि की दृष्टि से बड़ा अच्छा लगता था। महासाध्वी श्री सुभाषवती जी म., प्रवेशकुमारी जी म. तथा मोहनमाला जी म. ठाणे 3 का चातुर्मास भी साथ था। हार्दिक सौहार्द का वातावरण रहा।

उन्हीं दिनों राजस्थान में श्रमण संघीय उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म. श्रमण संघ से अपना संबंध विच्छेद कर प्राचीन 'साधुमार्गी संघ' को पुनर्जीवित कर रहे थे। वाचस्पति गुरुदेव उनके समविचारक थे। अतः संघ गठन से पूर्व उन्होंने समाचार भिजवाया कि– "हम नया संघ बना रहे हैं, आप भी मुनि मण्डल सहित इसमें सम्मिलित हो जाएं, तथा संघ का आचार्य अपने सुशिष्य श्री सुदर्शन मुनि जी को बनाने की अनुमति दें। वाचस्पति गुरुदेव का उत्तर था– "हमने श्रमण संघ से त्याग पत्र नहीं दिया है। केवल उसके 'प्रधानमंत्री' पद से त्याग पत्र दिया है। कोई नया संघ या आचार्य बनाना हमारे विचाराधीन नहीं है। आप अपनी व्यवस्था अपने अनुसार बनाएं। हमारे पारम्परिक साधूचित संबंध पूर्ववत्

गुरुकृपा चक्रवर्ती के रत्नों से बढ़कर है।
–गुरु सुदर्शन

बने रहेंगे।" सन् 1946 में ही उन्होंने सभी शास्त्रीय पदवियों को लेने का त्याग कर दिया था, और वही संस्कार अपने शिष्यों में डाले थे। कई बार वाचस्पति गुरुदेव फरमाते थे– "सुदर्शन मुनि! आचार्य तो तुझे मैं आज बना दूं, पर इससे तेरी राह में जगह-2 कांटे बिछ जाएंगे। स्थान-2 पर नए स्थानक बनेंगे और श्रावकों का विभाजन हो जाएगा। अब तो सब अपने हैं फिर हम कुछ ही व्यक्तियों तक केन्द्रित हो जाएंगे।" उनकी दीर्घ दृष्टि को गुरुदेव ने बखूबी समझा और अंत तक पालन भी किया।

अब वाचस्पति गुरुदेव का स्वास्थ्य निरंतर गिरता जा रहा था। फरीदकोट चातुर्मास के उत्तरार्ध में ही उन्होंने प्रवचन से विश्राम ले लिया था। एक दिन टैस्टिंग के लिए उनके गले से छोटा सा टुकड़ा डॉ. ने लिया। जिससे उनकी पीड़ा और बढ़ गई। चातुर्मास समाप्ति पर मोगा पधारे। वहीं पर गुरुदेव ने उनके दर्शन किए, रोम-2 पुलकित हो गया। वहां से गुरुदेव जैतों पधारे। छोटे से क्षेत्र को 27 दिनों तक गुरुदेव की सिंह गर्जना सुनने का सौभाग्य मिला। वाचस्पति गुरुदेव कुछ दिन पट्टी में रहे फिर वे जण्डियाला पधार गए। भाव था कि अमृतसर जाऊं पर न शरीर ने साथ दिया, न ही जण्डियाला संघ ने जाने दिया। वाचस्पति गुरुदेव अपनी आत्मकथा लिख रहे थे पर अधिक अस्वस्थता के कारण ज्यादा लिख नहीं पाए। 13 अप्रैल की वैशाखी संक्रांति के दिन दर्शनार्थी भाइयों की काफी भीड़ थी। भगवन् श्री प्रवचन करने लगे पर शोर थम नहीं रहा था। अतः वाचस्पति गुरुदेव गले में भीषण वेदना के बावजूद भी प्रवचन के लिए खड़े हो गए। शोर एकदम थम गया। उन्होंने जोशीला प्रवचन फरमाया। वह प्रवचन उनके जीवन का अंतिम उद्बोधन था। वीर जयंती के बाद गुरुदेव वहां पधार गए और सारा दायित्व संभाल लिया। उत्तराध्ययन सूत्र का 29वां अध्ययन "सम्यक्त्व पराक्रम" प्रवचन में सुनाना प्रारंभ किया। 73 विषयों में 38वां "शरीर प्रत्याख्यान" है। गुरुदेव इस विषय को टालते रहे। पूर्व विषयों को ही विस्तार देकर सुनाते रहे पर आखिर

> शाख रहित व्यक्ति राख समान होता है।
>
> –गुरु सुदर्शन

इस विषय को भी सुनाना ही था और 27 जून को प्रातः गुरुदेव ने "शरीर प्रत्याख्यान" का वह विषय भी सुना ही दिया।

इधर वाचस्पति गुरुदेव की पीड़ा बढ़ती जा रही थी। गले में कैंसर के कारण केवल पानी या दूध ही ले पाते थे। बोलने में काफी कष्ट होता था। गर्मी का मौसम और स्थानक भी हवादार नहीं था। ऐसे में भी उनकी आत्मसमाधि अपूर्व थी। उस समय वे **'अबोहि कलुसं कडं'** अज्ञानवश मैंने ही अपने अशुभ कर्म का बंध किया है' का अधिकाधिक जाप करते थे। सारा मुनि मण्डल उनकी अनवरत सेवा में लीन था।

वाचस्पति गुरुदेव ने शुरू से ही अपने मुनि संघ को बड़ा अनुशासित एवं संयमनिष्ठ बनाए रखा था। वे अपने बाद भी कुछ सुदृढ़ व्यवस्था बनाना चाहते थे। 15 जून 1963 को जण्डियाला की स्थानक की मुंडेर का एक हिस्सा गिर गया। इससे उन्हें अपने अंतिम समय का कुछ आभास हो गया। 16 जून को प्रातः 10 बजे संकेत से पैड और पेंसिल मंगाई तथा निम्नलिखित मर्यादा पत्र लिखा–

> **"मुनि रामकिशन ने लिखा है कि किसी भी कीमत पर संघ एक कर दो। उसका उत्तर– 20 संतों में जिसे श्रमण संघ में रहना हो रहे, मेरी ओर से रुकावट नहीं हैं। श्री छोटेलाल जी म. की निश्राय के संत, अगर संघ-अनुशासन-व्यवस्था ठीक बन जाए, अपने संयम की उन्नति समझें तो (श्रमण संघ में) मिल सकते हैं वरना पूज्य अमरसिंह जी, पूज्य कांशीराम जी की सम्प्रदाय के नाम पर चलें। उनमें सुदर्शन नेता, बाकी सब इसकी आज्ञा में रहें।"**

ये पत्र लिखकर उन्होंने गुरुदेव के हाथ में थमा दिया। गुरुदेव को काफी संकोच हुआ, इंकार भी किया पर वाचस्पति गुरुदेव ने यही कहा कि– "मैंने जो करना था कर दिया। अब मैं तुमसे निश्चिन्त और तुम मुझसे निश्चिन्त।" इतना कह कर वे अपनी अंगुलियों के पोरे गिनने

दिल से, श्रद्धाभक्ति से सुनी बातें आत्मा में उतर जाती हैं और साधक हेतु कल्याणकारी बनती हैं। –गुरु सुदर्शन

लगे। गुरुदेव ने देखा कि 11 पर आकर रुक गए जिसका संकेत था कि अभी ग्यारह दिन और सूर्य की आभा चमकती रहेगी।

इसके पश्चात् वाचस्पति गुरुदेव ने सब मुनियों को बुलाकर जीवन पर्यंत के लिए कुछ सामूहिक निर्देश दिए।

1. मेरे बाद मेरे नाम का कोई स्मारक नहीं बनवाना। कोई पुस्तकालय, औषधालय तथा विद्यालय आदि न खोलना। तुम ही मेरे जीवन्त स्मारक हो।
2. कभी गृहस्थों से चंदा नहीं मांगना। साधु दाता होता है, याचक नहीं।
3. जीभ के चटोरे मत बनना, नहीं तो एषणा समिति में दोष ही दोष लगेंगे।
4. औरतों से अधिक संपर्क नहीं रखना।

वाचस्पति गुरुदेव का देह दीप भले ही मंद मंदतर हो रहा था पर संयम दीप दिन-प्रतिदिन और अधिक जगमग-2 हो रहा था। एक दिन गुरुदेव को बुलाकर फरमाने लगे– "मेरे बाद पंजाब से हरियाणा की ओर विहार कर देना। वहां तुम्हें शिष्य मिलेंगे व संयमी परिवार की वृद्धि होगी।

वाच. गुरुदेव संथारे के लिए पुनः-2 आग्रह करते रहे, लेकिन गर्मी की भीषणता और रोग की भयानकता के कारण कोई संथारा करवाने का साहस नहीं कर सका। ऐसे मौके वे श्री तपस्वी जी म. को विशेष रूप से याद करते हुए फरमाने लगे– "बदरी होता तो संथारा करवा देता।" अन्ततः 27 जून को सायं साढ़े चार बजे वाचस्पति गुरुदेव ने स्वयं ही संथारा ग्रहण कर लिया और धरती का वह बेताज बादशाह 15 मिनट बाद दिव्य देवलोकों की ओर प्रस्थान कर गया। पूज्य गुरुदेव जी म. अपनी धीर गंभीर प्रकृति के अनुरूप स्वयं भी संभले रहे तथा मुनि संघ एवं श्री संघ को भी बखूबी संभाला।

बुझ गई है जीवन ज्योति, स्मृतियां ही सदा अमर हैं।
हो गए दृष्टि से ओझल, वो परम पूज्य गुरुवर हैं॥

जो आस्तिक होते हैं, दयालु/धर्मात्मा होते हैं, उनकी आत्मा में भगवान् का वास होता है।
–गुरु सुदर्शन

तृतीय प्रहर

1. संघ संचालन की ओर

चातुर्मास का समय निकट था। गुरुदेव का विचार था कि 9 संतों में से कुछ संत जालंधर चातुर्मास करें और कुछ कपूरथला। लेकिन पूज्यपाद भंडारी श्री बलवंतराय जी म. की भावना को देखते हुए 1963 का संयुक्त चातुर्मास अमृतसर श्री संघ को दिया गया। वाचस्पति गुरुदेव के वियोग से उत्पन्न शून्यता को गुरुदेव ने अपने प्रवचन, प्रशिक्षण और मधुर व्यवहार से पूर्ण किया। पूज्यपाद श्री भंडारी जी म. के पास वाचस्पति गुरुदेव की निश्राय के अनेकानेक पत्र, श्रमण संघीय व्यवस्था से जुड़े हुए अनेक दस्तावेज आदि थे जिन पर गुरुदेव ने अपनी निगाह डाली। अत्यंत गोपनीय उन पत्रों एवं अन्य सामग्री को देखकर गुरुदेव का विचार बना कि "हमें इन सब विवादास्पद कागजों पत्रों को अपने पास नहीं रखना है क्योंकि आज तो हमारा मन साफ है, भविष्य में किसी भी घटना से राग-द्वेष ग्रस्त होकर इनका दुरुपयोग हो सकता है। अतः सामाजिक शांति एवं मानसिक समाधि के लिए इन सबको फाड़कर एकांत भूमि पर परठ देना चाहिए। सभी मुनियों ने गुरुदेव के विचारों से सहमति जताई और कार्य को सरअंजाम दिया। इस तरह गुरुदेव ने समाज रक्षा का पहला कदम उठाया।

उस वर्ष गुरुदेव ने 'रायपसेणीय-सूत्र' के आधार पर प्रवचन फरमाएं, जिन्हें गुरुवर्य श्री रामप्रसाद जी म. ने लेखनीबद्ध किया। उस वर्ष कार्तिक मास दो बार आया और गुरुदेव ने जैन समाज के सामूहिक

> कहने या टोकने पर जो मान जाए वह हीरा है, ठोकर खाने पर जो माने वह चांदी है।
> जो न टोकने पर और न ठोकर खाकर माने वह लोहा है। —गुरु सुदर्शन

निर्णयानुसार प्रथम कार्तिक मास पूरा होते ही विहार कर दिया। जालंधर पधारे। लौकिक पंचांगानुसार दीपावली पर्व का आयोजन दूसरे कार्तिक में मान्य किया था। अतः दीपावली जालंधर में मनी। वाचस्पति गुरुदेव की स्मृति में 825 अमल और सामायिकों का आयोजन हुआ।

अब हरियाणा गुरुदेव को पुकार रहा था अतः वहीं का मन बनाया और विहार क्रम में लुधियाना पधारे। वहां की धरती ने प्रथम बार गुरुदेव के देदीप्यमान जीवन के दर्शन किए। 15 दिसंबर के दिन देवकी देवी हॉल में 1300 सामायिकों का जो अपूर्व ठाठ लगा वह सबके लिए अविश्वसनीय प्रतीत होता था। जन-2 में गुरुदेव के प्रति श्रद्धा का और आकर्षण का प्रथम बीजारोपण हुआ। जाखल में मुनि सम्मेलन हुआ।

वाचस्पति गुरुदेव के बाद संघ व्यवस्था का जिक्र चला तो गुरुदेव ने अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया– "योगिराज श्री रामजीलाल जी म. हमारे बड़े हैं। हमारे लिए गुरुतुल्य हैं अतः संघ प्रमुख का अधिकार उन्हें दे दिया जाए। भण्डारी श्री बलवंतराय जी म., श्री नेकचन्द जी म., पं. श्री रणसिंह जी म., स्वामी श्री फूलचंद जी म., श्री तपस्वी जी म. सहित अन्य संतों ने कहा– "जो वसीयत गुरु महाराज लिखकर गए हैं, उसी के अनुसार हम चलेंगे और आपको बड़ा मानेंगे।" पेचीदगी थी पर गुरुदेव की दूर दृष्टि, प्रार्थना एवं प्रस्तुतीकरण की शैली से सभी सहमत हो गए। वहां से जींद पधारे और श्री योगिराज जी म. के दर्शन किए तथा उनके श्री चरणों में अपने विचार रखे। श्री योगिराज जी म. फरमाने लगे– "मैं लिखित पत्र के अनुसार चलने को (श्री सुदर्शन मुनि जी को नेता मानने को) पूर्णतः तैयार हूँ।" पर, गुरुदेव की आग्रह भरी विनति को स्वीकार करके मुनिसंघ का दायित्व उन्होंने अपने कंधों पर ले लिया।

सन् 1964 के चातुर्मास की घोषणा सोनीपत मण्डी की हुई। गुरुदेव के पदार्पण से हरियाणा में धर्मक्रांति नए आयामों में उद्घाटित हो रही थी। उस समय गाँव-2 में गुरुदेव ने सामायिकों का शंखनाद किया।

> विभूषा (शृंगार) करने से संयम भूसा बन जाता है।
>
> –गुरु सुदर्शन

चातुर्मास से पूर्व गुरुदेव का दिल्ली पदार्पण हुआ। दिल्ली का समग्र जैन समाज स्वागत में खड़ा था। दिल्ली प्रवेश के तुरंत पश्चात् गुरुदेव ने सबको आगाह किया कि "देश किसी बड़े नेता से वंचित होने वाला है।" गुरुदेव ने एक आकाशीय उल्कापात को निमित्त बनाकर ऐसा निष्कर्ष निकाला था। 27 मई को देश के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू का निधन हो गया।

उन दिनों पूज्यपाद श्री त्रिलोकचंद जी म. अस्वस्थ थे अतः उन्हें कोल्हापुर से सदर बाजार डोली में लाने का लाभ गुरुदेव व उनके सेवानिष्ठ मुनियों को भी मिला। दिल्ली विचरण के पश्चात् नरेला पधारे तो ज्ञात हुआ कि पं. श्री त्रिलोकचंद जी म. का देवलोक गमन हो गया। मन को गहरा आघात लगा। भावपूर्ण श्रद्धांजलि पत्र भिजवाकर उनको अपना अर्घ्य अर्पित किया। पुनः हरियाणा पधारे। वाचस्पति गुरुदेव की जन्मभूमि राजपुर पधारे। दिन भी संयोग से 27 जून का आ गया। वाचस्पति गुरुदेव के देवलोक को एक वर्ष पूर्ण हो रहा था। अतः उनकी जन्मभूमि में ही उनके नाम का यशोगान किया।

ग्रामों, मण्डियों को धर्मस्नेह से सिंचित करते हुए चातुर्मास के लिए सोनीपत मण्डी में पधारे। चार वर्ष पूर्व इस क्षेत्र की संरचना वाचस्पति गुरुदेव ने की थी और अब वहाँ पर एक भव्य स्थानक का निर्माण भी हो चुका था। व्यवसाय की दृष्टि से भी समृद्ध होने के कारण सोनीपत अपने समीपवर्ती ग्रामों का केन्द्र बन गया था और जैन परिवारों की संख्या भी निरंतर वर्धमान हो रही थी।

सन् 1964 तक हरियाणा में लंबी तपस्याओं का प्रचलन नहीं हुआ था। लेकिन गुरुदेव की प्रेरणा से सोनीपत में तपस्याओं की पचरंगी हुई और संवत्सरी पर 500 पौषध हुए।

उन दिनों सोनीपत में बड़ी जल्दी-2 भूकंप के झटके आते थे जिससे लोगों का भयभीत होना स्वभाविक था। उस भयनिवृत्ति के लिए,

संस्कार ही जीवन के निर्माण की आधार-शिला है।
—गुरु सुदर्शन

द्वारिका-रक्षा के आधार पर, आयम्बिलों का अखण्ड आराधन करवाया। सुखद संयोग ये बना कि भूकंप के झटके आने बंद हो गए और लोग भयमुक्त हो गए। श्री शांति मुनि जी म. की बीमारी के कारण चातुर्मास के बाद भी ठहरना पड़ा। कुल 7 महीने रुके।

सन् 1965 का चातुर्मास गुरुदेव का रोहतक निश्चित हुआ। इससे पूर्व शेषकाल में उन्होंने हरियाणा की धरती को ही हरा-भरा किया। रोहतक में भी खूब रंग रहा। श्री शांतिचन्द्र जी म. के घुटने का आप्रेशन हुआ। उस युग में हरियाणा के अग्रवाल युवकों में मद्यपान की प्रवृत्ति प्रवेश कर रही थी। गुरुदेव ने काफी हद तक युवा पीढ़ी को विनाश के गर्त में गिरने से बचाया।

सन् 1966 के चातुर्मास की स्वीकृति मूनक यानि पंजाब के लिए हुई। साथ में जाखल क्षेत्र को भी शामिल कर लिया गया। 19 वर्ष के सुदीर्घ अंतराल के बाद मूनक वासियों को गुरुदेव का सर्वथा नए रूप में सान्निध्य मिला। वहां सैंकडों की संख्या में बालक और युवक सामायिक करके 'सरलबोध' व 'धर्मबोध' के पाठ याद करते थे। उस वर्ष मूनक ने 'तपोभूमि' का खिताब पाया। जब गुरुदेव का अमर गीत 'अरी बहना! काली तो रानी गुणवती, वर्णन सूत्र मंझार, झूला तो झूला तप का चाव से' उनके कण्ठ से निकलता था तो तप के झूले गगन की ओर चढ़ते दिखाई देते थे। वैरागी श्री हुक्मचंद जी (श्री विनय मुनि जी म.) ने भी 20 दिन में व्रतों की दो अट्ठाई की।

चातुर्मास का आधा भाग जाखल में व्यतीत हुआ। यह क्षेत्र आम जनता की निगाह में उसी वर्ष आया। श्री जिनेन्द्र जी तीव्र वैराग्य भावना से ओत प्रोत हुए पर परिवार की ओर से आज्ञा नहीं मिली। उनकी वो भावना 1982 में अपने द्वितीय पुत्र चि. आदीश को गुरुचरणों में समर्पित कर और 1989 में दीक्षा करवाकर ही फलीभूत हुई।

चातुर्मास के अंत में वैरागी हुक्मचन्द जी की दीक्षा की घोषणा हुई।

> यदि बड़े ठीक ढंग से चले तो उनका बड़प्पन है वर्ना उनके बड़प्पन में गिरावट है।
> —गुरु सुदर्शन

आस-पास विचरण कर मूणक पधारे। 30 जनवरी 1967 के दिन मूनक में श्री विनय मुनि जी म. की दीक्षा हुई। ये बुटाना के सुश्रावक श्री मोतीराम जी जैन व माताश्री सोनादेवी के सुपुत्र हैं। दीक्षा के कार्यक्रम में पंजाब के प्रसिद्ध कलाकार श्री नत्थासिंह ने खूब वाहवाही लूटी। दीक्षा के भव्य आयोजन के पश्चात् गुरुदेव जंगल देश में व्यापक रूप से विचरे। पहली बार ही उस इलाके में पधारे थे। जन जागरण की दृष्टि से उस विचरण को **'न भूतमिव-अद्भुतम्'** कहा गया है।

सन् 1967 का चातुर्मास जंगल देश की केन्द्रीय नगरी बठिण्डा के लिए स्वीकृत हुआ। चातुर्मास से पूर्व एक बार विहार यात्रा के प्रसंग में श्री शास्त्री जी म. ठाणे-2 एक छोटी सी ढाणी (कुछ घरों का समूह) में पहले पहुँच गए। गुरुदेव को पीछे से आना था। आहार नहीं मिला तो संतों के मन में चिंता हुई कि "गुरुदेव भी पधार गए हैं, संत ज्यादा हो गए हैं, काम कैसे चलेगा।" गुरुदेव ने सारी स्थिति को भांपा और बोले "निश्चिंत रहो, चलो मेरे साथ, मैं आहार को चलता हूँ, पानी के पात्रे भी उठालो।" गुरु आज्ञा पाकर संत चले। गुरुदेव के पुण्यों का ये अतिशय कि सब संतों के लिए आहार व पानी भी मिल गया।

फानूस बन के जिसकी हिफाजत हवा करे।
वो शमा कब बुझे जिसे खुद रोशन खुदा करे॥

भटिंडा चातुर्मास हर दृष्टि से अद्वितीय रहा। संवत्सरी से 1 दिन पूर्व की घटना का वर्णन बहुधा गुरुदेव के श्री मुख से सुना है। भटिंडा के कुछ भाई गुरु चरणों में आए और बोले– "मंगलपाठ की कृपा करो। हम संवत्सरी माछीवाडा जाकर श्री छगनलाल जी म. के चरणों में मनाएंगे। हम प्रतिवर्ष उनके चरणों में ही मनाते हैं। गुरुदेव चकित से तो हुए पर बड़े प्रेम से मंगलपाठ सुना दिया। जब वे भाई माछीवाडा पहुंचे तो श्री छगनलाल जी म. ने उपालंभ दिया और कहा कि "तुम इतना बड़ा चातुर्मास छोड़कर मेरे पास क्यों आए हो? क्या सुदर्शन मुनि

जिसके सुनने से आत्मा में कल्याण की भावना पैदा हो वह सच्चा धर्म है।
—गुरु सुदर्शन

जी ने आपको नहीं रोका? भाई बोले– “हम तो प्रतिवर्ष की प्रथा के अनुसार आपके पास आए हैं और उन्होंने बड़े प्रेम से हमें मंगली सुनाई।” श्री छगनलाल जी म. गुरुदेव की इस उदारता से बड़े प्रभावित हुए और कहने लगे “श्री सुदर्शन मुनि जी म. बड़े महान् संत हैं और भविष्य में उनका पुण्य प्रताप खूब फैलेगा।” वापिस आकर श्रावकों ने जब गुरुदेव को ये बात बताई तो गुरुदेव फरमाने लगे “जब इतने मात्र से हमें बड़ों का आशीर्वाद मिलता है तो हम किसी को क्यों रोकें? वैसे भी गुरुदेव दर्शनार्थी आवागमन को न तो इतना महत्त्व देते थे और न ही समाचार देकर दर्शनार्थियों को या बसों को बुलवाया करते थे।

पूज्य गुरुदेव को भटिण्डा में टाईफायड बुखार हो गया। बिमारी काफी लंबी चली। शारीरिक दुर्बलता के कारण चातुर्मास के बाद भी 3 महीने वहीं रुकना पड़ा। सारी समाज ने, गुरुभक्तों ने विशेष सेवा लाभ लिया। गुरुदेव के तीनों लघु मुनियों ने अट्ठाई और उससे ऊपर का तप किया, जिससे श्रावक वर्ग में भी तप की प्रेरणा बनी। चातुर्मास में श्री शांतिलाल जी, श्री चरणदास जी, श्री नसीबचंद जी, श्री हरिचंद जी, हुक्मचंद जी, धारसी भाई आदि परिवारों ने सेवा का लाभ लिया।

चातुर्मास में ही अशुभ समाचार मिला कि योगिराज श्री रामजी लाल जी म. का देवलोक गमन हो गया। वे पूज्य पुरुष वटवृक्ष बन कर सारे मुनि संघ पर छत्र छाया कर रहे थे। चातुर्मास के पश्चात् मुनि सम्मेलन मूनक में हुआ और सब मुनियों ने गुरुदेव से निवेदन किया कि अब आप ही हमारे प्रमुख हो। वाचस्पति गुरुदेव के उत्तराधिकार को संभालो। पूज्य गुरुदेव फरमाने लगे– “मैं तो गुरुदेवों की एक छोटी सी झोंपड़ी हूँ। इसमें रहने वाले ही इसकी रक्षा करेंगे। सब महापुरुषों का आशीर्वाद है तो मुझे कोई चिंता नहीं है।” इस प्रकार गुरुदेव ने अपने बड़ों की विरासत को संभाला।

> अगर छोटे बड़ों का आदर-मान नहीं करेंगे, अपने अहं में रहेंगे
> तो सदैव दुख उठाएंगे एवं कभी बड़े नहीं बन सकेंगे। –गुरु सुदर्शन

तेरा करम तो आम है दुनिया के वास्ते,
कौन कितना ले सका यह मुकद्दर की बात है ॥

संघ-शास्ता का गुरुतर भार प्राप्त करके भी गुरुदेव पूर्ववत् नम्र ही बने रहे। गुरुदेव की महिमा को काव्यमय बनाते हुए आगम-रत्नाकर गुरुदेव श्री रामप्रसाद जी म. ने एक बड़ी मनोरम कविता की रचना की—

सुदर्शन मुनि प्यारे, हमारे मन में।
समाए, ज्यों पपीहा, मगन घन में ॥

इसे जब मूनक में कलाकार रमेश जैन ने सुनाया तो इस भजन के बोल सहस्रों कण्ठों से ज्ञात-अज्ञात मोहल्लों में गूंजने लगे। इसे देखकर कवि का अन्तर्मन भी परम प्रमुदित हुआ। श्रद्धेय श्री रामप्रसाद जी म. सा. ने अब तक किसी जीवित महापुरुष पर अपनी लेखनी नहीं चलाई थी, लेकिन उनके लिए गुरुदेव सबसे भिन्न थे। उनके विषय में कुछ कहने सुनने और लिखने में उन्हें अपूर्व आनन्द आता था। उस समय गुरुदेव के संघ में केवल 15 मुनिराज थे।

श्री सुदर्शन जी म. जैन शासन के एक प्रभावशाली संत थे। हरियाणा की यात्रा में हमने इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया। उन्होंने सर्वत्र अपने वैराग्य और संयम की छाप छोड़ी है। उनका स्वर्ग-गमन एक प्रभावशाली संत की रिक्तता का अनुभव कराता है और प्रेरणा देता है कि जैन शासन में लब्ध-प्रतिष्ठ संतों की संख्या और अधिक बढ़े।

– आचार्य महाप्रज्ञ
(तेरापंथ धर्म-संघ-प्रमुख)

जो सीमा को (हद को) लांघ जाए वह सदा अधूरा है।
—गुरु सुदर्शन

2. जब पधारे राजस्थान

1967 के चातुर्मास की पूर्ति के पश्चात् श्रमणसंघ के तत्कालीन आचार्य श्री हस्तीमल जी म. ने पूज्य गुरुदेव से परामर्श मंगवाया कि "श्रमण-संघ में रहने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ नहीं रही हैं, हमें क्या करना चाहिए?" पूज्य गुरुदेव ने समाचार भिजवाया कि हमारे पूज्य गुरुदेव वाचस्पति श्री मदनलाल जी म. ने यह निर्णय बहुत पहले ही ले लिया था। आपको भी जो समुचित लगे वो निर्णय ले लें। पूज्य गुरुदेव से परामर्श के बाद उन्होंने भी श्रमणसंघ से किनारा कर लिया तथा पूर्व रत्नवंशीय परंपरा को व्यवस्थित करके विचरने लगे।

इस वर्ष गुरुदेव के मन में राजस्थान में अलवर चौमासा करने का भाव जगा। उससे पूर्व आपकी पूर्व परम्परा के प्रायः सभी दिग्गज महापुरुषों ने राजस्थान में जाकर धर्म-पताका फहराई थी। पूज्यपाद श्री मयाराम जी म. ने उदयपुर तक में अपने कठोर संयम की छाप छोड़ी थी। उदयपुर में किसी समय दस आने (60 प्रतिशत) समकित उनके नाम की थी। दृढ़ अनुशास्ता श्री छोटे लाल जी म. एवं बहुसूत्री श्री नाथूलाल जी म. तो थे ही राजस्थान के मेवाड़-संभाग के। वाचस्पति गुरुदेव भी प्रायः सम्पूर्ण राजस्थान का विचरण कर चुके थे। इसलिए गुरुदेव का भी विचार बना कि मैं भी अपने पूर्व पुरुषों के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को वहाँ जाकर देखूं और उनकी स्मृतियों को पुनर्जीवित करूँ। गुरुदेव के इस विचार से उनके साथी मुनियों में भी करण्ट-सा दौड़ गया। अलवर चातुर्मास का मन में भाव था पर वहाँ तपस्वी श्री रोशन लाल जी म. का स्वीकृत हो चुका था। अलवर वालों से जयपुर श्रीसंघ को इस बात की खबर लगी तो वे सकल संघ की विनति लेकर जुलाना मण्डी आए। गुरुदेव ने उनको सन् 1968 के अपने चातुर्मास का आश्वासन दे दिया। यद्यपि जयपुर जाने के लिए जुलाना से रोहतक का रास्ता सीधा

संसार सागर से निकालने वाले गुरु की अविनय आशातना करने वाले कभी सफल नहीं हो सकते बल्कि दुख पाने के हकदार हैं। —गुरु सुदर्शन

और समीप था, पर गुरुदेव को एक बालक का उद्धार करना था, अतः रिंढ़ाणा होते हुए बुटाना पधारे। वहाँ से जय कुमार को अपने साथ वैरागी के रूप में ले गए।

रोहतक से आगे का सारा रास्ता प्रायः नया और अपरिचित था। गुरुदेव किसी भाई को सेवादार के रूप में भी अपने साथ नहीं रखते थे। मार्ग की कठिनाइयों की चिन्ता नहीं थी। कलानौर में महान् तपस्वी श्री रोशन लाल जी म. एवं परम सेवाभावी श्री प्रेमचन्द जी म. के दर्शन हुए। उनका उस वर्ष अलवर चातुर्मास निश्चित हुआ था। पूज्य गुरुदेव इस मुनियुगल से सदा से ही प्रभावित रहे थे। कलानौर में गुरुदेव ने अपने शैक्ष-काल (लघु दीक्षा) की एक घटना सुनाई, "वाचस्पति गुरुदेव के सान्निध्य में अनेक संघों के मुनिराज कलानौर में ठहरे हुए थे। विशाल धर्मशाला थी। वहाँ एक कोने में मटके पड़े थे। एकांत देखकर कुछ मुनि चंचलता पर उतर आए। उन मटकों के ऊपर कपड़ा बांधकर घड़वे (हरियाणवी वाद्य) के रूप में उन्हें बजाने लगे। कुछ समय बाद वाचस्पति जी म. को ज्ञात हुआ। सब मुनियों के समक्ष केवल मुझे ही डाँटने लगे जबकि मैं उस चंचलता में सम्मिलित नहीं था। वातावरण में गम्भीरता उतर आई। मुनियों को जो संदेश पहुँचाना था सो पहुँच गया पर मेरा मन भारी था कि अकारण ही मुझ पर ये डाँट क्यों पड़ी। बाद में वाच. गुरुदेव ने मुझे एकान्त में ले जाकर कहा कि 'सुदर्शन! मुझे पता था कि तू उस पार्टी में नहीं था, पर तुझे इसलिए कहा कि तू गंभीर है, सह लेगा, अन्य मुनि दूसरे गण के हैं, मेरी बात का बुरा मान जाते, अपनों को ही कहा जाता है।' इस आश्वासन मात्र से मेरा मन हल्का हो गया।" वहाँ से दादरी, महेन्द्रगढ़ होते हुए नारनौल पधारे। नारनौल का कभी बड़ा नाम था, पर उस समय सिमट कर काफी छोटा रह गया था। वाचस्पति गुरुदेव के 6 में से 5 शिष्यों की दीक्षा-स्थली वह क्षेत्र था। वहाँ का सुराणा परिवार गुरुदेव के प्रति विशेष श्रद्धाशील था। लेकिन उनके दो परिवारों में काफी अनबन थी। बोलचाल भी बन्द थी। नानकचन्द एवं लक्ष्मी

महापुरुषों का जीवन पावर हाउस है, थोड़ी बिजली ले लो घर में, जीवन में प्रकाश हो जाएगा।
—गुरु सुदर्शन

चन्द जी दोनों गुरु भक्त थे। गुरुदेव की प्रेरणा से दोनों का मनमुटाव दूर हुआ। इस प्रेमधारा से सारा क्षेत्र धन्य हो गया।

नारनौल से आगे राजस्थान की सीमा शुरू हो गई थी। स्वामी श्री फूलचन्द जी म. ठाणे 3 का सिंघाड़ा आगे था। 15-20 घरों की एक छोटी सी बस्ती और एक कुएं को देखकर श्री स्वामी फूलचन्द जी म. को याद आया कि ये तो मेरी जन्म भूमि वाली ढाणी है। करीब 40 वर्ष बाद अपनी जन्म-भूमि की याद आई। कुएं पर खड़े लोगों से गाँव के बारे में जानकारी ली। किसी बुजुर्ग से पूछा कि 'क्या यहाँ कोई 'भीखू' भी रहता था? जिसके पिता का नाम बेरिसाल सिंह तथा माँ का नाम अछना देवी था।' उसने कहा हां, पर बहुत अर्सा पहले वो गुम हो गया था।' स्वामी जी म. ने कहा, "मैं वही भीखू हूँ।" असली नाम तो भिक्खा सिंह था। पर ग्राम्य भाषा में भीखू ही बोला जाता था। श्री प्रकाश मुनि जी म. की प्रेरणा पाकर महाराज श्री जी गांव के अंदर पधारे। सभी को अपने बारे में तथा अपने पूर्वजों के बारे में बताया। सारा गांव भाव विभोर हो गया। वर्तमान में तो उस ढाणी का सरकारी तौर पर 'फूलचन्द नगर' नाम ही स्वीकृत हो गया है।

नारनौल से जयपुर के बीच खंडेला के अलावा कहीं भी जैन धर्मी नहीं थे। बिल्कुल खुश्क और गरीबी का शिकार इलाका था। पानी की बड़ी दिक्कत थी। मुनियों को गर्म या धोवन, किसी तरह का पानी नहीं मिल पाता था। लोग बर्तनों को सूखी राख से मांजकर फिर कपड़े से पोंछकर साफ कर लेते थे। पानी नहीं बरतते थे। परीषह सहते हुए खण्डेला में गुरुदेव पधारे। छोटा क्षेत्र था पर राजस्थानी धर्म संस्कृति का प्रारूप था। सब घर गुरुभक्ति से भरपूर थे। गुरुदेव को पाकर और भी धन्य हो गए। गुरुदेव ने वहाँ प्रातः काल हिन्दी का भक्तामर (श्रद्धेय श्री रामप्रसाद म. जी म. द्वारा रचित) की प्रार्थना प्रारम्भ कराई।

यद्यपि राजस्थान में गुरुदेव प्रथम बार ही पधारे थे, पर दिल्ली-वासियों

> तीर्थ स्नान का अर्थ है– तीर्थ पर रहने वाले ऋषियों/मुनियों का संपर्क।
>
> –गुरु सुदर्शन

की रिश्तेदारियों के कारण सब स्थानों में कुछ-2 परिचय हो गया। परीषह-उपसर्गों की इस चिरस्मरणीय यात्रा को पार करते-2 गुरुदेव अन्ततः जयपुर में पधारे। सर्वप्रथम तो श्री पूनमचन्द जी बढेर की कोठी पर ठहरना हुआ। विशाल-काय श्रावक का डीलडोल तो प्रभावशाली था ही, समाज-सेवा, धर्म-निष्ठा भी बड़ी गहरी थी। आचार्य श्री हस्तीमल जी म. के चरणों में चार-2 महीने रहकर मौन और धर्मध्यान के अभ्यासी थे। उनके सुपुत्र श्री हरिश्चन्द्र जी बढेर भी उन्हीं के पद-चिह्नों पर चलने वाले स्वाध्यायशील युवक थे। बड़े परिवारों में रिश्तेदारियाँ थी।

फिर अन्य उपनगरों में विचरण हुआ। वहीं पर गुरुदेव ने अधिकांश जयपुरवासियों को अपने बुद्धि-प्रकोष्ठ में निहित कर लिया। आदर्श नगर में पंजाबी भावड़े रहते थे। उनकी भक्ति अवर्णनीय थी। वहाँ से लाल भवन (जैन स्थानक) पधारे। सन् 1938 में लालबाई नामक एक महिला ने अपनी हवेली का आधा खण्ड समाज के लिए धर्मध्यान-हेतु अर्पित कर दिया था, अतः उसका नाम 'लाल भवन' है। जयपुर के मुख्य मार्ग 'चौड़ा रास्ता' पर यह स्थित है। बड़ी विशाल बिल्डिंग है। जयपुर की आभ्यन्तर विशेषताओं में एक ये भी है कि वहाँ पर साम्प्रदायिकता का विशेष असर नहीं है। श्रमण संघ, रत्न-वंश, साधुमार्गी संघ, ज्ञान-गच्छ तथा इतर संघों के संत-सतियों का चातुर्मास लाल भवन में ही होता है। सब व्यवस्थाएं एक ही समाज के अधीन हैं। आचार्य-प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का वहाँ पर विशेष उपकार रहा है। उनकी उदार दृष्टि क्षेत्र में बराबर झलकती है।

सन् 1956 में वाचस्पति गुरुदेव ने वहाँ पर चातुर्मास किया था। जो गुरुदेव की स्मृति में धरोहर-रूप में सुरक्षित था। उसी वर्ष वाचस्पति गुरुदेव ने श्रमण संघ के प्रधानमंत्री पद से त्याग-पत्र दिया था। गुरुदेव ने जाते ही सारे जयपुर को सम्मोहित कर दिया। दो बातें लोगों को काफी आकर्षित कर रही थी। एक गुरुदेव की अद्भुत स्मरण-शक्ति,

बचपन से ही क्षमा भाव बच्चे में होगा तो उसके अंतर में आनंद का स्रोत बहने लगेगा।
—गुरु सुदर्शन

दूसरी सामायिकों पर अधिकाधिक जोर। गुरुदेव ने वहाँ के करोड़पति, अरबपति धनाढ्य सेठों की कभी भी जी-हजूरी नहीं की, न ही सामान्य कोटि के श्रावकों की उपेक्षा की। वहां की सामाजिक व्यवस्थाओं से भी अलिप्त रहे। वहाँ के श्रावकों के सामने सेवा-कार्य में एक समस्या आई कि हरियाणा, पंजाब, दिल्ली से आने वाले दर्शनार्थियों को प्रातःकालीन नाश्ता दें या नहीं। उनकी पुरानी व्यवस्था नाश्ता देने की नहीं थी। राजस्थान में प्रवचन के बाद ही नाश्ता और भोजन देने का रिवाज है। उत्तरी भारत में सुबह ही नाश्ता दे देते हैं। श्रावकों ने गुरुदेव के समक्ष अपनी बात रखी और कहने लगे कि यदि आपका संकेत हो तो हम नाश्ते की व्यवस्था कर देंगे। गुरुदेव ने फरमाया, 'ऐसे कार्यों में हमारा कोई हस्तक्षेप नहीं है। आप वही कार्य करें, जिससे बाद में कोई चर्चा या विवाद न बने'। वहाँ के व्यवस्थापकों ने अपनी पूर्व परम्परा ही कायम रखी। गुरुदेव के चातुर्मासों की सदा से ही विशेषता रही है कि मुनियों के नाम से किसी भी प्रकार का कोई खर्च नहीं होता। पोस्टकार्ड, लिफाफा, पोस्टर, पुस्तक, अखबार, दवाई, पण्डित, मास्टर का कोई खर्चा नहीं किया जाता। दर्शनार्थी बंधुओं के लिए घर में बारी चलती है तथा रात्रि-भोजन व हरी सलाद पर पाबन्दी रखी जाती है।

राजस्थान में धर्म को बूढों के लिए माना जाता है। वहाँ युवक केवल पर्यूषणों में ही शास्त्र सुनने आते हैं। पर उसी राजस्थान की राजधानी का स्वरूप गुरुदेव के चातुर्मास में बदला हुआ था। हजारों युवक सामायिकें करके बैठने लगे। उन्होंने पैंट के साथ सामायिकें छोड़कर धोती वाली (गण वेश) सामायिक शुरू की। उस चातुर्मास में गुरुदेव ने लघु मुनियों के संस्कृत अध्ययन की भी व्यवस्था की। प्रबुद्ध मुनियों के लिए, विशेषतः श्री शास्त्री जी म. के लिए, दिगम्बर समाज के प्रकाण्ड पंडित, वयोवृद्ध श्री चैन सुख दास जी की सेवाएँ लीं। लाल भवन में स्थित 'विनयचन्द ज्ञान-भंडार' का भी प्रचुर उपयोग किया। वहीं रत्न-निर्मित यन्त्र-पट्टक देखे जो लाखों रु. की कीमत के थे।

विनीत बड़ों की/गुरुओं की बात मान लिया करते हैं एवं अविनीत भगवान् के कहने को भी मानने के लिए तैयार नहीं होते। —गुरु सुदर्शन

जयपुर तपस्याओं का घर माना जाता था। वहाँ दो, चार या पाँच मास-खमण प्रतिवर्ष हो जाते थे। गुरुदेव के चौमास से पूर्व वहाँ अधिकतम आठ मासखमण एक चातुर्मास में हुए थे। श्वेताम्बरों की तीनों सम्प्रदायों में कहीं भी मास-खमण हो, सब मिलकर महोत्सव मनाते हैं। गुरुदेव की प्रेरणा से उस वर्ष वहाँ 13 मासखमण हुए। एक मूर्तिपूजक बहन के हाथ पैर जुड़े हुए थे। उसने भी मासखमण किया। वह अपने मुनियों से पच्चक्खाण लेने की बजाए गुरुदेव से ही लेती थी। श्री सज्जनराज जी कुम्भट ने जोड़े-सहित मासखमण करके सबको चकित कर दिया। गुरुदेव ऐसे हर किसी उपलक्ष्य पर सामायिक और शीलव्रत की सौगंध (नियम) दिलाते थे। पर्यूषणों में लाल भवन छोटा पड़ने से 'सुबोध कालेज' के विशाल प्रांगण में प्रवचन हुए। वहाँ शाम के प्रतिक्रमण के नजारे ने गुरुदेव को विशेष प्रभावित किया। सुश्रावक श्री बंशीलाल जी जरगड़ की बुलन्द आवाज दो-दो हजार की भीड़ में भी स्पष्ट सुनाई देती थी। 'हुओ संवत्सरी रा पारणो, छूटो साधुजी रा बारणो' इस कहावत के विपरीत संवत्सरी के बाद भी गुरुदेव का धर्म-दरबार खचाखच भरा रहा। गुरुदेव के लिए सबसे सुखद प्रसंग ये रहा कि उनके सुशिष्य श्रद्धेय श्री शांति मुनि जी म. ने भी वहाँ मास-खमण किया। जयपुर की जलवायु ने ये करामात भी कर दिखाई। वहाँ के दिन गर्म और रातें ठण्डी होती हैं। दिन गर्म होने से पानी पिया जाता है और रात ठण्डी होने से नींद में सुविधा रहती है। तपस्वी की सेवा कैसे की जाती है इसके आदर्श उदाहरण गुरुदेव थे।

महाराज श्री जी के पारणे पर जयपुर श्री-संघ में भारी उत्साह था। लोगों ने समारोह में सुविधा-हेतु ध्वनि-वर्धक यन्त्र लगाने का विचार बना लिया। स्वयं गुरुदेव की शुरू से ये व्यवस्था रही है कि उनके सन्त माइक में नहीं बोलते हैं तथा जिस सभा में कोई साधु-सती माइक में बोले, तो उसमें बैठते भी नहीं है। यदि गृहस्थ-वर्ग अपनी सुविधानुसार माइक का प्रयोग करे तो उसमें आपत्ति नहीं करते। गुरुदेव ने लोगों को अपनी व्यवस्था समझा दी। पारणा-समारोह के दिन प्रातः ही संघ के मान्य

> दरिद्रता में अपने भी पराये हो जाते हैं।
>
> —गुरु सुदर्शन

श्रावक श्री स्वरूपचन्द जी नौलखा गुरुदेव के पास आए और निवेदन करने लगे कि 'गुरुदेव! लाल भवन में आज तक कभी भी लाउडस्पीकर का प्रयोग नहीं हुआ है। यदि लगता है तो आपके सान्निध्य में प्रथम बार ही ऐसा होगा'। गुरुदेव ने उनको अपनी पूर्वोक्त व्यवस्था समझा दी। वे समझ कर चले गए। पर बाद में गुरुदेव ने प्रधान श्री बोथरा जी एवं मंत्री श्री चोरड़िया जी से परामर्श करके उनको निर्देश दिया कि हमारे समक्ष एक उज्ज्वल परम्परा का खण्डन मत कीजिए। गुरुदेव के इस संकेत से माइक का कार्यक्रम रद्द हो गया। उस रोज राजस्थान विधान-सभा के अध्यक्ष श्री निरंजन देव जी भी प्रवचन-सभा में पधारे थे। वे साधारण श्रोताओं की पंक्ति में ही बैठे। गुरुदेव ने मासखमण के पूरे होने पर 500 तेलों की अपील की थी, जिसे श्रावकों ने 800 तक पहुंचा कर पार किया।

जहां भी जाते थे जगह बना ही लेते थे।
उन्हें हुनर आता था दिल में बस जाने का॥

श्री शांति मुनि जी की तपस्या के दौरान तथा पारणे पर दर्शनार्थी बन्धुओं का विशेष आगमन हुआ। जयपुर-वासियों ने संयम और प्रभावना, आचार और प्रचार का अद्भुत समन्वय गुरुदेव के जीवन में देखा। वहाँ के बड़े-2 श्रावकों ने ये माना कि इस चौमास में जितने नए आदमी लगे हैं, ऐसे पहले कभी नहीं लगे। वहाँ के धनाढ्य सेठ श्री हजारी लाल जी बोथरा लाल भवन में नहीं आते थे। प्रकृति अच्छी थी पर धर्मरुचि नहीं थी। गुरुदेव से इतने प्रभावित हुए कि रोज आकर सामायिक करने लगे। उनको देखकर लोगों ने दाँतों तले अंगुलियां दबा ली। 80 वर्षीय श्रावक श्री कन्हैयालाल जी खींवसरा ने कहा कि 'मैंने यहाँ बड़े-2 आचार्यों की रौनकें देखी हैं। बाहर के दर्शनार्थी भी बहुत देखे हैं, पर स्थानीय रौनकें इतनी बड़ी संख्या में पहले कभी नहीं देखी।'

एक दिन प्रवचन में गुरुदेव ने फरमाया था कि "आगे-2 ऐसा युग आएगा, जब स्थानकों में फोन फिट हो जाएँगे। साधु आहार को जाने से

हिम्मत तथा शुद्ध भाव से कमाया धन बरकत वाला होता है।
—गुरु सुदर्शन

पहले घरों में पूछेंगे हैलो, आहार तैयार है? फिर गृहस्थ फोन करके आहार तैयार होने का समय बताएँगे।" उस समय, उस वातावरण में यह वाक्य विश्वसनीय नहीं लगता था पर आज यह कटु सत्य बनता जा रहा है।

जयपुर संघ ने दो बार अभिनंदन-पत्र गुरुदेव को देने चाहे। एक बार श्री शांति चन्द्र जी म. के मासखमण पर, दूसरी बार गुरुदेव के विहार के समय। गुरुदेव ने दोनों ही बार बिना छूए समाज को लौटा दिए।

गुरुदेव के जयपुर-चातुर्मास की सुगन्ध राजस्थान में दूर-2 तक पहुँच चुकी थी। इसलिए मारवाड़, मेवाड़ की कई विनतियाँ भी आईं, पर गुरुदेव ने वापिस लौटने का मन बना लिया। जयपुर से अलवर की ओर विहार हुआ। मार्ग में वैराट में एक परित्यक्त जैन मंदिर का कला-वैभव देखा। प्रायः सभी पड़ावों पर स्कूलों में बालकों को उद्बोधन देने का मौका लगा। उसके पीछे मुख्य प्रेरणा और प्रयत्न श्री चुन्नी लाल जी ललवानी जी का रहा जो बड़े उत्साही और सक्रिय कार्यकर्ता थे।

अलवर पधारने पर वहाँ चातुर्मास का विचार बना। चातुर्मास से पूर्व राजस्थानी राजनीति (सम्प्रदायवाद) से मुक्त कुछ इलाका देखा। उस समय हिण्डौन, भरतपुर, श्री गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर और टोंक ये पाँच जिले आर्थिक दृष्टि से काफी पिछड़े माने जाते थे। इन्हें ही गुरुदेव ने फरसने का मन बनाया। इस क्षेत्र में अधिकांशतः पल्लीवाल और पोरवाल ये दो जातियाँ जैनधर्म को मानती हैं। कहीं-2 ओसवाल और श्रीमाल भी थे। टौंक के पास एक दो गाँव में अनुसूचित जनजाति 'मीणा' भी जैन धर्म को अपनाए हुए देखी।

इस इलाके में कभी श्री माधवमुनि जी म. का विचरण होता था। उनके विषय में जनश्रुति थी– 'सौ साधो एक माधो।' वे ज्योतिष के महान् पण्डित थे, परन्तु अपने अन्तिम समय के बारे में नहीं जान सके थे। जयपुर से विहार करके किसी गांव से दूदू की ओर जा रहे थे कि गाड़ौता गांव में स्वर्गवास हो गया। उनके शिष्य उनके अंतिम संस्कार

शुद्ध भाव से आलोचना/प्रायश्चित करने वाली आत्माएं विरली हुआ करती हैं।
प्रमाद साधना में बू पैदा करने वाला है, पतन में प्रमाद ही कारण है। –गुरु सुदर्शन

के लिए लोगों को तलाशते ही रह गए, बड़ी मुश्किल से व्यवस्था बन पाई। उनके बाद यह इलाका पूर्णतः उपेक्षित सा था। गुरुदेव ने उसकी संभाल ली। लोगों को कोई 'नाथ' मिला। वे विनति कर रहे थे कि आप चार-पाँच साल इस इलाके में लगा दो। सारा इलाका आपकी छत्र-छाया में आ जाएगा पर गुरुदेव की अपनी मजबूरी थी। पल्लीवालों की धर्म-निष्ठा बड़ी समन्वयवादी थी। प्रायः सभी गाँवों में श्वेताम्बर जैन मंदिर हैं और सब जैन वहाँ जाते हैं। परन्तु मुनियों में वे स्थानकवासी मुनियों को ही मानते हैं, मूर्तिपूजक मुनियों को नहीं। गुरुदेव ने उनको सामायिक का सम्बल दिया। गुरुदेव की प्रवचन शैली से मन्त्र-मुग्ध होकर कई मुख्याध्यापकों ने अपने स्कूलों में गुरुदेव का प्रवचन कराया। उस पूरे इलाके में कहीं भी दिगम्बर जैनों का कोई घर दिखाई नहीं दिया पर आश्चर्य ये कि हिण्डौन से आगे 'महावीर जी' अतिशय-क्षेत्र दिगम्बर जैन समाज के अधिकार में है। उसका संचालन जयपुर से होता है। गुरुदेव भी अपनी विहार-यात्रा के क्रम में महावीर जी पधारे। मंदिर में भी गए पर बिना रुके आगे बढ़ गए। वहाँ दिल्ली का एक श्रावक मुखपत्ती लगाकर सामायिक कर रहा था। उसे देखकर सुखद आश्चर्य हुआ। उस जनपद में कई गाँवों में पहुँचने के लिए ऊँची-2 पहाड़ियाँ भी पार करनी पड़ी। कई बार गिरते-2 भी बचे। बड़ी मुश्किल से पहाड़ी पार हुई।

'महावीर जी' के बाद पोरवालों का इलाका शुरू हुआ। वे पल्लीवालों की अपेक्षा कुछ समृद्ध थे। उन पर स्थानकवासी धर्म का अधिक असर था। उनका एक संगठन है। सवाई-माधोपुर और टौंक इन दो जिलों के 700-800 परिवार उसमें थे। टोंक शहर में ओसवाल हैं। संगठन का केन्द्र सवाई माधोपुर-चौथ का बरवाड़ा है। गुरुदेव तब सवाई-माधोपुर विराजित थे। वहाँ पोरवालों का एक शिष्ट-मण्डल महावीर-जयन्ती पर खातौली गाँव में पधारने की विनति लेकर आया। उस दिन वहाँ पर पोरवालों का अधिवेशन होना था, जिसमें चार-पाँच हजार लोगों के आने की उम्मीद थी। उनकी भाव-प्रवण विनति को सुनकर गुरुदेव प्रवचन-सभा में ही

जाति/कुल से संपन्न जीव धर्म क्षेत्र में भी संपन्नता चाहे तो प्राप्त कर सकते हैं।
—गुरु सुदर्शन

स्वीकृति फरमाने वाले थे कि सामने बैठे एक वृद्ध श्रावक ने अंगुलि हिलाकर विनति न मानने का इशारा किया। गुरुदेव बात को ताड़ गए। प्रवचन में फरमा दिया कि बाद में सोचकर जवाब देंगे। बाद में उस हितैषी श्रावक को बुलाकर सारी स्थिति पूछी। उसने बताया कि "वहाँ पर अधिवेशन के बहाने चुनावों का दंगल छिड़ेगा। इस इलाके में प्रतिवर्ष किसी एक स्थान पर पोरवालों का अधिवेशन होता है, उसमें अध्यक्ष का चुनाव होता है। लोग पानी पीने के लिए लोटे साथ में लाते हैं पर बाद में वही लोटे लड़ने और सिर फोड़ने के काम आते हैं। आप श्री जी इस इलाके में प्रथम बार आए हो, कहीं आपकी निर्मल छवि धूमिल न हो जाए। इसलिए मैंने मना किया था"। गुरुदेव ने सारी स्थिति को समझ लिया और फिर उस शिष्ट-मण्डल को बुलाकर समझाया कि 'हम पंजाबी साधु हैं। नए नए यहाँ आए हैं। आपके यहाँ चुनाव हैं और चुनाव में लड़ाई होती है। पर यदि मेरी एक बात मानो तो ही मैं आपके यहाँ जा सकता हूँ'। श्रावकों के हाँ भरने पर गुरुदेव ने फरमाया कि 'आप एक ग्रुप से सम्बन्ध रखते हो। हम आपकी विनति पर जाएँगे पर पहले आपको ये विश्वास दिलाना होगा कि आप सर्वथा शान्त रहेंगे।' सबने शान्ति रखने का प्रण लिया। तब गुरुदेव कुछ मुनियों को सवाई माधोपुर छोड़कर खातौली के लिए रवाना हुए।

गुरुदेव खातौली पधारे। स्थानक छोटी थी। गर्मी भी काफी थी। दो दिन का अधिवेशन था। चार पाँच हजार की भीड़ थी। गुरुदेव की प्रभावक वाणी गूंजी, "हम पंजाबी साधु हैं। आपसे एक चीज माँगते हैं। बोलो दोगे"? सारी जनता ने हाथ खड़े किए। गुरुदेव का जादू काम करने लगा था। फिर बोले, "मैं चाहता हूँ कि इस साल जो चुनाव हो वह सर्व सम्मति से हो। समाज एक ही व्यक्ति को पसन्द करके अध्यक्ष बनाए। चुनाव में दो व्यक्ति खड़े न हों।" जनता ने गुरुदेव की बात का समर्थन किया। पार्टीबाज लोग देखते रह गए। इलैक्शन की बजाय एक आदमी का सलैक्शन हुआ। कुशतला गाँव के वयोवृद्ध श्रावक देवनारायण जी

शासक वही बढ़िया है जिसके राज्य में रहने वालों के विचार उच्च व शुद्ध हों।
—गुरु सुदर्शन

अध्यक्ष चुने गए। उनकी हाथी पर सवारी निकाली गई। सारी जनता, सारी समाज ने गुरुदेव का आभार माना कि हमारी स्मृति में प्रथम बार ही शान्तिपूर्ण चुनाव हुए हैं। ऐसे चुनाव जिनमें कोई लोटे नहीं चले, किसी के सिर से खून नहीं बहा। वे लोग उधर पधारने की विनति लिए गुरुदेव के समक्ष गिड़गिड़ाते रहे पर समय का अभाव था। वहाँ से टौंक पदार्पण हुआ।

टौंक वह नगर है जहाँ 'हुक्मी गच्छ' के प्रतापी आचार्य श्री श्रीलाल जी म. का जन्म हुआ था। पूज्य गुरुदेव जी म. वहाँ भी पधारे। उनका घर भी देखा। उल्लेखनीय है कि इस महापुरुष ने अपने हाथ से सौ से ऊपर दीक्षाएँ दीं पर किसी को अपना शिष्य नहीं बनाया।

गुरुदेव टौंक से वापिस मुड़ लिए और बहतेड़, श्री गंगापुर होते हुए भरतपुर पधारे। रास्ते में पता चला कि मूनक में पूज्यपाद श्री नेकचन्द जी म. का देवलोक-गमन हो गया है। उन्हें भी अंतिम समय में संथारा-पूर्वक समाधिमरण कराने का श्रेय तपस्वी श्री बदरी प्रसाद जी म. को ही मिला। गुरुदेव जी म. तपस्वी श्री नेकचन्द जी म. के प्रति बड़े श्रद्धालु थे। उनकी शान्ति की प्रशंसा किया करते थे। उनके संथारे की बात सुनकर गुरुदेव काफी भावुक हो गए।

सन् 1969 का चातुर्मास अलवर हुआ। ये चातुर्मास गुरुदेव एवं क्षेत्र दोनों के लिए चिरस्मरणीय रहा। गुरुदेव एवं रौनक, ये दोनों पर्यायवाची बन गए थे। श्रावकों के साथ-2 सन्तों में भी तपस्याओं का ठाठ रहा। प्रबुद्ध श्रावक श्री खुशहाल चन्द जी के साथ मुनियों की कर्मग्रन्थ विषयक चर्चाओं से क्षेत्र सुवासित रहता था। श्री शास्त्री जी म. की आगम-रुचि को तृप्त करने के लिए गुरुदेव ने उन्हें भगवती सूत्र की वाचना दी। उस समय श्रावक श्री खुशहाल चन्द जी तथा कुछ तत्वज्ञ श्राविकाएँ भी नियमित रूप से लाभ लेती रही। वाचना के साथ-2 पृच्छना का भी दौर चलता। कोई विषय उलझ जाता, तो रोहतक में विराजमान भगवन्

भूल कर के यदि आलोचना न की जाए तो साधक ज्यादा दण्ड का अधिकारी बनता है।
—गुरु सुदर्शन

श्री रामप्रसाद जी म. से प्रश्न लिखकर उत्तर मंगवा लिया जाता। उनका प्रत्येक उत्तर सटीक और सुगम होता था। उनके लिखे गए वे उत्तर संघ की अनमोल थाती के रूप में सुरक्षित हैं।

उस वर्ष गुरु नानक देव का 400 साला उत्सव भी चल रहा था। उस उपलक्ष्य में अलवर में कई मील लम्बा जलूस निकला। कई घण्टे तक 'महावीर भवन' के मुख्य द्वार के आगे से गुजरता रहा पर गुरुदेव अपने आसन से एक बार भी उठ कर, जलूस की ओर नहीं गए। उनकी अद्‌भुत निस्पृहता को देखकर बालक जय कुमार भी उतनी देर तक उनके ही चरणों में बैठा रहा। अलवर के युवराज भी प्रवचन सुनने आए तथा जैनत्व के संस्कार लेकर गए। उन्हीं दिनों प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने पूर्व राजाओं के प्रिवीपर्स (विशेषाधिकार तथा पैंशन) समाप्त किए थे, इससे वे कुछ निराश थे। गुरुदेव ने उनको संसार का स्वरूप बताकर सान्त्वना दी। बाद में एमरजैंसी के दौरान उस युवराज ने निराशा में आत्महत्या की।

शासन प्रभावक पूज्य प्रवर श्री सुदर्शन लाल जी म. की कृपा-आशीर्वाद मुझे समय-2 पर प्राप्त हुआ है। उनका संयम निष्ठ जीवन, साधना के प्रति जागरूकता, मुनि-चर्या की सजगता सदैव दिग्दर्शित होती रही है। उन्होंने अपना पूर्ण जीवन साधना, संयम और समाज सेवा में अर्पित किया। पंजाब प्रांत में उनके समीप रहकर जो मैंने हासिल किया, उसका स्मरण आज भी हो आता है।

– आचार्य प्रवर श्री शिवमुनि जी म.
(श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर)

जिन पर गुरु कृपा होती है, जो अंतर्मुखी होते हैं, उन्हें हर समस्या का समाधान मन की स्फुरणा से, अंतर्दृष्टि से मिल जाता है। –गुरु सुदर्शन

3. उत्तर भारत में पुनः आगमन

अलवर से गुरुदेव पुनः अपनी जन्म-भूमि और कर्म-भूमि हरियाणा की ओर मुड़े। हरियाणा उनकी बाट जोह रहा था। दादरी, भिवानी, हिसार-हाँसी का रास्ता लिया। केन्द्र बनने का श्रेय मिला गोहाना को। मुनि मिलन का दृश्य बड़ा सुहावना था। प्रवचनों में समवसरण-सा वातावरण था। गुरुदेव जी म. के स्वागत में भगवन् श्री रामप्रसाद जी म. ने एक गीतिका "सुदर्शन मुनि जी श्री संघ के शृंगार हैं, शीर्षमणि हैं और हृदयों के हार हैं" सुनाई थी, जो उनके काव्य-जगत् का बेजोड़ नमूना है।

किसी ने उन्हें कभी इत्र लगाते नहीं देखा।
खुशबू तो अक्सर उनके किरदार से आती थी ॥

उन दिनों गुरुदेव करुणा प्रधान प्रसंगों को अधिक सुनाते थे। जो दिल हिलाने वाले होते थे जिनसे अधिकतर श्रोता प्रवचनों में रोने लग जाते थे। उस साल गुरुदेव हरियाणा के छोटे-2 गाँवों में भी पधारे। जिस गाँव में एक भी जैन घर था, उस को भी अपनी चरण-रज से धन्य किया।

सन् 1970 के चातुर्मास के लिए बड़ौत मण्डी की जोरदार विनति थी। श्री गुरुदेव का भी स्वीकृति फरमाने का विचार बन रहा था। तभी सूचना मिली कि बड़ौत शहर से पूज्यपाद जैन-धर्म-दिवाकर, आचार्य प्रवर श्री आनन्द ऋषि जी म. की विनति हुई है तथा वहाँ चातुर्मास की संभावना भी है। यद्यपि उनकी दिल्ली चाँदनी चौंक चातुर्मास की भी विनति थी पर उन दिनों उपाध्याय कवि श्री अमर मुनि जी एवं साध्वी श्री चन्दना जी की आगम-विरुद्ध, आधुनिकता-परक गतिविधियों के कारण आचार्य श्री जी देहली से बचना चाहते थे। उनकी ओर से बड़ौत शहर को आश्वासन मिल गया था। बड़ौत मण्डी समाज को भी गुरुदेव की ओर से आश्वासन मिल चुका था। अब दोनों समाजों में अहं

जिनकी बुद्धि और श्रद्धा गुरु पर होती है, उन्हें हर समस्या का समाधान मिल जाता है।
—गुरु सुदर्शन

के संघर्ष की नौबत आ रही थी। मण्डी वाले हर कीमत पर गुरुदेव का चातुर्मास लेने के लिए कृतसंकल्प थे। पानीपत के पास इसराणा गाँव में गुरुदेव ने मण्डी समाज को स्पष्टतः समझा दिया कि "मैं कभी आचार्य श्री जी की प्रतिद्वन्द्विता में चातुर्मास नहीं करूंगा। आचार्य श्री जी बड़ी मुश्किल से प्रथम बार ही इधर पधारे हैं। हम भी उन्हें पूज्य मानते हैं, अतः आप उनका ही चातुर्मास कराएँ। हम तो इधर विचरते ही हैं, फिर कभी देखा जाएगा। आप सब शांत रहें। चातुर्मास को प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाकर शहर की ब्रादरी को सहयोग दें।" मण्डी श्री-संघ उस समय इतना उत्तेजित और संकल्पित था कि किसी भी कीमत पर शहर को मात देनी है। पर गुरु म. के स्पष्ट निषेध के कारण उनको चुप रहना पड़ा। इससे शहर समाज ने भी गुरुदेव का कोटि-2 आभार माना। पूज्य गुरुदेव ने उस चातुर्मास-परिवर्तन को सदा ही सकारात्मक रूप में लिया। वे अक्सर फरमाया करते कि यदि उसी वर्ष चातुर्मास हो जाता तो हमें कभी भी श्री नरेश मुनि जी एवं श्री राजेन्द्र मुनि जी जैसे सुशिष्यों की प्राप्ति नहीं हो पाती। ये दोनों अगले वर्ष सन् 1971 के बड़ौत चातुर्मास में गुरुदेव के श्री चरणों में आए।

बड़ौत मण्डी के चातुर्मास-निषेध का समाचार फैला तो अन्य स्थानों की विनतियों का जोर बढ़ा। उनमें दिल्ली चाँदनी चौंक अग्रणी था। पूरी दिल्ली चौमास के लिए पुकार रही थी। इसराणा में ही चाँदनी चौंक की समाज विनति लेकर उपस्थित हुई। गुरुदेव कुछ सोचना चाहते थे अतः फरमाया कि शीघ्र निर्णय नहीं लूँगा। थोड़ी प्रतीक्षा करो। समाज फिर कुछ दिन बाद मतलौडा में अपनी भावना प्रस्तुत करने आई। गुरुदेव ने महावीर-जयंति पर समालखा घोषणा करने का संकेत दिया। इसी बीच गुरुदेव ने कुछ प्रबुद्ध श्रावकों से भी दिल्ली के माहौल के बारे में विचार-विमर्श किया, अन्ततः सन् 1970 के चातुर्मास का विचार चाँदनी चौंक दिल्ली में बना। उस वर्ष चातुर्मास से पूर्व शेष-काल में गुरुदेव और श्री तपस्वी जी म. का तीन बार गोहाना, सफीदों और सोनीपत में मिलन हुआ।

आत्मा को भगवान् के दरबार में पहुँचाना है तो साधना को निर्दोष रखना होगा।

—गुरु सुदर्शन

गुरुदेव के लिए दिल्ली सदा से ही चरणों में झुकी रही है। उस वर्ष तो दिल्ली की फिज़ा कुछ और ही थी। त्रिनगर (शांति नगर) फैल चुका था। वीर नगर भी बस गया था। शक्ति नगर शक्ति का केन्द्र बन चुका था। वहाँ पूज्यपाद पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्द जी म. सेठ प्यारेलाल जैन (राजाखेड़ी) वालों की कोठी में विराजमान थे। उन्हें सीढ़ियाँ चढ़ने की मनाही थी। अतः स्थानक खाली था। पूज्य गुरुदेव स्थानक में विराजे। पूज्य श्री प्रेमचन्द म. कई वर्षों से माइक में बोलते थे। संयम-सुमेरु श्री मयाराम जी म. के एक ही गण में ये दो धाराएँ थी। गुरुदेव ने उनके चरणों में श्री जम्बू प्रसाद जी की मार्फत सविनय अर्ज भिजवाई कि 'कल रविवार का प्रवचन आप ही फरमाएँ। हम स्थानक में ही रहेंगे क्योंकि आप श्री जी माइक में बोलेंगे तथा हम व्यवस्था के कारण उस सभा में बैठ नहीं सकते। गुरुदेव के इस विनयपूर्ण व्यवहार से पंजाब केसरी जी म. द्रवित हो गए। फरमाने लगे कि "नहीं, आपको भी पधारना है। मैं माइक में नहीं बोलूगा। हजारों की जनमेदिनी थी। दोनों का संयुक्त प्रवचन हुआ, देर तक चला। लोग हैरान थे कि आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी म. की सन्निधि में भी श्री प्रेमचन्द जी म. ने माइक नहीं छोड़ा तो आज कैसे छोड़ दिया? इस प्रश्न का उत्तर उन्हीं के शब्दों में सुनिए, 'जग्गू के पोते! तेरी विनय ने मुझे मजबूर कर दिया। तेरी मेर और स्नेह के कारण मैं बिना माइक के बोला'।

इस प्रसंग पर सारे दिल्लीवासी इस बात के कायल हो गए कि स्वस्थ और स्नेहपूर्ण वातावरण की रचना कैसे की जाती है। वातावरण को बिगाड़ने वालों से भी उनका पाला पड़ा था और आज माहौल की सुन्दर संरचना करने वाले शिल्पकार को भी वे देख रहे थे।

दिल्ली के उपनगरों को फरस कर चातुर्मास के लिए गुरुदेव 'महावीर-भवन' चाँदनी चौंक पधार गए। उस भवन की परिधि में दृढ़ अनुशास्ता श्री छोटे लाल जी म. एवं सरलात्मा बाबा श्री जग्गू मल जी

सशक्त मन वाला जहां पैर रखता है वहीं शांति प्राप्त कर सकता है।
—गुरु सुदर्शन

आदि ने अंतिम साधना की थी। वही विशाल प्रांगण आज गुरुदेव के ओजस्वी प्रवचनों से गुंजित होने लगा। रविवार के प्रवचनों की व्यवस्था बारादरी की विशाल छत पर की जाने लगी। जब वह भी छोटी पड़ने लगी तो कई बार ऊपर, नीचे दोनों स्थानों पर एक ही समय प्रवचन होते थे।

दिल्ली चातुर्मास से श्रावक-समाज को काफी सम्बल मिला। युवकों में धर्म-रुचि और सामायिक-रुचि बढ़ी। कान्धला में पूज्यपाद श्री रामप्रसाद जी म. चातुर्मास-काल में काफी अस्वस्थ हो गए थे। मुनिराजों से मिलना भी जरूरी था। इधर पूज्य आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी म. भी बड़ौत चातुर्मास संपन्न करके राजस्थान लौटने के इच्छुक थे। रास्ता दिल्ली से हो कर ही था। गुरुदेव उस भव्य आत्मा के दर्शनों के भी इच्छुक थे। पर गुरुदेव का विचार था कि ऐसी जगह मिलन किया जाए जहाँ श्रावकों का जमघट और राजनीतिक दखल न हो। दिल्ली इसके लिए उपयुक्त नहीं थी। बड़ौत से आचार्य श्री जी का विहार हो चुका था। बागपत के पास खेकड़ा गाँव का चयन हुआ। वहाँ पर दिगम्बर जैनों के सैंकड़ों घर थे। आचार्य श्री के पदार्पण से एक दिन पूर्व ही गुरुदेव वहाँ पधार गए थे। और जैन धर्मशाला में रुके थे। अगले दिन सकल मुनि-संघ के साथ तीन कि.मी. तक गुरुदेव आचार्य श्री जी की अगवानी में गए। मधुर मिलन हुआ। दो दिन परस्पर इकट्ठे रहे। अनेक विषय चर्चित हुए। दोनों ने एक दूसरे को निकट से देखा और समझा। गुरुदेव के स्पष्ट चिन्तन, विनय-शील व्यवहार और निष्कपट स्नेह से आचार्य श्री का मन गद्गद हो गया। कितनी ही बार उनके मुखारविन्द से यह निकला 'सुष्ठु दर्शनं यस्य सः सुदर्शनः' अर्थात् जिनके दर्शन मंगलकारी हैं, ऐसे श्री सुदर्शन मुनि हैं। उन्होनें वाचस्पति गुरुदेव के साथ अपने स्नेह-सम्बन्धों का अनेक बार उल्लेख किया। दोनों दिन साथ-2 प्रवचन हुए। जहाँ आचार्य श्री जी ने 'माणुसत्तं' की बड़ी सुन्दर व्याख्या की, वहाँ गुरुदेव ने 'जमाने की हवाओं में न यूँ बहते चले जाओ, सभी कमजोरियाँ अपनी न यूँ सहते चले जाओ,' कविता गाकर संयम-मूलक परम्परा के प्रति अपनी दृढ़

लज्जावान व्यक्ति अपनी तथा दूसरों की इज्जत का ख्याल रखता है।
—गुरु सुदर्शन

आस्था व्यक्त की। गुरुदेव ने आचार्य-प्रवर को पूज्य श्री रामप्रसाद जी म. द्वारा लिखित लेख 'विद्युत् अग्नि है' दिखाया तथा कुछ अंश पढ़कर भी सुनाए। वे बड़े प्रसन्न हुए। आचार्य श्री जी ने देखा कि श्री सुदर्शन मुनि जी म. में असीम कर्तृत्व शक्ति है, यदि इनकी सेवाएँ हमें मिल जाएँ, तो बहुत कुछ परिवर्तन किया जा सकता है। एक रात मधुर वार्ता के दौरान उन्होंने कहा, 'सुदर्शन मुनि जी, कुछ करो'। गुरुदेव ने अपनी ओर से हाथ बढ़ाते हुए कहा, 'भगवन् आप सुधार के कदम उठाएं, हम आपके साथ हैं।' आचार्य श्री जी को गुरुदेव का सकारात्मक उत्तर तो आनन्द दे गया, मगर अपनी आंतरिक विवशताओं को वो छिपा नहीं सके। कहने लगे 'मेरी कोई सुनता नहीं, मानता नहीं'। इस कथन के बाद और कुछ कहने को क्या रह जाता था? दो दिन के पश्चात् आचार्य श्री ने विहार किया। गुरुदेव पुनः दो-तीन कि.मी. तक उनके साथ गए। आचार्य श्री जी से मंगलपाठ सुनाने की विनति की। आचार्य श्री ने कहा कि आप मेरे संतों को सुनाओ। प्रसन्नता पूर्वक मंगलपाठ सुने गए। दोनों महापुरुष परस्पर के प्रति स्नेह और श्रद्धा का भाव लेकर विदा हुए।

गुरुदेव बड़ौत पधारे। वहाँ पर वाचस्पति गुरुदेव की मुनि संपदा यानि 14 ठाणों का मिलन हुआ। जन सैलाब उमड़ा। गुरुदेव की प्रवचन गंगा के साथ-2 भगवन् श्री जी की ज्ञान गंगा में सभी ने डुबकी लगाई। गुरुदेव ने बड़ौत मण्डी और शहर में कोई भेद नहीं रखा। सारे क्षेत्र की विनति पुनः जोर मारने लगी। उनका हक भी बनता था। सभी मुनिराज वहाँ से मेरठ पधारे। गुरुदेव प्रथम बार ही आए थे। वहाँ श्री शांति स्वरूप जी म. के दर्शन हुए। गुरुदेव के संयमी जीवन एवं ओजस्वी प्रवचन से मेरठवासी मन्त्र- मुग्ध हो गए। गुरुदेव मेरठ से कांधला आए और वहीं पर सन् 1971 का अपना चातुर्मास बड़ौत वालों को बक्शा।

होली के बाद गुरुदेव का हरियाणा विचरण हुआ। पुनः चातुर्मास के लिए बड़ौत पहुंचना था। बीच में यमुना नदी पड़ती थी। खेवड़ा गांव

स्वछंद वृत्ति बिना मल्लाह की नाव सम है एवं स्वतंत्र वृत्ति मल्लाह वाली नाव है और परतंत्र वृत्ति छेद वाली नाव है। –गुरु सुदर्शन

के पास यमुना पर कच्चा पुल था जो ज्यादा पानी आने के कारण टूट गया। तुरंत दिल्ली का रास्ता लिया, 100 कि.मी. का फेर पड़ा। समय कम था। क्या गजब का दिल्ली प्रवास रहा। दो दिन में ही जनता का अंतहीन सैलाब गुरुदेव की गरिमा, महिमा और उनके प्रति श्रद्धा की दास्तान बता रहा था।

गुरुदेव बड़ोली गाँव से चातुर्मास के लिए बड़ौत प्रवेश कर रहे थे। भीड़ के साथ चल रहे बालक नरेश जी को ईशारा करके गुरुदेव ने अपने नजदीक बुलाया और फरमाने लगे– "तेरे लिए बड़ौत चातुर्मास कर रहा हूँ।"

खुदा जाने क्या वजन है उसकी निगाहों में,
सुना है आदमी को वो नजर से तोल लेते हैं ॥

बड़ौत पधारे। श्रद्धा, आराधना और वैराग्य-भावना के नए-2 मनोरम रंग भरे जा रहे थे। परम गुरु भक्त ला. इलम चन्द जी जैन की धर्मपत्नी आदर्श सुश्राविका श्रीमती गुणमाला जैन का अप्रमत्त भाव से किया गया मासखमण तप मुनिराजों के लिए चिर-स्मरणीय रहा। चातुर्मास के प्रारम्भ में ही हिलवाड़ी ग्राम के सुश्रावक ला. त्रिलोक चन्द्र जी के पौत्र एवं श्री वकील चन्द जी (बाद में श्री वकील मुनि जी) के सुपुत्र श्री नरेश चन्द्र जी कालेज की पढ़ाई छोड़ कर गुरु-चरणों में पढ़ने लगे। कुछ दिन बाद महावटी गाँव के ला. रामगोपाल जी के सुपुत्र श्री राजेन्द्र जी भी वैरागी-रूप में गुरु-चरणों में आए। पूज्य गुरुदेव जी म. जीवन-भर इस उपलब्धि को अपने लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण मानते रहे। इसी के लिए उन्होंने गत वर्ष के अपने बड़ौत चातुर्मास का बलिदान किया था। 'संतोषी परम सुखी' ये उक्ति वहाँ फलितार्थ हुई।

नीचा वह देखता है जो बड़ों की ईज्जत खोता है।
—गुरु सुदर्शन

4. लहराई गुरुदेव की यशः पताका

बड़ौत चातुर्मासोपरान्त गन्नौर मण्डी में मुनि-मिलन हुआ। वहाँ से गुरुदेव ने सुदीर्घ विचरण का संकल्प बनाया। गुरुदेव के लम्बे विचरण-क्रम में सन् 1972 का विचरण काफी द्रुत, व्यवस्थित और तूफानी माना गया है। शासन-प्रभावना उस वर्ष सर्वथा नए आयामों को छू गई थी। हरियाणा, पंजाब व चंडीगढ़ का काफी क्षेत्र भ्रमण के अन्तर्गत आ गया। पहले गोहाना पधारे। वहाँ पर पूज्यपाद पं. श्री रणसिंह जी म. ठाणे-2 के दर्शन किए। सन् 1964 से ही पूज्यपाद स्वामी श्री फूलचन्द जी म. गुरुदेव के साथ विचरण कर रहे थे। गुरुदेव उनका गुरुवत् सम्मान करते रहे थे। गोहाना आकर स्वामी श्री फूलचंद जी म. का विचार श्री पण्डित जी म. के साथ रहने का बना। उनकी इच्छा को अधिमान देते हुए गुरुदेव ने अपनी सहमति दी। गुरुदेव बुटाणा होकर रिंढाणा पधारे। वहाँ चौ. माईराम जी के सुपुत्र श्री सुन्दर सिंह वैरागी-मण्डल में सम्मिलित हुए। गुरुदेव जहाँ-2 पधारते गए, जन-भावनाओं का ज्वार उमड़ता गया। मनोबल भी उनका बड़े कमाल का था। जीन्द, नरवाणा, मूनक, सुनाम आगमन हुआ। फिर समाणा, पटियाला होते हुए चण्डीगढ़ पधारे। फिर अम्बाला में पधारने पर अम्बाला और गुरुदेव एकमेक-से हो गए। एक दूसरे को देखा। दोनों को दोनों खूब भाए। विनतियों का दबाव बढ़ा। तपस्वी श्री सुदर्शन मुनि जी भी वहीं स्थिरवासी थे। उनका निश्छल व्यवहार गुरुदेव को बहुत भाया। तपस्वी जी ने एक चौमास करने का काफी आग्रह किया। उस समय चातुर्मास नहीं हो सका। विनतियों की अखण्ड धारा चलती रही जो 27 वर्ष बाद 1998 में जाकर सफल हुई।

गुरुदेव चण्डीगढ़ पधारे। बड़े नूतन और मनोरम इतिहास की रचना हुई। जब से चण्डीगढ़ बना तभी से वहाँ के श्रद्धालुओं की गुरुदेव के पदार्पण के लिए विनति थी पर वहाँ की जीवन-शैली गुरुदेव की संयमीय

> कर्म बंधन के समय विवेक हो तो जीव को कष्ट न उठाना पड़े।
> —गुरु सुदर्शन

व्यवस्था के अधिक अनुकूल न होने से नहीं जा पाए थे। घर दूर-दूर थे। प्रवचन भी केवल रविवार को होता था। पर गुरुदेव के पधारने से सब कुछ बदल गया। हर दिन रविवार बन गया। न जाने कहाँ-2 से भीड़ उमड़-घुमड़ कर आती थी। गुरुदेव के शिष्यों ने सुदूरवर्ती घरों से भी गोचरी लाकर सारी जनता को भाव-प्रवण बना दिया।

चण्डीगढ़ में घटित एक मधुर प्रसंग का उल्लेख प्रायः गुरुदेव जी म. के मुखारविन्द से सुना जाता था। जैन समाज के प्रसिद्ध वकील श्री द्वारकादास जी अपने साथ एक महानुभाव को दर्शन कराने स्थानक में लाए। भव्य व्यक्तित्व के धनी वे महानुभाव वन्दना करके बैठ गए। कहने लगे, 'जरा पहचानो' पूज्य गुरुदेव ने अपने बौद्धिक संगणक (Computer) का बटन ऑन किया। झट बोले– "अच्छा! नटखट प्रेमचन्द!" आगन्तुक हर्ष के कारण उछल पड़ा। कहने लगा, 'गुरुदेव! एक बार और इस विशेषण को दोहराओ।' गुरुदेव ने फिर दोहराया, तो वातावरण में शहद-सा घुल गया। अपने साथ लाने वाले वकील सा. अवश्य ही कुछ संकोच-सा मान रहे थे। पर गुत्थियां खुलने लगी तो उनका संकोच भी जाता रहा। आगत महानुभाव पंजाब हरियाणा हाईकोर्ट के चीफ़ जस्टिस प्रेम चन्द जैन थे। वे यहाँ 35 वर्ष पुरानी रोहतक में बीते बचपन की बातों में ऐसे खोए कि कोर्ट-कचहरी का सारा रुतबा भूल कर आत्मीयता के सागर में डूब गए।

अक्षय-तृतीया के आस-पास गुरुकुल-पंचकूला का अधिवेशन होना था। वहाँ की प्रबन्धक-समिति डॉ. मेघ कुमार जी, राधेश्याम जी, वेदप्रकाश जी आदि मान्य व्यक्तियों ने गुरुदेव को उस अवसर पर पधारने की विनति की। गुरुदेव ने अपनी स्वीकृति फरमाई। लगभग 30 वर्ष के अंतराल के बाद गुरुदेव पंचकूला गुरुकुल में पधारे थे। इस संस्था के साथ उनका मानसिक लगाव भी था। पूज्यपाद व्याख्यान-वाचस्पति गुरुदेव ने इस संस्था के बचपन को सुपुष्ट किया था तथा गुरुदेव के दो

इच्छाएं पूर्ण न हों तो भगवान पर छोड़ दो जैसे द्रोपदी ने चीर...।

—गुरु सुदर्शन

गुरु-भ्राता श्री सेठ जी म. एवं श्री राम प्रसाद जी म. इस गुरुकुल के विद्यार्थी रहे थे।

अधिवेशन पर छात्र-वर्ग, दर्शनार्थी, प्रबन्धक-गण और समाज के नेताओं की भारी भीड़ थी। कार्यक्रम चलते रहे। काफी देर हो गई थी, सभा भी धीरे-2 उखड़ रही थी। अन्ततः गुरुदेव का प्रवचन प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम गुरुदेव ने मंच पर बैठे हुए समाज-नेताओं से कहा कि 'अब सन्तों का प्रवचन शुरू हो रहा है, अतः केवल माननीय अध्यक्ष कोटुमल जी को छोड़कर शेष सभी नीचे आ जाएँ।' सब नीचे उतर गए। सामान्य जनता इससे बड़ी प्रसन्न हुई। प्रवचन शुरू हुआ। गुरुदेव ने सन्देश दिया कि यहाँ पर जितने भी प्रबन्धक हैं, वे जब भी गुरुकुल में आएं, तो रात्रि भोजन न करें। सबने प्रतिज्ञा की। यह प्रथा काफी समय तक चलती रही। सब लोगों ने अधिवेशन को गुरुदेव के प्रवचन के कारण ही सफल माना। स्वामी कृष्णचन्द्र जी का गुरुकुल के लिए योगदान प्रशंसनीय लगा।

पंचकूला से विहार करते हुए गुरुदेव सढौरा, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, करनाल, घरौण्डा आदि नगरों में पधारे। एक स्थान पर रात्रि पेड़ के नीचे बिताने का भी आनन्द लिया। बालपबाणा जैसे छोटे-2 गाँवों की सुध लेना गुरुदेव का स्वभाव था। सिंघाणा-मुआना भी उसी कड़ी में जुड़े। मुआना गाँव से गुरुदेव ने श्री शास्त्री जी म. तथा श्री विनय मुनि जी म. को चातुर्मासार्थ विदाई दी। इन दोनों का प्रथम बार ही नरवाना में स्वतंत्र चातुर्मास होने जा रहा था। स्वयं गुरुदेव दूर तक छोड़ने गए। मंगल-पाठ सुनते-सुनाते दोनों तरफ की भावुकता अद्भुत थी। इधर जीन्द की धरा बाट जोह रही थी गुरुदेव के सन् 1972 के चातुर्मास के लिए।

गुरुदेव जीन्द को 'राजा क्षेत्र' कहते थे। सेवा का भाव वहाँ के कण-2 में है। जैन स्कूल और कालेज को लेकर कुछ वर्षों से लोगों में रंजिश चली आ रही थी पर अब वह सिमट गई थी। नवयुवकों में विशेष

> यदि श्रावक/श्राविका निडर व सच्चे हों, मुनियों के संयम/मर्यादा में कोई अतिचार देख टोक दें तो संयम की विराधना नहीं बल्कि धर्म वृद्धि होगी। —गुरु सुदर्शन

उत्साह था। बहुत से अजैन भी धर्मानुरागी बने। छोटे-छोटे बच्चों, युवकों, वृद्धों और बहनों में विशेष लहर थी। स्थानक छोटी होने से अक्सर जैन मंदिर में प्रवचन होते थे। मण्डी के बड़े-2 सामाजिक और राजनीतिक अजैन भी बहुत लाभ लेते थे। श्री मांगेराम जी गुप्ता जो बाद में विधायक और हरियाणा सरकार में वित्तमंत्री बने, वे गुरुदेव के प्रवचन सुनकर काफी प्रभावित थे। रोज सुनकर जाते और फिर मण्डी में जाकर सुनाते। कई बार मण्डी में भी गुरुदेव के प्रवचन कराए। एक बार अग्रवाल-सभा के अधिवेशन में भी प्रवचन हुआ। व्यसन-त्याग की प्रेरणा में काफी कुछ काम हुआ। उस चातुर्मास में कई लोगों ने इकट्ठी ही 21 और 31 तक सामायिकें करके अपनी दृढ़धर्मिता का परिचय दिया। उस वर्ष से दर्शनार्थियों की संख्या में भी काफी वृद्धि होने लगी थी। दिल्ली से एक भाई श्री मणिलाल जी डोशी इकट्ठी सात बसें गुरु चरणों में लेकर आए तो सर्वत्र ही हलचल सी मच गई। इस इलाके में ऐसा आगमन अश्रुतपूर्व था। धीरे-2 गुरुदेव सामान्य मानव के लिए एक आराध्य और इष्टदेवता की कोटि में आने लगे। लोगों की सहज आशंकाएँ थी कि दर्शनार्थी संख्या बढ़ने से समाजों पर भी आर्थिक बोझ बढ़ेगा पर ऐसा नहीं हुआ। गुरुदेव के हर चौमास में स्थानीय ब्रादरी के खजाने पहले से अधिक भरे रहे।

बढ़ती जन-प्रतिष्ठा के माहौल में भी गुरुदेव ने अपने ऊपर कभी अभिमान भावना को हावी नहीं होने दिया। अपने मुनियों को भी अनुशासन में कस कर रखा। अपने श्री-चरणों में अध्ययन रत वैरागियों में भी सादगी और संयम की वृत्ति भरी। कई स्थानों पर तो ऐसी टिप्पणियाँ तक सुनने में आ जाती थीं कि गुरुदेव के वैरागी भी बहुत सारे साधुओं से आगे हैं। वैरागियों पर पूर्ण अंकुश होता था। उनके वस्त्र सादे थे। कमीज, चोलपट्टा, नंगे पैर, स्थानक में सामायिक की मुद्रा, खाने में, बोलने में विवेक तथा गृहस्थ के घर पर जाकर भोजन करना। वहाँ भी पंखे के नीचे या सोफा-कुर्सी पर बैठकर नहीं, अपितु चटाई पर बैठकर।

> व्यसनों से एवं गलत तरीके से आया धन विनाश का कारण बनता है।
>
> —गुरु सुदर्शन

उनकी पढ़ाई का भी विशेष ध्यान गुरुदेव रखते। कभी-2 मनोबल बढ़ाने हेतु उनके भजन, भाषण भी कराते। अध्ययन के इसी क्रम में गुरुदेव ने जीन्द में लघु मुनियों और विरक्तों को श्रावक श्री निहालचन्द्र जी से पाँच कर्मग्रन्थ पढ़वाए, संस्कृत आदि का अध्ययन करवाया। सन् 1972 का चातुर्मास गुरुदेव के सफलतम चातुर्मासों में गिना जाता है।

जींद में ही गुरुदेव ने घोषणा की कि 15 फरवरी को बुटाना में वैरागी जयकुमार की दीक्षा होगी।

जीन्द चातुर्मास के बाद गुरुदेव नरवाणा पधारे। वहाँ अपने शिष्यद्वय श्री शास्त्री जी म., श्री विनयमुनि जी म. की चातुर्मासिक प्रभावना देखकर बड़े गद्गद हुए। फिर मूनक आए। वहाँ पर स्वामी श्री फूलचन्द जी म. की आँख के मोतियाबिन्द का आप्रेशन कराया। वहां से कैथल पधारे। प्रथम बार ही आए थे। बड़े अद्भुत दृश्य थे। जैनों के साथ-2 अजैनों में भी जोश था। अमृत लाल जी चौधरी इतने गुरुभक्त बने कि कहने लगे, 'आप यहाँ चातुर्मास करो, मैं सारे चातुर्मास का पूरा खर्च उठाऊँगा।' वहाँ से बुटाना पधारे। सकल मुनि-संघ एकत्रित हुआ। गाँव भी नगर बन गया था। हजारों की जनमेदिनी लम्बे-चौड़े मैदान में रोज कथामृत का पान करती थी। उस समय पूज्यपाद श्री राम प्रसाद जी म. ने वैराग्य और वीरता से ओत-प्रोत प्रवचन सुनाए। दीक्षा के अवसर पर दीक्षार्थी के अतिरिक्त तीनों वैरागियों ने भी भाषण दिए। ऐसा पहली बार ही हुआ था। यह प्रयोग काफी सफल रहा। जनता ने बड़ा रस लेकर भाषण सुने। चारों के भाषण पूज्यपाद श्री रामप्रसाद जी म. ने लिखे थे।

गुरुदेव दीक्षा के बाद एक दिन दोपहर को श्री शास्त्री जी म. को साथ लेकर गोचरी के लिए पधारे। 13 मुनिराजों की गोचरी स्वयं लाए। जिस-2 घर पधारे, उन्होंने तो अपने सौभाग्य को सराहा ही, माण्डले पर विराजमान मुनियों ने भी उसे अमृत-तुल्य समझ कर ग्रहण किया।

बुटाना दीक्षा का कार्यक्रम सानन्द संपन्न हो गया। दिल्ली

> औरों पर उपकार के लिए अपनी बुद्धि का उपयोग करने वाला सच्चा बुद्धिमान है।
> —गुरु सुदर्शन

का प्रोग्राम बना। गोहाना, रोहतक होकर सोनीपत पधारे। वहाँ के सुश्रावक श्री बनवारी लाल जी के सुपुत्र श्री राकेश जी गुरु-चरणों में वैरागी बने। वाचस्पति गुरुदेव श्री मदन लाल जी म. के सन् 1960 के सोनीपत-चातुर्मास में इनका जन्म हुआ था। जब ये कुछ दिन के ही थे तो वाचस्पति गुरुदेव इनके घर में दर्शन देने पधारे थे। बनवारी लाल जी ने शिशु को गुरु-चरणों में डालते हुए अर्ज करी कि आज से ये आपका ही है। वही अमानत पूज्य गुरुदेव को अब मिली।

दिल्ली पधारने पर वीर-जयंती का सौभाग्य वीर-नगर वालों को मिला। दिल्ली-भ्रमण के दौरान गुरुदेव ने करौल बाग में पंजाब-केसरी श्री प्रेमचन्द जी म. के दर्शन किए। उनका शरीर अतिकृश हो गया था। काफी समय से प्रवचन छोड़ा हुआ था। पूज्य गुरुदेव तीन सन्तों को शक्ति नगर में छोड़कर स्वयं विभिन्न क्षेत्रों की स्पर्शना कर रहे थे। करौल बाग में श्री प्रेमचन्द जी म. ने गुरुदेव को सीने से लगा लिया। बड़ा प्यार बरसाया। फिर मीठा उपालम्भ देते हुए बोले, 'सब सन्तों को क्यों नहीं लाया'? गुरुदेव फौरन समझ गए और तुरन्त तीनों सन्तों को शक्ति-नगर से बुलाकर उनके चरणों में पेश किया। श्री पंजाब केसरी जी म. अपनी बात पर दृढ़ रहने वाले थे पर उस दिन वे गुरुदेव से बोले, 'मैं कथा में जाता नहीं हूँ, न बोलता हूँ। पर तू आया है तो आज जाऊँगा भी और बोलूँगा भी। लेकिन तुझे मेरे साथ मेरे बराबर में एक ही पट्टे पर बैठना होगा।' उनके आग्रह ने गुरुदेव को असमंजस की स्थिति में डाल दिया। विनय और समाचारी दोनों की दिशाएं भिन्न थी पर वक्त का तकाजा था। वैसे इस तरह का श्री पंजाब केसरी जी म. का मनोभाव गुरुदेव को, जब वे सराय रोहिल्ला में थे, तब मिल गया था। पर ये सोचा कि दर्शन के समय जो स्थिति बनेगी तदनुसार निर्णय कर लेंगे। अन्ततः गुरुदेव ने उनकी भावना को ही प्रमाण कहा। श्री प्रेमचन्द जी म. अपने भाषण में यथा-शक्ति खूब जोर लगाकर बोले। उनका एक ही कथन था, 'दिल्ली के नौजवानों! मैं तुम्हें और कहीं जाने को नहीं कहता। तुम और कहीं

मां का जीवन कपास के समान है। जैसे कपास लुढ़ाई, कताई, पिनाई करके भी तन ढंकती है, सर्दी/गर्मी से रक्षा करती है ऐसे ही मां भी अनेकों कष्ट सहकर संतान के सुख की कामना करती है।

जाओ या मत जाओ। पर सुदर्शन मुनि के पास जरूर जाओ। तुम्हारा जीवन सफल हो जाएगा। पूज्य गुरुदेव ने एक पट्टे पर बैठने की घटना अपने दूरस्थ मुनियों को भी पत्र द्वारा दे दी ताकि सबको वस्तु-स्थिति का ज्ञान रहे।

चाँदनी चौक में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम संपन्न हुआ। फिर बड़ौत पधारे, सारे इलाके में बहार आ गई। फिर हरियाणा की ओर मुड़े। मार्ग में खेवड़ा गाँव में रुके। यह ग्राम वाचस्पति गुरुदेव की कर्म-भूमि रहा था। उनका बचपन भी यहीं बीता था तथा सन् 1937 का ऐतिहासिक चातुर्मास भी यहीं किया था। उस चौमास में बाबा श्री जग्गूमल जी म. भी साथ में थे। वाचस्पति गुरुदेव के प्रमुख परामर्शदाता श्रावक श्री ताराचन्द जी जैन वैद्य भी वहीं गाँव में थे, अतः गुरुदेव ने कई दिन गाँव में लगाए।

सन् 1973 का चातुर्मास गन्नौर मण्डी में हुआ। बाह्य उपलब्धियों की दृष्टि से चातुर्मास खूब प्रभावपूर्ण था। श्री-संघ ने चार महीने के भीतर ही तीन मंजिला विशाल भवन तैयार कर दिया था। हरियाणा में नई स्थानकों के निर्माण का दौर गन्नौर से ही शुरू हुआ। श्री-संघ में अपूर्व जोश था। जब गुरुदेव पधारे, तो नई स्थानक में कुछ काम शेष था, अतः छोटी स्थानक में ठहरे। प्रवचन नई स्थानक में होता। बिना किसी भेदभाव के दिगम्बर, श्वेताम्बर, सनातनी व पंजाबी भाई आते। दर्शनार्थियों की भरमार थी। नई स्थानक में स्थानातरण करने से पूर्व गुरुदेव की प्रेरणा से वहाँ श्रावकों ने जाप, पौषध आदि किए। पुरुषान्तरकृत होने के बाद गुरुदेव वहाँ पधारे।

एक दिन सोनीपत के डी.सी. अचानक गुरुदेव के दर्शन करने चले आए। उनके परम मित्र डॉ. जे.के. जैन ने उनको प्रेरणा दी कि आपके जिले में गुरुदेव चातुर्मास कर रहे हैं, आप दर्शनों का लाभ उठाओ। वे बिना किसी पूर्व सूचना के आ गए। लोगों में शोर मच गया। बिना बुलाए डी.सी. का आना बड़ी बात मानी गई। बाद में कुछ लोगों ने उनके

> प्रतिकूल वस्तु मिलने पर समभाव रखना ही विरक्ति है।
>
> —गुरु सुदर्शन

आगमन का दुरुपयोग भी किया। गुरुदेव का नाम लेकर लोग डी.सी. आफिस में जाकर उचित-अनुचित काम करवाने लगे। डी.सी. साहब ने डॉ. जैन से आपत्ति की। गुरुदेव तक भी बात आई। उनको बड़ा ख्याल हुआ। डी.सी. साहब को समाचार भेजा कि मैंने आपके पास कोई आदमी नहीं भेजा है। आप हमारे नाम लेने मात्र से किसी की सिफारिश न मानें। इस बात से डी.सी. साहब निश्चिन्त हुए।

गुरुदेव ने गन्नौर में कुछ जिज्ञासु श्रावकों को प्रतिक्रमण सिखाया। तथा नवदीक्षित श्री जय मुनि जी के प्रथम लोच पर कई जोड़ों को आजीवन शीलव्रत का पच्चक्खाण दिलाया। उस समय गन्नौर Bharat Steel Tube (B.S.T.) के कारण भारत-भर में विख्यात होता जा रहा था। सोनीपत वासी श्री बनवारी लाल जी (वैरागी राकेश जी के पिता श्री) ने B.S.T. की नई व्याख्या अपने भाषण में करते हुए कहा कि इस शब्द का सही अर्थ है—'Best Saint of Today' अर्थात् आज के सर्वोत्तम मुनिराज यहां पर हैं। इस अर्थ ने श्रोताओं के दिलों को काफी गुदगुदाया।

गन्नौर चातुर्मास में एक बार श्रद्धेय श्री प्रकाश चन्द जी म. प्रातः काल दिशा-भ्रमण के लिए गए। वे रेलवे लाइन की पटरी के साथ-2 चल रहे थे। अचानक पीछे से रेल आई। उसका शोर भी वे नहीं सुन पाए। रेल से हल्का-सा टकराकर एक तरफ गिर गए। हल्की चोट आई। गुरुकृपा से शीघ्र ठीक हो गए।

गुरुदेव को चातुर्मास के अंतिम दिनों तक रुग्णता बनी रही। विहार भी नहीं हो पाया। गुरुदेव का विचार बड़ौत जाकर श्री नरेश जी की दीक्षा करने का था पर अब वह संभव नहीं हो पाया था। गुरुदेव ने गन्नौर में ही श्री नरेश जी, श्री सुन्दर जी एवं श्री सुमति कुमार जी, (जो पं. श्री रणसिंह जी म. के श्री-चरणों में वैरागी थे) की दीक्षा का विचार बनाया। श्री नरेश जी के पिता श्री वकील चन्द जी ने गुरुदेव से अर्ज़ की

मोह को जीतने वाला संयम का पालन कर सकता है।
—गुरु सुदर्शन

कि 'यदि इनकी दीक्षा विशेष समारोह के साथ करनी है तो हम अपने घर पर बड़ौत में ही कराएंगे। यदि साधारण दीक्षा करनी हो तो आप कहीं भी कर सकते हैं।'

श्री वकीलचन्द जी की भावनाओं को देखते हुए गुरुदेव ने पहले 26 नवबंर को श्री नरेश जी की दीक्षा साधारण रूप से स्थानक में तथा पूर्व घोषित मुहूर्तानुसार 5 दिसम्बर को अन्य दो दीक्षाओं का कार्यक्रम संपन्न किया।

दीक्षा-समारोह में भोजन के समय मिठाई देने पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया। चातुर्मास में बारी वालों में मीठा देने की काफी होड़ लग गई थी, इससे समाज पर खर्च का भार भी काफी पड़ने लगा था। समाज ने गुरुदेव की आज्ञा पर फूल चढाए। मीठा बन्द करने के फैसले का जनपद की सभी ब्रादरियों ने स्वागत किया। मूनक में विराजित घोर तपस्वी श्री बदरी प्रसाद जी म. ने उस निर्णय को बहुत पसन्द किया तथा सभी क्षेत्रों में स्थायी रूप से उस व्यवस्था को लागू करने की मांग की। यह व्यवस्था तब सर्वत्र लागू हो गई जो आज तक भी उत्तर भारत में अपने सन्तों के समक्ष चालू है।

दीक्षा के पश्चात् गुरुदेव रोहतक पधारे। उस वर्ष (सन् 1974 जनवरी में) धुन्ध का भीषण प्रकोप पहली बार हुआ था। सन्तों का आहार-पानी लाना, प्रवचन, पढ़ना-लिखना, वार्तालाप, ऊपर-नीचे आवागमन सब बन्द सा हो गया था। गुरुओं ने अपने पूर्वजों की परम्परा को उसी रूप में सुरक्षित रखा हुआ था।

रोहतक में श्री विनय मुनि जी म. को उदर-पीड़ा का भीषण प्रकोप हुआ। रोहतक मैडीकल में परीक्षण हुए। एक गुर्दा जन्म से ही खराब था। डॉ. मडिया से आप्रेशन कराया गया और सभी मर्यादाओं को सुरक्षित रखा गया।

जैसे दूध के उफान का जो भाग व्यर्थ जाता है कोई काम नहीं आता
वैसे ही क्रोध वश निकले शब्द व्यर्थ जाते हैं। –गुरु सुदर्शन

रोहतक से विहार करके गुरुदेव जीन्द पधारे। वहाँ पर गुरुदेव की कृपा से श्री शांतिचन्द्र जी म. की प्रबल प्रेरणा से स्थायी स्वाध्याय का क्रम शुरू हुआ। सुश्रावक श्री निहाल चन्द जी प्रथम अध्यापक बने। यह परम्परा काफी समय तक चलती रही।

सन् 1974 का चातुर्मास रोहतक शहर एवं मण्डी दोनों सयुक्त रूपेण हुआ। जैनों के साथ-2 सनातन समाज में भी काफी श्रद्धा थी। युवाओं में विशेष श्रद्धा और जागरण बढ़ा। अपने मुनियों को भी गुरुदेव ने उनकी रुचि योग्यता व स्थिति के अनुसार शिक्षण दिलाया।

गुरुदेव के परम भक्त श्री जितेन्द्र जैन जी रोहतक दर्शन करने आए। उनकी इच्छा थी कि मैं गुरुदेव के श्रीमुख से मांगलिक श्रवण करूँ और उसे टेप करूँ ताकि घर पर रोज सुन सकूँ। वे टेप रिकार्डर साथ लाए थे। गुरुदेव ने इंकार कर दिया। संयम और मर्यादा के विषय में वैयक्तिक प्रेम को गौण कर देना ये गुरुदेव की कला थी।

उस वर्ष श्रमण भगवान् महावीर स्वामी की 25वीं निर्वाण-शताब्दी का आयोजन प्रारम्भ हो रहा था। गुरुदेव किसी आडम्बर-पूर्ण कार्यक्रम में न स्वयं सम्मिलित होते थे, न उसका अनुमोदन करते थे। अपने वीतराग देवों को जलसे-जलूसों में प्रकट करने की बजाय वे उनके आदर्शों पर चलने को व संवर-मूलक क्रियाओं को अधिक महत्त्व देते थे। फिर भी कहीं पर समाज-जागरण का कोई अनुष्ठान हो तो उसके प्रति उनके मन में सात्विक प्रसन्नता की अनुभूति होती थी। अपनी ओर से गुरुदेव की प्रेरणा होती थी कि जैन भाई एक वर्ष में भगवान् महावीर का जीवन-चरित अवश्य पढें। अनेक श्रावकों को उन्होंने नियम भी कराए।

मिश्री के पास केवल मिठास है वैसे ही पानी के पास तो प्यास बुझाने की शक्ति है।
यदि कोई जानबूझकर कुएं में गिरे तो कुएं का दोष नहीं है। —गुरु सुदर्शन

5. पंजाब का जागा सौभाग्य

चातुर्मासोपरान्त पंजाब-विहार का मन बना। मूनक में श्री भण्डारी जी म., श्री स्वामी जी म., पं. रणसिंह जी म., श्री तपस्वी जी म. आदि से मंगल-मिलन हुआ। चातुर्मासों की व्यवस्था बनाई— स्वयं होशियारपुर चौमास का भाव लेकर लुधियाना की तरफ विहार किया। मार्ग में सुनाम संगरुर धुरी होते हुए मलेरकोटला पधारे, वहाँ स्पष्ट-वक्ता श्री सुमन मुनि जी म. के सद्गुरुदेव श्री महेन्द्र मुनि जी म. से स्नेह-मिलन हुआ।

लुधियाना प्रवास विशिष्ट गरिमापूर्ण रहा। नौहरियामल बाग में ही पूज्यपाद प्रवर्त्तक श्री फूलचन्द जी म. 'श्रमण' के शुभ दर्शन हुए। गुरुदेव उन्हें पूरा सम्मान देते थे। श्री 'श्रमण' जी म. की कृपा भी अहैतुकी एवं अवर्णनीय थी। **'गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति'**। वे गुरुदेव की भावना को जानते थे। वे प्रवचनों में अकेले पधारते। अलग पट्टे पर विराजते। कभी किसी विषय पर विवाद का जन्म नहीं होने दिया। शहर में पधार कर गुरुदेव ने प्रेरणा दी कि प्रभु वीर के 2500वें निर्वाण शताब्दी वर्ष पर शनिवार रविवार दो दिनों में 2,500 भाई-बहन सामायिक करें। सारे लुधियाना में धर्मक्रांति आ गई। देवकी देवी हॉल में दो दिन में 4,000 भाई-बहनों ने सामायिकें कीं। धोती, दुपट्टे और मुँहपत्तियों की छटा युगों-युगों तक स्मरणीय बन गई। पूज्यपाद श्री 'श्रमण' जी म. ने गुरुदेव का एक चातुर्मास लुधियाना में करने की जोरदार अपील की। गुरुदेव ने फरमाया कि यहाँ की भीड़ को संभाल पाने में मैं असमर्थ हूँ। फिर भी श्री 'श्रमण' जी म. का आग्रह बना ही रहा। जब विहार करने लगे, तो चौड़ा बाजार में लोगों की विशाल भीड़ थी। सारा ट्रैफिक जाम था। एक युवक ने दूर छत पर चढ़कर फोटो खींचना चाहा। गुरुदेव ने पीठ फेर ली। वह फोटो उसी रूप में आ गया। यह दृश्य **'न भूतो न भविष्यति'**, था।

नारी को सताना, घर में दीवाली के दिन दीपक बुझाना है।

—गुरु सुदर्शन

तेरी तस्वीर से खाली नहीं है कोई भी महफिल,
मगर पहचानने वालों से पहचानी नहीं जाती ॥

लुधियाना से चलकर माछीवाड़ा होते हुए रोपड़ पधारे। गुरुदेव को रोपड़ में पता चला कि पूज्यपाद भण्डारी श्री बलवन्तराय जी म. को विहार-यात्रा में हर्निए की दिक्कत हो गई। धुरी के पास एक गाँव शेरपुर में आप्रेशन करवाना पड़ा। श्री भण्डारी जी म. को किसी वाहन में न ले जाकर, सन्त ही एक खटिया पर अस्पताल में लाए। श्री तपस्वी जी म. का वह निर्णय बड़ा साहसी, फौलादी और संयम-दृढ़ता का प्रतीक था। उस गाँव में जो धर्म प्रभावना हुई, वह बड़ी अद्‌भुत थी। जालंधर पधार कर गुरुदेव ने वहाँ विराजमान वयोवृद्ध श्री रघुवर दयाल जी म. के दर्शन किए। प्रेम सौहार्द का वातावरण बना।

सन् 1975 का चातुर्मास होशियारपुर में हुआ। यह क्षेत्र गुरुदेव के प्रति शुरू से ही समर्पित रहा है। पिछले चातुर्मास के उपकारों की स्मृतियां सबके मन को गुदगुदा रही थीं। रौनक तो स्वतः स्फूर्त थी ही। प्रातः काल युवकों की धार्मिक प्रशिक्षण की क्लास लगी। रात्रिकथा के लिए चातुर्मास से पूर्व बलाचौर में ही गुरुदेव ने अपनी कृपा बरसाकर श्री नरेश मुनि जी म. को तैयार कर लिया था तथा आशीर्वाद दिया कि “तुझे क्या चिंता है, जब पट्टे पर बैठेगा, सब आ जाएगा और सभा तेरी होगी”। आज श्री नरेश मुनि जी म. के प्रवचनों में चमत्कारिक रूप से वे आशीर्वचन फलित हो रहे हैं। वर्तमान शहर से बाहर स्थित ‘साधु-आश्रम’ नामक संस्कृत के प्रसिद्ध शिक्षण एवं शोध-संस्थान के आचार्यों की भी सेवाएँ ली गईं। भाई जितेन्द्र जी के माध्यम से कई प्रोफैसर आए और लघुमुनियों व विरक्तों को व्याकरण, काव्यमीमांसा, दर्शन-शास्त्र आदि कई विषयों का ज्ञान कराया। इससे वै. राजेन्द्र जी, राकेश जी को संस्कृत की ‘विशारद’ व ‘शास्त्री’ परीक्षा पास करने में विशेष सहायता मिली।

भगवान महावीर निर्वाण-वर्ष पूर्ण होने जा रहा था। गुरुदेव ने इस

> शरीर का मोह करने वाले आत्मा को भूल जाते हैं।
>
> —गुरु सुदर्शन

वर्ष दीपावली पर एक स्थायी स्तम्भ अपने धर्म-संघ में स्थापित किया। दीपावली के मध्याह्न में समाज की बहनों को और रात्रि में सब भाइयों के लिए जाप, शास्त्र-पाठ और मांगलिक सुनाने की परम्परा डाली। त्याग-पच्चक्खाण भी दिलाए गए। ये प्रथा आज तक प्रतिवर्ष जारी है। दीपावली से अगले दिन श्रद्धेय श्री विनय मुनि जी म. ने पूरे तीन घण्टे एक आसन से बैठकर उत्तराध्ययन सूत्र की मूल वाचना की। यह स्थानीय लोगों के लिए एक नई और आश्चर्यकारी घटना थी। समाज ने शताब्दी-वर्ष की सम्पूर्ति के उपलक्ष्य में एक सभा और विद्वद्-गोष्ठी भी कराई। विद्वानों के भाषण विषय-दृष्ट्या सुन्दर थे पर लम्बे थे। अधिक प्रभावप्रद और विद्वत्तापूर्ण भाषण था श्री विनय मुनि जी म. का जो प्रत्येक व्यक्ति की समझ में आया। फिर पूज्य गुरुदेव ने प्रवचन फरमाया। जो सर्वजन-ग्राह्य और प्रेरणा-परक था। उन्होंने प्रभु महावीर के पूर्वभवों को प्रस्तुत करते हुए उनकी साधना व तपस्या का बड़ी मनोहारी शैली में चित्रण किया।

चातुर्मास की सम्पूर्ति पर आदमपुर होते हुए गुरुदेव जण्डियाला गुरु पधारे। इसी भूमि पर गुरुदेव ने 12 वर्ष पूर्व अपने जीवन-सर्वस्व, व्याख्यान-वाचस्पति गुरुवर्य श्री मदन लाल जी म. को अंतिम विदाई दी थी। उस पुण्य-भूमि किंवा तीर्थ-भूमि में जाने का चाव था। पर वहाँ की सामाजिक स्थिति बड़ी तनावपूर्ण थी। गुरुदेव के पधारते ही हवाओं ने करवट ली। खूब रौनकें हुई। श्री संघ में एकता की पुकार उठने लगी। विरोधी शक्तियाँ समीप आने के लिए कुलबुलाने लगीं। पर जुड़ें कैसे? उलझनें काफी थी। कहीं ताना-बाना नजर नही आ रहा था। पूज्य गुरुदेव ने ललकार लगाई कि 'एक होने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है। हम वाचस्पति गुरुदेव की इस पुण्य भूमि का गौरव क्षीण नहीं होने देंगे। केवल समाधि बनाकर ही हम गुरुदेवों के भक्त नहीं कहला सकते, आदि'। सब ग्रुपों ने गुरुदेव को अपना अधिकार सौंप दिया। एक दिन प्रवचन में गुरुदेव ने करीब 50 व्यक्तियों को आपस में एक-दूसरे के

मृत्यु के प्रश्न को महाप्रज्ञ पुरुष ही हल करते हैं।
—गुरु सुदर्शन

गले मिलवाया। वह दृश्य इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ है। वातावरण सुखद बना। फिर समाज के नेता का प्रश्न आया। श्री तरसेम कुमार जैन को प्रधान बनाकर गुरुदेव ने स्थायी समाधान दिया। गुरुदेव-कृत इस शान्ति स्थापना का सारे पंजाब में सर्वत्र स्वागत हुआ। सबके होठों पर एक चर्चा थी कि ये संत हैं जो कि सूईं बनकर सबको जोड़ देते हैं। उस शान्त क्रांति को और अधिक पुष्टि प्रदान करने हेतु गुरुदेव ने अगले वर्ष अपने ज्येष्ठ सुशिष्य श्री प्रकाश मुनि जी म. ठाणे 3 का चातुर्मास वहाँ कराया।

जब जण्डियाला से पट्टी पदार्पण हुआ, तब गुरुदेव को फरीदकोट की भी चिन्ता हुई, क्योंकि उन्हीं दिनों फरीदकोट समाज में भी काफी क्लेशमय वातावरण था। ये भी बड़े गुरुदेव का चिर-सिंचित, चिर-पोषित क्षेत्र था। पूज्य गुरुदेव ने अपने परम विचक्षण सुशिष्य श्री शास्त्री जी म. को वहाँ भेजा कि 'जाओ, तुम्हें यश मिलेगा'। फरीदकोट शान्ति-अभियान से पूर्व गुरुदेव ने मुन्नी-मोती परिवार के वरिष्ठ श्रावक श्री शादीलाल जी से परामर्श किया कि 'शास्त्री को फरीदकोट भेजूं या नहीं? उन्होंने इस सद्भावनापूर्ण कदम की सराहना की और भेजने के लिए विनति भी की। श्री शास्त्री जी म. का अनुभव रहा है कि गुरुदेव जी म. दूर बैठे स्थिति को रहस्यमयी शक्तियों से संभाल रहे थे। एक पत्र उन्हें गुरुदेव का मिला, जिसके बॉर्डर पर 16 स्वास्तिक बने हुए थे। जिसका अर्थ निकाला गया कि 16 दिन में कार्य सफल होगा।

इसी तरह श्री शास्त्री जी म. ने गुरुदेव से प्रवचन के लिए एक दृष्टान्त (Short story) मंगवाया था। गुरुदेव ने लिख भेजा और उसके नीचे वो कुछ भी लिखा, जो एक शिष्य के लिए महान् उपलब्धि मानी जा सकती है कि "त्रिवेणी की सेवा में भेंट एक गुरुदेव की आत्मा का आशीर्वाद, जो सदा फलीभूत हो"। वहाँ के विवाद बड़े पेचीदा थे। महाराज श्री जी के प्रयास व गुरुदेव के आशीर्वाद से एकता, शान्ति व सौहार्द का वातावरण बना। फरीदकोट को शांति का पाठ पढ़ाकर जब

मित्रता की मिसाल दूध पानी है– जैसे दूध और पानी का मेल है
वैसे ही साधक को सबसे मैत्री भाव रखना चाहिए। –गुरु सुदर्शन

शास्त्री जी म. केवल पांच दिन में ही अमृतसर पहुंचे, तब उनकी अगवानी में सबसे आगे गुरुदेव जी म. थे। लघु मुनि भी उस समय गुरुदेव से पीछे रह गए थे। एक गुरु ने जो प्यार-दुलार उन्हें दिया, वह उनकी शाश्वत अमानत थी। जण्डियाला में रहते हुए गुरुदेव ने श्री जयमुनि जी म. के कुछ भाषण अंग्रेजी में करवाए। अमृतसर के अमृत लाल जी जैन ने गुरुदेव को बधाई दी तथा गुरुनानक देव यूनिवर्सिटी में लैक्चर कराने की अनुमति मांगी। डी.ए.वी. कालेज अमृतसर की प्रिंसीपल सुदेश अहलावत ने भी कालेज में भाषण की विनति की पर गुरुदेव ने अभी अपरिपक्वता देखते हुए निषेध कर दिया।

गुरुदेव अमृतसर पधारे। सिद्धान्त और समाज-सुधार के अलावा राष्ट्रीय चरित्र पर भी बड़े ओजस्वी और मार्मिक प्रवचन दिए। एक पत्रकार ने उनको अखबारों में काफी कवरेज दी। कई बार तो प्रथम पृष्ठ पर कई-2 कॉलमों में गुरुदेव के प्रवचन आए। गुरुदेव ने जीवन में अखबारों में कभी रुचि नहीं रखी। अन्यथा कई स्थानों पर पत्रकार उन्हें घेरे रखना चाहते थे।

अमृतसर में एक विशिष्ट धनाढ्य व्यक्ति गुरुदेव के दर्शनार्थ आया। चरण पकड़ कर फूट-2 कर रोने लगा। गुरुदेव दयार्द्र थे। उसे संभाला। निरवद्य भाषा में आश्वासन दिया। एक शेर सुनाकर उसे आशा के सूत्र से जोड़ा—

शकिस्ता-दिल न हो मेरे माली, वो दिन भी दूर नहीं,
जब फूल खिलते हुए मिलेंगे, फिज़ा महकती हुई मिलेगी ॥

और सचमुच ही उसके जीवन में बडी जल्दी फूल खिले, निराशाएँ दूर हुईं। इस घटना से मुनियों को भी संसार की दुःखद स्थिति के बारे में और अधिक निश्चय हुआ।

अमृतसर से गुरुदेव जम्मू जाना चाहते थे। वहाँ कुछ श्रावकों को

क्रोध आने पर मौन या दूर हो जाएं, शास्त्र की गाथा उच्चारण करें या प्रासुक जल पी लें।
—गुरु सुदर्शन

जानते भी थे परन्तु पहले कभी वहाँ न जाने से अधिकारी-वर्ग से परिचय नहीं था। रास्ता लम्बा बीच में जैन परिवारों का अभाव होते हुए भी दो-तीन सिंघाड़े बनाकर चल दिए। बटाला, गुरुदासपुर, पठानकोट का रास्ता बड़ा कठिन था। जम्मू जाने वाले अन्य साधु प्रायः टिफिन का आहार और सेवादार द्वारा तैयार किया हुआ पानी ले लेते थे पर गुरुदेव के साथ ऐसा होना असम्भव था। एक आश्चर्यजनक घटना कोटली गाँव की है। पूज्य गुरुदेव ठहरे हुए थे। सन्तों की पिछली टोली 20 km पीछे थी। शाम को लगभग 4 बजे गुरुदेव ने फरमाया, "शास्त्री आने वाला है"। साथी सन्तों ने अर्ज करी कि 'वे तो काफी पीछे हैं। कल शाम तक ही या परसों तक ही पहुँच पाएँगे।' पर गुरुदेव की सूक्ष्म मानस तरंगें उनके शीघ्र आगमन की सूचना दे रही थी। किसी को विश्वास नहीं हुआ। सहसा गुरुदेव अपने आसन से उठे। बोले—'तुम यहीं बैठे रहो और मैं अभी कुछ देर में आता हूँ'। सन्त बैठे रहे। गुरुदेव मकान से बाहर गए और सही 5 मिनट में लौटे पर आश्चर्य कि श्री शास्त्री जी म. की टोली साथ में ही थी।

जम्मू की ओर जाते समय तीन टोलियों में विहार हुआ। गुरुदेव ने अपने चरणों में केवल श्री नरेश मुनि जी म. को रखा। शेष सन्तों की दो टोलियाँ बनाई। सन्तों ने बहुत अनुनय की कि अपनी सेवा में दो और सन्तों को जरूर रखो पर गुरुदेव का निर्णय अटल था। सारा रास्ता दोनों ने ही तय किया। आहार में केवल रूखी-सूखी रोटी, अचार और लस्सी। पर गुरुदेव तो साहसिक यात्राओं के अभ्यासी थे। श्री नरेश मुनि जी म. ने अकेले ही गुरुसेवा का अमृत चखा।

यही हसरतें तलब हैं, यही आरज़ू है दिल में।
मेरी ज़िन्दगी बीत जाए तेरे चरणों की महफिल में॥

रास्ते में एक जगह पुल के नीचे सेना का ट्रक फंसा हुआ था और पीछे सेना के ट्रकों का जाम लगा हुआ था। गुरुदेव भी दूर खड़े देख रहे

जो कार्य ताकत के जोर से न हो उसे आत्मबल (क्षमा) से पूरा करिए।
—गुरु सुदर्शन

थे। सैनिकों ने जोश-2 में Race देकर ट्रक को और ज्यादा फंसा दिया। तभी एक गडरिया आया और हँसने लगा, सैनिकों ने उसे ही पकड़ लिया। कहने लगे या तो समाधान बता नहीं तो तुझे मारेंगे। गडरिये ने ट्रक के पहियों की थोड़ी-2 हवा निकाल दी, जिससे ट्रक पुल के नीचे से आराम से गुजर गया। उस नजारे को देख कर गुरुदेव फरमाने लगे "देख नरेश मुनि! जब हवा ज्यादा भर जाती है तो जीवन की गाड़ी भी यूं ही रुक जाती है।

तेरह मार्च को अग्रिम टोली के सन्त जम्मू पहुँचे। वे जैन हॉल में रुके। गुरुदेव कुछ दिन बाद पधारे। स्थानक में सतियाँ ठहरी थीं। श्री बंसीलाल कपूरचन्द जी जैन की नव-निर्मित कोठी में ठहरे। प्रवचन स्थानक में किए। फिर जो धर्म-प्रभावना वहाँ हुई, उसे एक करिश्मा या करामात कुछ भी कह सकते हैं। जो गुरु-भक्ति एवं संयमी सन्तों के प्रति निष्ठा वहाँ जगी, वह अपने आप में एक शब्दातीत इतिहास है।

सारे समाज ने उस वर्ष वहीं चातुर्मास करवाने की जी-तोड़ विनति व आग्रह किया पर गुरुदेव का वहाँ एक कल्प से अधिक ठहरने का भाव नहीं था। श्रावकों ने तर्क रखा कि आज तक कोई भी साधु यहाँ से बिना चातुर्मास किए नहीं लौटा। इस पर गुरुदेव ने विनोदपूर्ण लहजे में फरमाया कि 'चलो, आगे से ये भी याद रख लेना कि एक साधु बिना चौमास किए लौट गया था'। समाज के पास पश्चात्ताप के सिवाय कुछ भी शेष नहीं था। जनता का उत्साह अद्‌भुत था। गुरुदेव ने बिना खण्डन-मण्डन में पड़े बच्चे-2 को अपना बना लिया। वहाँ पर सामूहिक आयम्बिल-दिवस मनाने की प्रेरणा दी। श्रावकों ने एक दिन में ही 900 आयम्बिल करके अपनी भक्ति की शक्ति का परिचय दिया। लोगों ने गुरुदेव से वैष्णो देवी और श्रीनगर पधारने को भी विनति की, पर गुरुदेव ने मना कर दिया।

जम्मू में ही गुरुदेव ने सन् 1976 के अपने चातुर्मास की जालन्धर के लिए स्वीकृति प्रदान की। वहाँ से वापिसी का रंग कुछ और ही था।

भाग्य अनुकूल हो तो मन में हौसला आनंद उत्पन्न होता है।
कठिन कार्य भी सहज हो जाते हैं, उलझने स्वयं सुलझ जाती हैं। —गुरु सुदर्शन

लोगों की चातुर्मासार्थ तीव्र भावना प्रकट होती ही रही। उसके बाद प्रायः हर वर्ष जम्मू वालों की विनति आती रही। गुरुदेव का तो योग नहीं बना। पर अपने गुरु-भ्राताओं और प्रतिनिधि शिष्यों के चातुर्मास करवा कर अपनी ही भावनाओं की पूर्ति मानी।

गुरुदेव ने छोटे से क्षेत्र मुकेरियां में भी धर्म-प्रेम का बगीचा लगा दिया। वहाँ से होशियारपुर होकर जालन्धर पधारे। ये वाचस्पति गुरुदेव का प्रिय पोषित क्षेत्र था। पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्द जी म. ने इसे निखारा था और महासाध्वी श्री पार्वती जी म. एवं श्री राजीमती जी म. ने इसके निर्माण में अपनी साधना की आहुति डाली थी। बाँस बाजार वाली स्थानक में ठहरे, प्रवचन मार्किट की स्थानक में होता। मण्डी के हरियाणवी श्रावक तो इस चातुर्मास को पाकर धन्य-2 हो गए। समाज के कुछ अग्रणी व्यक्तियों की इच्छा थी कि गुरुदेव के चरणों में जालंधर के अखबारों के सम्पादक-समूह को लाया जाए पर गुरुदेव प्रचार को अधिक महत्त्व नहीं देते थे। इसलिए मना कर दिया।

जालंधर में पर्यूषण पर्वों में अप्रत्याशित रूप से तपस्या की लहर आ गई। यद्यपि गुरुदेव की अधिक प्रेरणा नहीं थी तो भी 108 अठाइयां हुई। पूरे पंजाब में इसकी चर्चा हुई कि गुरुदेव की गरिमा और महिमा का कोई पार नहीं है। जहाँ बैठ जाते हैं तपस्याओं की बहार आ जाती है।

गुरुदेव ने तपःपूर्ति पर समाज-स्तर पर कोई आडम्बर नहीं होने दिया। गुरुदेव तपस्या की गिनती-मात्र से ही चातुर्मास की सफलता या असफलता का आकलन नहीं करते थे। पूरा विवरण मिले बिना तपस्या की घोषणा भी नहीं करते थे। न ही अन्य क्षेत्रों से लोगों को बुला-बुलाकर अपने क्षेत्र में तपस्या की संख्या-वृद्धि कराते थे। किसी अस्वस्थ भाई-बहन को तपस्या नहीं कराते थे और यदि किसी को जोर लग जाए तो आगे बढ़ने का जोर नहीं देते थे। तपस्वियों को स्वयं दर्शन देने जाते, उनके पारणे की भी पूरी निगरानी रखते। दर्शन देने जाते तो

> पैसा जाने के बाद कमर टूट जाती है, पर हौंसला न टूटे।
>
> —गुरु सुदर्शन

हाथ नहीं फरसते थे। अति आग्रह होने पर फरमा देते कि 'मैं लेने नहीं, देने आया हूँ'। तपस्वियों के गुणानुवाद में उन्हें विशेष आनंद आता था। बड़े तपस्वियों से कह देते कि मुझे भी तपस्या का वरदान दो। वर्षी- तप करने वाली बहनों का विशेष सम्मान करते थे।

गुरुदेव का ग्लानों की अग्लान भाव से सेवा का एक प्रसंग इस चातुर्मास-काल का है। श्री शास्त्री जी म. को मलेरिया का तीव्र प्रकोप हुआ। शाम का समय था। तेज बुखार था। दवा और दूध दिया गया। सन्त पास में थे। गुरुदेव ने देखा कि श्री शास्त्री जी म. को उल्टी होने वाली है। सन्तों को टब लाने को कहा। इतने में उल्टी आ गई। गुरुदेव ने अपने दोनों हाथों में ही उल्टी थाम ली। कपड़े खराब होने से बच गए। नहीं तो समय भी थोड़ा था। पानी भी थोड़ा था। काफी दिक्कत होती। गुरुदेव की सेवा भावना उत्कृष्ट थी।

दीपावली के पास 15 दिन तक गुरुदेव मण्डी फैंटनगंज विराजे। वहाँ की निश्छल भक्ति-भावना और धर्म-श्रद्धा दर्शनीय थी। उन्होंने अपना धर्मस्थान बनाने का संकल्प लिया। श्री शास्त्री जी म. ठाणे 2 शहर में ही रह गए थे। उन्होंने दीपावली से अगले रोज उत्तराध्ययन सूत्र की मूल वाचना की। उसके मध्य में ही गुरुदेव पधार गए। चातुर्मास की पूर्ति पर समाज ने एक विशाल नेत्र-कैम्प लगाया। गुरुदेव प्रवचन करने पधारे। सैंकड़ों रोगियों को मद्यपान व मांसाहार का त्याग कराया। सब आप्रेशन सानंद संपन्न हुए।

चातुर्मास के पश्चात् गुरुदेव कपूरथला, सुल्तानपुर, पट्टी, जीरा पधारे। यहां पर जण्डियाला चातुर्मास संपूर्ण करके श्री प्रकाश चंद जी म. ठाणे 3, गुरु चरणों में पधारे। फिर वहां से फरीदकोट पधारे। पिछले वर्ष श्री शास्त्री जी म. की मेहनत को देखकर गुरुदेव बड़े प्रसन्न हुए। क्षेत्र पर विशेष अनुग्रह का विचार बना। यह वाचस्पति गुरुदेव का विशेष कृपापात्र क्षेत्र था। यहीं से भारत-भर में महावीर जयन्ती मनाने की

जुबान का सच्चा एवं लंगोट का पक्का साधक स्व पर कल्याणकारी होता है।
—गुरु सुदर्शन

परम्परा सन् 1923 में चालू हुई थी। उसे अपनी कृपा से सराबोर करके भटिण्डा होते हुए सिरसा पधारे। वहां से सरदूलगढ़ में श्रद्धेय श्री स्वामी जी म. तथा पण्डित श्री रणसिंह जी म. से मधुर मिलन हुआ। वहां दर्शन लाभ लेकर मानसा, बुढ़लाडा, जाखल होकर मूनक पधारे। जहां श्री तपस्वी जी म. से मंगलमय मिलन हुआ।

मूनक से समाणा आए। समाणा में फरीदकोट का चातुर्मास घोषित किया। यद्यपि इससे पहले भी मानसा में वहां की समाज आई थी। मगर गुरुदेव ने ये देखकर कि समाज का सर्वांगीण प्रतिनिधित्व नहीं है विनति मानने से इंकार कर दिया था। ये कहा कि पहले अपनी समाज की स्थिति को पटरी पर ले आओ। अधिकारी-वर्ग को अपनी भूल समझ आई। जब सारी समाज एक होकर समाणा पहुंची तो उन्हें चौमास का तोहफा मिला। फिर गुरुदेव पटियाला पधारे। वहाँ पर श्री शिवमुनि जी म. मिले। गुरुदेव के प्रति वे परम विनीत थे। उन दिनों अपनी पी.एच.डी. पूरी करने में लीन थे। श्री शांति चन्द्र जी म. की अस्वस्थता के कारण गुरुदेव वहाँ 40 दिन रुके। गुरुदेव से श्री शिव मुनि जी की अन्तरंगता बढ़ती गई।

गुरुदेव ने उन्हें प्रवचन करने को प्रोत्साहित किया तथा उनकी प्रगति को देखकर बड़ा सन्तोष हुआ। उनका शोध-निबंध अपने शिष्य श्री जयमुनि जी म. को पढ़वाया। गुरुदेव समझते थे कि एक कुलीन, सुशिक्षित, विनम्र मुनि संयम साधना में अग्रसर हो और भविष्य में संघ और समाज का आधार बने। जब गुरुदेव पटियाला से विहार करके बरनाला पधारे तो श्री शिवमुनि जी विशेष रूप से गुरुदेव के दर्शन करने आए। महास्थविर श्री पन्ना लाल जी म., कवि श्री चन्दन मुनि जी म. वहाँ स्थिरवास थे। बाद में श्री क्रांति मुनि जी म. ठाणे 2 भी पधार गए। बड़ा मधुर और सुखद वातावरण था। बरनाला क्षेत्र की लघु काया में महान् श्रद्धामयी आत्मा की पहचान गुरुदेव ने की। श्री नरेश मुनि जी म. के ज्वर-ग्रस्त होने से कुछ लम्बा ठहरना पड़ा। सबके सम्मिलित

> जीवन में की गई जरा सी भूल तकदीर को बिगाड़ देती है।
>
> —गुरु सुदर्शन

प्रवचन होते थे। श्री चन्दन मुनि जी म. की आशु कविता के मोहक रंग ने सबको मोहित कर दिया। तत्र विराजित सभी मुनियों के नाम एक दोहे में समेट कर उन्होंने सबको आह्लादित कर दिया।

शान्ति क्रान्ति अरविन्द शिव, सुदर्शन पद्म नरेश।
जयमुनि पन्नालाल गुरु, चन्दनमुनि परमेश ॥

ये 11 ठाणे वहाँ कई दिन एकत्र रहे। श्री शिवमुनि जी को वहां आए कई दिन हो गए थे। वे गुरुदेव के प्रवचन-श्रवण के ही पिपासु थे। अतः स्वयं प्रवचन देने से कतरा रहे थे। सन्तों व श्रावकों की भावना को विनोद-रूप देते हुए श्री चन्दन मुनि जी म. ने दोहा बनाया।

शिव मुनिवर जी एम.ए., कई दिनों से मौन।
मुनि सुदर्शन के बिना, इन्हें मनाए कौन ॥

जब बात गुरुदेव पर आ गई तो उन्होंने अगले दिन श्री शिवमुनि जी को प्रवचन की प्रेरणा दी, जिसका उन्होंने पालन किया। बरनाला के विनोदपूर्ण वातावरण से विहार करके भदौड़ पधारे। वहाँ श्री जयमुनि जी म. को बुखार हुआ। गुरुदेव ने पहले ही सावधान किया था कि बुखार मत कर लेना पर उस चेतावनी में ही बुखार छिपा था। ठीक होते ही विहार हुआ। उसी दिन श्री शास्त्री जी म. को बुखार हो गया पर उन्होंने किसी को बताया नहीं, क्योंकि रास्ता लम्बा था और चातुर्मास का समय थोड़ा था। प्रथम पड़ाव पर पहुँचने से पहले रास्ते में ज्ञात हुआ। बुखार में ही 70 कि.मी. विहार करते रहे। बीमारी बढ़ गई। जैतों पहुँचते-2 निढाल हो गए। उनका चातुर्मास भटिण्डा होना था पर उसे निरस्त करके श्री शान्ति मुनि जी म. ठाणे 3 को वहां भेजा गया। गुरुदेव का स्वयं का 1977 का चातुर्मास फरीदकोट हुआ। रात्रि कथा के रूप में श्री नरेश मुनि जी जैसे कुशल प्रवचनकार को चुना। चातुर्मास में भी श्री संघ में कुछ तनाव चलता रहा। गुरुदेव ने कोई दखल नहीं दिया। शांति समाधि

जुबान से झूठ मत बोलो – चारित्र में अटल रहो – अपनी आन को निभाओ।
–गुरु सुदर्शन

से चातुर्मास पूर्ण किया। विहार के समय गुरुदेव ने फरमाया– “भविष्य में चातुर्मास तब ही मिलेगा जब आप सभी इकट्ठे होकर सर्व सम्मति से आओगे।” उसके पश्चात् फरीदकोट श्री संघ का 22 साल बाद पुण्योदय हुआ। पटियाला में सन् 1999 के चौमास की विनति लेकर संपूर्ण संघ प्रेम पूर्वक आया। एवं गुरुदेव ने श्री नरेश मुनि जी म. का चौमास दिया जो सफलतम चौमास माना गया।

गुरु सुदर्शन स्तुति

जिनका मन करुणा वरुणालय, जन मन रुचिकर चन्द्र समान,
वाणी अति कल्याणी जीवन, तेजस्वी अति सूर्य समान।
शासन नायक, संयम दायक, उन गुरुदेव सुदर्शन को,
हाथ जोड़कर मान मोड़कर, भक्ति भाव से वन्दन हो॥

धर्मात्मा तदबीर को पहल दिया करते हैं। आलसी लोग तकदीर के भरोसे रह केवल आर्त्तध्यान करते हैं। –गुरु सुदर्शन

6. हरियाणा पधारे हरि हर

चातुर्मास के पश्चात् गुरुदेव ने हरियाणा पधारने का मन बनाया। जगरावाँ, रायकोट होते हुए गुरुदेव अंबाला पधारे। वहाँ तपस्वी श्री सुदर्शन मुनि जी का भरपूर दुलार मिला। महावार जयंती कुरुक्षेत्र में करने का भाव था। मार्ग में शाहबाद पधारे, नई कोठी थी, फर्श चिकने थे। अचानक पैर फिसल गया और घुटना मुड़ गया। काफी तकलीफ हो गई। गृह स्वामी ने निवेदन किया कि कुछ दिन ठहरकर उपचार करवा लो। पर गुरुदेव चल दिए। दर्द बढ़ता ही चला गया। कुरुक्षेत्र करनाल होकर पानीपत पधारे, मुनि मिलन हुआ। वहाँ उमड़े भीड़ के सैलाब ने संत-मिलन को एक विशिष्ट घटना बना दिया। तब से ही प्रतिवर्ष 'सम्मेलन' शब्द का व्यवहार होने लगा जो चातुर्मास के पश्चात् गुरु-चरणों में होता ही था।

उन दिनों गुरुदेव ने अचानक श्री नरेश मुनि जी म. को अपने पास बुलाया और फरमाने लगे– "इस बार बड़ौत फरस लेते हैं, वहाँ लाभ होगा।" श्री नरेश मुनि जी म. का दीक्षा पश्चात् वहाँ जाना भी नहीं हुआ था। गुरुदेव बड़ौत पधारे तो सभी में दिवानगी छा गई। उसी दिवानगी के फलस्वरूप श्री नरेश मुनि जी म. के लघु भ्राता सुधीर जी भी वैरागी रूप में गुरु चरणों में अर्पित और समर्पित हो गए। इस तरह गुरुदेव की वाणी फली जिसकी घोषणा गुरुदेव ने पानीपत में ही कर दी थी।

जिस दिल में बस जाएगा तेरी तस्वीर का नक्शा,
पलभर में बदल जाएगा उसकी तकदीर का नक्शा ॥

सन् 1978 का चातुर्मास समालखा मण्डी के लिए घोषित हुआ। बड़ौत से विहार कर कांधला पधारे, वहां स्वास्थ्य लाभ के लिए रुकना पड़ा। वहां से समालखा के लिए चले। क्षेत्र छोटा जरूर था पर भक्ति-संपन्न था। जैन-अजैन सभी आते। रात्रि कथा की ड्यूटी श्री जय मुनि जी म.

कभी-कभी पूर्व जन्म के पुण्यों के कारण अनायास लाभ हो जाया करता है।
—गुरु सुदर्शन

की लगी। समालखा का स्थानक रेलवे स्टेशन के नजदीक होने से वहां शोर बहुत आता था। प्रवचन में बार-2 खलल पड़ती, नींद में भी कई बार विघ्न होता पर गुरुदेव ने कभी शिकायत नहीं की।

पर्यूषणों के समीप समालखा में बाढ़ का खतरा हो गया। मण्डी डूबने की आशंका होने लगी। मण्डी के गणमान्य व्यक्ति गुरुचरणों में आए, समाधान मांगा। गुरुदेव ने आश्वासन दिया कि "चिन्ता मत करो। मिल कर रहो और धर्म का शरणा रखो। मण्डी को कुछ नहीं होगा।" महायोगी के वचन सुन सब आश्वस्त होकर चले गए। समीपवर्ती गांवों में पानी आया पर समालखा सुरक्षित रहा।

उन दिनों पूज्य गुरुदेव के चरणों में अध्ययनरत दोनों वैरागी राजेन्द्र जी व राकेश जी संस्कृत की 'शास्त्री' एवं हिन्दी की 'साहित्य रत्न' परीक्षा दे चुके थे। वै. राकेश जी ने पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ से संस्कृत की 'विशारद' एवं 'शास्त्री' परीक्षा में प्रथम स्थान एवं स्वर्ण पदक प्राप्त कर गुरुओं के गौरव को चमकाया था।

समालखा चातुर्मास के अन्त में गुरुदेव ने घोषणा की कि 18 जनवरी 1979 को सोनीपत में वैरागी राजेन्द्र जी एवं राकेश जी की दीक्षा होगी। इस घोषणा से सर्वत्र आह्लाद छा गया क्योंकि करीब छः वर्षों के अन्तराल के बाद गुरुदेव के मुनि-संघ में वृद्धि होने जा रही थी। दीक्षा से पूर्व गुरुदेव ने दोनों वैरागियों को बड़े-2 आचार्यों के दर्शन करने राजस्थान व मध्यप्रदेश भेजा। वे पहले जयपुर गए। फिर वहाँ से लोहावट में आचार्य-प्रवर श्री नाना लाल जी म.सा. एवं उज्जैन में आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के दर्शन किए एवं मधुर कृपा ली। अजमेर, रतलाम में भी स्थविर मुनिराजों के दर्शन किए। वहाँ के मधुर संस्मरण जब गुरुदेव ने सुने तो बड़े आह्लादित हुए। दोनों वैरागियों पर पूज्य आचार्य-प्रवर श्री नाना लाल ली म. के ओज और प्रताप की तथा आचार्य-प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की गंभीरता और स्वाध्याय-शीलता

> बादल खाली जा सकते हैं, औरत बांझ रह सकती है, पर साधु की सेवा खाली नहीं जाती।
> —गुरु सुदर्शन

की अमिट छाप पड़ी। वैरागी बंधु वहीं से मंगल-भावना की परम्परा सीख कर आए जिसे गुरुदेव ने कुछ परिवर्तन करके इधर चालू किया। 'अहो गुरुदेव जी महाराज! हम आपके............।' वाला पाठ इस इलाके में 1980 से ही शुरू हुआ है।

सोनीपत दीक्षा समारोह पर एक नवीन प्रथा की शुरुआत भी हुई। इससे पूर्व दीक्षाओं पर समाज के किसी विशिष्ट धनी मानी व्यक्ति को अध्यक्ष बनाया जाता था। यहाँ से संघ में दीक्षित मुनिराजों के बलिदानी परिवारों में वरिष्ठता-क्रम से किसी एक सदस्य को दीक्षा-समारोह का अध्यक्ष बनाया जाने लगा। अतः इस प्रसंग पर गुरुदेव के ज्येष्ठ शिष्य प्रकाश मुनि जी म. के संसार पक्षीय पिता ला. पन्नालाल जी भंसाली को अध्यक्ष पद का गौरव दिया गया। इस मौके ये भी सावधानी रखी गई कि अध्यक्ष बनने के ऐवज में कभी भी कोई दान राशि नहीं ली जाएगी।

दोनों नवदीक्षित मुनि बौद्धिक, मानसिक एवं शारीरिक दृष्टि से परिपक्व थे। पूज्य गुरुदेव जी म. भी चाहते थे कि ये नवदीक्षित मुनियुगल भी अपने गंतव्य के प्रति सदैव सावधान रहें। इसलिए पूज्य गुरुदेव जी म. ने उनके प्रति आध्यात्मिक प्रशिक्षण हेतु कुछ बातें शास्त्रों से, समाचारी से व आत्म-अनुभव से, अपने हाथों से लिखकर उन्हें दीं। ये बातें आज भी प्रत्येक साधक के लिए उपयोगी हैं, तद्यथा—

1. प्रातः उठते ही नवकार मंत्र बोलना।
2. 'इच्छामि पडिक्कमिउं पगामसिज्जाए' का ध्यान करना।
3. चार लोगस्स का ध्यान करना।
4. फिर अपने गुरुदेव को या रत्नाधिक सन्त को पास जाकर वन्दना करनी।
5. प्रतिलेखना के बाद 'आयाण-भण्ड-मत्त' का ध्यान करना।
6. बाहर से आकर 'इच्छाकारेण' का ध्यान करना।

> आत्मा का पीहर प्रभु का घर है।
>
> —गुरु सुदर्शन

7. आहार, पानी, दूध, औषधि आदि लाने के बाद 'पडिक्कमामि गोयरचरियाए' का ध्यान करना।
8. स्वाध्याय के बाद 'आगमे तिविहे' का ध्यान करना।
9. चार समय स्वाध्याय करना। कम से कम ग्यारह गाथाएँ।
10. प्रतिलेखना या प्रतिक्रमण के समय मौन रहना या यत्नापूर्वक कम बोलना।
11. आहार के समय मौन रहना।
12. रात्रि को बड़ों को वन्दना व वैयावृत्य करके सोना।
13. कोई बात गुरुओं से छिपाकर नहीं रखनी।
14. बिना पूछे न कोई काम करना, न आपस में लेना देना।
15. प्रत्येक पक्खी को 15 दिन के लिए कुछ न कुछ त्याग करना
16. पाँच विगय एवं आहार की वस्तुओं की मर्यादा करनी।
17. पक्खी और अष्टमी को विशेष तपस्या का ध्यान रखना।
18. प्रतिक्रमण के पश्चात् स्वाध्याय का ध्यान रखना।
19. कोई आपको कुछ शब्द कह दे तो उसे अच्छे ढंग से सोचना, गलत ढंग से नहीं।
20. पानी या परठने की कोई वस्तु खड़े-2 नहीं डालनी, झुककर डालनी और डालकर 'वोसिरामि' कहना।
21. पुस्तक, पैन, वस्त्र या अन्य उपधि को 'मेरी' नहीं बोलना, 'निश्राय' की कहना।
22. गृहस्थ को 'तू' शब्द से नहीं बोलना। सावद्य भाषा नहीं बोलनी। 'दया पालो' शब्द कहना।
23. खाने से पहले 'नमो अरिहंताणं', बाद में 'नमो सिद्धाणं' बोलना या कान को छूकर प्रत्याख्यान शुरू करना और खोलना।

दोनों मुनियों ने गुरु शिक्षा पालन करने का ध्यान रखा।

दीक्षा सम्पन्न करके गुरुदेव गोहाना पधारे। वहाँ का उत्साह देखने लायक था। गोहाना समाज का गुरुदेव तथा तपस्वी जी म. के प्रति समर्पण विशेष रहा ही है।

> गुणी जनों/गुरुजनों की कठोर ताड़ना में भी फायदा है, जैसे समय पर हुई बरसात चाहे गर्जना करे या बिजली चमकाए, लाभकारी है। —गुरु सुदर्शन

वहाँ से गुरुदेव बुटाना पधारे। वैरागी श्री सत्य प्रकाश जी गुरुदेव को मिले। वहाँ से पुनः वापिस लौटे। दिल्ली का भाव बना। मार्ग में खानपुर में ठहरे। एक बुजुर्ग ने रात में गुरुदेव का प्रवचन सुनने की भावना व्यक्त की। यद्यपि रात को गुरुदेव प्रवचन नहीं फरमाते थे पर गुरुदेव बुज़ुर्गों का सम्मान करते थे, अतः रात को भी भव्य और ओजस्वी प्रवचन किया। श्रोता धन्य हो उठे।

गुरुदेव दिल्ली पधारे। इस वर्ष का दिल्ली पदार्पण उनके लिए आध्यात्मिक गंगा-स्नान था। त्रिनगर में पूज्यपाद, महान् तपस्वी, श्री रोशन लाल जी म. के पावन दर्शन किए। एकान्त में उनके श्री चरणों में बैठकर अपनी जीवन-भर की आलोचना की। संयम जीवन का आखिरी पड़ाव संथारा है और संथारे की 'आत्मा' आलोचना है। गुरुदेव ने सन् 1999 में अपने देहोत्सर्ग से 20 वर्ष पूर्व ही सन् 1979 में भाव-संथारा ले लिया था। आलोचना सुनकर श्री तपस्वी जी म. ने फरमाया था कि इतनी स्पष्ट और निर्दोष आलोचना करने का कोई साहस नहीं कर सकता। पूज्य गुरुदेव ने भी सब सन्तों से कहा था, 'अब मैं हल्का हो गया हूँ। मैं अपनी ओर से निश्चिंत हूँ। मुझे अब कोई भय नहीं है कि मृत्यु कब आती है।' गुरुदेव की आयु उस समय कुल 56 वर्ष की थी।

दिल्ली-प्रवास समाप्ति पर था। गुरुदेव रोहतक की ओर पधार रहे थे। सन् 1979 का चातुर्मास गोहाना करने की स्वीकृति दी जा चुकी थी। दिल्ली के पश्चिमी छोर पर रावलपिण्डी समाज की पुरजोर विनति पर गुरुदेव ने 20 मई, रविवार का प्रवचन उनकी नई बसने वाली कालोनी 'अरिहन्त नगर' के लिए दिया। अभी जमीन बिल्कुल सपाट थी। उस रोज प्रातः से ही तेज आंधी चल रही थी। प्रवचन-सभा में टैण्ट उड़ने और उखड़ने लगे। भीड़ बहुत अधिक थी। व्यवस्था और वक्ता जम नहीं पा रहे थे। प्रबन्धकों ने और सब कार्यक्रम रोककर गुरुदेव से प्रवचन प्रारंभ करने की विनति की। गुरुदेव ने अपने गुरु-भगवन्तों का नाम स्मरण

गुणी जनों के आदर व निरादर से तकदीर बनती एवं बिगड़ती है।
—गुरु सुदर्शन

किया और जैसे ही प्रवचन की पट्टी हाथ में लेकर—'साहू गोयम पण्णा ते...' बोलकर मंगलाचरण शुरू किया कि आंधी भी गुरुदेव का प्रवचन सुनने के लिए थम गई। फिर गुरुदेव ने करीब पौन घण्टे तक सभा को प्रवचन की अमृत-धारा में आकण्ठ डुबोए रखा।

वहाँ से रोहतक पधारे। मार्ग कष्ट-साध्य था। रोहतक शहर पहुँचते ही गुरुदेव ज्वराक्रान्त हो गए। चातुर्मास का परिवर्तन करना पड़ा। श्रद्धेय श्री प्रकाशचन्द्र जी म. को गोहाना भेजा। स्वयं रोहतक ही रहे। ज्वर लम्बा चला। शरीर में काफी दुर्बलता थी। दिन में विश्राम के लिए समय निर्धारण की मांग हुई। पर गुरुदेव ने मना कर दिया। इस तरह की व्यवस्था प्रायः सभी बड़े सन्तों के साथ चलती है पर गुरुदेव ने कभी नहीं अपनाई। गर्मी अधिक थी। गुरुदेव को भूख लगती नहीं थी। डाक्टरों ने फलों का रस लेने को कहा पर गुरुदेव अपनी संयम चर्या में अडिग थे। अतः मना कर दिया।

जब कभी शरीर में असह्य पीड़ा होती तो उनके मुख से यही निकलता, 'जो करेगा, सो भरेगा'। उनकी सहिष्णुता बड़े कमाल की थी। भयंकर से भयंकर पीड़ा में भी उन्हें कभी कराहते नहीं देखा। चातुर्मास में पेशाब का संक्रमण (Infection) बढ़ने से डॉ. सुरेश जैन तथा डॉ. रतन लाल जी ने स्थानक में ही उनकी शल्य-क्रिया की। अपनी दृढ़ संकल्प-शक्ति से गुरुदेव कुछ दिनों में ही स्वस्थ हो गए। कुछ ठीक होते ही पुनः अपनी दैनिक चर्याओं में जुट गए।

रोहतक चातुर्मास पूर्ण करके गोहाना पधारे। श्री तपस्वी जी म. से मंगल मिलन हुआ। काफी समय से श्री शान्ति चन्द्र जी म. को पीठ-दर्द की शिकायत थी। गुरुदेव ने श्री शास्त्री जी म. की देखरेख में उनको उपचार हेतु दिल्ली भेजा। गुरुदेव का विचरण उस वर्ष हरियाणा के अनेक गाँवों में हुआ। गुरुदेव गोली गांव में पधारे वहां श्री नरेश मुनि जी म. की प्रेरणा से गोली गाँव के ला. जयप्रकाश जी के सुपुत्र श्री नरेन्द्र जी वैरागी

बर्तन शीघ्र मंज सकते हैं, कपड़े शीघ्र साफ हो सकते हैं, पर आत्मा का मंजना कठिन है।
—गुरु सुदर्शन

बनकर गुरु-चरणों में आए। ग्राम, नगर, शहर, मण्डी सब जगहों पर गुरुदेव ने अपनी शान्ति, सादगी, ओजस्विता, प्रभावकता, प्रावचनिकता व अनुभाव प्रभाव की अमिट छाप छोड़ी। सभी मण्डियाँ चाहती थी कि गुरुदेव हमारे यहाँ पधारें, ठहरें, चातुर्मास करें, दीक्षाएँ करें और सम्मेलन करें। इनकी कृपादृष्टि की एक लघुवृष्टि भी सर्वत्र उत्साह का संचार कर देती थी। सफीदों मण्डी की पुरजोर भावना को देखकर गुरुदेव ने सन् 1980 के लिए अपने चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की।

श्री नरेश मुनि जी म. के लघु भ्राता श्री सुधीर जी भी वैरागी के रूप में गुरु-चरणों में रह रहे थे। उनकी दीक्षा की योजना बनने लगी। गुरुदेव की व्यक्ति-परख बड़ी विलक्षण थी। एक बार वैरागी नरेन्द्र की प्रशंसा करते हुए उन्होंने एक पत्र में लिखा था, "वैरागी का केवल बुद्धि-बल मत देखो। पुस्तकें पढ़ लेना बड़ी बात नहीं है। ये देखो वह कितना सरल है, सेवा-भावी है, आज्ञाकारी तथा विनीत है। साधु जीवन में पढ़ाई इतनी काम नहीं आती, जितनी विनय काम आती है।" गुरुदेव को वैरागी और मुनि बनाना ही अभीष्ट नहीं था, उनमें संयम-साधना के भाव और सब तरह का विवेक भरने का ध्यान भी रहता था। दुलार और फटकार दोनों ही उनके, निर्माण-विज्ञान के औजार थे। वै. नरेन्द्र जी गुरु-चरणों में 4-5 माह से आ चुके थे। एक दिन सफीदों में एक कमरे में चीटियां हो गईं। वै. ने झाडू से बाहर निकाल दी। गुरुदेव ने देखा कि कीड़ियां धूप में हैं। एकदम वैरागी को डांटा और कहा गर्म छत पर कीड़ियां मर सकती हैं। ऐसी गलती कभी नहीं करनी। बालोचित दण्ड भी दिया, ताकि हमेशा के लिए सावधानी रहे। उन कीड़ियों की सुरक्षा भी करवाई।

सफीदों चातुर्मास में गुरुदेव के पास तीनों वरिष्ठ शिष्यों में कोई भी नहीं था। ऐसा प्रथम बार ही हुआ। गुरुदेव ने अपने सबल कन्धों पर ही अधिकांश भार वहन किया। श्री नरेश मुनि जी म. ने भरपूर सेवा लाभ लिया। सफीदों में मच्छरों का प्रकोप भी काफी था। तब तक सन्तों

साधु और चिंता का कोई मेल नहीं है, साधु प्रकाश है तो चिंता अंधकार है।
—गुरु सुदर्शन

में मच्छरदानी का प्रयोग शुरू नहीं हुआ था (सन् 1992 से शुरू हुआ)। चादरों को जोड़ कर काम चलाया। फिर भी गुरु-कृपा से साता रही। उस वर्ष गुरुदेव ने रामायण का विश्लेषण बड़ी सूक्ष्मता और रोचकता से किया, इससे मण्डी का अजैन वर्ग गुरुदेव के प्रति बड़ा आकर्षित हुआ।

चातुर्मास के बाद वैरागी श्री सुधीर जी की दीक्षा का भाव बना। सभी सन्त बड़ौत पधारे। पहले ख्याल था दीक्षा भव्य परंतु सादगी पूर्ण होगी लेकिन सामाजिक उत्साह के साथ-2 जब आडम्बर बढ़ने लगा तो गुरुदेव ने सारी समाज को सावधान किया। वहां पर उमड़ा भीड़ का सैलाब कुछ के लिए ईर्ष्या और चर्चा का कारण भी बना। दीक्षा-मण्डप पर अध्यक्ष पद को सुशोभित करने वाले व्यक्तित्त्व थे मा. श्री शामलाल जी। पूज्य गुरुदेव के संसार-पक्षीय चाचा और श्री शास्त्री जी म. के पिताश्री जी।

दीक्षा के समय ही उस वर्ष के भावी चातुर्मासों की रूपरेखा भी बनी। सन् 1979 के चातुर्मास से वंचित गोहाना क्षेत्र प्रबलतम दावेदार था। उसी तरह कान्धला और सोनीपत भी। बड़ौत की भी विनति थी पर गुरुदेव ने विवशता प्रकट कर दी थी। दीक्षा के बाद गुरुदेव हिलवाड़ी ग्राम पधारे। पीछे से बड़ौत मण्डी वाले श्री तपस्वी जी म. से एक चातुर्मास दिलाने का आग्रह करने लगे। एक दिन तपस्वी जी म. बिना सूचना दिए अकेले ही हिलवाड़ी पधार गए। गुरुदेव हैरान रह गए कि कैसे पधारे? वे रात को वहीं विराजे। वार्तालाप हुआ। कहने लगे कि एक चातुर्मास का प्रबन्ध बड़ौत के लिए भी हो जाए तो अच्छा रहेगा। गुरुदेव ने फरमाया कि 'इस काम के लिए आपने इतना कष्ट क्यों किया? खबर भिजवा देते, आप की भावना का आदर है'। श्री तपस्वी जी म. बोले— 'यहाँ आपके पास बैठकर बात करने में मजा ही कुछ और है। मैं अपने मन की कह लेता हूँ, आप अपने मन की। पास बैठकर स्थिति समझाने में आसानी रहती है और फिर आपके दर्शनों का सौभाग्य मिल गया'। इस

गुरु धारणा, कुव्यसनों का त्याग, सम्यक्त्व ग्रहण एवं गुरु चरणों में समर्पण ही है।
यह प्रथम दीक्षा है। —गुरु सुदर्शन

प्रकार उस वर्ष बड़ौत को भी एक चातुर्मास मिल गया, श्री प्रकाश मुनि जी म. ठाणे-3 का।

बड़ौत दीक्षा के कारण सारे पश्चिमी यू.पी. में धर्म-लहर आई। गुरुदेव ने सारा इलाका फरसकर उस लहर को और स्थायी बनाया। गुरुदेव वाचस्पति गुरुदेव की दीक्षा भूमि बामनौली में पधारे। स्थानक का फर्श कच्चा था, धूल थी, दिल्ली से भाई आए, कहने लगे– यहां कहां ठहर गए, यहां तो धूल बहुत है। गुरुदेव ने फरमाया– ये धूल तो चंदन केसर है। यहां श्री मयाराम जी म. का चौमास हुआ है, मेरे गुरुदेव की दीक्षा हुई है अतः गुरुदेव ने वही धूल उठाकर मस्तक पर लगा ली। यह दृश्य देखकर श्रावक जन प्रभावित हुए।

मुजफ्फरनगर पधारे। यद्यपि मुजफ्फरनगर का विचरण पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम में नहीं था परंतु बामनौली में मुजफ्फर नगर के कुछ प्रमुख श्रावक– श्री रामचन्द्र जी, विद्यासागर जी, शंभु नाथ जी, दर्शन लाल जी आदि ने अपने क्षेत्र में आने की आग्रहभरी विनति की। गुरुदेव ने अपनी विवशता जाहिर की। उनका मन निराश हो गया। फिर वे श्री शास्त्री जी म. के पास बैठ गए। बुजुर्ग श्रावक श्री शंभु नाथ जी ने अपनी भावना कुछ इस तरह प्रकट की, "मैं अपनी जिंदगी में गुरु म. को एक बार मुजफ्फरनगर में देखना चाहता हूँ। आगे मुझे अपनी जिंदगी का भरोसा नहीं है।" जब गुरुदेव को इन शब्दों का पता चला तो एक बुजुर्ग श्रावक की भावना का सम्मान करते हुए मुजफ्फरनगर जाने का तथा महावीर जयन्ती मनाने का आश्वासन उन्हें दे दिया। उन्हें तो एक निधि ही मिल गई। और यह भी एक मधुर संयोग है कि गुरुदेव जी म. को भी मुजफ्फरनगर में शिष्य-निधि मिली। पील्लूखेड़ा के श्रावक शाम लाल जी के सुपुत्र अजित जी वैरागी रूप में आए। मुजफ्फर नगर से पहले दोघट पधारे। तपस्वी श्री सुमति मुनि जी, प्रवचनकार श्री विशाल मुनि जी से मधुर मिलन हुआ। श्री विशाल मुनि जी म. गुरुदेव की उदारता से प्रभावित हुए।

मुनि को मर्यादा में रहना कल्पता है, गलत तरीके अपनाना मर्यादा विरुद्ध है
और आत्मपतन का कारण है। –गुरु सुदर्शन

उस वर्ष यू.पी. में शामली एक विशिष्ट क्षेत्र के रूप में उभरा। पहले स्थानकवासी समाज के मानचित्र पर उसका नाम नहीं था। गुरुदेव ने उसके नवोत्थान के लिए पहले श्री शांति मुनि जी म. के नेतृत्व में लघु मुनियों को भेजा, फिर स्वयं पधारे। समाज का निर्माण हुआ। अपनी पहचान के लिए स्थानक-निर्माण की भावना बनी। उसके बाद वहां की विशाल स्थानक में प्रथम चातुर्मास श्री नरेश मुनि जी म. का हुआ। जिससे वहां धर्मध्यान सामायिक-संवर की निर्मल धारा सतत बहने लगी।

गुरुदेव के सन् 1981 चातुर्मास का सौभाग्य गोहाना मण्डी को मिला। नया प्रवचन हॉल नव्य-भव्य रूप में तैयार हो चुका था। सारी मण्डी, सैंकड़ों अजैन परिवार सेवा में संलग्न थे। दर्शनार्थी संख्या इस बार सविशेष रही। चातुर्मास में वैरागी सुनील जी आए। श्री संघ के प्रधान ला. रामेश्वर दास जी अपने प्रिय पौत्र को गुरु-चरणों में सौंपकर कृतार्थ हुए। एक रोज वै. सुनील जी गुरुदेव के पाट के पास सामायिक-मुद्रा में बैठे थे। गुरुदेव ने सिर पर हाथ धरते हुए कहा था कि 'सुनील! तू वैरागी बना तो हमारा चातुर्मास सफल हो गया क्योंकि मैं तो जब कोई जीव सम्यक्त्व, देशविरति और सर्वविरति की ओर बढ़े, तब सफलता को मानता हूँ'। और श्री सुनील जी उस सफलता के उपादान थे। चातुर्मास के पश्चात् होने वाली दीक्षाओं की घोषणा से गोहाना में और भी जोश आ गया। सब मुनिराज एकत्र हुए। 7 दिसम्बर को हुए दीक्षा-समारोह में श्री सत्यप्रकाश मुनि जी एवं श्री नरेन्द्र मुनि जी गुरु-चरणों में दीक्षित होकर कृतकृत्य हुए। दीक्षा के उस भव्य अवसर पर भठिण्डा के श्री हंसराज जैन जी के पुत्र अरुण जी वैरागी रूप में गुरु चरणों में आए।

दीक्षा के उपरांत गुरु चरणों में बैठ कर श्री संघ गोहाना ने अपनी समाज की आगे की व्यवस्था बनाई जिसमें ला. रामेश्वर दास जी को प्रधान तथा श्री जीतराम जी के सुपुत्र श्री जगदीश जी को मंत्री घोषित किया। गोहाना श्री संघ की यही तो खासियत रही है कि उन्होंने गुरुओं

दया/दान/इंद्रिय दमन/कषायशमन कर्म खपाने के तरीके हैं।
—गुरु सुदर्शन

की आज्ञा को सदा सिर-माथे रखा है। और ये भी रिकार्ड है कि लाला रामेश्वर दास जी 1980 से लेकर 2005 तक अर्थात् अपनी मृत्यु तक प्रधान रहे और श्री जगदीश जी भी तब तक मंत्री पद को अलंकृत करते रहे। अनेक झंझावातों के बावजूद श्री संघ की एकता आज भी कायम है।

पूज्यपाद श्री भण्डारी जी म. एवं श्री तपस्वी जी म. की सेवा में इस वर्ष से श्री विनय मुनि जी म. रहे। गुरुदेव जींद पधारे तो सारा समाज चातुर्मास के लिए मचल उठा। दस वर्ष पूर्व गुरुदेव ने इसे सींचा था, अतः उनका हक भी बनता था। यहाँ पर गांगोली गाँव के ला. रामकिशन जैन जी के सुपुत्र श्री बलवान जी (बाद में श्री अचल मुनि जी) वैरागी बनकर गुरुचरणों में आए। गुरुदेव जीन्द से नरवाणा, उकलाना, रतिया, सरदूलगढ़ आदि पधारे। सर्वत्र जन-चेतनाएँ जागृत हुई। चातुर्मास की विनतियों के ढेर लग गए। गुरुदेव का स्वभाव था कि जहाँ चातुर्मास का मन नहीं होता वहां मना कर देते। जहाँ करना होता उन्हें निश्चिन्त कर देते तथा देर-सवेर स्वीकृति फरमा देते। बार-2 विनति के लिए बुलाना, लटकाए रखना या अनेक क्षेत्रों को उलझाए रखना उन्हें पसन्द नहीं था। वहां मुनिराजों से मिलकर सिरसा पधारे। वहाँ गुरुदेव का वीर-जयन्ती का प्रवचन बड़ा मार्मिक, गम्भीर, इतिहास-परक, उद्‌बोधक एवं मौलिक था। मानसा, बुढलाडा, जाखल होकर मूनक पधारे। वहाँ पूज्यपाद श्री रणसिंह जी म. के दर्शन हुए। दोनों महापुरुष एक-दूसरे से मिलकर प्रसन्न हुए। जाखल के श्री जिनेन्द्र जी के सुपुत्र श्री आदीश जी वैरागी बने। सारे मूनक-परिवार में प्रसन्नता हुई।

सन् 1982 का चातुर्मास जींद में हुआ। पूरी समता और शान्ति रही। गुरुदेव के मन की वीतरागता और निर्लेपता निरन्तर बढ़ रही थी। दिल्ली में तपस्वी श्री रोशन लाल जी म. एवं लुधियाना में उपाध्याय 'श्रमण' श्री फूलचन्द जी म. के स्वर्गवास से मन को गहन पीड़ा हुई। गुरुदेव को अपने दुःख या कष्ट को कहने का भाव कम, सहने का अधिक

> जिन्हें सुख प्रिय है उनको ही दुख महसूस होता है।
>
> —गुरु सुदर्शन

बनता जा रहा था। संवत्सरी के बाद अठाइयों के पारणे पर गुरुदेव ने मुनियों को घरों में भेजा। गुरुदेव के चरणों में एक अनपढ़ पंजाबी जट्ट सिख 'दीपा' रहता था। उसने नवकार मंत्र सीख लिया था। सामायिक करता था। यथासंभव तपस्या भी कर लेता। प्रायः हर चातुर्मास में अठाई करता। चातुर्मास काल में समाज की नौकरी करता, शेष आठ महीने फ्री सेवा। उसकी अठाई के पारणे पर गुरुदेव स्वयं हाथ फरसने गए। कहने लगे, 'सेठों के घर तो सभी जाते हैं, गरीब नौकर का ख्याल कौन रखता है'। इस दुर्लभ दृश्य को देखकर दीपा भी, जिस घर में पारणा था वो भी और सारी समाज भी धन्य हुई।

उस वर्ष गुरुदेव ने जींद शहर के साथ-2 स्कीम एरिया को भी अपनी कृपा का पात्र बनाया। गुरुदेव ने तत्रत्य समाज की महती संभावनाओं को देखकर और आगे बढ़ने को प्रोत्साहित किया। हरियाणा सरकार के मंत्री श्री मांगे राम गुप्ता ने भी गुरु कृपा पाकर समाज की यथाशक्य सहायता की। गुरु कृपा का ही फल है कि एक भव्य एवं विशाल स्थानक इस समय जींद स्कीम में खड़ा है। जींद के पास ही नरवाणा में शास्त्री श्री पद्मचन्द जी म. का चातुर्मास भी चल रहा था। गुरुदेव बराबर उधर का भी ध्यान रखते थे।

जीन्द चातुर्मास में ही पता लगा कि रोहतक की जैन स्थानक में श्री तपस्वी जी म. की आँख का आप्रेशन होना है। गुरुदेव ने आप्रेशन के दिन स्वयं भी आयम्बिल किया। मुनियों तथा समाज को भी प्रेरित किया। अपने प्रवचन में श्री तपस्वी जी म. की संयम-दृढता का वर्णन करते हुए फरमाया कि कल उन्होंने आप्रेशन के बाद दलिया भी नहीं लिया ताकि औद्देशिकता की शंका न रहे।

चातुर्मासोपरान्त गोहाना पधारे। सूर्यास्त के बाद समाचार मिला कि श्री तपस्वी जी म. को रोहतक मैडीकल में भर्ती होना पड़ा है, अतः कुछ मुनि सेवा में पहुँचें। अगले दिन तीन मुनि सूर्य निकलते ही चले और 32

> बड़ों की आनबान रखी जाएगी तो स्वयं सम्मान के अधिकारी बनोगे।
> —गुरु सुदर्शन

कि.मी. का सफर तय करके सेवा में पहुँचे। कुछ दिन बाद गुरुदेव भी रोहतक पधारे, एवं सीधे हस्पताल जाकर साता पूछी। वहां श्री तपस्वी जी म. की दूसरी आँख के साथ-2 हर्निया का आप्रेशन भी हुआ था। जब श्री तपस्वी जी म. मैडिकल से छुट्टी लेकर स्थानक में पधारे, तब गुरुदेव को वन्दन करते-2 भावुक हो उठे। उन्हें इस बात का मलाल था कि मैं मैडिकल से बचना चाहता था पर वहीं जाना पड़ा। गुरुदेव ने उन्हें बहुत संभाला कि 'आप तो वज्र पुरुष हैं, दृढ़ता में सुमेरु हैं'। वहीं से भटिण्डा में वैरागियों की दीक्षा का भाव बना। जब विहार का समय हुआ, तो श्री तपस्वी जी म. पुनः भावुक हो गए। गुरुदेव ने पूछा– 'तपस्वी जी! बताओ, क्या बात है? हम यहीं रुक जाते हैं।' श्री तपस्वी जी म. कहने लगे, 'पता नहीं, अब आपके फिर दर्शन होंगे या नहीं?' गुरुदेव ने उनको स्पष्ट शब्दों में आश्वासन दिया कि 'आप कोई बोझ न रखें। आपको अभी बहुत जीना है, हम आपके पुनः दर्शन करेंगे।'

गुरु सुदर्शन स्तुति

कल्पतरुवर सम जो गुरुवर, शिष्यों पर करुणा करें,
चिन्तामणि बन चिन्ताचूरण, विघ्न बाधाएँ हरें।
ज्ञान दर्शन तप सुशोभित, शुद्ध मन से ध्याईए,
प्रेम से गुरुवर सुदर्शन, जी की सब जय बुलाईए ॥

गुरु की कृपा से ही सत्पात्र बनेंगे गुरु कृपा बड़ा महत्त्व रखती है।
—गुरु सुदर्शन

7. श्रमण निर्माता गुरुदेव

रोहतक से भटिण्डा का सफर काफी लम्बा था। गुरुदेव के घुटनों में भी दर्द बढ़ता जा रहा था। फिर भी गुरुदेव किसी कष्ट या बाधा की चिन्ता नहीं करते थे। 'अंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति।' जंगल देश में उस दीक्षा के लिए विशेष चाव था। तैयारियां भी जोरों पर थी, पर एक सप्ताह पूर्व बेमौसमी वर्षा से सारे मैदान में पानी भर गया। अन्य विशाल स्थानों पर घास थी। लोग गुरुदेव के पास आए। उन्होंने फरमाया कि– 'दोनों वैरागी पुण्यवान् हैं, कोई न कोई समाधान जरूर निकल आएगा।' तभी मुनियों ने बताया कि ला. भोजराज जी का विस्तृत प्लाट निर्दोष है। घर में ही काम बन गया। गुरुदेव का वचन तुरन्त फला। दीक्षार्थी परिवार के समक्ष एक छोटी-सी समस्या खड़ी हो गई। शोभायात्रा के लिए हाथी नहीं मिल रहा था। असमंजस की स्थिति थी। समय निकट आ रहा था। अन्ततः ये जिक्र उन्होंने गुरुदेव से ही कर दिया। गुरुदेव ने फरमाया– 'जब आप पश्चिम दिशा में जाएंगे, आपका काम बन जाएगा।' लाला हंसराज जी कार्यवश गंगानगर जा रहे थे। बस में बैठे-2 उन्होंने सड़क पर हाथी को देखा। बस रुकवाकर हाथी वाले से बात की और चिंता दूर हो गई। प्रबन्ध, भीड़, सेवा हर दृष्टि से भटिण्डा की दीक्षा सफल रही। दीक्षा के बाद प्रबन्धकों ने भी एक बात को चमत्कार के रूप में पेश किया कि स्थानक के सामने पानी का एक टैंक रखा हुआ था। हजारों आदमियों ने उससे पानी पीया पर फिर भी वह भरा ही रहा। यह गुरु म. की कृपा का फल है।

दीक्षा के पश्चात् समग्र समाज स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रही थी। श्रावक वर्ग गुरु चरणों में बैठा था। कुछ भाई कहने लगे कि बाहर के दर्शनार्थी 25 हजार थे। दूसरे कहने लगे 30 हजार थे। औरों का विचार बना कि इससे भी ज्यादा थे। गुरु म. बोले, 'भीड़ से क्या बनने

> विनयवान् को अगर कोई बात लग जाए, चुभ जाए तो कल्याण का कारण बन जाएगी।
> और अविनीत को लगी बात कषाय उत्पन्न करेगी, दुखदायी बनेगी। –गुरु सुदर्शन

वाला है। ज्यादा भीड़ होना दीक्षा की सफलता का मानदण्ड नहीं है। दीक्षा लेने वाले ऊंचा संयम पालें, विनयवान् हों तो ही दीक्षा की सफलता है, अन्यथा नहीं। श्रावक तो मौन हो गए, पर निकटस्थ नवदीक्षित मुनिराजों को एक संदेश मिल गया और वही गुरुदेव का लक्ष्य था।

सन् 1983 के चातुर्मास के लिए ऊपरी पंजाब का बहुत दबाव था पर गुरुदेव ने अचानक ही बरनाला वालों की विनति स्वीकार ली। 1982 के चातुर्मास के बाद श्री शांति मुनि जी म., श्री नरेश मुनि जी म. के पदार्पण से बरनाला क्षेत्र उत्साहित हुआ था। सब चकित थे कि क्षेत्र छोटा और सन्त बड़े। पर गुरु-कृपा से तो छोटा भी बड़ा बन जाता है। उन्होंने स्वास्थ्य ठीक रहते हुए कभी 29 दिन के कल्प की मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। भटिण्डा में बड़ी दीक्षा तक रुकने में दो दिन कल्प टूटने की संभावना बनती थी, अतः गुरुदेव कुछ मुनियों के साथ दो दिन बाहर मण्डी में लगाकर आए। उधर जैन परिवार भी कम थे, मकान भी असाताकारी था पर मर्यादा तो मर्यादा है। कल्प की स्वल्प-सी उपेक्षा अनेक अतिचारों को जन्म देती है।

रामां मण्डी के मार्ग में झनीर गाँव में ठहरे। कुल तीन ठाणे थे गुरुदेव जी म., नरेन्द्र मुनि जी और नवदीक्षित मुनि जी। रात को सैंकड़ों की संख्या में श्रोता आ गए। गर्मी का मौसम था फिर भी गुरुदेव ने रात को अकेले ही घण्टा भर तक उन्हें धर्मोपदेश सुनाया। सबने मद्य-मांस न खाने का विश्वास दिलाया। गुरुदेव नवदीक्षित मुनियों के प्रशिक्षण का पूरा ध्यान रखते। उनकी हर आवश्यकता को पहचानते, पूरी करते, प्यार बरसाते और सारणा-वारणा-धारणा का दायित्व निभाते। रत्नाधिक की विनय करना, अपने गुरुभ्राताओं को गुरु समझना और कभी कपट नहीं करना, ये गुरुदेव की शिक्षाओं का हार्द होता था।

गुरुदेव रामां मण्डी पधारे। बड़े जोशीले प्रवचन किए। सारी मण्डी एक तरह से जैन मण्डी बन गई थी। वहाँ पर श्री सत्य प्रकाश मुनि जी

यदि धर्म का शरणा लोगे तो फल अवश्य मिलेगा जैसे दीपक जलाओगे तो
रोशनी अवश्य आएगी। —गुरु सुदर्शन

बीमार हो गए। गुरुदेव स्वयं उनकी परिचर्या करते। उनका आसन अपने पास लगवाते। जब वे कुछ ठीक हुए तो विहार का कार्यक्रम बना। सब संत चलने को तैयार थे। अचानक गुरुदेव ने श्री सत्य प्रकाश मुनि जी के हाथ पर अपना हाथ रखा। देखा, कुछ गर्म था। थर्मामीटर लगाया तो तापमान था। गुरुदेव ने सब सन्तों का सामान खुलवा दिया। वहीं पर ठहर गए। अन्यत्र विचरण-शील सन्तों को भी वहीं बुलवा लिया। पूरी तरह स्वस्थ होने पर ही विहार किया। गुरुदेव की करुणा असीम थी। माँ की तरह जाग-जागकर अपने शिष्य रूपी सुतों की देखभाल करते थे। परन्तु अब 'मातृभिर्लाल्यमानानां ते हि नो दिवसा गताः।'

गुरुदेव चातुर्मास के लिए बरनाला पधार गए। स्थानक दो तरफ से बन्द था। गर्मी काफी थी। लम्बा समय गुजारना था। पर गुरुदेव ने कभी कोई शिकायत नहीं की। यदि कभी घुटन होने के कारण कोई साधु कह देता कि 'हवा बन्द है', तो तभी गुरुदेव संशोधन देते, 'ऐसे कहो कि हवा कम है। बिल्कुल बन्द हो जाए, तो हम जी भी नहीं सकते।' कमरे से बाहर लोग गुरुदेव की प्रतीक्षा में खड़े होते और कोई मुनि ये कह देता 'दो मिनट रुको, बाद में दर्शन होंगे' । इसको भी गुरुदेव ठीक करवाते कि 'दो मिनट' शब्द निश्चयकारिणी भाषा है, साधु को ऐसा बोलना नहीं कल्पता है। 'थोड़ी देर में दर्शन हो जाएँगे' ऐसी भाषा विवेक-सम्मत है। आओ, बैठो, जाओ, ये काम कर दो' इत्यादि श्रावकों के लिए प्रयुक्त वाक्यों को परिवर्तित करके गुरुदेव भाषा-शुद्धि करवाते ही रहते थे कि 'दया पालो', 'यतना कर लो' ये वाक्य साधूचित हैं। अधिक सर्दी या अधिक गर्मी में गुरुदेव व्याकुल नहीं होते थे, समता पूर्वक विराजे रहते। स्वाध्याय करते और परीषहों को सहन करते थे।

नई कोंपलों को सुरक्षित रखने की गुरुदेव की विधि अनूठी थी। जब बहनें वन्दना करने आतीं तो सन्त उनसे परिचय पूछते। मुनियों को सामान्यतः शिक्षा देते कि बहनों का नाम नहीं पूछना और न उनको

> बड़प्पन तभी निखरेगा जब बड़े छोटों की बातें धीरज से सुनेंगे।
> —गुरु सुदर्शन

नाम लेकर संबोधित करना। केवल इतना ही बोलो 'दया पालो बहन। चूंकि तुम अभी नए मुनि हो अतः तुम्हें सुरक्षा-कवच की और अधिक जरूरत है'।

गुरुदेव एक दिन बाहर दिशा के लिए गए। गुरुदेव ने अपने लिए धूप वाला स्थान चुना, जबकि पास ही छाया थी। गुरुदेव वहाँ नहीं बैठे। नव दीक्षित मुनि साथ थे। उन्होंने निवेदन भी किया पर गुरुदेव टाल गए। बाद में कारण पूछा तो बताया कि 'छाया वाले स्थान पर कीड़ी आदि लघु जीव ज्यादा होते हैं या आ जाते हैं। धूप में बचाव रहता है। इसलिए मैं जानबूझकर छाया में नहीं गया। धूप वाले स्थान पर ही रहा। उनके इस विवेक ने नवदीक्षित मुनि को विवेक का प्रैक्टिकल पाठ पढ़ा दिया।

प्रातः घूमने जा रहे थे। वैरागी सुनील जी तथा आदीश जी साथ थे। कच्चा रास्ता था। एक जगह कीड़ियों का बिल था। उस पर आदीश जी का पैर पड़ने वाला ही था कि सुनील जी ने सावधान कर दिया और विराधना होने से बच गई। गुरुदेव ने देखा और आदीश जी को कहा "आदीश! सुनील का तेरे ऊपर उपकार है, इसको कभी भूलना नहीं"। गुरुदेव ने एक ही वाक्य में कई शिक्षाएं लघु शिशु को दे दी।

बरनाला को डॉक्टरों की नगरी समझ कर गुरुदेव ने घुटनों का उपचार करवाने की सोची। डॉक्टर ने टीका लगाने को कहा। गुरुदेव ने पूछ लिया, 'इसका रिएक्शन तो नहीं होगा?' डॉक्टर ने बताया कि यह सुरक्षित है। सौ में से किसी एक को ही प्रतिकूल पड़ता है। गुरुदेव ने हंस कर कहा, 'डॉक्टर साहब, फिर तो सौवाँ आदमी मैं ही हूँ।' डॉक्टर ने इंजैक्शन लगाया। किसी को प्रतिकूलता की आशा नहीं थी परन्तु इतना भंयकर दर्द कई दिनों तक हुआ कि गुरुदेव कराह उठे। कई दिन तक तो गुरुदेव का घुटना मुड़ा ही नहीं। ये मात्र संयोग था या गुरुदेव की आशंका थी या कोई भविष्यवाणी थी, कहना कठिन है। बरनाला में सभी घरों में गुरुदेव ने सामायिक, पौषध तथा ज्ञान-ध्यान की ज्योति

> निंदक आलोचकों से परेशान न हो यदि वह निंदा दिल पकड़ ले तो परेशानी का विषय है।
> —गुरु सुदर्शन

प्रज्वलित की। सबको ज्ञात हुआ कि शुद्ध संयम और प्रामाणिक जैन धर्म क्या होता है। और बिना आडम्बर के भी किस प्रकार धर्म-प्रभावना की जा सकती है। प्रधान श्री रतन चन्द जी जैन को गुरुदेव की हार्दिक करुणा, ममता और दया ने अभिभूत कर दिया।

दिल्ली के गुरुभक्त श्रावक कीमती लाल जैन (कैलाश ज्वैलर्स) ने बरनाला में आँखों के आप्रेशनों के लिए एक मुफ्त कैम्प लगवाया था। आप्रेशनों का समग्र दायित्व चण्डीगढ़ P.G.I. के नेत्र-विभाग अध्यक्ष डॉ. आई.एस. जैन के ऊपर था। जैन होने के नाते जैन संतों के संपर्क में आते रहे थे मगर मन की गहन श्रद्धा कहीं पर टिक नहीं पाई थी। बरनाला में गुरुदेव जी म. के दर्शन किए तो अन्तःस्थ श्रद्धा स्वतः उनके प्रति स्थिर हो गई। वार्तालाप हुआ तो मानसिक सन्देहों का निराकरण हुआ। उनकी अंतिम प्रतिक्रिया ये थी कि 'मैं किसी सच्चे जैन संत से प्रथम बार मिला हूँ।'

बरनाला, बुढलाडा, मानसा के तीनों चातुर्मास सुनाम में एकत्रित हुए। फिर लक्ष्य बना रोहतक। कई वर्षों से रोहतक जाने का भी एक अलग मजा होता था। वह तीर्थ-धाम बन चुका था। पूज्यपाद श्री भण्डारी जी म. के दर्शन, श्री तपस्वी जी म. से मिलन, भगवन् श्री जी से ज्ञान चर्चा, सबका समवेत प्यार, सभी कुछ वहाँ मिलता था। वहाँ लम्बे समय के लिए ठहरते थे। भावी चातुर्मासों की भूमिकाएँ बनती या घोषणा होती। नरवाणा में एक दिन श्री नरेश मुनि जी म. की संयमी दृष्टि एवं प्रवचन शैली से प्रभावित हो कर फरमाने लगे– "अब तेरा भी स्वतंत्र चातुर्मास एवं विचरण करवाऊंगा।"

गुरुदेव का सन् 1984 का चातुर्मास सोनीपत के लिए निश्चित हुआ तथा श्री विनय मुनि जी म. का चातुर्मास मतलौडा मण्डी करवाने का फैसला हुआ। रोहतक पहुँचकर गुरुदेव ने अपने सुशिष्यों को स्वतंत्र विचरण के लिए दिल्ली भेजा, जिनमें श्री प्रकाश मुनि जी म. एवं

> परिश्रम/विनय/तपस्या/उपासना एवं स्वाध्याय से साधक आत्मा से जुड़ जाता है।
> —गुरु सुदर्शन

श्री शास्त्री जी म. के साथ-2 श्री नरेश मुनि जी म. आदि ठाणे 3 की भी स्वतंत्र टोली बनी।

गुरुदेव रोहतक से विहार करके गोहाना होकर बुटाना पधारे। इधर रोहतक में अचानक श्री भण्डारी जी म. अस्वस्थ हो गए। उनका हृदय भर आया। पूज्य श्री रामप्रसाद जी म. ने पूछा– 'क्या बात है? क्या चाहिए?' श्री भण्डारी जी म. ने गुरु म. को याद किया और कहा कि उनको बुलवा दो। श्री तपस्वी जी म. को पता लगा तो वे उन्हें समझाने लगे कि वे अभी तो यहाँ ठहर कर गए ही हैं। विहार हुए ज्यादा समय नहीं हुआ। काफी दूर भी निकल गए हैं, पैरों में भी दर्द है, वापिस कैसे आएँगे? फिर भी श्री भण्डारी जी म. की इच्छा को देखते हुए पूज्य श्री रामप्रसाद जी म. ने पत्र लिख दिया। गुरुदेव ने यद्यपि महावीर-जयन्ती सफीदों की मानी हुई थी पर तत्काल वापिस चलने का निर्णय ले लिया। गुरुदेव के मन में सब योजनाओं और घोषणाओं से ऊपर बड़ों की भावनाएँ और आज्ञाएँ थी। दो तीन दिन में रोहतक पधार गए। गुरुदेव वैसे तो सभी स्थविर सन्तों का सम्मान करते थे पर श्री भण्डारी जी म. के प्रति उनके मन में अथाह आस्था थी। श्री भण्डारी जी म. स्वयं में बड़े सेवाभावी, निरभिमानी, वात्सल्य-सागर एवं अनुभवी मुनिराज थे। उन्होंने सारा जीवन वाचस्पति गुरुदेव की सेवा में व्यतीत किया था। अतः उनकी सेवा करना अपना फर्ज समझते थे। खुद गुरुदेव ने भी अपने शैशव-काल में उनकी बड़ी कृपा पाई थी, अतः उस ऋण से भी उऋण होना चाहते थे। गुरुदेव के रोहतक पधारते ही वे क्रमशः स्वस्थ होते गए। एक दिन वे गुरुदेव को कहने लगे कि 'श्री विनयमुनि जी को मेरे पास ही छोड़ दो, मैं इसकी सेवा से प्रसन्न हँ।' पूज्य गुरुदेव ने तुरन्त 'तहत्त' कहकर गुरु-वचन को प्रमाण किया। चातुर्मासों की घोषणा में परिवर्तन किया। श्री शांति मुनि जी म. को कांधला से बदल कर मतलौडा भेजा और श्री जयमुनि जी म. को कांधला में। श्री जयमुनि जी म. को इससे पहले स्वतन्त्र विचरण का अभ्यास नहीं था पर गुरुदेव ने सिर पर हाथ रखकर फरमाया कि

> धन की गरीबी से विचारों की गरीबी ज्यादा खतरनाक है।
>
> –गुरु सुदर्शन

'मेरी पूरी कृपा दृष्टि रहेगी। चिंता मत करना, सब आनंद-मंगल होगा।' और गुरुकृपा पाकर क्या कुछ नहीं हो जाता?

जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अन्धे को सब कुछ दरिसाई।
बहरा सुनै, मूक पुनि बोले, रंक चलै सिर छत्र धराई॥

कुछ ऐसे ही तिण्णाणं तारयाणं थे गुरुदेव!

सोनीपत चातुर्मास में ला. चन्द्रभान जी के सुपुत्र मुकेश जी वैरागी बने। गुरुचरणों में तपस्वी श्री इंद्रसैन जी ने मास-खमण किया। उनके पारणे पर समाज उनको बैण्ड-बाजों सहित घर ले जाना चाहता था। भारी भीड़ मुख्य द्वार पर खड़ी थी। तपस्वी जी गुरु चरणों में वंदना करने आए तो गुरुदेव ने संकेत किया कि तपस्या को आडम्बर से बचाकर रखें तो अच्छा है। श्रावक जी समझ गए और चुपचाप स्थानक के पिछले जीने से उतर कर अपने घर पहुँच गए। सब श्रावक चकित रह गए। बाद में गुरुदेव ने प्रवचन में उनके तप और निःस्पृह भाव की संस्तुति की। उस चातुर्मास में 113 अठाई तपस्याएँ हुईं।

एक सुबह गुरुदेव ने सन्तों को बताया कि 'मुझे ऐसा आभास हुआ है कि किसी विशिष्ट व्यक्ति का निधन होने वाला है। मैंने रात को स्वप्न में सूर्य को अस्त होते हुए देखा है, पर ये स्पष्ट नहीं है कि वह व्यक्ति कौन हो सकता है।' सभी मुनिराज अपने-2 अनुमान लगाते रहे। उसी दिन प्रातः 10 बजे प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को उन्हीं के अंगरक्षकों ने मार डाला। उनकी हत्या के बाद सिख-समुदाय पर जो जुल्म हुए, उससे भी गुरुदेव को आत्मा आहत हुई। जिस प्रकार पंजाब के निरपराध हिन्दुओं की हत्या पर उन्हें खेद था, ऐसे ही निर्दोष सिखों की हत्या पर भी हुआ। वे सच्चे अर्थों में मानवतावादी थे।

क्या बताऊं क्या नहीं है, और क्या खतरे में है,
आंधिया ऐसी चली हैं, हर दिया खतरे में है।

सामान की तेजी लाभदायक हो सकती है पर इंसान की तेजी हमेशा हानिकारक होती है।
—गुरु सुदर्शन

गुरुद्वारों, मन्दिरों पर आज पहरे हैं लगे,
वाहे-गुरु खतरे में है, परमात्मा खतरे में है ॥

उस वर्ष कांधला चातुर्मास की सफलता से गुरुदेव को काफी प्रसन्नता हुई तथा अपने दूसरी पंक्ति के मुनियों पर विश्वास जम गया। आगे से नए मुनियों को आगे लाने का विचार बना। श्री नरेश मुनि जी म. को अगले वर्ष चौमास के लिए तैयार करने का मन बनाया।

सन् 1985 में गुरुदेव ने महास्थविर श्री भण्डारी जी म. की सेवा में रोहतक चातुर्मास किया। दिल्ली पर भी उस वर्ष गुरुदेव ने विशेष कृपा की। अपने शिष्यों के तीन चातुर्मास दिल्ली में कराए। एक नूतन चातुर्मास श्री नरेश मुनि जी म. का राजाखेड़ी में करवाया। श्री तपस्वी जी म. का गोहाना मण्डी में चातुर्मास हुआ।

चातुर्मास बैठने से पूर्व जून मास में पूज्य गुरुदेव के सांसारिक चाचा मा. शाम लाल जी का अकस्मात् निधन हो गया। खबर सुनकर गुरुदेव को गहरा आघात लगा। गुरुदेव के जीवन पर मा. जी के अगणित उपकार थे। उस समय मास्टर जी के अंगजात श्री शास्त्री जी म. देहली चाँदनी चौंक में विराजमान थे। एक सन्त के पुत्र, एक सन्त के पिता तथा एक सन्त के चाचा होने के साथ-साथ मा. जी स्वयं भी एक सन्त जैसा ही जीवन जीने वाले थे। उनकी अंतिम यात्रा को दिल्ली निगम बोध घाट पर ले जाने से पूर्व चाँदनी चौंक बारादरी के नीचे लाया गया ताकि उनके तनुज श्री शास्त्री जी म. भी उन्हें अंतिम बार देख लें या दर्शन दे दें। सारा परिवार, परिचित जन एवं सम्बन्धी-वर्ग नीचे खड़ा हो गया। ऊपर संदेश दिया कि एक बार नीचे आ जाओ। चतरसैन, सुरेन्द्र कुमार जी बुलाने आए, पर श्री शास्त्री जी म. उस स्थिति में न भावुक हुए, न भावना में बहे, न अपनी व्यवहारिकता को ध्वस्त होने दिया। कहने लगे 'अब वो जा चुके और शरीर तो मेरे लिए मिट्टी के तुल्य है। मुझे नीचे जाकर क्या करना है।' पारिवारिक आग्रह के बावजूद म. श्री जी अपने चिंतन में

शराब का नशा, अहंकार एवं चटोरापन स्वयं का भान भी भुला देता है।
—गुरु सुदर्शन

स्थिर ही बने रहे। पूज्य गुरुदेव जी म. को जब ये ज्ञात हुआ तो उनका कथन था, "मुझे शिष्य बनाने का लाभ मिल गया।"

पूज्यपाद भण्डारी श्री बलवन्त राय जी म. ने वाचस्पति गुरुदेव की तथा उनके प्रत्येक मुनि की अतुलनीय सेवा की थी। 1963 के बाद 1984 तक उनका संपूर्ण काल श्री तपस्वी जी म. के साथ व्यतीत हुआ तथा 5-7 साल पूर्व तक वे सेवा-कार्यों में जुटे रहे थे। पर अब कुछ आयु का गणित शरीर पर दबाव बनाने लगा था। रोहतक जब पधारे थे तब स्थिरवास की कोई कल्पना नहीं थी पर भिन्न-2 कारणों से ठहरे रहे तो विहार के योग्य शरीर-शक्ति नहीं रही। प्रारंभ में श्री तपस्वी जी म. भी रोहतक में कई व्याधियों से गुजरे। जब ठीक हो गए तो उनका मन विहार के लिए उद्यत हुआ। पूज्य गुरुदेव जी म. ने सोचा कि पूज्य श्री भण्डारी जी म. की सेवा में मैं स्वयं रहूँ। इसलिए उस वर्ष 1985 का चातुर्मास रोहतक में किया।

रोहतक चातुर्मास में गुरुदेव ने यह निश्चित नियम बना लिया था कि सायं प्रतिक्रमण के बाद श्री भंडारी जी म. की वैयावृत्त्य स्वयं करते। श्री भण्डारी जी म. बहुत मना करते कि छोटे सन्त कर देंगे पर गुरुदेव तो विनय के साक्षात् अवतार थे। कई बार ऐसा भी होता कि खुद अस्वस्थ हो जाते। लेकिन बड़ों की वैयावृत्य से नहीं हटते थे। उस वर्ष गुरु-चरणों में सुनाम के नवीन कुमार जी वैरागी रूप में आए। इस प्रकार गुरुदेव के धर्म-परिवार की वृद्धि हो रही थी। रोहतक में एक बार तो वैरागियों की संख्या दस तक हो गई थी। सबकी निगरानी गुरुदेव अच्छी तरह करते थे। इस वर्ष गुरुदेव के आज्ञानुवर्ती कई चातुर्मासों में भाई-बहनों ने मासखमण तप किए। इस प्रकार श्रावकों में दीर्घ तपस्याओं का तथा मुनियों में जल्दी-2 दीक्षाओं का क्रम शुरू हो गया।

गुरुदेव की आज्ञा से होने वाले प्रत्येक चातुर्मास को श्रावक वर्ग गुरुदेव का ही चातुर्मास मानकर सफल बनाता था। स्वयं गुरुदेव सब

अहंकारी में धैर्य नहीं होता।

—गुरु सुदर्शन

स्थानों की, सब मुनियों की पल-2 निगरानी रखते थे। सभी सन्त अनुभव करते थे कि हमारे ऊपर गुरुदेव ही अदृश्य रुप से कृपा बरसा रहे हैं।

इस वर्ष श्री शास्त्री जी म. तथा श्री राजेन्द्र मुनि जी म. की नेश्राय में त्रिनगर दिल्ली में जो धर्मध्यान तथा तपोयज्ञ का अनुष्ठान हुआ, वह सब कल्पनाओं से बाहर था। मगर पूज्य श्री शास्त्री जी म. का फरमाना है कि पूज्य गुरुदेव जी म. की कल्पना में पहले से ही ये सब आभासित हो गया था। जैसे कि चातुर्मास के प्रारंभिक दिनों में गुरुदेव ने एक पत्र लिखकर भेजा था। "शास्त्री, इस साल चातुर्मास में 251 अठाइयां होंगी।" पर चूंकि ये आंकड़ा काफी बड़ा था, इसलिए लिखते-2 गुरु म. चौंक गए थे। उन्होंने 251 को काटकर 151 लिख दिया। फिर उसी दबे-से भाव में लिखा उन्होंने "500 तेले होंगे।" और यथार्थ ये है कि उस वर्ष त्रिनगर में व्रतों की 255 अठाइयां, 900 तेले तथा व्रतों के 5 मासखमण हुए। पूज्य गुरुदेव की मूल कल्पना को पूरा जो होना था। इधर श्री नरेश मुनि जी म. का राजाखेड़ी (पानीपत) प्रथम स्वतंत्र चातुर्मास हर दृष्टि से पूर्ण सफल हुआ। प्रतिक्रमण ज्ञान ध्यान सिखाया गया मासखमण व खूब तपस्याएं हुई।

चातुर्मास के पश्चात् गोहाना में दीक्षाओं की घोषणा हुई। मुनिसंघ एकत्रित हुआ। गोहाना-समाज पूरी तैयारी में जुटा था। विरक्त सुविशाल परिवारों से सम्बद्ध थे, अतः उत्साह था। श्री सुनील जी गोहाना के प्रधान ला. रामेश्वरदास जी के पोते एवं श्री प्रकाश चन्द जी के सुपुत्र थे। एवं श्री अजित जी समाज-नेता श्री किशोरी लाल जी के भतीजे तथा श्री शामलाल जी के सुपुत्र थे। अपनी-2 प्रतिष्ठानुसार सभी कार्य करने में व्यस्त थे। अचानक श्री तपस्वी जी म. ने कहा कि इस दीक्षा पर बाहर के श्रीसंघों को निमंत्रण-पत्र नहीं दिया जाए। गुरुदेव ने उनकी इच्छा को अधिमान दिया तथा दीक्षार्थी परिवारों को मनाया। गोहाना दीक्षा पर मौसम बहुत बूंदा-बांदी का था। दीक्षा के दिन भी गोहाना के चारों ओर

श्रावक तो ऑफर किया ही करते हैं, मुनि को स्वयं की जागरूकता से मर्यादा में रहना है।
—गुरु सुदर्शन

2-3 कि.मी. बाहर तक विस्तृत इलाके में व्यापक वर्षा होती रही परंतु गोहाना बिल्कुल सुरक्षित रहा। सारे समाज ने इस आश्चर्यकारी कृपा के लिए गुरुओं का आभार माना। यह विचित्रता दिल्ली के समाचार-पत्रों तक में प्रकाशित हुई। गुरुदेव किसी विशिष्ट कार्य की सम्पन्नता पर स्वयं को श्रेय देने की बजाय यही कहा करते थे कि 'ये सब गुरु म. की कृपा से, सन्तों के पुण्य से तथा समाज के सहयोग से हुआ है।'

गुरुदेव जी म. की हार्दिक इच्छा यही रहती थी कि जैसे-2 मुनि दीक्षाएँ हो रही हैं, वैसे-2 मुनियों में संयम और अनुशासन भी बढ़े। मुनियों में परस्पर प्रेम हो तथा बड़ों के प्रति विनय व छोटों के प्रति वात्सल्य-भाव प्रकट हो। वे कोशिश करते थे कि हरेक मुनि दूसरे हर मुनि के साथ रहना सीख ले। नवदीक्षित श्री सुनील मुनि जी ने एकदा अपने एक बड़े गुरु-भाई की स्तुति गुरुदेव के समक्ष की तो उनकी प्रसन्नता अवर्णनीय हो गई। दीक्षा के पश्चात् गुरुदेव जीन्द पधारे।

एक कल्प शहर में, एक स्कीम में तथा शेष दिन शाम कालोनी में लगाए। जीन्द का तीन क्षेत्रों में विभाजन सन् 1986 की देन हैं। हाऊसिंग बोर्ड के सुदूरवर्ती घरों से गोचरी लाने की प्रथा भी तभी से शुरू हुई। 12 मार्च के दिन जीन्द स्कीम के हॉल में सुशील जी की दीक्षा हुई। जीन्द से हांसी की ओर प्रस्थान किया।

इस वर्ष गुरुदेव का हांसी पदार्पण अनेक उपलब्धियों से भरपूर था। सन् 1945 में गुरुदेव ने हांसी में ही कथा करनी सीखी थी। तब वाचस्पति गुरुदेव ने फरमाया था कि 'आज तेरी कथा में शुरू में तीन आदमी ही आते हैं, पर वो समय भी आएगा, जब तीन-तीन हजार लोग भी होंगे।' उसी हांसी में आज वाचस्पति गुरुदेव की वाणी मूर्तिमान् हो रही थी। स्थानकवासी, तेरापंथी, दिगम्बर, सनातन सब में एक होड़-सी लग गई कि गुरुदेव का प्रवचन हमारे यहाँ हो। गुरुदेव सबके धर्मस्थलों पर ठहरे भी और प्रवचन भी किए। उस समय का जनोत्साह अपूर्व था।

गुरु का कर्तव्य है गलत राह पर चल रहे शिष्य को सन्मार्ग पर लाएं चाहे दण्ड ही क्यों न देना पड़े।
—गुरु सुदर्शन

जब गुरुदेव तेरापंथ भवन में विराजित थे उसी दिन जयपुर श्री संघ के पदाधिकारीगण श्री प्रकाश मुनि जी म. के चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुए। श्री गुमानमल जी चोरड़िया ने अपने वक्तव्य में कहा था कि 'हमारे राजस्थान में स्थिति ये है कि स्थानकवासी संघ के ही श्रावक-श्राविका दूसरे टोले के मुनियों के पास नहीं जाते और इधर ये पावन गुरुदेव हैं जिनकी सन्निधि में भिन्न संप्रदाय के लोग भी अपनी धर्मश्रद्धा की अभिवृद्धि कर रहे हैं। गुरुदेव ने किसी भी स्थान पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में विरोधी मत की आलोचना नहीं की। केवल जीवन और हृदय के परिवर्तन पर उनका विश्वास था।

हिसार काफी समय के बाद गुरुदेव पधार रहे थे। पूरे शहर में उत्साह था। स्थानकवासी समाज छोटा पर भक्ति-सम्पन्न है। जैन स्थानक के अलावा गुरुदेव ने मॉडल टाउन, ग्रीन पार्क, यूनिवर्सिटी कैम्पस में भी प्रवचन फरमाए। विश्वविद्यालय में गुरुदेव से अनेक प्रोफेसरों ने साहित्य की मांग की पर प्रकाशन की व्यवस्था न होने से नहीं दे सके। अनेक प्रोफेसरों ने कहा कि 'आपके प्रवचन तो अवश्य ही प्रकाशित होने चाहिए।' कई पत्रकार साक्षात्कार लेने भी आए पर गुरुदेव ने निषेध कर दिया। गुरुदेव हर स्थिति में अपनी सीमा में ही रहना चाहते थे।

हिसार में एक रोचक प्रसंग बना कि गुरुदेव को हिचकी शुरू हो गई। कई घण्टे चली। प्राणायाम आदि कई प्रयत्न किए पर सभी असफल। सूर्यास्त के पश्चात् प्रतिक्रमण शुरू हुआ। किसी ने लोहे का एक तसला नीचे गिरा दिया। जोर का शोर हुआ। गुरुदेव आशंकित हो गए कि किसी को चोट तो नहीं लगी। उठ कर आए। देखा तो सब ठीक-ठाक था। पर इसी बीच हिचकी एकदम रुक गई। गुरुदेव मन्द-2 मुस्काए और प्रतिक्रमण करने लगे।

हिसार में प्रथम बार वर्षीतप के पारणे हुए। उन्हें देखकर कुछ स्थानीय बहनें भी वर्षीतप में जुट गई। गुरुदेव ने एक दीप से अन्य दीपों

श्रद्धा कुछ देर के लिए आई और चली गई तो मक्खी सा जीवन हो जाएगा।
—गुरु सुदर्शन

को प्रज्वलित किया। वहाँ से फतेहाबाद होते हुए सिरसा पधारे। गुरुदेव ने सन् 1986 का चातुर्मास सिरसा में ही स्वीकृत किया था। एक महीने बाद वहाँ पुनः चातुर्मास-हेतु आना था। अभी वहाँ निर्माण कार्य चल रहा था, गुरुदेव कभी भी वहां देखने नहीं गए। एक स्कूल में ठहरे। एक दिन प्रवचन चल रहा था। गुरुदेव बीच में पधारे। देखा कि सभा-स्थल पर कीड़ियाँ बहुत हैं। कहने लगे, 'यहाँ धर्माराधना की बजाय जीव-विराधना होगी, अतः यहाँ प्रवचन नहीं होगा। सब यतना पूर्वक अन्य स्थान पर बैठोगे तभी मैं प्रवचन करूँगा।' श्रावकों व मुनियों को एक बार असुविधा तो हुई, पर जीव-हिंसा से बचाव हो गया। गुरु म. ने प्रवचन में आज्ञा मानने पर श्रावक-समाज को साधुवाद दिया। वहाँ से रानियाँ पधारे। एक कल्प विराजे। नई चेतना आई। चातुर्मास-हेतु पुनः सिरसा पधारे।

गुरुदेव ने सिरसा को 'सिर-सा' कहा और सिर-जैसा ही मूर्धन्य स्थान प्राप्त करने की प्रेरणा दी। यहाँ पर शुरू में ही तपस्याएं शुरू हो गई और निरन्तर चलती रही। बाल, युवा, वृद्ध सभी तप में जुट गए। चातुर्मास के अन्त तक 300 से ऊपर अठाई हो गई जो एक अभूतपूर्व घटना थी। गुरुदेव एवं मुनिराज तपस्वियों को दर्शन देने जाते। श्रावक साता पूछने जाते। गुरुदेव ने वैरागियों को भी तपस्वियों को मंगल-पाठ एवं शास्त्रीय पाठ सुनाने के लिए प्रशिक्षित किया। गुरुदेव जैन-अजैन, धनी निर्धन सबके घर में दर्शन देने जाते।

प्रो. गणेशीलाल जी पहले भी गुरुदेव के संपर्क में थे, चातुर्मास में उन्होंने और लाभ लिया। चौ. देवी लाल के सुपुत्र चौ. रणजीत सिंह जी भी गुरुदेव की कृपा से सनाथ हुए। एक दिन उनकी कोठी पर भी विराजे। उन्होंने स्वयं दिन-भर आगंतुकों की परिचर्या की। सिरसा समाज में कई जैन युवक राजनीति का शौक रखते हैं, इस कारण भी कई राजनीतिज्ञ आते रहते थे।

चातुर्मास हर दृष्टि से सानन्द बीत रहा था, पर एक भीषण दुर्घटना ने गुरुदेव समेत सारे समाज को विचलित कर दिया। गोहाना से

> शहद की मक्खी की तरह जीवन बनाना है तो श्रेष्ठतम श्रद्धा जीवन में ढली होनी चाहिए।
> —गुरु सुदर्शन

श्री सुनील मुनि जी का संसार-पक्षीय परिवार रिश्तेदारों सहित दर्शन करने चला। जीन्द में श्री तपस्वी जी म. के दर्शन किए। उकलाना में श्री नरेन्द्र मुनि जी के मासखमण पारणे का कार्यक्रम देखा। फिर सिरसा के लिए चले ही थे कि 4-5 कि.मी. की दूरी पर भयंकर एक्सीडेण्ट हो गया। उसमें बुढलाडा के भगत प्यारेलाल जी के वीर सुपुत्र सुदर्शन जैन, सुनील मुनि जी की माता श्रीमती इलायची देवी बुआ श्रीमती बसन्ती देवी का मौके पर ही निधन हो गया। दो दिन बाद छोटे भाई अजित का रोहतक मैडीकल में देहान्त हो गया। उनके पूज्य पिता श्री प्रकाश चन्द जी बुरी तरह घायल हो गए। गुरुदेव इस दुखद समाचार से मर्माहत हुए। कुछ समय के लिए सम्मोहन अवस्था में भी चले गए। उन्होंने दुर्घटना-स्थल, मृतक, घायलों का यथावत् चित्रांकन किया और बचे हुओं में से भी एक और की मृत्यु की आशंका जताई। वे इस प्रकार बोल रहे थे, मानों सब कुछ प्रत्यक्ष देख रहे हों।

गुरुदेव को इस भीषण वेला में श्री सुनील मुनि जी की निर्लेप दृष्टि देखकर हार्दिक सन्तोष हुआ। दीक्षा का प्रथम वर्ष था। माँ प्रथम लोच देखने की इच्छा लिए आ रही थी और ऐसा भयंकर वज्रपात हुआ कि तिनका-2 बिखर गया। परंतु श्री सुनील मुनि जी ने भावुकता किंवा मोह का अंश भी आँखों में, चेहरे पर या भाषा में कहीं नहीं आने दिया। साधु बनने और बनाने की यह बहुत बड़ी सफलता है।

गुरुदेव के पास साधना करने वाले अधिकांश मुनि उसी धरातल पर जीने के अभ्यासी हो गए हैं। जिन्हें अपने पूर्व परिवारों से कोई विशिष्ट लगाव नहीं है। वैसे भी मुनियों को गुरुदेव से ऐसा ही वात्सल्य मिलता रहा है कि उन सम्बन्धों की आवश्यकता रहती ही नहीं। गुरुदेव तो ये भी चाहते थे कि सन्तों का मेरे से भी मोह न रहे। वे गुरु को भी निर्मोहता की मंजिल का एक पड़ाव ही मानें। कुछ मुनिराज इसमें सफल भी हुए हैं, श्री सुनील मुनि जी म. से गुरुदेव पूर्णतः प्रमुदित थे।

जब भी आत्मा में कपट होगा तभी दुर्घटना घट जाएगी।

—गुरु सुदर्शन

सिरसा चातुर्मास में त्याग-तपस्या के नए कीर्तिमान स्थापित हुए। सेवा-समुल्लास का अनुपम विकास हुआ। हर ओर से बधाई और प्रशंसाओं के उपहार मिले।

चातुर्मास के बाद गुरुदेव सरदूलगढ़ पधारे। वहाँ से मानसा जाना था। सड़क काफी रोड़ीदार थी। चलने में दिक्कत की संभावना थी। घुटनों में भी काफी दर्द था। उन दिनों कोई व्यक्ति घुटनों के दर्द के विषय में पूछता, तो गुरुदेव हँसकर जवाब देते थे कि 'दर्द बहुत अच्छा है, पक्का दोस्त है। हमने इसके साथ समझौता कर लिया है।'

दर्द की भी अपनी अदा है।
ये भी सहने वालों पर फिदा है॥

रोड़ियों से बचने के लिए पैरों पर बांधने के टाट ले लिए पर काम नहीं आए। सरदूलगढ़ के कुछ भाई साथ चलना चाहते थे, गुरुदेव ने मना कर दिया। उनका आग्रह बढ़ा, तो गुरुदेव ने थोड़ी सख्ती से मना किया। श्रावक लौट तो गए पर थोड़ी नाराजगी सी लेकर। गुरुदेव ने भी न जाने इतनी सख्ती क्यों की? साधारणतः करते नहीं थे। कुछ वर्ष बाद गुरुदेव ने वहाँ के प्रमुख श्रावक श्री नेमचन्द जैन से उस विषय में क्षमायाचना की। गुरुदेव को कभी भी ऐसा अहसास हो जाता कि मेरे कारण किसी को खेद पहुँचा है तो वे क्षमापना करने में संकोच नहीं करते थे। उन्होंने कभी अहं को मुद्दा नहीं बनाया।

नमन्ति फलिनो वृक्षाः, नमन्ति गुणिनो जनाः।
शुष्क-वृक्षाश्च दुष्टाश्च, न नमन्ति कदाचन॥

अर्थात् फलदार वृक्ष और गुणवान् पुरुष ही नम्र होते हैं। सूखे ठूंठ तथा दुष्ट पुरुष कभी झुकते नहीं हैं।

विहार करते-2 गुरुदेव नरवाणा पधारे ही थे कि समाचार मिला कि 'श्री तपस्वी जी म. रोहतक में वैश्य कालेज में घूमने गए थे। अचानक

आलोचक तीन तरह के होते हैं—हितैषी-द्वेषी-पेशेवर आलोचक।
—गुरु सुदर्शन

चलते-2 गिर पड़े और सिर में काफी चोटें आई हैं। एकाशने के कारण दवाई भी नहीं ली और खून काफी निकला है। गुरुदेव के तो पैरों तले की जमीन ही खिसक गई। फिर भी अपरिमित धैर्य-शक्ति को प्रकट करके नन्दी-सूत्र की स्वाध्याय में लीन हो गए। बाद में सभी व्यग्र सन्तों को फरमाया कि चिन्ता की घड़ी टल गई है। गुरुदेव ने सब सन्तों को नन्दी-सूत्र, सुख-विपाक सूत्र व उवसग्ग हर-स्तोत्र का पाठ करने का आदेश दिया। सबने गुर्वाज्ञा का पालन किया।

उसी रात को एक और समस्या आई। रात्रि 9 बजे श्री राकेश मुनि जी ने शरीर में तेज खुजली की शिकायत की। पता लगा कि शाम को एक कैप्सूल लिया था, उसका रिएक्शन मालूम होता है। शरीर पर छोटी-2 फुंसी उभरने लगी। सारे शरीर में भारी बैचेनी थी। सन्तों ने गुरुदेव से निवेदन किया कि जान को खतरा हो सकता है। अतः किसी डॉक्टर को बुलाकर राय लेने में कोई हर्ज नहीं है। गुरुदेव सबकी सुनते रहे। बाद में निर्णय के स्वर में बोले कि 'किसी श्रावक या डॉक्टर को नहीं बुलाना। उनको बुलाने का अर्थ है 'दवाई लेना'। हम किसी भी कीमत पर दवाई नहीं देंगे। जो होगा, देखा जाएगा। सब पाठ करो। जिस को आराम करना है, आराम करे। मैं राकेश के पास बैठा हूँ।' ये कहकर उनके सिरहाने आकर बैठ गए। सिर सहलाने लगे। सारे शरीर पर हाथ फेरा। पाठ सुनाने लगे। बराबर में श्री जयमुनि जी म. की ड्यूटी लगा दी। घंटे भर बाद राकेश मुनि जी को उल्टी, दस्त हुए। गुरुदेव ने फरमाया कि खतरा टल गया है, अब धीरे-2 ठीक हो जाएँगे। ऐसा ही हुआ। धीरे-2 सब लक्षण शांत हो गए। गुरुदेव के धैर्य ने यह चमत्कार कर दिखाया। वहां से जीन्द होते हुए रोहतक पदार्पण हुआ।

जब गुरुदेव रोहतक पहुँचे, तब तक श्री तपस्वी जी म. का घाव काफी भर चुका था। पण्डित-प्रवर श्री रामप्रसाद जी म. ने जब सारी स्थिति का विवरण सुनाया तो सब भावुक हो गए। उन दिनों तपस्वी जी

दोष समाप्त हों तो गुण स्वतः प्रकट होंगे।

—गुरु सुदर्शन

म. एक विशेष जाप में लीन थे। रात को बहुत कम नींद लेते थे। दिन में जाप ज्यादा करते, बात कम। सिर की चोट के बाद वे अपने भावी को देखने में व्यस्त रहते थे। वहाँ जाते ही तपस्वी जी म. के परामर्श पर दीक्षा की घोषणा हुई। निमत्रंण-पत्र नहीं छपवाए गए। श्री नवीन जी की दीक्षा हुई।

उन्हीं दिनों श्री प्रकाश मुनि जी म. ठाणे-4 जयपुर का भव्य चातुर्मास करके रोहतक पधारे। मुनियों ने कठोर परिश्रम और परीषहों का सामना करके आगरा, ग्वालियर, शिवपुरी और झाँसी का दुःसाध्य इलाका साधा था। जयपुर में धर्मध्यान का पावन इतिहास रचा था। लघुमुनियों के वस्त्र, भाषा और अध्ययन की रुचि, सब उनकी कठिन चर्या की सूचना दे रहे थे। जब श्री सत्यप्रकाश मुनि जी एवं श्री अचलमुनि जी बड़े-2 थोकड़ों के विषय में प्रश्न-चर्चा करते तो सभी वरिष्ठ सन्तों को अपार हर्ष होता था। गुरुदेव उनकी प्रकृति एवं प्रगति के विषय में बड़ी रुचि लेते थे तथा अपने पठित विषय को टिकाए रखने की सतत प्रेरणा करते थे।

जो अहंकारी व प्रशंसा का भूखा है वह हमेशा परेशान रहता है।
—गुरु सुदर्शन

8. संघ की अपूरणीय क्षति

अप्रैल 1987 से लेकर मार्च 1988 तक के एक वर्ष का समय गुरुदेव एवं सारे मुनिसंघ के लिए विशेष चिंता, आशंका और असमाधि का रहा। 26 अप्रैल को रोहतक शहर में विराजमान महासती श्री तिलका सुन्दरी जी का देवलोक हो गया। गुरुदेव 27 ता. को प्रातः साध्वी-मण्डल को सहानुभूति एवं धैर्य देने शहर पधारे। प्रवचन बन्द था। महासती जी की अंतिम यात्रा मण्डी-स्थानक के नीचे से गुजरी। पूज्यपाद श्री भण्डारी जी म. के अचानक मुंह से निकला 'आज इसकी यात्रा निकली, कल मेरी निकलेगी।' सब कुछ ठीक था। बस अचानक दोपहर बाद उनकी तबीयत बिगड़ने लगी। सायं चार बजे गुरुदेव के हाथों में ही प्राण पखेरू उड़ गए। उनकी ये इच्छा थी कि मेरे अंतिम समय में गुरुदेव मेरे पास ही रहें। उनकी यह भावना पूर्ण हुई। श्री तपस्वी जी म. भी उन दिनों वहीं विराजमान थे। देवलोक के पश्चात् साधूचित व्यवस्थाएं सम्पन्न कर मृतक शरीर को समाज के हवाले कर दिया।

कुछ दिन पूर्व 29 सन्त श्री भण्डारी जी म. की सन्निधि में एक मांडले पर एकत्रित हुए थे। उन जैसा सौभाग्य इस मुनिसंघ में पहले किसी को नहीं मिल पाया था। उनके जाने से एक इतिहास का विलोप हुआ। उन्होंने 68 वर्ष का संयम पाला। उन जैसी सुदीर्घ मुनि-पर्याय के सन्त उत्तर भारत में उस समय नहीं थे। वे सब अर्थों में पूर्णकाम होकर देवलोक पधारे थे। गुरुदेव से कहा गया कि उनकी स्मृति में दिल्ली-महासंघ 'महावीर-मिशन' विशेषांक निकालना चाहता है। गुरुदेव का उत्तर था, 'जैसी इच्छा'। अतः महावीर मिशन का विशेषांक निकला। गुरुदेव एवं मुनियों द्वारा सभा में दी गई श्रद्धांजलियां छापी गईं। चातुर्मासों का पुनर्निर्धारण करके रोहतक से विहार किया। गुरुदेव का सन् 1987 का चातुर्मास गोहाना होना था और श्री तपस्वी जी म. का

> परनिंदा से संताप बढ़ता है, आत्म निंदा से पश्चाताप।
>
> —गुरु सुदर्शन

सोनीपत। गोहाना में ही दोनों महापुरुषों का मिलन हुआ। समय ने ये बताया कि ये उनका अंतिम मिलन था।

पूज्य गुरुदेव बहुधा फरमाया करते कि श्री तपस्वी जी म. के हाथ में एक रेखा ऐसी है, जिससे उनको विश्व-प्रसिद्धि मिलेगी। मगर ये ज्ञात नहीं था कि वह कार्य क्या होगा। अपने इस अंतिम मिलन में भी गुरुदेव ने वह बात दोहराई। श्री तपस्वी जी म. अपलक देखते रहे, मौन भाव से सुनते रहे। कुछ ही दिन में वह घटना घटित हो गई।

चातुर्मास प्रारम्भ हो गया। धर्माराधना के नए-2 आयाम चालू हो गए। गुरुदेव अध्यात्म की गहराई को छू ही रहे थे। 19 जुलाई, रविवार को प्रातः काल प्रतिक्रमण से पूर्व गुरुदेव ने सब सन्तों से कहा कि 'आज मुझे एक खराब स्वप्न आया है। मुझे लगता है कि श्री तपस्वी जी म. पर भीषण खतरा है। सभी नंदी सूत्र का पाठ करो और उनके लिए शुभ-कामना करो।' उसी शाम को सोनीपत में श्री तपस्वी जी म. अस्वस्थ हो गए। डॉक्टरों ने दिल की तकलीफ बताई। उपचार शुरू हुआ, पर कोई लाभ नहीं हुआ। सोनीपत से गोहाना गुरुदेव से आज्ञा मंगवाई कि "संथारा करना है"। गुरुदेव ने फरमाया– "अभी शीघ्रता न करो, समय अधिक लगता है। अचानक श्री तपस्वी जी म. ने 5 अगस्त को संथारे का पच्चक्खाण ले लिया। गुरुदेव से पुनः खबर इसलिए नहीं मंगवाई कि वे स्नेह और मोह-भावना-वश शायद आज्ञा नहीं देंगे। जब संथारा शुरू हो गया तो गुरुदेव ने उनकी प्रशस्ति में जो कहा, जो लिखा, वह उनके हृदय-सागर की एक सहज लहर थी। गुरुदेव का समग्र ध्यान सोनीपत की ओर ही था। उनके प्रवचन का विषय था संथारा और चिन्तन का भी विषय था 'संथारा'।

श्री तपस्वी जी म. अपने ध्यान में थे और गुरुदेव तपस्वी जी म. के ध्यान में थे। भजन बनाते, बनवाते, पत्र लिखते, लिखाते, केवल वही एक विषय था। गुरुदेव ने संथारा प्रारम्भ होने के कुछ दिन बाद ही

पढ़ने-लिखने से नहीं आचरण से कल्याण होगा।
—गुरु सुदर्शन

श्री राकेश मुनि जी से श्री तपस्वी जी म. की स्तुति में कुछ दोहे बनवाए थे। उनको अपने प्रवचन की पट्टी में रख लिया। रोज सोचते कि आज सुनाँऊंगा, फिर कल पर टाल देते। प्रतिदिन ये क्रम चलता रहा। राकेश मुनि जी ने कई बार उनको सुनाने का आग्रह किया। गुरुदेव ने फरमाया कि मेरा मन ऐसा कर रहा है कि जिस दिन ये दोहे सुना दूंगा, उसी दिन श्री तपस्वी जी म......। (ऐसी ही मनः स्थिति 1963 में वाचस्पति गुरुदेव के समय भी हुई थी) और आखिरकार 16 अक्टूबर को गुरुदेव ने बड़े भारी मन से वे दोहे प्रातः प्रवचन में सुना ही दिये। ये सबको विदित ही है कि 16 अक्टूबर को शाम पौने पाँच बजे श्री तपस्वी जी म. का संथारा सीझ गया और वे पूर्ण-काम होकर देवलोकों में पधारे। दुनिया के साथ जो बीता वो जाने, पर गुरुदेव को लगा, मानो मेरी शक्ति ही विदा हो गई है। 'तत्वार्थ-सूत्र' में स्कन्ध-रचना का फार्मूला दिया है– **'स्निग्धरूक्षत्वाद बन्धः।'** यही फार्मूला संघ-रचना का भी है। अब केवल स्नेह-पक्ष शेष रह गया, रूक्ष पक्ष नदारद हो गया। कठोरता चली गई, कोमलता रह गई।

सोनीपत श्रद्धांजलि सभा के पश्चात् गोहाना में श्रद्धांजलि सभा रखी गई। गुरुदेव का वक्तव्य धैर्य, स्थैर्य, संकल्प, स्नेह, समर्पण, निर्माण एवं भावुकता की शताधिक भावनाओं से ओत-प्रोत था। जो कुछ कहा, दिल से कहा। विपत्ति के हर अवसर पर गुरुदेव की विशेषता थी कि स्वयं धैर्य धारण करते तथा औरों को धैर्य प्रदान करते थे। उनका जीवन सकारात्मकता का जीता-जागता नमूना था।

जिन रास्तों ने हमें साथ-साथ देखा,
आज मुझे रोककर पूछते हैं तेरा हमसफर कहां है?

श्री तपस्वी जी म. के प्रति जनता में जो श्रद्धा थी, वह नारों में झलक रही थी। एक नारा गुरुदेव के कानों में गूंजा– 'जब तक सूरज चांद रहेगा, बदरी तेरा नाम रहेगा।' गुरुदेव को इस प्रकार सीधा नाम बोलना नागवार सा गुजरा। तुरन्त संशोधन दिया कि ऐसे बोलो, 'तपोधनी तेरा

> हमारा अपना स्वयं का आचरण ऐसा हो– महाव्रतों एवं शुद्ध संयम की हमें तमीज हो।
> –गुरु सुदर्शन

नाम रहेगा।' भाषा-विवेक गुरुदेव का प्रियतम विषय रहा है। चातुर्मास के बाद गन्नौर में सभी टोलियों का मिलन हुआ। गन्नौर-मिलन के बाद सोनीपत में वै. श्री मुकेश जी की दीक्षा घोषित की गई। मुनिसंघ एकत्र हुआ। विचार विमर्श एवं भविष्य की योजनाओं की चर्चा हुई। पूज्यवर श्री रामप्रसाद जी म. ने फरमाया कि 'अब तक हम श्री तपस्वी जी म. के अनुसार चले। आगे से श्री सुदर्शन लाल जी म. के अनुसार चलेंगे। श्री तपस्वी जी म. क्या करते थे, क्या कहकर गए हैं, उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण होगा कि श्री सुदर्शन लाल जी म. क्या कहते हैं।'

इस अवसर पर श्री नरेश मुनि जी म. ने एक अति शानदार, भव्य परिणाम-शील परामर्श दिया कि 'अब आगे से तीनों महापुरुष (गुरुदेव जी, सेठ जी म., श्री राम प्रसाद जी म.) इकट्ठे ही रहें, इकट्ठे ही विचरें तथा सभी संतों को बारी-2 से सेवा का अवसर दें। इस से सभी को ज्ञान, ध्यान एवं अनुशासन की शिक्षा मिलेगी। श्रावकों की श्रद्धा को भी बल मिलेगा तथा मुनिसंघ का गौरव भी सुरक्षित रहेगा।' इस परामर्श पर किसी ने तो अस्वीकृति जाहिर की और किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। और इस प्रकार एक विशुद्ध विचार असमय में ही काल-कवलित हो गया।

श्री तपस्वी जी म. की स्मृति में 'महावीर मिशन' विशेषांक का विचार स्वीकृत हुआ। दो दिसम्बर 1987 को श्री मुकेश जी के दीक्षा-उत्सव पर श्री तपस्वी जी म. के सांसारिक भतीजे श्री रतन लाल जी जैन को समारोह-अध्यक्ष बनाकर प्रकारान्तर से श्री तपस्वी जी म. को ही भाव-प्रवण श्रद्धांजलि दी गई।

सोनीपत में आचार्य-प्रवर श्री नानालाल जी म. के सुशिष्य विद्वान् श्री शांति मुनि जी म. गुरुदेव के दर्शनार्थ आए। गुरुदेव उन्हें दूर तक आगे लेने गए। भारत में अन्य संघों में ऐसी परम्परा नहीं है कि संघपति मुनिराज लघु मुनियों को लेने आगे जाएं। गुरुदेव को इतनी दूर देखकर सभी सन्त चकित रह गए। उनके मुनि-संघ से गुरुदेव के मुनि संघ

संकटकाल में तीन बातों का ध्यान रखें— शील का पालन, आपसी प्रेम, प्रभु/गुरु की शरण।
—गुरु सुदर्शन

के सभी सम्बन्ध (आहार-पानी ऐच्छिक) खुले हैं, अतः अन्तरंगता और आत्मीयता में और निखार आया। वे गुरुदेव को अपने आचार्य तुल्य और गुरुदेव उनको अपने प्रिय शिष्य मानते और अपनाते रहे।

अब गुरुदेव जी म. यू.पी. पधारे। छपरौली, बड़ौत में अद्भुत श्रद्धा देखी। बड़ौत में धर्मानुराग अपने यौवन पर था। रौनकों का सैलाब था। चातुर्मास की विनति हुई। गुरुदेव यू.पी. के छोटे-2 गाँवों में धर्म श्रद्धाओं के पोषण और नव जागरण का भगीरथ कार्य करते रहे। अमीं नगर सराय पधारे। ये पूज्यपाद योगिराज श्री रामजी लाल जी म. की पुण्यभूमि तथा महास्थविर पूज्यपाद भण्डारी श्री बलवंतराय जी म. की जन्मभूमि थी। बड़ौत से श्री वकील चन्द जी वहाँ गुरु चरणों में आए और कहने लगे कि– "आप श्री की कृपा से तथा श्री शास्त्री जी म. के प्रयत्न से मुझे घर वालों की ओर से दीक्षा की अनुमति मिल गई है। श्री नरेश मुनि जी एवं श्री सुधीर मुनि जी की कल्प-ज्येष्ठता के कारण आप मुझे दीक्षा देने में संकोच कर रहे हो, अतः मैं तपस्वीराज श्री चम्पा लाल जी म. के चरणों में दीक्षा लेने जा रहा हूँ। कृपा-दृष्टि रखना। मुझे तो धर्म का पहला अक्षर भी आप से ही मिला है। धर्म संस्कार जितने भी बने हैं, आपके प्रवचनों के कारण बने हैं। मैं आपको सदा ही अपना गुरु मानता रहूँगा।" उनके ये भाव सुनकर गुरुदेव ने जो स्नेह उनके ऊपर अपने मन और भाषा से उंडेला, वह वर्णनीय नहीं, अपितु अनुभव-गम्य ही है। श्री वकील चन्द जी के नयनों से जल-धारा बहने लगी और मंगल-पाठ सुनकर भावुक मन से प्रस्थान किया।

मेरठ में गुरुदेव का पदार्पण अद्भुत श्रद्धा का सन्देश लाया। विशाल हॉल की खचाखच उपस्थिति बता रही थी कि कोई जादुई शक्ति-सम्पन्न धर्मगुरु आया है। वहाँ से दिगम्बर-बहुल क्षेत्रों को सींचते हए मुजफ्फरनगर पधारे। मुजफ्फरनगर में उस वर्ष जालंधर के गुरुभक्त श्रावक श्री चमन लाल जी जैन की धर्मपत्नी विमला देवी जी एवं दो

> शिष्य को गुरु पर और गुरु को शिष्य पर विश्वास होना जरूरी है।
> —गुरु सुदर्शन

स्थानीय बहनों के वर्षी-तप के पारणे हुए। क्या पता था कि आने वाले समय में यह नगर वर्षी-तप के लिए पूरे उत्तर भारत में विख्यात हो जाएगा। है। इस प्रवास में सेठ मनमोहन जैन एवं उनकी धर्मपत्नी चंचल बहन गुरुदेव के श्री चरणों में अनन्य श्रद्धा-सहित जुड़ गए।

सन् 1988 में दिल्ली, यू.पी. एवं पंजाब में गुरुदेव के धर्मसंघ ने विशेष उपकार किया। तीन सिंघाड़े दिल्ली में थे। गुरुदेव यू.पी. को पावन कर रहे थे। श्री शास्त्री जी म. पंजाब में, विशेषतः लुधियाना में महती धर्म प्रभावना कर रहे थे। गुरुदेव शामली पधारे। वहाँ स्थानकवासी समाज जडें पकड़ रहा था। एक धर्मशाला में ठहरे। दो दिगम्बर मुनियों का भी मिलन हुआ। साथ प्रवचन हुआ। उस मौके श्री नरेश मुनि जी म. दिल्ली प्रवास के बीच गुरुदेव के दर्शनों हेतु शामली पधारे। अद्भुत रचना लगी। स्थानक के लिए योजना स्थानीय संघ की योजना बनी।

यू.पी. से गुरुदेव का हरियाणा प्रवेश हुआ। सन् 1988 का चातुर्मास गन्नौर में हुआ। पन्द्रह वर्ष बाद फिर इस धरती को गुरुदेव का कृपा-प्रसाद मिला था। गुरुदेव प्रत्येक समाज की सुन्दरताओं को उजागर करते थे, इसलिए उन्होंने 'गन्नौर' शब्द की व्याख्या करते हुए फरमाया कि ये 'गुण+और=गन्नौर' अर्थात् अधिकाधिक गुणों को प्राप्त करने वाला क्षेत्र है। यहाँ पर गुरुदेव ने अपनी व मुनियों की शक्ति बालकों के निर्माण में लगाई। स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों को सामायिक, प्रतिक्रमण एवं बोल थोकड़े सिखाए। तपस्या का दायरा भी बढ़ा। घुटनों के दर्द के लिए डॉक्टर ने वर्जिश बताई। गुरुदेव करने की कोशिश करते। तो दूसरी कोई तकलीफ हो जाती और वर्जिश छूट जाती थी। चातुर्मास में वैरागी आदीश जैन ने 9 दिन का तपस्या की। सबको आश्चर्य-मिश्रित हर्ष था।

चातुर्मास के बाद सोनीपत में मुनि-मिलन हुआ। वैरागी आदीश जैन की जाखल में दीक्षा का भाव लेकर चले। जाखल दीक्षा पर गुरुदेव ने अपनी सारी ऊर्जा वैरागी को संस्कारवान् बनाने में लगाई। शेष सब कार्य

आत्मानुभाव/आगम वचन/धर्म कथा सुन-2 करके सामायिक आती है।
—गुरु सुदर्शन

मुनियों पर और समाज पर डाल दिया। दीक्षार्थी के अलावा भी गुरुदेव हर नए-पुराने मुनिराज को उत्तम संयम-धर्म में सावधान करते रहे।

जाखल दीक्षा पर सारे पंजाब में, विशेषतः लुधियाना में, बड़ा उत्साह था। वे चाहते थे कि दीक्षा पर लुधियाना से एक स्पेशल ट्रेन लेकर आएँ। गुरुदेव को पता लगा तो स्पष्ट इंकार कर दिया क्योंकि इन सब कार्यों से प्रतिस्पर्धाओं का जन्म होता है। पंजाब में श्रद्धेय श्री शास्त्री जी म. ने जो उपकार किया था, उसका स्पष्ट दर्शन जाखल में देखने का मिला। दीक्षा के दिन हैदराबाद से श्री हस्तीमल जी मुणोत विशेष रूप से जाखल आए। गुरुदेव के पास होने वाली दीक्षाओं पर जुड़ने वाली भारी भीड़ की चर्चा सुनकर उसे देखने के लिए वे हवाई जहाज से आए थे। उन्होंने सभा में भाषण भी दिया। वे दीक्षा की भीड़ से बहुत प्रभावित थे। उसी समय छपरौली (यू.पी.) से श्री मनोज कुमार भी श्री नरेश मुनि जी म. के साथ विहार करते हुए आए थे। उनकी भावना शीघ्र दीक्षा लेने की थी। दीक्षा-स्थल पर उन्होंने गुरुदेव से विनति भी की। गुरुदेव ने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की अनुकूलता देखते हुए स्वल्प-सी स्वीकृति प्रदान की।

जाखल-दीक्षा पर ही गुरुदेव ने श्रद्धेय श्री प्रकाश मुनि जी म., श्री राजेन्द्र मुनि जी म. आदि ठाणे तीन को राजस्थान गुजरात, महाराष्ट्र, बम्बई, मध्यप्रदेश की सुदीर्घ यात्रा पर जाने की अनुमति दी। जाते समय गुरुदेव ने उनको विशेष आदेश दिया, "जिस भी इलाके में विचरो उधर के प्रमुख मुनिराजों के दर्शन अवश्य करना। विशेष रूप से आचार्य श्री हस्तीमल जी म. सा., आचार्य श्री नाना लाल जी म., तपस्वीराज श्री चंपा लाल जी म. और आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी म. के मंगलमय आशीर्वाद जरूर लेना। सब के साथ मधुरता का व्यवहार करना। अपनी समाचारी से इधर-उधर नहीं होना। कोई साधु तुम्हें वंदना करे या न करे, इसे चर्चा या विवाद का विषय नहीं बनाना। सभी निर्णय परस्पर सहमति से लेना, आदि।" गुरुदेव ने तीनों को अपनी कृपादृष्टि से इतना निहाल

ज्ञान का रस होगा तो कभी भी गुरुओं की आशातना नहीं होगी।
—गुरु सुदर्शन

कर दिया कि लगता था कि अब इनके मार्ग में केवल फूल ही फूल बिछे मिलेंगे। कांटों को तो गुरुदेव ने चुन-2 कर अलग कर दिया था।

छपरौली दीक्षा का लक्ष्य बना तो गुरुदेव ने चातुर्मास का भाव भी उधर ही बना लिया। कांधला कभी चातुर्मास नहीं किया था। समाज की पुरजोर विनति थी, अतः 1989 के चातुर्मास की स्वीकृति कान्धला के लिए प्रदान की। गुरुदेव ने उस वर्ष कई लम्बे-2 विहार किए। कई बार एक दिन में दो-2 बार भी चले। नए-2 गाँवों में पड़ाव किए। एक छोटे से गाँव बुच्चाखेड़ी में ठहरे थे। वहीं पर अजमेर संघ अपने महामंत्री श्रीमान् जीतमल जी सा. चोपड़ा के साथ श्रद्धेय श्री प्रकाश मुनि जी म. के चातुर्मास की विनति लेकर आया। उनको चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की।

अजमेर-समाज ने मुनिराजों के विचरण की शोभा सुनाई, तो गुरुदेव जी म. बाग-2 हो गए। ब्यावर, पाली, जोधपुर जैसे कट्टरता के गढ़ों में उन्होंने समन्वय एवं प्रेम का ध्वज फहराया था। किसी को यकीन भी न आए, ऐसी उत्तम घटनाएं सुनाई गईं। ज्ञानगच्छ के श्री धींगड़मल जी जैसे मूर्धन्य श्रावक मुनियों के चरणों में विनति लेकर पहुँचे। अपने संघ से इतर स्थानकों में प्रवचन सुनने गए इत्यादि बातें उस इलाके की फिजाओं की तब्दीली को बता रही थीं। यहाँ उत्तर भारत में किसी भी संघ के मुनिराज आएँ, उन्हें गुरुदेव ने सिरमाथे उठाया। उन्हें स्नेह सम्मान से लाद लिया। समाचारी की भिन्नताओं को कभी आड़े नहीं आने दिया। उन्हें किसी प्रकार से परायापन अनुभव नहीं होने दिया। हर साधु-साध्वी ये प्रभाव लेकर गया था कि संत हों, तो ऐसे। उनके शीर्ष स्थानीय मुनिराजों में भी यही धारणा बनी। इसी के परिणाम स्वरूप हर मुख्य संघाधिपति ने तीनों मुनियों को सीमा से बाहर जाकर भी सम्मान दिया। भले ही वह सम्मान औपचारिक ही रहा हो। पर कट्टरता के दायरों में औपचारिक प्रेम भी बहुमूल्य प्रतीत

> विकार में फंसी आत्मा हानि/लाभ, पाप/पुण्य सब का भान भूल जाती है।
> —गुरु सुदर्शन

होता है। गुरुदेव जी म. ने अजमेर श्रीसंघ की झोली भरकर उन्हें निहाल किया।

गुरुदेव छपरौली पधारे। दीक्षा का भव्य कार्यक्रम हुआ। दीक्षा पश्चात् कांधला पदार्पण हुआ। श्री नरेश मुनि जी म. जो गुरुदेव से पूर्व शामली के लिए जाते हुए कांधला पधार गए थे उन्होंने गुरुदेव का चातुर्मासिक प्रवेश करवाया पर वहां उनको बुखार हो गया। एक दिन गुरुदेव ने अपनी पात्री के दूध को श्री नरेश मुनि जी म. को देते हुए फरमाया, "ले ये दूध, सारे चातुर्मास काम आएगा।" गुरु कृपा बरसी। ज्वर भी उतरा और इनका शामली चातुर्मास के लिए विहार भी हुआ। चातुर्मास में भी स्वास्थ्य पूर्णतः अनुकूल रहा।

कांधला में सारा चातुर्मास भीड़-भरा रहा। श्रद्धेय श्री शास्त्री जी म. का साथ होना भी भीड़ का एक कारण था। कांधला का जैनेतर समाज तो दर्शनार्थियों की कारें, मैटाडोर, बस आदि गिनते-2 थक गया था। यू. पी. में दीर्घ तपस्याओं का रिवाज कम था, पर यहाँ तो घर-2 में तपस्या के दीप जगमगाने लगे थे। ऋद्धिधर आचार्यों के समान गुरुदेव का अतिशय बन चुका था। सभी घरों में सेवा की तीव्र लगन थी। कांधला में जो तपस्याएँ हुई, उसका एक कारण मुनियों की तपस्या भी थी। तपस्वी श्री नरेन्द्र मुनि जी ने अपने जीवन का दूसरा मासखमण किया। उनका यह मासखमण भी पूज्य गुरुदेव की ही देन थी। तपस्या के ग्याहरवें दिन श्री नरेन्द्र मुनि जी ने गुरुदेव जी म. को कहा कि कल पारणे का भाव है। गुरुदेव ने पूछा, 'कोई कष्ट तो नहीं?' वे बोले, 'नहीं, कष्ट तो कुछ नहीं, बस यों ही'। गुरुदेव ने कुछ सोचकर कहा, 'यदि दिक्कत नहीं हो तो कल और कर ले'। उन्होंने अगले दिन का प्रत्याख्यान ले लिया। उसके बाद 31वें दिन तक मन वज्रवत् दृढ़ रहा। जब उन्होंने 1986 में उकलाना में पहला मासखमण किया था तब गुरुदेव के पत्र आते थे कि 'जब नरेन्द्रमुनि मेरे पास मासखमण करेगा, तब मैं खूब सेवा करूंगा'। गुरुदेव

> बहुत से पाप तो इसी वजह से होते हैं 'कौन देखता है' यह नहीं समझते कि वीतराग प्रभु/ हमारी स्वयं की आत्मा देखती है। —गुरु सुदर्शन

की वही भावना कांधला में साकार हुई। उनका आसन गुरुदेव खुद बिछाते, कपडों की प्रतिलेखना करते, वैयावृत्य करते, प्रातः प्रतिक्रमण से पूर्व काफी समय तक कमर सहलाते, पानी ठण्डा करते और खुद पिलाते। कोई संत उन्हें इन कार्यों से रोक नहीं सकता था। कोई रोकता तो गुरुदेव कह देते कि यदि मुझे तपस्वी की सेवा नहीं करने दोगे तो मेरा भी आज आहार का त्याग हो जाएगा। फिर किसकी हिम्मत थी कि जिद्द करता। अन्य मुनियों की तपस्या पर भी गुरुदेव ऐसे ही करते रहे। यहीं पर श्रद्धेय श्री शास्त्री जी म. की आँख के मोतियाबिन्द का आप्रेशन हुआ। दिल्ली के डॉ. पी. के. जैन ने स्थानक भवन में ही कर दिया। गुरुदेव ने श्री शास्त्री जी म. की परिचर्या का स्वयं ध्यान रखा। कमरे का विशुद्धिकरण करने हेतु गुरुदेव ने स्वयं सारे कक्ष में पोचा लगाया। वस्तुतः शिष्य बनाने से पूर्व उन्होंने अपने बड़ों की जो अविराम सेवा की थी, वही सेवा का रस उनको बार-2 सेवा के लिए प्रेरित करता था। आहार आदि के पात्र सूखे कराने के लिए भी गुरुदेव बहुधा बैठ जाते थे।

इससे और मुनि भी प्रेरणा पाते थे। वे गुरु होकर भी एक उत्कृष्ट नर्स थे।

जिसकी खुशबू में नहाए है ये दिन-रात मेरे,
अब सफर धूप का भी बारिश का मज़ा देता है ॥

एक दिन कांधला में लगभग पूरे पंजाब की ब्रादरियाँ पंजाब पधारने को विनति लेकर आई। सबको लगता था कि गुरुदेव स्वीकृति फरमा देंगे पर गुरुदेव ने फरमाया कि– "विचार करके बताया जाएगा।" बाद में बड़ौत में उन्होंने श्री शास्त्री जी म. को लुधियाना पधारने के लिए स्वीकृति फरमा दी। कांधला के पास चार-पाँच कि.मी. दूर 'गढ़-गोसाई' गाँव के कुछ भाई प्रतिदिन गुरुदेव के दर्शन करने आया करते। तपस्या भी करते थे। गुरुदेव ने एक दिन एक भाई को रोक लिया और कहा कि एक सन्त तुम्हारे घर फरसने जाएगा घर दिखा देना। वह भाई बड़ा

असत्य बात भी कभी-2 सत्य मान ली जाती है पर जीत आखिर सत्य की ही होती है।
—गुरु सुदर्शन

प्रसन्न हुआ, कहने लगा कि मैं अपने घर वालों को कह देता हूँ। गुरुदेव ने नियम करवा दिया कि इस विषय में कुछ नहीं कहना। जो सहज रूप में आहार मिलेगा, वही ले आएँगे। उस भाई के साथ सन्त गए। कई और घरों को भी लाभ दिया। सारे गाँव में लहर आ गई। सन्त कुछ बासी, बचा-खुचा आहार लाए। उनमें सबसे पहला ग्रास गुरुदेव ने अपने मुंह में डाला और कहने लगे कि यह बिल्कुल निर्दोष और भावना से भरा है।

कांधला चातुर्मास के अन्त में काफी अस्वस्थ होने के कारण गुरुदेव विहार नहीं कर सके। वहीं पर ज्ञानगच्छीय श्री बसन्ती मुनि जी, लक्ष्मी मुनि जी एवं धन्ना मुनि जी भी पधारे। उनके साथ भी गुरुदेव का बहुत ही भावना-पूर्ण मधुर सम्बन्ध रहा।

कांधला में उस वर्ष धुन्ध तथा ठण्ड का काफी प्रकोप रहा। एक दिन मौसम में बड़ी ठण्ड थी। गुरुदेव को ऐसा लगा कि अब मैं विहार कर सकता हूँ, तो उसी दिन विहार का भाव बना लिया। ये भी चिन्ता नहीं की कि कथा में अगले दिन घोषणा करके विहार कर दें हालांकि चार महीने से ऊपर का भव्य समय वहाँ बीता था।

बड़ौत शहर में ठहरे हुए थे। धुन्ध शुरू हो गई। वहाँ एक कमरे की छत में फाइबर ग्लास की ईंट लगी थी। इससे सीधे आसमानी रोशनी कमरे में आती थी। गुरुदेव उसी कमरे में धुन्ध के कारण मुंह ढके बैठे थे। एक युवक आया और दर्शन करके चला गया। घर जाकर उसने कहा कि गुरुदेव श्री सुदर्शन मुनि जी म. भी अब बिजली का प्रयोग करने लगे हैं। मैं खुद देखकर आया हूँ। घर वाले उसके साथ पुनः स्थानक में आए। कमरे में रोशनी देखी। कारण पूछा तो सन्तों ने बताया कि यह रोशनी बिजली की नहीं, छत से आसमान की आ रही है। तब उसकी शंका निर्मूल हुई। उस प्रसंग में गुरुदेव ने फरमाया कि 'शंका सम्यक्त्व का नाश कर देती है। इन्होंने अपनी शंका का निवारण कर लिया तो ठीक हो गया वर्ना न जाने किस भ्रान्ति और अशान्ति का शिकार हो जाते'।

मांसाहारी/शराबी एवं समाज का पैसा खाने वाले लोग समाज पर बदनुमा दाग हैं।
—गुरु सुदर्शन

बड़ौत से गुरुदेव सोनीपत पधारे। 19 मुनि एकत्र हुए। मुनियों का वहाँ प्रथम प्रवेश भी 19 जनवरी को ही हुआ था। ऐसा संयोग बना कि वहाँ जाते ही गुरुदेव को छोड़कर प्रायः सभी सन्तों को खाँसी और बुखार ने घेर लिया। एक-2 समय में दस-2 मुनियों के आसन बिछे रहते। गुरुदेव जी म. ने स्वयं अपनी देखरेख में मुनियों की सेवा, दवा और परिचर्या की व्यवस्था संभाली।

गुरुदेव ने स्वास्थ्य को देखते हुए छोटे क्षेत्र का चयन किया। इसलिए सन् 1990 का चातुर्मास नरवाना श्रीसंघ को मिला। सोनीपत से गुरुदेव गोहाना होकर रोहतक पधारे। मार्ग में गुमाणा गाँव के चौधरी महावीर सिंह जी के सुपुत्र रोहतास जी वैरागी रूप में आए। जीन्द-वासियों को भरपूर करते हुए गुरुदेव नरवाणा पधारे।

नरवाणा छोटा क्षेत्र था। पर सैंकडों-हजारों दर्शनार्थियों के निरन्तर आगमन से छोटा न रहकर जैन समाज के लिए राजधानी बन गया था। उन दिनों में 'मण्डल कमीशन' के कारण देश भर में जाति आधारित आरक्षण की आग भड़की हुई थी। हरियाणा उनमें अग्रणी था। नरवाणा में भी कुछ उपद्रवी तत्त्व सक्रिय थे, पर गुरुदेव की शीतल छाया तले स्थानीय जैन समाज, श्रद्धालु-गण व किसी दर्शनार्थी का बाल तक बाँका नहीं हुआ। समाज के हर भाई बहन को गुरुदेव से सच्चा व निश्छल स्नेह मिला। श्री कृष्णगोपाल जी जैसे विख्यात आर्य समाजी नेता को स्थानक में सेवा करते, थाली मांजते, जूते एक ओर रखते हुए लोगों ने देखा तो दंग रह गए। श्री कृष्ण गोपाल जी बड़े दिलेर और भावुक गुरु भक्त हैं।

इसी चातुर्मास की बात है। एक दिन श्री राकेश मुनि जी ने गुरुदेव को निवेदन किया कि मुझे स्वप्न में बन्दर दिखते हैं। घुड़की डालते हैं। मैं डरकर उठ जाता हूँ। गुरुदेव ने उनके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा कि हर मंगलवार को आहार करते समय पहले अपने आहार में से मुझे

> शंका का इलाज चिंतन से ही होता है।
>
> —गुरु सुदर्शन

कुछ लेने की विनति कर लिया कर। 3-4 बार विनति की होगी फिर कभी बन्दर नहीं दिखे।

नरवाणा चातुर्मास की सानन्द सम्पूर्ति के बाद गुरुदेव जाखल पधारे। पूज्यपाद श्री सेठ जी म., श्रद्धेय श्री रामप्रसाद जी म. से मधुर-मिलन हुआ। अन्य मुनिराज भी दूर-2 से विहार करके पधारे।

गुरुदेव सुनाम पधारे। वहाँ पर जलगाँव (महाराष्ट्र) के प्रमुख श्री रतनलाल जी बाफणा के नेतृत्व में एक शिष्टमण्डल आया। उन्होंने श्रद्धेय श्री प्रकाश मुनि जी म. ठाणे 3 के चातुर्मास का जो आँखों देखा हॉल सुनाया, उसे सुनकर गुरुदेव गद्गद हो गए। गुरुदेव के भी महान् जीवन को देखकर महाराष्ट्रीय श्रावकों की श्रद्धा शत-सहस्र गुणित हो गई। गुरुदेव का प्रवचन सुनकर सबने कहा कि 'इतनी अवस्था में भी हमने किसी अचार्य या संघ-प्रमुख को इतनी महती धर्मप्रभावना करते हुए नहीं देखा'। गुरुदेव की असाम्प्रदायिक दृष्टि का भी सब पर गहन प्रभाव पड़ा।

मानसा पहुँचते-2 गुरुदेव की गर्दन में सर्वाइकल का भयंकर दर्द शुरू हो गया। इसके लिए सेक आदि की कई निर्दोष विधियाँ अपनाई गईं पर फर्क नहीं पड़ा। वहाँ से बुढलाडा, रतिया होते हुए उकलाना पधारे। वहीं से गुरुदेव की सेवा उपचार का अधिकांश भार श्री आदीश मुनि जी के सबल कन्धों पर आ गया।

वहाँ से सुराणा खेड़ी पधारे। छोटा-सा गाँव था। गुरुदेव के पधारने की खुशी में एक परिवार ने बहुत बड़ी जमीन स्थानक को दान में दे दी। होली चातुर्मासी पर वहाँ का रंग अपूर्व और निराला था। सामायिकों की झड़ी लगी हुई थी।

जीन्द आने के बाद गुरुदेव ने गर्दन के दर्द को देखते हुए प्रवचन से विराम ले लिया। सर्वाइकल दर्द के लिए वर्जिश, कालर, तेल, मरहम,

भाषा जितनी मृदु एवं मधुर होगी उतनी ही संयम की आराधना एवं प्रेम उत्पन्न करेगी।
—गुरु सुदर्शन

खिंचाव तथा एक्यूप्रेशर आदि कई उपचार लिए, पर असाता-वेदनीय का उदय तीव्र था। कथा न करने पर भी जीन्द गुरुदेव की उपस्थिति-मात्र से ही जागृत रहता है। श्री नरेश मुनि जी म. लुधियाना, अंबाला, कैथल के लंबे-2 विहार करके गुरुदेव के चरणों में जीन्द पधारे। कुछ दिन ठहर कर बड़ौत चौमास के लिए विहार किया। महावीर-जयन्ती के उपलक्ष्य में 108 तेले लिखे गए, पर 250 से अधिक हो गए। मुनियों ने भी किए। श्री जय मुनि जी ने भी दो तेलों का लाभ लिया।

सन् 1991 का चातुर्मास सोनीपत के लिए स्वीकृत हुआ। जीन्द से विहार करके एक गाँव में रुके। पटियाला से नसों के विशेषज्ञ डॉ. रमेश जैन आए। उन्होंने गुरुदेव का कुछ उपचार किया। गुरुदेव ने पहली बार कुछ राहत महसूस की। वहाँ से बुटाना पधारे। वहीं पता लगा कि निमाज में आचार्य-प्रवर श्री हस्तीमल जी म. ने संथारा ग्रहण कर लिया है। गुरुदेव ने तभी भाव-भक्ति-पूर्ण पत्र लिखाया। उनके प्रति गुरुदेव विशेष श्रद्धा, लगाव और आत्मीयता का भाव रखते थे। उनसे मिलना तो केवल एक ही बार हुआ था, लेकिन–

'छोड़ जाता है कोई चेहरा दिल पे कुछ ऐसे निशां,
देर लगती है जिन्हें दिल से मिटाने में'।

प्रवचनों में उनसे सम्बन्धित प्रसंग सुनाते और संथारे की बात तो गुरुदेव का सबसे प्रिय विषय था। श्री तपस्वी जी म. के देवलोक के पश्चात् गुरुदेव की समग्र चेतना अन्तर्मुखी बन गई थी। हमेशा यही ध्यान रहता था कि उनकी तरह मैं भी सर्वथा निःशल्य होकर संसार से विदा होऊँ। गोहाना पहुँच कर आचार्य श्री के संथारे की पूर्ति का समाचार मिला। कायोत्सर्ग किया। गुण स्तुति करके उनकी स्मृति में पत्र लिखवाया। 10 मई को श्री जग्गूमल जी म. का देवलोक-गमन दिवस था। प्रथम बार ही उनके लिए गुरुदेव ने स्मृति दिवस रखा। गुरुदेव की कथाओं में पूर्व पुरुषों के गुण-कीर्तन का मुख्य अंश होता था। पंजाब

अंतःकरण/अंतरात्मा से बनाया गया गुरु ही कल्याणकारी होता है।
–गुरु सुदर्शन

का भ्रमण कर श्री शास्त्री जी म. गोहाना पधारे। श्री सुनील मुनि जी म. भी उनके साथ थे। एक दिन गुरुदेव जी म. ने श्री सुनील मुनि जी म. को कहा— 'तुमने पटियाला में कुमारी रुचि जैन एवं चिर. पुनीत जैन के लिए जो कविताएँ लिखी थीं, वो मैंने भी सुनी हैं। उनको सुनकर मेरा मन कहता है 'तू चाहे तो भगवान् महावीर के जीवन को भी काव्य-रूप में लिख सकता है।' गुरुदेव ने तो कृपा कर दी पर उस समय श्री सुनील मुनि जी म. का आत्मविश्वास नहीं बना। अन्ततः 1999 में श्री नरेन्द्र मुनि जी म. की प्रेरणा हुई और श्री सुनील मुनि जी म. ने भगवान् महावीर के जीवन को काव्यबद्ध किया और एक स्तरीय रचना के रूप में उसे प्रतिष्ठा मिली। गुरुदेव जी म. ने तो 8 साल पहले ही भूमिका तैयार कर दी थी। इसी तरह सन् 1988 में गुरुदेव जी म. गन्नौर में विराजमान थे, शाम को चर्चा चल रही थी कि गांधी नगर में श्री नरेश मुनि जी म. ने सैंकड़ों को प्रतिक्रमण याद करवाएं हैं तो गुरुदेव जी म. ने फरमाया कि ये काम तो सुनील मुनि भी कर सकता है। बीज-वपन हो गया और परिणति हुई सन् 2000 में। समालखा में श्री राकेश मुनि जी म. की नेश्राय में उन्होंने कई बच्चों को प्रतिक्रमण याद करवाए। प्रतिक्रमण में प्रचलित कुछ पाठों की त्रुटियां शुद्ध की और करवाई। अगले वर्ष भी इसी तरह अनेकों बालकों, युवकों को सुनाम में महास्थविर श्री प्रकाश मुनि जी म. के सान्निध्य में प्रतिक्रमण याद करवाए। उनके याद करवाने की दो विशेषताएंः 1. कोई ईनाम या पारितोषिक का प्रलोभन नहीं होता। 2. याद करने वाले बाद में भी प्रतिक्रमण को चालू रखते हैं। मूल शक्ति तो गुरुदेव जी म. की ही है।

गोहाना से विहार करके 20 मई 1991 को गुरुदेव एक गाँव दमकन खेड़ी में ठहरे। एक जाट भाई का घर था। लोकसभा चुनावों का समय था। एक पोस्टर पर श्रीमती इंदिरा गांधी एवं राजीव गांधी का फोटो था। गुरुदेव के मन में अज्ञात लोकों से कोई सन्देश कौंधा। अचानक ही श्री जय मुनि जी म. को सम्बोधित करते हुए बोले, 'देख जय, ऐसा

धर्म करना/कराना/प्रेरणा देना कर्म निर्जरा का हेतु है।
—गुरु सुदर्शन

लगता है, मानो इंदिरा गांधी राजीव गांधी को बुला रही है।' सन्तों ने ये सुना पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। उसी रात को श्री पेरम्बुदुर में राजीव गांधी की मानव-बम की सहायता से हत्या कर दी गई। गुरुदेव को अगली प्रातः विहार में किसी ने समाचार सुनाया। पर गुरुदेव तो उस समाचार को 20 घंटे पहले ही सन्तों में प्रसारित कर चुके थे।

वहाँ से सोनीपत पधारे। पहले एक कल्प सैक्टर 15-16 में लगाया। जिस कोठी में गुरुदेव विराजे उसमें हवा आदि का कोई बढ़िया साधन नहीं था। पर गुरुदेव सर्दी, गर्मी सहने के अभ्यासी थे। उस समय सैक्टर में बहुत कम जैन परिवार थे। शारीरिक रोगों की परवाह न करते हुए गुरुदेव अपने स्वाध्याय में लीन रहते। पुस्तकें पढ़ते रहना उनको बहुत भाता था। छोटे मुनियों से शास्त्र सुनते। उन्होंने जो याद किया है, उसका पारायण कराते तथा वैरागियों की पढ़ाई की पूरी पड़ताल करते। दूर-2 विहरणशील मुनियों को स्वयं पत्र लिखते।

उस वर्ष राजाखेड़ी गाँव में श्री नरेश मुनि जी एवं श्री मनोज मुनि जी को पीलिया हो गया था, अतः गुरुदेव ने उनकी सेवा में श्री सत्यप्रकाश जी म. तथा श्री अचल मुनि जी म. को भेज दिया। वे ठीक हुए तो दिल्ली से श्री शास्त्री जी म. के स्वास्थ्य के विषय में चिन्ताजनक समाचार आए। उनको कई महीनों से पैरों में सुन्नता और कई बार चलते-2 गिर जाने की तकलीफ हो गई थी। कुछ डॉक्टरों ने आप्रेशन का विचार बनाया। गुरुदेव ने सुनते ही बिना विलम्ब किए श्री जयमुनि जी म. एवं श्री मुकेश मुनि जी को दिल्ली रवाना कर दिया। गुरुदेव ने उस समय अपनी खुद की चातुर्मासिक आवश्यकताओं को दर-किनार कर दिया। सेवा की जरूरत हो तो गुरुदेव अपनी जरूरतों को एकदम गौण कर देते थे। श्री सत्य प्रकाश मुनि जी को राजाखेड़ी से वापस बुलाया। इधर दिल्ली में दूसरे बड़े डाक्टरों ने आप्रेशन की मनाही कर दी। बीमारी दवाओं से ही साध्य थी। दोनों सन्त दिल्ली के

धर्म में जीवन की कसौटी- अच्छाई/बुराई दोनों भूलना है।
—गुरु सुदर्शन

बीच रास्ते से वापिस लौट आए। गुरुदेव की बलिदानी वृत्ति का ऋण कोई उतार नहीं सकता।

दिल्ली महासंघ की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी गुरु चरणों में उपस्थित हुई। उन्होंने शारीरिक उपचार के लिए गुरुदेव से दिल्ली पधारने की प्रार्थना की। गुरुदेव ने फरमाया कि उपचार के लिए जाने की भावना नहीं है, प्रचार की अभी मेरी पोजीशन नहीं है। वैसे तो दिल्ली पास है पर मन तैयार नहीं है, अतः दूर है।

गुरुदेव के सर्वाइकल दर्द के उपशमनार्थ दिल्ली से सुश्रावक श्री एम. एल. जैन और श्री राधेश्यामजी एक डॉ. साहनी सा. को भी लाए। कई बार उनका आगमन हुआ। यों तो एम.एल. जैन (मनोहर लाल जी) पहले भी गुरुदेव के दर्शनों का लाभ लेते रहे हैं पर 1991 से तो उनका हृदय आत्मा और समग्र जीवन ही गुरुदेव के प्रति समर्पित हो गया था। उनकी धर्मसहाया श्राविका संतोष जैन की सुप्त काव्य-प्रतिभा का जागरण हुआ। स्तरीय कविताओं का प्रणयन एवं गायन करके उन्होंने अपनी श्रद्धा को गुरु-चरणों में भेंट किया। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब के कितने ही नव निर्मित जैन स्थानक श्री एम.एल. जैन के बताए आर्किटेक्चर की देन हैं। डॉ. साहनी, डॉ. कौशिक और अन्य होम्यों. चिकित्सकों की निःशुल्क सेवाएं पेश करके इन्होंने जिन-शासन की वैयावृत्य धारणा को मूर्त रूप दिया है।

सोनीपत चातुर्मास के प्रारम्भ में ही गुरुदेव ने फरमा दिया कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है, अतः कथा नहीं कर सकूँगा। मुनियों को भी फरमाया कि मेरी सेवा आदीश मुनि संभाल लेगा, तुम श्रावकों को ज्ञान-ध्यान सिखाओ। दोपहर बाद बच्चों की क्लास लगती थी। उसमें 100 के लगभग बालक आते थे। उन्हें काफी कुछ याद कराया गया। 40-50 बच्चों को जबानी आनुपूर्वी याद हो गई थी। प्रवचन के तत्काल बाद 10-15 प्रबुद्ध श्रावक कर्मग्रन्थ तथा अन्य गंभीर शास्त्र सारे

आत्म शुद्धि का मार्ग बड़ा कठिन है, गंभीर है, संकरा है।

—गुरु सुदर्शन

चातुर्मास पढ़ते रहे। 30-40 भाई बहनों ने सुविस्तृत रूप से समझकर 12 व्रतों के पच्चक्खाण लिए। मात्र संख्या-वृद्धि के लिए ही किसी को व्रत नहीं दिलाए गए। गुरुदेव प्रमाणिक श्रावकों के निर्माण में विश्वास रखते थे। संख्याओं के रिकार्ड बनाने में नहीं।

वैसे तो सोनीपत शुरू से ही तपस्वी क्षेत्र रहा है पर इस वर्ष और भी अधिक तपस्याएँ हुईं। श्री शांति चन्द्र जी म. की प्रबल प्रेरणा भी उसमें एक निमित्त थी। पर्यूषणों से पूर्व श्री जयमुनि जी म. ने गुरुदेव से निवेदन किया कि 'मैंने सन् 1975 के बाद कभी अठाई नहीं की। यदि आपकी आज्ञा हो तो इस साल कर लूँ'। ये शब्द सुनकर गुरुदेव ने उन्हें पर्यूषण पर्वों में व्याख्यान की जिम्मेवारी से मुक्त कर दिया, पर साथ ही कहा, 'तू कोशिश कर ले, मैं मना नहीं करता, पर तुझसे होगी नहीं'। उन्होंने तपस्या शुरू कर दी। श्री शांति मुनि जी म. ने कथा संभाली। तपस्या ठीक चल रही थी पर तेले की शाम को ही पेट में पित्त बन गई। वमन शुरू हो गया और अगले दिन पारणा करना पड़ा। गुरुदेव से उन्होंने कहा कि आपने तो पहले ही फरमा दिया था। बोले– 'मुझे तेरे शरीर का पता है'। उसी दिन कथा में श्रद्धेय श्री शांति चन्द्र जी म. का गला जवाब दे गया और कथा फिर श्री जयमुनि जी म. ने संभाली। गुरुदेव की बातों का रहस्य समझना बड़ा कठिन था।

श्री नवीन मुनि जी का शरीर अत्यन्त दुर्बल है। उनकी इच्छा हुई कि मैं अठाई करूँ। गुरुदेव से आज्ञा मांगी। वे बोले– 'कर ले, हो जाएगी। पर जरा हिम्मत रखना।' और कमाल हो गया, कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। उनकी अठाई हो गई। कष्ट आया पर गुरुदेव ने हिम्मत दी और लक्ष्य पूर्ण हुआ। साथ ही शरीर के रोग भी शांत हो गए।

चातुर्मास के अंत में गुरुदेव ने अपनी पुरानी शैली में, ऊँची आवाज में, स्वाभाविक लहर में, जोशीला प्रवचन फरमाया। कहने लगे, 'सोनीपत वालो! ये न समझ लेना कि मैंने कथा बिल्कुल बन्द कर दी है। शेर अभी

मन में बुराई/बुरे भाव आएं तो गुरु का स्मरण करें, सत्साहित्य पढ़ें, अवश्य शुद्धि होगी।
–गुरु सुदर्शन

बूढ़ा ही हुआ है, पर इसका दहाड़ना बन्द नहीं हुआ।" सुनकर श्रोता बहुत हँसे। बाग-2 हो गए। डॉक्टरों एवं मुनियों की सेवा रंग लाई और सर्वाइकल में आराम मिला।

तपस्वीराज-स्तुति

हे जीवन सर्वस्व हमारे, दयाशील भक्तों के प्यारे।
तपोधनी संयम की प्रतिमा, नहीं तुम्हारी मिलती उपमा॥

निर्बल देह सबल आत्मा थी, मलिन देह निर्मल आत्मा थी।
मयाराम-गण-कमल-विकासी, मदन गुरू के अन्तेवासी॥

गुरुओं से जो कुछ था पाया, उस पर जीवन सभी लगाया।
सिंह-सरीखा मन निर्भय था, चींटी पर भी करुणामय था॥

गुरु-भ्राता मुनिराज सुदर्शन, एकमेक था दोनों का मन।
दोनों की ये ही इच्छा थी, मुनियों में हो संयम-वृद्धि॥

धर्म-संघ में धर्म-क्रान्ति हो, धर्म-ध्यान हो प्रेम-शान्ति हो।
श्रमण-सूर्य पर संध्या आई, बढ़ती गई और अरुणाई॥

चढ़ते भावों से संथारा, करके निज आत्मा को तारा।
वन्दन करते हम सब मिलकर, जय-जय मुनिवर जय-जय गुरुवर॥

गुरु आज्ञा में कहीं न कहीं शिष्य का हित छुपा होता है।
—गुरु सुदर्शन

9. दिल्ली में लगा दरबार

गुरुदेव सोनीपत से गोहाना होकर रोहतक पधारे। वहाँ एक अद्भुत निर्णय लिया कि इस वर्ष दिल्ली फरसनी है। श्रद्धेय श्री शास्त्री जी म. की बीमारी भी गुरुदेव को दिल्ली बुलाने का एक कारण बनी। प्रशांत विहार में उनके दिल पर कुछ असर हो गया था। विख्यात हृदय-रोग-चिकित्सक डॉ. बिमित जैन ने उनकी पूरी सार-संभाल की। गुरुदेव के दिल्ली-आगमन की घोषणा सुनकर सारी दिल्ली में जोश आ गया। इसका प्रथम दर्शन हरियाणा के सीमावर्ती नगर बहादुरगढ़ में ही हो गया, जहाँ पर बिना किसी विज्ञापन, पोस्टर या हैण्डबिल को प्रसारित किए हजारों की भीड़ हो गई। लोग स्वागत की योजनाएँ बनाने लगे, पर गुरुदेव ने स्पष्ट कर दिया कि कहीं पर झण्डे और झण्डियाँ न लगें। कहीं चूना न डाला जाए और कहीं माईक न लगाए जाएं। स्वागत-द्वार, पोस्टर और अखबारी विज्ञापनों के लिए भी निषेध कर दिया। दिल्लीवासी सब मानने के लिए तैयार थे, उन्हें तो बस गुरुदेव ही चाहिए थे। एक हाथ मुनियों के कंधे पर रखे और एक हाथ से बैंत का सहारा लिए, दुखते घुटनों के साथ जैसे ही गुरुदेव ने दिल्ली में कदम रखा, सर्वत्र ही धर्म का ज्वार उमड़ने लगा। गुरुदेव का शरीर थका-थका जरूर था पर उनके अदम्य मनोबल, प्रखर स्मरण-शक्ति, सर्वग्राही वात्सल्य, अटल संयम-निष्ठा एवं शान्तिमय सन्देश ने सारी दिल्ली पर जादू का असर करना शुरू कर दिया। कुछ उत्साही युवक प्रतिदिन विहार में साथ चलने लगे। सर्वश्री सुलेख जी, सुरेश जी, शान्ति जी, सतपाल जी, फतेह चन्द जी आदि नव-युवकों ने विहार-यात्रा को जिस तरह सरल और सफल बनाया, उसे एक मिसाल के रूप में पेश कर सकते हैं। सूर्योदय के पूर्व ही शालीमार के श्रावक श्री श्रीचन्द जी के नेतृत्व में गुरु-दर्शन-मण्डल ने प्रतिदिन दर्शन किए। प्रमुख गुरुभक्त श्री कश्मीरीलाल जी 'झण्डा' हर रोज प्रवचन से पूर्व

कुलीन व्यक्ति गलत काम करने में अवश्य संकोच करेगा।

—गुरु सुदर्शन

गुरु-चरण में पहुँचते थे। चाहे गुरुदेव कितनी भी दूर, किसी भी गली मुहल्ले में हों तथा मौसम कैसा भी हो। सतीश जी (खेड़ी वाले) एवं विजय जी (जालंधर वाले) आदि का प्रतिदिन किसी भी समय आने का नित्यक्रम था। सैकड़ों भाई-बहन प्रतिदिन अन्य क्षेत्रों से रुटीन में आकर दर्शन-लाभ और प्रवचन-लाभ लेते थे। 14 जनवरी 1992 को नांगलोई में पावन प्रवेश हुआ। उन दो दिनों की भीड़ ने ही संकेत दे दिया कि अपने प्रभु राम की प्रतीक्षा में शबरी किस तरह हर क्षेत्र में आँखें बिछाए बैठी है। युग-पुरुष का धर्म-चक्र, संघशास्ता का सुदर्शन चक्र धर्म की जय और पापों का क्षय करता हुआ अविराम गति से आगे बढ़ने लगा।

सुना है तेरे दर पर बदलती है तकदीरें।
हाजिर है हर कोई अपना मुक्कद्दर लिए हुए ॥

न्यू मुल्तान नगर में 18 जनवरी को गुरुदेव का 50वाँ दीक्षा दिवस था, या यों कहिए कि दीक्षा की स्वर्ण-जयन्ती थी। गुरुदेव जैसे लब्ध-प्रतिष्ठ, आचार्य-कल्प महामुनिराज के लिए ये प्रसंग राष्ट्रीय महत्त्व का होना चाहिए था, पर गुरुदेव ने उस दिन सब संतों को विशेष निर्देश दिया कि कथा में या एकान्त में इस विषय का कोई उल्लेख नहीं करना। प्रातः प्रतिक्रमण से पूर्व सभी मुनिवरों ने भिन्न-भिन्न प्रत्याख्यान लिए। सभी प्रत्याख्यान इतनी गम्भीरता से लिए गए कि लगता था आगामी वर्ष हर मुनिराज के लिए परम सुखकारी और कर्म-निर्जरा-वर्धक बनेगा।

26 जनवरी को अरिहन्त नगर में मध्याह्न-कालीन समवसरण चौथे आरे में तीर्थंकर भगवन्तों के समवसरण की याद दिला रहा था। भक्तगण जब भक्तिवशात् गुरुदेवों की धर्मप्रभावना की तुलना तीर्थंकरों के युग से करने लगते तो गुरुदेव बीच में ही रोक देते, ये कहते कि 'मैं तो एक साधारण-सा सन्त हूँ। मुझे सन्त ही रहने दो। असाधारण व्यक्तित्व के धनी गुरुदेव साधारण रहकर ही असाधारण बने थे। एक दिन गुजरात

केवल कमाने पर व्यक्ति काला/भारी/श्याम होता है पर दान देने पर हल्का/उज्ज्वल होता है।
—गुरु सुदर्शन

अपार्टमैन्ट से गुरुदेव अचानक ही मुनि सत्यप्रकाश जी के साथ रोहिणी सैक्टर तीन पधार गये और वहां श्री शास्त्री जी म. को दर्शन देकर सब को तृप्त, सन्तृप्त और आश्चर्यचकित कर दिया। गुजरात-अपार्टमैन्ट में गुरुदेव ने गुजराती बंधुओं को गुजराती भाषा का प्राचीन भजन सुनाकर भाव-विभोर कर दिया। गुजराती संस्कार और संस्कृति से गुरुदेव सन् 1950 के दशक से ही परिचित थे।

गुरुदेव का 16 फरवरी का रविवार पीतमपुरा लगाना स्वीकृत हुआ। वहाँ पर वयोवृद्ध महास्थविर श्री रामकिशन जी म. से मधुर-मिलन हुआ। काफी वर्षों के बाद ये सुखद संयोग बना था।

शालीमार में आगमन किसी उत्सव या मेले से कम नहीं था। इससे पहले हर क्षेत्र में प्रवचन के पश्चात् स्थानीय लोग नीचे का द्वार बन्द कर देते थे और स्थानीय या बाहर के श्रोताओं को भोजन करने के उपरान्त ही जाने देते थे। इससे समाज पर भी अतिरिक्त बोझ पड़ता था। रोज के दर्शनार्थियों को भी संकोच होता था और उनका समय भी बर्बाद होता था। गुरुदेव ने शालीमार बाग में प्रवचन में आगे के लिए सभी श्रीसंघों को आदेश दिया कि कोई भी संघ प्रवचन के पश्चात् किसी को खाना खाने के लिए जबरदस्ती न करे, न ही गेट बन्द करे। सभी ने इस आदेश को सविनय स्वीकार किया। वजीरपुर औद्योगिक क्षेत्र में गुरुदेव ने मद्यपान के विरोध में खड़े होने की प्रेरणा दी। अशोक विहार में गुरुदेव पधारे। वहां का विशाल प्रवचन-हाल ऊपर-नीचे खचाखच भरा था। प्रो. रतन जैन ने अपने भाषण में श्रोताओं से प्रश्न करते हुए पूछा कि जिन स्थानकों में कभी श्रावक ही नहीं दिखाई देते थे आज वे ही छोटी क्यों पड़ रही है? फिर स्वयं ही इसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि 'यह सब संयम का चमत्कार है। गुरुदेव की कथनी और करनी की एकरूपता ने उत्तर भारत की आस्थाओं का आलम्बन दिया है'।

त्रिनगर में होली-चौमासी की गई। वहाँ पर रौनकों एवं तपस्याओं

बिगड़ी बात को ठीक करना ही बुजुर्ग का काम है।

—गुरु सुदर्शन

का अंबार था। गुरुदेव ने अपना सन् 1992 का चातुर्मास शालीमार बाग दिल्ली के लिए स्वीकृत किया।

जब गुरुदेव उत्तमनगर पधारे, तो एक हृदय-विदारक समाचार मिला कि श्रमण-संघ के द्वितीय पट्टधर, आचार्य सम्राट् श्री आनन्द ऋषि जी म. का समाधि-मरण हो गया है। आचार्य श्री के सम्मान में रविवार का प्रवचन बन्द रखा गया। विशाल जन-समुदाय को नमोकार मंत्र के जाप की प्रेरणा दी और उनके देह-संस्कार के पश्चात् श्रद्धांजलि सभा रखी। आत्म-अनुभूतियों के आधार पर आचार्य श्री के मुनि-परिवार को संवेदना-पत्र लिखाया। अगले रविवार को पुनः इन्द्रपुरी में आचार्य श्री के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। श्रोताओं ने अनुमान किया कि भले ही ये श्रमण-संघ में नहीं हैं, पर उनके गुणों के सच्चे पारखी और प्रशंसक हैं।

विहार-यात्रा में गुरुदेव कई घरों/मोहल्लों में दर्शन देने पधारते। उनको सामायिक, शीलव्रत आदि के नियम कराते। एक प्रमुख जैन भाई ने गुरुदेव से विनति की कि 'यदि आप अनुमति दें तो मैं राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा को आपके पास लाना चाहता हूँ। उनसे मेरे अच्छे सम्बन्ध हैं तथा वे जैन धर्म के बड़े प्रशंसक और विद्वान् भी हैं। इससे आपके पास अच्छी भीड़ हो जाएगी'। गुरुदेव के स्पष्ट इंकार कर दिया कि 'हम इतने बड़े लोगों के लिए नहीं हैं। हम तो छोटे-2 श्रावकों में ही काम करना चाहते हैं। राजनीतिक लोगों से हमें कुछ लेना नहीं है। न उनके साथ फोटो खिंचवाने हैं, न उनसे कोई स्कूल की, हस्पताल की, सिलाई-सैन्टर की या अपने बड़ों के नाम के धाम या समाधि के लिए जगह की मांग करनी है। आप लोगों के अपने काम निकल जाते हैं, साधुओं का तो मात्र बहाना होता है।' गुरुदेव की बात सुनकर श्रावक शान्त और समाहित हो गया।

मुनीरका में रविवार का प्रवचन होना था। तभी ज्ञात हुआ कि मूनक में परम पूज्य पण्डित-रत्न श्री रणसिंह जी म. का स्वर्गवास हो गया।

दूसरे व्यक्ति यदि अपनी बुजुर्गाई को ध्यान में न रखें तो हर्फ पैदा होगा।
—गुरु सुदर्शन

प्रवचन बन्द रखा गया। गुरुदेव का चित्त काफी उद्विग्न रहा क्योंकि श्री पंडित जी म. ने पूज्य वाचस्पति गुरुदेव की बड़ी सेवा की थी। उनसे गहन, आत्मीय, सांघिक सम्बन्ध रहा था।

मुनीरका में ही स्थानकवासी कांफ्रेंस के तत्कालीन अध्यक्ष श्री पुखराज जी लुंकड़ गुरुदेव के दर्शनार्थ आए। गुरुदेव को उनका मिलना बड़ा अच्छा लगा। कई विषयों पर बातचीत हुई। जिस तरह गुरुदेव समाजोन्नति में अपना तन-मन होम रहे थे, उससे उन्हें काफी आश्चर्य हुआ। उन्होंने गुरुदेव से निवेदन किया कि 'अभी तो आपकी आवाज बुलन्द है, सारी सभा को सुनाई देती है। लेकिन बढ़ती उम्र के कारण यदि आवाज धीमी हो गई, तो फिर आप क्या करेंगे?' गुरुदेव मुस्कराए। वे समझ गए कि ये मुझसे ध्वनि-वर्धक यंत्र की अनिवार्यता को स्वीकार कराना चाहते हैं। पर गुरुदेव का चिन्तन तो हर विषय में स्पष्ट था। तुरन्त फरमाया, 'जब तक आप लोगों को सुनाई देगा सुनाते रहेंगे। जिस दिन जनता को सुनाई देने में दिक्कत आएगी उस दिन से अपने को सुनाएँगे। औरों को सुनाना हमारा लक्ष्य नहीं है। अंतिम लक्ष्य तो अपने को ही सुनाना है। यदि इसी निमित्त से कुछ धर्म की प्रभावना भी हो जाए तो सोने में सुहागा। आचार हमारा Compulsory Subject है, प्रचार तो Optional मात्र है'। श्री लुंकड़ जी संतुष्ट हुए। गुरुदेव की दृष्टि को समझा।

गुरुदेव ने नई दिल्ली और दक्षिणी दिल्ली के कई ऐसे इलाके भी फरसे, जो धन-धान्य की दृष्टि से सम्पन्न थे, पर धार्मिक दृष्टि से उपेक्षित थे। वहाँ पर प्रतिदिन ही रविवार जैसा माहौल होता था और रविवारों को पूर्यषणों जैसा। कालिन्दी कालोनी, फ्रेण्ड्स और न्यू फ्रेण्ड्स कालोनी आदि में चामत्कारिक रौनकें हुई। स्थान-2 पर गुरुदेव ने मुंहपत्ती की आवश्यकता पर बल दिया कि 'ये स्थानकवासी समाज की मूल धरोहर है, इसे लगाकर ही माला, सामायिक करनी चाहिए। सामायिक

पहले ज्ञान से श्रद्धा पैदा होती है तब इंद्रियों से संयम आता है।
—गुरु सुदर्शन

में वस्त्र-परिवर्तन भी आवश्यक है, वर्ना ये सामायिक नहीं, संवर है'। यमुना-पार के क्षेत्रों में भी असीम उपकार रहा। गुरुदेव के मुनिराजों में विशेषकर श्री नरेश मुनि जी म. ने उन क्षेत्रों के स्थानकवासी परिवारों में धार्मिक संस्कारों को दृढ़ता प्रदान की है। आज वहाँ गुरुदेव की कृपा से सैंकड़ों-हजारों युवक सामायिक करते हैं, स्वाध्याय-रुचि-सम्पन्न हैं, प्रवचन का लाभ लेते हैं और प्रतिक्रमण आदि के अभ्यासी हैं। हर छोटा-बड़ा स्थान अपने मसीहा को पाकर अपने भाग्य पर इतराने लगा। कबूल नगर में वर्षीतप के पारणे भी हुए। प्रतिवर्ष तपस्वियों की संख्या बढ़ने से लोक-मानस में गुरुदेव हस्तिनापुर तीर्थ के जंगम संस्करण बन चुके थे।

29 अप्रैल को गुरुदेव प्रीत विहार में पधारे। लाला सुखबीर सिंह जैन की निर्माणाधीन कोठी में ठहरे। प्रवचन साथ ही 'झंकार बैंकट हॉल' में हुआ। उसके मालिक श्री महेश कपूर जी थे। कभी जैन सन्तों के दर्शन नहीं किए थे। स्वयं भी मांसाहारी थे तथा बैंकट हॉल भी मांसाहारी पार्टियों के लिए मशहूर था। गुरुदेव के वहाँ ऐसे चरण पड़े कि न केवल कपूर सा. स्वयं शुद्ध शाकाहारी बने अपितु अपने बैंकट हॉल को भी विशुद्ध शाकाहारी बना दिया। पुराने बर्तन तक बेच डाले। धीर-धीरे उनका यश भी बढ़ा, आय भी बढ़ी और प्रभाव भी बढ़ा। हजारों पशुओं को जीवन-दान देने का सुफल ये निकला कि तीन कन्याओं के बाद घर में एक पुत्र-रत्न ने जन्म लिया। शाकाहार में उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें सन् 1997 में राष्ट्रपति से National Citizen Award भी मिला। ऐसी-2 मंगल-सुमंगल रचनाएँ गुरुदेव के विचरण से हुई।

चाँदनी चौंक में गुरुदेव का पधारना एक तरह से 'पीहर' आने के तुल्य होता था। सुप्त-प्रायः क्षेत्र में नवीन जागृति आई। बम्बई से चातुर्मास सूची के सम्पादक श्री बाबू लाल जी 'उज्ज्वल' ने भी चाँदनी चौंक में गुरुदेव के दर्शन किए। प्रवचन सुनकर मन्त्र-मुग्ध हो गए। कई

> बड़ों की विनय/तप/शील पालन संकट निवारण का मंत्र है।
>
> —गुरु सुदर्शन

दिन तक आते रहे। उन्होंने अनुभव के आधार पर कहा कि 'मैं बड़े-2 तेजस्वी-प्रभावी आचार्यों के पास जाता हूँ, लेकिन शेष काल में इतनी बड़ी धर्म-परिषद् मैंने गुरुदेव के अतिरिक्त कहीं नहीं देखी। सामायिक करने वालों की भी इतनी विशाल संख्या समूचे भारत में मुझे देखने को नहीं मिली'! भक्ति-भाव से भरपूर होकर उस वर्ष की चातुर्मास-सूची का समर्पण उन्होंने गुरुदेव के नाम किया। गुरुदेव को ऐसे कार्यों में स्वल्पमात्र भी रुचि नहीं थी। पर 'उज्ज्वल' जी की श्रद्धा ही ऐसी थी।

गुरुदेव ने दिल्ली के जैन परिवारों में आहार-शुद्धि और आचार-शुद्धि का अभियान भी खूब चलाया। विवाह, शादी या अन्य समारोहों में सचित्त फूलों की सजावट, मांसाहारी होटलों में पार्टियों का आयोजन, पशु पक्षी की आकृति वाली सब्जियों को परोसना, भंगड़ा, शराब आदि इन सब बातों का इतने जोर शोर और जोश से विरोध किया कि दिल्ली की हवाओं में परिवर्तन की स्वर लहरियाँ गूंजने लगी। कई गुरुभक्तों ने नियम भी लिए और निभाए भी।

गुरुदेव का भाव रहता था कि हमारे कारण किसी साधु/सती को खेद न हो। किसी की कथा/आयोजन, रौनक में बाधा न आए। इसी भाव से गुरुदेव ने अशोक विहार में फरमाया कि सब भाई-बहन अपने-2 क्षेत्रों में ही धर्मलाभ लें। नांगलोई से शालीमार-प्रवेश तक की करीब 6 महीने की विहार-यात्रा का एक मनोहर भजन श्री राकेश मुनि जी ने हरियाणवी भाषा में संकलित किया था। वह इस प्रकार हैः—

(तर्ज— बात सुणो श्री मयाराम जी)

बड़े भाग तैं दिल्ली पधारे, जय हो गुरु सुदर्शन की।
गिणती करूँ इब जन-मन-रंजन भव-भय-भंजन विचरण की ॥टेक॥

1. चौदह जनवरी सन् 92 मैं नांगलोई मैं कर्‌या प्रवेश,
सण्डे न्यू मुल्तान नगर, फेर पश्चिम पुरी मैं था उपदेश।

गुरु पर यदि गुस्सा आए तो इसमें शिष्य की ही हानी है, लक्ष्मी रूठ जाती है।
—गुरु सुदर्शन

गणतंत्र-दिवस अरिहंत नगर मैं, गूंज्या वीर-प्रभु-सन्देश,
राणी बाग, गुजरात अपार्टमैंट क्षेत्र भी रह्या न शेष।
भीषण सर्दी में भी कृपाकरी, सरस्वती विहार के फरसन की ॥

2. सैक्टर तीन रोहिणी में श्री शास्त्री जी से हुआ संगम,
बुध विहार, अहिंसा विहार और सैक्टर आठ के खुले करम।
पुण्डरीक विहार, महावीर होस्पिटल मैं दिपाया जैन धरम,
भागीरथी, प्रशान्त विहार गए और रोहिणी हुई खतम।
पीतमपुर मैं खुशियाँ थी मुनि रामकिशन के दर्शन की ॥

3. कपिल विहार में कर प्रचार शालीमार की लॉट्री खोली,
वजीरपुरा, अशोक विहार, लारेंस रोड़ में जय बोली।
शास्त्री नगर, गुलाबी बाग, विवेकानन्द पुरी होली,
करोल बाग में गए सराए-रोहिल्ला ने भर ली झोली।
ईस्ट और वैस्ट पटेल नगर फिर प्रेमनगर में पदार्पण की ॥

4. त्री नगर के के कहणे, रुक्का-रौला-रौनक भारी,
पंजाबी बाग कर्मपुरा, राजौरी गार्डन भक्ति न्यारी।
चन्द्रनगर फेर आया खेतर उत्तम नगर धर्म-धारी,
पालम, नांगल, जनकपुरी फेर हरिनगर की हुई त्यारी।
मायापुरी, नारायणा, इन्द्रपुरी सत्य-शान्ति-निकेतन की ॥

5. ग्राम मुनीरका, कृष्णानगर और ग्रीनपार्क में लाया जोर।
ईस्ट कैलाश, कालिन्दी फरसी, मुड़े निजामुद्दीन की ओर।
कर्जन रोड़, गोल मार्किट फेर दरियागंज में माच्या शोर,
इक्कीस अप्रैल यमुना पार में, कृष्णानगर होया भाव-विभोर।
गोविन्दपुर, स्वास्थ्य-विहार, निर्माण-विहार मधुबन की ॥

6. लक्ष्मी-नगर, मयूर-विहार, और प्रीत-विहार, विवेक-विहार,
ऋषभ-विहार, शाहदरा, फिर विश्वास-नगर, रघुवर-पुर तार।
धर्मपुरा, गांधी नगर, कैलाश नगर, शास्त्री पार्क दिल धार,
गौतमपुरी, मौजपुर, यमुना-विहार भजनपुर फिर होए पार।
बी डी स्टेट, श्री राम रोड़ खुशी चाँदनी चौंक आगमन की ॥

अहं बने तब माईनस/डैसिमल मूल में लग जाता है।
—गुरु सुदर्शन

7. सदर गए फिर कोल्हापुर मैं रूप-नगर, राणा प्रताप,
वीरनगर, श्री शक्ति नगर और एक्सटेशन में ला दी छाप!
एस. एफ. एस., सतवती, बैंक कालोनी, डेरावल पधारे आप,
माडल-टाऊन, पंचवटी, मजलिस पार्क के धोए पाप!
शालीमार में नौ थी जुलाई, हुई पूरी भावना जन-जन की ॥

8. दो टोली में बारा ठाणे विचरे, हो गया बड़ा कमाल,
लगभग 90 जगहां गए, रौनक की कायम करी मिसाल।
थानक छोटे पड़गे, सहधर्मी सेवा के लागे स्टाल,
ना देखा ना सुण्या इसा दौरा, यू सब पब्लिक का ख्याल।
राकेश मुनि कै (सब सन्तां कै) भूल पड़े ना इस, ऐतिहासिक भ्रमण की ॥

चातुर्मास हेतु शालीमार पधारे। वह सारी दिल्ली का केन्द्र बन गया था। अठाई और मास-खमणों की झड़ी लग गई। गुरुदेव ने विश्राम का नाम नहीं लिया। ओसवाल, अग्रवाल, हरियाणवी, पंजाबी सबको यही धुन थी कि अपने गुरु भगवन्तों की सेवा से झोली भर लें। शालीमार गुरुदेव का प्यारा, दुलारा क्षेत्र रहा है। संवत्सरी के दिन खूब तपस्या थी। साधु एवं श्रावक सब गर्मी से आहत थे। यदि पूर्णतः शांत और निराकुल थे तो बस गुरुदेव ही थे। तपस्वियों को आराम देने के लिए गुरुदेव पट्टे को छोड़कर ऊपर पौड़ियों में बैठकर स्वाध्याय करने लग गए। गुरुदेव ने एक बार भी गर्मी की अधिकता का जिक्र नहीं किया। अगले दिन पारणे में भी वे पूर्णतया समता में रहे। चातुर्मास में तपस्या की लड़ी और तप-अभिनन्दनों का कार्यक्रम अन्त तक चलता रहा। गुरुकृपा से श्री सत्यप्रकाश जी म. ने आयम्बिल का मासखमण किया। बहन रेणु जैन सुनाम वाली ने छोटी आयु में ही 72 दिन की उपवास रिकार्ड तपस्या की। सन् 1983 का एक वह भी समय था जब इन्होंने संवत्सरी पर भी व्रत नहीं किया था। बाद में गुरुकृपा हुई और मासखमण, 51 व्रत आदि तप किए। फिर वर्षी-तप भी किए।

चातुर्मास के चतुर्थ चरण में गुरुदेव के पैर में अचानक ही साइटिका

समय आने पर धर्मात्मा का रंग चमकता है।
—गुरु सुदर्शन

दर्द उभर आया। भीषण वेदना थी। सब उपचार व्यर्थ गए। अन्ततः पटियाला के डॉ. रमेश जी के उपचार से कुछ राहत मिली।

गुरुदेव के चरणों में बड़ौत समाज पूज्य महात्मा श्री जयन्ती मुनि जी की ओर से विनति-पत्र लेकर उपस्थित हुआ कि श्री नरेश मुनि जी एवं श्री सुधीर मुनि जी की बहन अनीता जी की दीक्षा बड़ौत में हो रही है, अतः आप पधारें तथा मुनिमण्डल को भेजें। गुरुदेव ने श्री नरेश मुनि जी म. को निर्देश दिया कि आप बड़ौत पधार कर समारोह को सफल बनाएँ, समाज की भावनाओं को सम्मानित करें तथा दो मुनिसंघों में परस्पर प्रेम में और श्रीवृद्धि करें।

शालीमार बाग के बाद विभिन्न क्षेत्रों में होते हुए गुरुदेव निजामुद्दीन ठहरे। श्री शांति मुनि जी म. को पेट की तकलीफ शुरू हो गई। उनके उपचार के लिए गुरुदेव ने पुनः दिल्ली का मन बनाया। मार्ग में हाई कोर्ट के जज श्री सागर चन्द्र जैन एवं राज्य सभा सदस्य श्री जे.के. जैन की कोठियों पर भी प्रवचन किए। गुरुदेव दरियागंज पधारे। तभी देश में बाबरी मस्जिद के ध्वंस के कारण विप्लव मच गया। दिल्ली के पुराने इलाके में दंगे हुए, कर्फ्यू लगा। बड़ौत दीक्षा पर अपना जलवा बिखेरकर श्री नरेश मुनि जी म. भी दिल्ली पधार गए। विशाल क्षेत्र को देखते हुए गुरुदेव चाँदनी चौंक पधारे। बारादरी के इलाके में कर्फ्यू था। अतः चीराखाना में मुन्ना लाल की धर्मशाला में ठहरे। कर्फ्यू की परवाह न करते हुए लोग उसी तरह आते थे। धर्मशाला में ही गुरुदेव ने पार्श्वनाथ जयन्ती मनाई। दो दिन तक जो शानदार रूप में प्रभु पार्श्व का जीवन-वाचन गुरुदेव ने किया, वह पहले न किसी श्रावक ने सुना था। न वहाँ उपस्थित किसी मुनिराज ने।

वहाँ से कोल्हापुर रोड़, रूपनगर होते हुए शक्तिनगर पधारे। वहां पर अग्रवाल मण्डी, पानीपत का समाज गुरुदेव के लघु मुनियों के सन् 1993 के वर्षावास की विनति लेकर आया।

लघु मुनि कोई कार्य करें तो पहले बड़ों से पूछ लें, कार्य पूर्ण करने के बाद कहना या बताना बड़ों की बेइज्जती है। —गुरु सुदर्शन

गुरुदेव के स्वयं का ही मन बन गया और समाज को कुछ आभास भी हो गया। लेकिन कुछ समय बाद ही पता लगा कि प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. गाँधी मण्डी चातुर्मास करेंगे। तब गुरुदेव ने पानीपत अग्रवाल मण्डी समाज को बुलाकर स्पष्ट किया कि ऐसी स्थिति में मेरा वहाँ चातुर्मास का कोई भाव नहीं है। ये सुनकर अग्रवाल मण्डी समाज चिंतित हो गया। इसका तो सीधा-सा अर्थ यही निकला कि हम कभी भी चातुर्मास नहीं करवा सकेंगे। सभी वहीं बैठ गए। कुछ समाधान नहीं निकल रहा था। गुरुदेव ने उनको पुनर्विचार करने का आश्वासन दिया। बाद में, भगवन् श्री जी से परामर्श करके ये तय हुआ कि इनको श्री नरेश मुनि जी म. का चातुर्मास दे दिया जाए। वे क्षेत्र को संभाल भी लेंगे और किसी प्रकार के विवाद में भी नहीं उलझेंगे। वे काफी गम्भीर, दूरदर्शी, ओजस्वी और कुशल प्रवचनकार है। इस प्रकार एक जटिल समस्या का मध्यस्थ समाधान गुरुदेव ने निकाला। श्री नरेश मुनि जी म. भी अपने गुरुओं की भावनाओं पर खरे उतरे तथा पूर्णतः समभाव रखकर सफलता हासिल की।

गुरुदेव वीर नगर पधारे। वहीं पर ज्ञानगच्छीय श्री महात्मा जयन्तीदास जी म. भी पधारे। वो मिलन अहोभावपूर्ण था। उन्हें देखकर गुरुदेव सराबोर थे और गुरुदेव को देखकर महात्मा जी। वो विहार करने चले, गुरुदेव छोड़ने गए। वे मना करते रहे। पर गुरुदेव माने नहीं। एक स्थान पर श्री महात्मा जी म. बैठ गए कि 'मैं तो आगे जाता नहीं'। गुरुदेव को लौटना पड़ा। वे शक्ति नगर पहुंचे ही थे कि गुरुदेव को पता लगा उनके पैर में चोट लग गई है अतः पुनः दुखते घुटने और उल्लसित हृदय लेकर गुरुदेव भी शक्तिनगर स्थानक में पहुँच गए। ऐसा मेल-मिलाप शायद ही किन्हीं दो सच्चे साधुओं में होता होगा।

वीर नगर में ही आचार्य-प्रवर, समता-विभूति श्री नानालाल जी

> बड़े आदमी कोई गलत बात भी कह दें तो चापलूस लोग हाँ में हाँ मिला देते हैं।
> —गुरु सुदर्शन

म. सा. के विद्वान् सुशिष्य श्री ज्ञानमुनि जी पधारे। गुरुदेव उनकी भी अगवानी करने गए। गुरुदेव ने आचार्य प्रवर श्री गणेशी लाल जी म. एवं आचार्य श्री नानालाल जी म. के साथ बिताए गए स्वर्णिम-क्षणों की मनोरम तस्वीर प्रस्तुत की।

गुरुदेव अरिहन्त नगर विराजित थे। सन् 1993 का चातुर्मास त्रीनगर का स्वीकृत हो गया था। एक शाम श्री अजित मुनि जी की अंगुलि में कांच की शीशी चुभ गई। डॉक्टर के यहाँ से पट्टी कराई। क्लिनिक दूर होने से लौटते समय देरी भी हो गयी। जब तक अजित मुनि जी आ नहीं गए, गुरुदेव बेचैनी से इंतज़ार करते रहे।

चार वर्ष की राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश की यात्रा पूर्ण करके गुरुदेव के सुशिष्य श्री प्रकाश मुनिजी म. ठाणे 3 दिल्ली पधारे। उनकी अगवानी में श्री शास्त्री जी म. आदि कई मुनिराजों को गुरुदेव ने गुड़गाँव तक भेजा। श्री नरेश मुनि जी म. ने उत्तम नगर में स्वागत किया। शालीमार बाग में उनका गुरुदेव के साथ मंगल-मिलन हुआ। चार वर्षों तक अनुभवों का जो विशाल खजाना वे बटोर कर लाए थे, उसे गुरुदेव उनसे बार-2 खुलवाते रहे, लिखते-लिखवाते रहे। गुरुदेव ने मुनियों के पारस्परिक सामंजस्य को बहुत सराहा।

शालीमार में ही ये दुखद सूचना मिली कि उदयपुर में उपाध्याय प्रवर श्री पुष्कर मुनि जी म. का देवलोक-गमन हो गया है। गुरुदेव ने दो दिन प्रवचन बन्द करके नवकार मंत्र का जाप करवाया। श्री पुष्कर मुनि जी म. श्रमण-संघ के उपाध्याय थे। उनके शिष्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म. श्रमण-संघ के आचार्य थे। उनके गुरुदेव श्री ताराचन्द जी म. की निश्राय में उनका तथा उनके शिष्य-वर्ग का 1954 में गुरुदेव जी म. के साथ दिल्ली चाँदना चौक में चातुर्मास हो चुका था तथा 1956 में वाचस्पति गुरुदेव के साथ जयपुर में हुआ। उस चातुर्मास में वाचस्पति गुरुदेव ने महास्थविर श्री ताराचन्द जी म. को संथारा करवाया था तथा अंतिम

मूलगुणों एवं उत्तरगुणों की रक्षा मुनी के हाथ में है।

—गुरु सुदर्शन

समय तक समाधि में सहायक बने थे। श्रमणसंघ के पेचीदा मसलों में भी प्रारंभिक काल में वे वाचस्पति गुरुदेव की नीतियों के समर्थक रहे थे। इसी कारण स्वयं उपा. श्री पुष्कर मुनि जी म. ध्वनि वर्धक यन्त्र का प्रयोग नहीं करते थे।

27 जून को गुरुदेव ने वाचस्पति गुरुदेव की जीवनी के बजाय उनकी शिक्षाओं का विशाल संग्रह सुनाया। इसके लिए अपने प्राचीन लिखित पन्नों का कई दिनों तक पारायण किया। वह संग्रह मुनिवृन्द एवं श्रावक-समाज के लिए काफी प्रेरणाप्रद बना। उन्हीं दिनों गुरुदेव ने कई दिनों तक अपने प्रवचनों में कथा-कहानी की बजाय जैन धर्म के मौलिक सिद्धान्तों का सार सुनाया। ऐसे प्रवचनों को सुनने के लिए भी जैन युवक विशेष रूप से आते थे।

चातुर्मास के लिए त्रीनगर प्रवेश हुआ। प्रवेश पर कई प्रमुख लोगों ने स्वागत करते हुए भावना व्यक्त की कि इस चातुर्मास में हम तपस्या, रौनक और सेवा के पुराने सब रिकार्ड तोड़ देंगे। गुरुदेव ने प्रत्युत्तर में फरमाया कि "मैं रिकार्ड बनाने और तोड़ने में विश्वास नहीं करता। यह अभिमान की भाषा है। जो कुछ करना है, सब सहज भाव से करना है। दो चार साल की तपस्या और रौनकों के आंकड़े देखकर ही हमें रिकार्डो की बात नहीं करनी चाहिए। तीर्थंकर भगवन्तों ने आगमों में जो रिकार्ड बनाए हैं, क्या हम उनका मुकाबला कर सकते हैं?" उस वर्ष गुरुदेव के पुण्य-प्रताप से त्रीनगर के इतिहास में अभूतपूर्व तपस्या हुई।

गुरुदेव के रविवारीय प्रवचन कम्यूनिटी हॉल में होते थे। एक रविवार को अचानक ही 7 बसें त्रीनगर से बाहर दर्शनार्थ चली गई। अनुमान ये था कि शायद आज यहाँ व्याख्यान ही न हो पाए, परन्तु उस रविवार को करीब डेढ़-दो हजार दर्शनार्थी आ गए। गुरुदेव का ऐसा अलौकिक पुण्य प्रताप था। गुरुदेव के श्रोता केवल तमाशबीन या मात्र कानों से ही रसिया नहीं होते थे, अपितु आत्मकल्याण के सूत्र

गरीब की भक्ति भी अमीर को अखरती है। ये विडम्बना है।

—गुरु सुदर्शन

ढूंढने के इच्छुक, सामायिक-संवर के अभिलाषी श्रावक उनके प्रवचनों में अधिक आते थे। इसीलिए भीषण गर्मी में भी बिना पंखे, बिना माइक, बिना रंगारंग प्रोग्रामों के गुरुदेव का समोसरण भरपूर रहता था। इस चातुर्मास में गुरुदेव के श्री चरणों में तीन दीर्घ तपस्वी लम्बी-2 आयम्बिल तपस्याएँ करके अपने जीवन को सुशोभित कर रहे थे। ये तीनों तपस्वी धन-लक्ष्मी और धर्म-लक्ष्मी से सुसम्पन्न थे। इनके परिवार वालों ने भी इनकी तपस्या में पूरा साज देकर स्वयं भी महान् निर्जरा-लाभ कमाया। बामनौली ग्राम के सुश्रावक तपस्वी प्रह्लाद राय जैन ने 181 दिन की अमल-तपस्या की। इससे पूर्व भी ये 72 तथा 108 अमल (अन्त में व्रत-तेला सहित) कर चुके थे। 1995 के चातुर्मास में इन्होने आयम्बिल के तीन मासखमण किए। दूसरे सुश्रावक दनौदा ग्राम (नरवाणा मण्डी) के परम गुरुभक्त श्री ज्ञानीराम जी जैन थे। इन्होंने इस चातुर्मास में 151 अमल पूर्ण किए। इससे पूर्व एवं पश्चात् भी इन्होंने 41 तथा 121 अमल किए। तीसरे श्री चन्द्र प्रकाश जैन हलालपुर वाले। इन्होंने 139 आम्बिल किए। इससे पूर्व एवं पश्चात् इन्होंने 51, 76, 87, 111, 211, 55, 165 तथा 180 से ऊपर अमल-तप किए। गोहाना के युवा तपस्वी श्री सुनील जैन की तपस्या भी उत्तर भारत में एक रिकार्ड है। गुरुदेव के सन् 1987 के गोहाना-चातुर्मास में इन्होंने व्रतों का प्रथम मासखमण किया। उसके बाद प्रतिवर्ष मासखमण करना इनके जीवन का आवश्यक क्रम बन गया।

त्रीनगर से जब विहार हुआ। तब भी वहाँ कई मासखमण गतिमान् थे। विहार के समय त्रीनगर वालों की जो भीड़ हुई वह बड़े-2 इतिहासों को भुला देने वाली थी। बिना इच्छा के ही त्रीनगर की हर घटना रिकार्ड बन गई।

कैसे करें गुणगान तुम्हारा, शब्दों की बारात नहीं है,
सागर को बाहों में भरना, मेरे बस की बात नहीं है।

त्रीनगर के बाद दिल्ली से प्रस्थान की इच्छा थी। वहाँ से शालीमार होते हुए यादव नगर पधारे। श्री शांति मुनि जी म. का स्वास्थ्य काफी

भूल का परिणाम प्रत्येक को भोगना पड़ता है।
—गुरु सुदर्शन

शिथिल था। वहीं पर ज्ञानगच्छ की प्रमुख साध्वियों श्री भंवर कुंवर जी एवं श्री छगनकुंवर जी ने गुरुदेव के दर्शन किए। श्री शांतिचंद्र जी म. के कारण पुनः दिल्ली लौटना पड़ा। प्रशांत विहार पधारे। अरिहन्त नगर के सेठ रामकिशन जैन के सुपुत्र पवन जैन का बोकारो (बिहार) में उग्रवादियों ने अपहरण कर लिया था। सारे घर में हाहाकार मचा था। कई दिन हो चुके थे पर कोई सुराग नहीं लग पाया था। एक दिन प्रवचन में गुरुदेव ने सारी सभा से पवन जी के सकुशल लौटने के लिए मंगल-भावना भाने को कहा। सबने प्रार्थना की। उसी शाम को पवन जैन घर लौट आया। वहाँ से शालीमार बाग पधारे। गुरुदेव के श्री चरणों में अध्ययन रत दो वैरागियों-श्री श्रीपाल जी एवं रोहित जी को दीक्षा देने का भाव बना। शालीमार बाग संघ ने पुरजोर विनति की पर गुरुदेव ने फरमाया कि इनकी दीक्षा श्री तपस्वी जी म. की संथारा-भूमि सोनीपत में ही करने का भाव है, अन्यत्र नहीं, जिससे उस महान् आत्मा के कुछ गुण इन मुमुक्षुओं में भी आएँ।

आज उपदेश को उपयोग में लाना कठिन होता जा रहा है।

—गुरु सुदर्शन

10. राह, राही और रहवर

करीब दो वर्ष बाद दिल्ली से विहार हुआ। सोनीपत के रास्ते में मूर्तिपूजक समाज का अतिप्रसिद्ध भव्य 'वल्लभ स्मारक' मन्दिर है। प्राचीन जैन स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना। समाज के प्रमुख श्री राजकुमार जी जैन आदि की विनति पर गुरुदेव ने 30 जनवरी 1994 का रविवार वहाँ लगाया। उस दिन प्रातः 10 बजे वहाँ पधारे। मध्याह्न एक बजे प्रवचन रखा। बिना चिट्ठी, बिना निमन्त्रण एक हजार से ऊपर की भीड़ हो गई। वहाँ का विशाल प्रवचन हॉल खचाखच भर गया। गुरुदेव ने इस साम्प्रदायिक सौहार्द की काफी प्रशंसा की। जब गुरुदेव प्रवचन करने पधार रहे थे तब रास्ते में देखा कि कितने ही लोगों ने हरी घास पर जूते चप्पल निकाले हुए थे। गुरुदेव ने प्रवचन में लोगों से वनस्पति-हिंसा से बचने की तथा वापिसी में घास पर पैर न रखने की प्रेरणा दी। इसका सुफल ये हुआ कि कितने ही गुरु-भक्त भाई बहन गुरु-आज्ञा-भंग के भय से अपने जूते घास पर ही छोड़ गए, उन्हें उठाने के लिए घास पर नहीं चढ़े।

सोनीपत में श्री श्रीपाल जी एवं रोहित जी की दीक्षा बड़ी भव्यता और शालीनता के साथ सम्पन्न हुई। दीक्षा-पण्डाल में फोटोग्राफी तो पहले से ही प्रतिबंधित थी। अन्य आडम्बरों में भी कमी लाने का प्रयास किया गया।

सोनीपत में ज्ञानगच्छीय श्री बसन्ती मुनि जी म. एवं श्री सुगन मुनि जी म. गुरुदेव के चरणों में श्री वकील मुनि जी को समर्पित करने आए। सन् 1988 में श्री वकील चन्द जी गुरुदेव जी म. की पूर्ण सहमति से तपस्वीराज श्री चंपालाल जी म. के चरणों में दीक्षित हुए थे। अपनी संयम-दृढ़ता, सेवा- परायणता, प्रवचन-पटुता तथा व्यावहारिक सूझ-बूझ से शीघ्र ही अपने संघ के समादरणीय स्थान के अधिकारी बने। जिस

विनय एवं चिंतन का तथा अविनय और चिंता का संबंध शाश्वत है।
—गुरु सुदर्शन

प्रकार श्री महात्मा जी म. को इतर संघ के मुनियों की विनय-प्रतिपत्ति के लिए विशेष छूट मिली हुई थी, उसी तरह इन्हें भी पूज्य गुरुदेव के संघीय मुनियों की विनयभक्ति, वन्दना, सेवा आदि की विशेष छूट थी। इसी कारण 1989-90 में जब श्रद्धेय श्री प्रकाश चन्द जी म. ठाणे 3 राजस्थान-विचरण के दौरान जोधपुर पधारे थे, तब इन्होंने पूर्ण श्रद्धा और आत्मीयता के साथ सम्बन्धों को ताज़गी दी थी। इन्हीं की प्रेरणा-स्वरूप उस संघ के मुनिराजों तथा श्रावकों ने भी अतिरिक्त ध्यान रखा था। इनकी प्रबल भावना थी कि ज्ञानगच्छ की उज्ज्वल छवि के प्रस्तोता श्री महात्मा जयंती मुनि जी म. उत्तर भारत में विचरें। इस उद्देश्य से उनका श्री महात्मा जी म. के साथ इधर पदार्पण हुआ। परन्तु इधर पधारते ही हिसार में उनको (श्री वकील मुनि जी म. को) Heart Attack हो गया। संयोग वश, श्री नरेश मुनि जी म. उस समय हिसार में ही ठहरे हुए थे। उन्होंने मौके पर उनका पूरा उपचार करवाया और महान् संकट से उबार लिया। यद्यपि श्री नरेश मुनि जी म. का मासकल्प पूर्ण होने जा रहा था, तदपि पूज्य गुरुदेव जी म. ने उन्हें संदेश भिजवा दिया था कि 'रूग्ण-ग्लान की वैयावृत्त्य तथा सेवा के लिए कल्प से अधिक भी ठहरना पड़े, तो संकोच मत करना। जब हम अपने संघ के मुनि की सेवा के लिए मजबूरी में ठहरते हैं, तो अन्य संघ के, दूर देश से आए संयमी मुनि के लिए ठहरने में कोई बाधा नहीं हैं'।

"अयं निजः परो वेति, गणना लघुचेतसाम्।
उदार-चरितानां तु, वसुधैव कुटुम्बकम्" ॥

श्री वकील मुनि जी म. को पूर्ण स्वास्थ्य लाभ होने पर श्री नरेश मुनि जी म. ने विहार किया एवं यूनिवर्सिटी जाकर कल्प का भी पूरा ध्यान रखा।

जब श्री नरेश मुनि जी म. की सांसारिक भगिनी अनीता जी की दीक्षा का प्रसंग बड़ौत में आया, तब भी पूज्य गुरुदेव जी ने सहर्ष

कभी-2 लोग अज्ञान दशा में कर्मबंध कर लेते हैं जैसे पशुओं को मारना।
—गुरु सुदर्शन

श्री नरेश मुनि जी म. को बड़ौत दीक्षा पर भेजा, ताकि दोनों संघों में माधुर्य का संचार बढ़ता रहे।

श्री वकील मुनि जी म. को अपने गिरते स्वास्थ्य के कारण कुछ असमाधि सी रहने लगी थी। मुनि मण्डल को राजस्थान जाना था पर श्री वकील मुनि म. की मानसिक तथा शारीरिक स्थिति विहार हेतु तैयार नहीं थी। श्रावकों की काफी दौड़धूप के बाद श्री वकील मुनि जी म. को गुरुदेव जी म. के चरणों में सौंपने का निर्णय हुआ। पूज्य-पाद गुरुदेव श्री रामप्रसाद जी म. से विचार-विमर्श पत्राचार के द्वारा किया गया। अन्ततः सोनीपत में यह कार्य पूर्ण करने का निर्णय हुआ। दोनों संघों के वरिष्ठ मुनिराजों के परामर्श से एवं श्री नरेश मुनि जी म. के मुख्य दायित्व में श्री वकील मुनि जी का सप्रेम संघ-परिवर्तन हुआ। श्रीसंघ सोनीपत, महासंघ दिल्ली एवं श्रीसंघ बड़ौत की उपस्थिति में यह कार्य सम्पन्न हुआ। गुरुदेव का यही प्रयास रहा कि इस घटना से दोनों संघों में किसी भी पक्ष को न हीनाधिक्य से तोला जाए, न कोई मनोमालिन्य आए।

पूज्य गुरुदेव यू.पी. की स्पर्शना के लिए चले। श्री शांति मुनि जी म. की ढीली सेहत को देखते हुए अपने 'नन्दीषेण' श्री आदीश मुनि जी को उनकी सेवा में छोड़ दिया तथा श्री आदीश मुनि जी की अनुपस्थिति में गुरुदेव ने किसी भी मुनि को ये आभास नहीं होने दिया कि तुम उससे कम सेवा करते हो। हर स्थिति में ढलना, ये गुरुदेव की जीवन कला थी।

गुरुदेव के पदार्पण से पश्चिमी उत्तर प्रदेश का स्थानकवासी समाज आंदोलित हो उठा। कई संघ बागपत में एकत्रित हुए। वहाँ का दिगम्बर समाज भी सेवा प्रभावना में जुट गया। कुछ समाचार पत्रों के प्रतिनिधि भी कैमरे ले कर आए। वे गुरुदेव के सारे यात्रा क्रम को कैमरे में कैद करना चाहते थे पर गुरुदेव ने प्रथम पड़ाव पर ही रोक लगा दी।

मेरठ श्रीसंघ के प्रधान श्री कीमती लाल जैन ने गुरुदेव के मेरठ प्रवास को भक्ति रंग से रंगीन बनाया। 'विद्या-प्रकाशन' के श्री प्रवीण

सांसारिक जीव पैसा कम होने पर धक्का खा जाते हैं।
—गुरु सुदर्शन

जैन ने मेरठ के युवकों में तप-संयम की प्रतिमा-रूप गुरुदेव के प्रति रुचि बढ़ाई। बड़ौत के सुश्रावक श्री वीरसैन जैन हिलवाडी वालों के सुपुत्र श्री अजय जैन गुरु-चरणों में वैरागी रूप में आए। होली से अगले रोज फाग था। घरों में रंगों की मस्ती थी। मुनियों ने सोचा कि 'रंग लम्बा चलेगा, अतः सम्पूर्ण गोचरी तो संभव नहीं। गुरुदेव के लिए ही स्वल्प-सा आहार ले आएँ'। श्री अजित मुनि जी ले आए। लेकिन दयामूर्ति श्री गुरुदेव ने फरमाया कि 'जब तक सब मुनियों का आहार नहीं आएगा, मैं अकेला नहीं खाऊँगा'। 'गुरु मित्र गुरु मात' वो भी ऐसी माँ थी जो बच्चों को खिला कर ही खाती थी।

गुरुदेव ने अपना 1994 का चातुर्मास बड़ौत के दोनों क्षेत्रों शहर और मण्डी में करने की स्वीकृति प्रदान की। यू.पी. पधारने का मुख्य लक्ष्य था– मुजफ्फर नगर में वर्षीतप के पारणे तथा नई धारणाएँ। सुबह-शाम करके 4-4 कि.मी. का सफर करते-2 मुजफ्फरनगर शहर में पहुँचे। ठहरे स्थानक में, पर प्रवचन हुए हनुमान मंदिर में। गुरुदेव के प्रवचन इतने जोशीले और प्रेरणा-प्रद होते थे कि सनातन, दिगम्बर, श्वेताम्बर, अन्य जातियाँ, यहाँ तक कि कुछ मुसलमान भी सुनने आते थे। वहीं पर गुरुदेव के गले में कुछ एलर्जी हो गई जो मण्डी में जाते ही तीव्र हो गई। बुखार हो गया, जो बहुत लम्बा चला। श्री जयमुनि जी म. का गला भी खराब हो गया। अधिकांश भार श्री सुनील मुनि जी म. ने वहन किया। वर्षीतप की आद्या शक्ति सुश्राविका बहन चंचल जैन ने जो दीपक जलाया था, वह अब बढ़ते-2 'दीपावली' बन गया था। प्रधान श्री मनमोहन जी का मन गुरुदेव की रुग्णता से दुखी तो था, परन्तु अपने निर्धारित कार्यों में कोई कमी नहीं आने दी। चंचल बहन भी गुरुदेव के उत्तम, महान् जीवन के प्रति इतनी भक्तिमती बनी-मानों कृष्ण की मीरा हो या श्रीराम की शबरी हो।

मुजफ्फर नगर से हल्के-हल्के बुखार में ही गुरुदेव ने विहार किया। ऐसे-ऐसे स्थानों पर पड़ाव डाला, जो पहले अस्पृष्ट थे। एक डोलू

परिश्रम/चिंतन/तप/धैर्य से जीवन में कभी-2 लहर पैदा होती है जो रुख बदल देती है।
—गुरु सुदर्शन

बाबा का मन्दिर था, जिसके इर्द-गिर्द न कोई घर था, न कोई अन्य सुविधा, फिर भी घुटनों के दर्द और बुखार की दुर्बलतावश वहाँ ठहरे। आहार-पानी की व्यवस्था में कोई ढिलाई नहीं आने दी। गृहस्थों की निर्भरता छोड़, मुनियों की कर्मठता पर गुरुदेव ने विश्वास किया। इसी कारण ये मुनिसंघ अपने गुरुदेव की कठोर चर्या का निर्वाह करता रहा है। बड़ौत चातुर्मास में वैद्यराज प्रभास जैन के प्रयास और उपचार से ही गुरुदेव पूरी तरह स्वस्थ हो सके।

शामली श्री संघ अपने स्थानक में गुरुदेव को पाकर भावाभिभूत था। रौनक भी खूब थी। वहाँ से कांधला, गंगेरू होते हुए छपरौली पधारे। वहाँ पर गुरुदेव को एकदम शिरोभ्रम (दिमागी चक्कर, Vertigo) की भयंकर पीड़ा हो गई। साथ ही समय-पूर्व वर्षा से आसपास के सारे मार्ग अवरुद्ध हो गए। डाक्टरों के भरसक प्रयत्न के बाद काफी दिनों में शिरोभ्रम पर नियंत्रण पाया गया।

छपरौली में महासाध्वी श्री संयम प्रभा 'कमल' जी ने गुरुदेव के दर्शन किए। छोटी साध्वियों को कई आगम तथा कर्मग्रंथ आदि विषय कण्ठस्थ थे, वह गुरुदेव को काफी अच्छा लगा। प्रोत्साहन दिया तथा उनकी संयम-निष्ठ प्रवृत्तियों के लिए अपना समर्थन भी दिया।

बड़ौत में गुरुदेव को मण्डी व शहर में आधा-2 चातुर्मास व्यतीत करना था। गुरुदेव ने फरमाया कि 'दोनों क्षेत्र मेरे लिए दो नेत्रों के समान हैं। मैं दोनों का समान सम्मान करता हूँ। चाहे दोनों के स्थानक-भवन अलग-2 हैं, पर धर्मध्यान की दृष्टि से दोनों परस्पर सापेक्ष हैं।' गुरुदेव की अन्तरात्मा सब पर करुणा, दया की वृष्टि करती रही और सभी बड़ौतवासी पंथ-संप्रदाय की भूलभुलैया भूलकर आनन्द-सागर में गोते लगाते रहे।

चातुर्मास के शुरू में बड़ौत मण्डी समाज को अपने नव-निर्मित प्रवचन हॉल का तथा उसमें मुख्य दान-दाताओं का सम्मान करना था। यू.पी. के श्रीसंघों को निमंत्रित करने का विचार था। उन्होंने पत्र का

पैसा आए तो देख लिया करो कंस का है या कृष्ण का, राम का है या रावण का।
—गुरु सुदर्शन

प्रारूप गुरुदेव को दिखाया, जिसमें लिखा था, 'पूज्य गुरुदेव श्री श्री 1008 श्री सुदर्शन लाल जी म. सा. के सान्निध्य में प्रवचन-हाल का उद्‌घाटन'। गुरुदेव ने फरमाया कि 'हम किसी भी भवन के शिलान्यास, निर्माण या उद्‌घाटन-समारोह में शामिल नहीं होते। यदि वहाँ की व्यवस्था आडम्बर विहीन रहे तो मात्र प्रवचन ही कर सकते हैं। भवनों के सब कार्यक्रम समाज के तत्त्वावधान में ही हों, हमारे नहीं। गुरुदेव की स्वीकृति से निमंत्रण-पत्र में केवल इतना ही छपा कि 'इस अवसर पर गुरुदेव के प्रवचन का लाभ भी होगा।' गुरुदेव नहीं चाहते थे कि किसी भी गलत शब्दावली का जनता के मन में कोई अनुचित अर्थ जागृत हो और व्यर्थ के संशय जन्म लें।

वैरागी अजय जैन के पिता श्री वीरसैन जैन की भावना थी कि हमारे सुपुत्र की दीक्षा हमारे शहर में ही हो। वे शहर, मण्डी दोनों समाजों को विनति-हेतु लेकर आए। गुरुदेव ने स्वीकृति फरमा दी। 6 अक्टूबर को दीक्षा का पंडाल सज गया। दीक्षार्थी का भाषण इतना जोरदार रहा कि सभी श्रोता कहने लगे कि 'गुरुदेव को एक कथाकार साधु और मिल गया है'। उस दीक्षा की एक विशेषता ये भी रही कि जब गुरुदेव ने अपने मुखारविन्द से दीक्षा का पाठ पढ़ाया, उस समय 18-20 हजार की जनमेदिनी बिल्कुल मौन हो गई। इतना व्यापक मौन कभी किसी ने पहले नहीं देखा था। दीक्षा-पाठ का एक-2 अक्षर सारी भीड़ में गूंज रहा था।

बड़ौत चातुर्मास में ही भगवन् श्री रामप्रसाद जी म. की जम्मू से खबर आई कि 'यहां सेवा के लिए हमें संतों की आवश्यकता है'। उनकी सेवा के लिए गुरुदेव ने सुनाम-विराजित शास्त्री श्री पद्‌म चंद जी म. के चरणों से अपने दो शिष्यों श्री सत्यप्रकाश मुनि जी एवं श्री नरेन्द्र मुनि जी को वहाँ जाने की आज्ञा दी। दोनों मुनिराज घोर पराक्रम करके 413 कि.मी. का सफर केवल 13 दिन में तय करके जम्मू पहुँच गए और गुरुओं की सेवा से धन्य-2 और कृतकृत्य हो गए। गुरुदेव के बड़ौत में

पैसा अपने साथ 18 पापों को भी ले आता है।
—गुरु सुदर्शन

विराजते हुए श्री संघ बड़ौत शहर एवं जैन कॉलेज के चुनावों का प्रसंग आया। लोग गुरुदेव के मुखारविन्द से किसी व्यक्ति को मनोनीत कराना चाहते थे। पर गुरुदेव तटस्थ रहे। इससे आम जनता में विशेष प्रभाव पड़ा। बड़ौत से विहार से पूर्व गुरुदेव ने क्षेत्र में दो अभिनव कार्यक्रम शुरू किए– 1. प्रतिदिन स्थानक में प्रातः काल प्रार्थना चले, 2. प्रतिदिन तिथिवार घरों में 12 घंटे का महामंत्र का जाप चले। 12 घण्टे के जाप का यह जगमग दीप बड़ौत से शुरू होकर कालांतर में अन्य 40-50 क्षेत्रों में भी फैल गया। सब स्थानों पर गुरुदेव ने ये ताकीदी की कि जाप वाले घर में किसी प्रकार के प्रसाद का वितरण न हो तथा धूप, अगरबत्ती, बिजली या पंखे का प्रयोग न हो। बड़ौत से वैरागी सचिन जैन गुरु-चरणों में आया।

गुरुदेव ने बड़ौत से विहार किया। पैरों में काफी दर्द था। हर 10-12 मिनट बाद बैठना पड़ता। बड़ौत-वासी गुरुदेव की इस पीड़ा को झेल नहीं सके। सारी समाज एकत्र होकर गुरुदेव पर दबाव डालने आई कि वापिस बड़ौत पधारो। कई घंटे लग गए। लोग धरने पर बैठ गए पर गुरुदेव तो आगे बढ़ने के लिए कृतसंकल्प थे। वहाँ से छपरौली पधारे। शरीर में अन्दर-2 असहजता-सी थी। दिन भर ठीक रहे। शाम को 20-25 दस्त लगे। जलाभाव (Dehydration) का संकट प्रतीत होने लगा। मुनियों के लिए वह रात भयावह आशंकाओं-कुशंकाओं की रात थी, किन्तु उस रात गुरुदेव का धैर्य और साहस बड़े गजब का रहा। सर्दी का मौसम, अंधेरी रात, घुटनों में असह्य दर्द, घोर कमजोरी, नींद का अभाव, रात भर पेट की परेशानी, पर एक सैकंड के लिए भी गुरुदेव ने घबराहट या चिड़चिड़ापन नहीं आने दिया। दिन निकलने पर ही समाज को पता चला तथा उपचार शुरू हुआ। दिन भर संभले रहे पर रात में फिर वही सिलसिला। कई दिन ये परेशानी चली। एक दिन गुरुदेव ने मुनियों को फरमाया कि मुझे ऐसा लगता है कि कल समालखा से श्री राजेन्द्र मुनि जी ठाणे-दो यहाँ दर्शन करने आएँगे। जबकि ऐसी कोई सूचना नहीं

> धन के ठोकर मारने से लक्ष्मी रूठ जाती है, रोटी के भी लाले पड़ जाते हैं।
>
> –गुरु सुदर्शन

थी। अगली मध्याह्न को दो संत श्री राजेन्द्र मुनि जी, श्री राकेश मुनि जी, बिना किसी को बताए, बिना किसी को साथ लिए स्थानक में पहुँच गए। उनकी 'निस्सही-निस्सही' की आवाज सुनकर ही मुनियों ने गुरुदेव की बात की सत्यता को प्रत्यक्ष देखा। बाद में श्रद्धेय श्री प्रकाश मुनिजी म. आदि भी पधारे।

गुरुदेव का स्वास्थ्य कुछ संभला तो हरियाणा की धरती की ओर उन्मुख हुए। जब यमुना को पार किया तो गुरुदेव ने पीछे मुड़कर यू.पी. की धरती को निहारा। किसे क्या पता था कि लाखों भव्यों का ये मसीहा फिर कभी इस प्रान्त में कदम नहीं धरेगा। हरियाणा के यमुना-किनारे बसे गाँवों में हलचल हुई। हथवाला, देहरा, महावटी आदि गाँवों में लोगों की भारी भीड़ दर्शनों के लिए उमड़ पड़ी। एक जनवरी सन् 1995 के प्रथम दिन देहरा गाँव में प्रवचन में हजारों की भीड़ थी। ऐसा समां बंधा कि सब जनपदवासी चकित रह गए।

महावटी गाँव में रात को गुरुदेव को पुनः दस्तों का प्रकोप शुरू हुआ। गाँव में पर्याप्त चिकित्सा-सुविधा न होने से गुरुदेव को एक लकड़ी की कुर्सी पर बैठाकर सन्त अपने हाथों पर ही सीधे गन्नौर ले आए। इससे पहले कभी गुरुदेव इस तरह कहीं नहीं गए थे। गन्नौर विराजित संत भी सेवा के इस दुर्लभ अवसर को जानकर कई कि.मी. आगे आ गए। स्थानक पहुँचने पर गुरुदेव की आँखें आँसुओं से भरी हुई थी। उनकी आत्मा अपनी पीड़ा भूल कर मुनिराजों को दिए गए कष्ट से द्रवित हो रही थी।

गन्नौर में 8 जनवरी के रविवार को विशाल भीड़ थी। मण्डी में प्रवचन का कार्यक्रम था। 5 हजार की भीड़ की संभावना थी, पर सुबह से ही निरंतर वर्षा होने लगी। सब कार्यक्रम अस्त-व्यस्त हो गए। फिर भीड़ इतनी थी कि वर्षा के मौसम में भी स्थानक के ऊपर-नीचे के दोनों हालों में एक साथ कथा करनी पड़ी। अगले रविवार को फिर भारी भीड़

> लोगों के झंझटों से जितना दूर रहेंगे संयम उतना श्रेष्ठ पलेगा।
>
> —गुरु सुदर्शन

उमड़ी। गांधी मण्डी पानीपत का समाज विशेष उत्साह से गुरु-चरणों में विनति-हेतु आया। कई वर्षों के बाद उनका आना हुआ था। गुरुदेव ने भी बिना किसी पूर्व चर्चा के प्रवचन में ही उनकी विनति स्वीकार कर ली। बहुत ही सौहार्द-पूर्व वातावरण का प्रसंग बना। गुरुदेव तो सद्भावनाओं के बीज सर्वत्र डालते जा रहे थे। आगे की पीढ़ियाँ उनके मधुर फल चखती रहेगी।

इन्हीं दिनों गुरुदेव ने अपने शिष्य श्री नरेश मुनि जी म. की प्रवचन शैली एवं सूझबूझ गंभीरता से प्रभावित होकर कई मसलों में उनके सुझावों को सम्मान दिया एवं इनके चातुर्मास की मुजफ्फर नगर के लिए स्वीकृति दी।

गुरुदेव राजाखेड़ी पधारे। वहाँ पर पंजाब का 'महावीर युवक मण्डल' श्री राकेश जैन के नेतृत्व में विशाल संख्या में उपस्थित हुआ और पंजाब पधारने की पुरजोर विनति करने लगा। वहाँ से पंजाब जाने का कुछ मन बना। पानीपत में आए। यह क्षेत्र तो शुरू से ही रौनकों का केन्द्र रहा है। इस बार और अधिक रंग था। गुरुदेव को अधिक खुशी मतलौडा जाकर हुई। वहाँ श्री राजेन्द्र मुनि जी म. ने अपना प्रथम स्वतन्त्र चातुर्मास किया था। क्षेत्र में जो तपस्या और धर्म-जागरण हुआ वह अपने आप में बेमिसाल था। उसे देखकर गुरुदेव ने ये फरमाया कि 'मेरा मन भी चाहता है कि यहाँ चातुर्मास करूँ'। मतलौडा से गुरुदेव सफीदों शहर पधारे तथा 2 दिन ठहरे। शहर में जनता काफी उमड़ी। बिना निमंत्रण के वहाँ श्रद्धा का सैलाब देखते ही बनता था। सफीदों से बिटानी पधारे। वहाँ पर सेठ श्री किशोरी लाल जी ने अपनी गुरु-भक्ति तथा सामाजिक वर्चस्व का दिग् दर्शन कराया। पंजाब का लक्ष्य होने के कारण क्षेत्रों में रुकना कम ही हो रहा था। पीलूखेड़ा पधारे। जालंधर श्री संघ ने आकर पंजाब-पदार्पण की विनति की। जींद में लुधियाना का उच्च वर्ग सुन्दर नगर लुधियाना चातुर्मास की सिफारिश करने आया। गुरुदेव ने मात्र

> गम खाने से घर बसेगा और धर्म पलेगा।
> —गुरु सुदर्शन

इतना ही फरमाया कि 'अभी चल रहे हैं, जहाँ तक पहुँचा जाएगा, पहुँचने पर ही कुछ स्पष्ट फरमा पाएँगे।'

उस वर्ष बड़ौदा में गुरुदेव ने जो प्रवचन दिया, वह विशेष भाव-धारा में बहकर दिया था। ऐसा लगता था मानो वे अपने पूर्वजों का साक्षात्कार कर रहे हों या उनकी कृपा से आविष्ट हो गए हों। वहाँ से उचाना पधारे। श्री राकेश मुनि जी म. तब जीन्द में थे। 4 अप्रैल शाम की बात है। जीन्द का युवक मुकेश जैन (रिंढ़ाणा वाला) जीन्द स्थानक में आया। सन्तों से पूछा– 'उचाना में गुरुदेव के लिए कोई समाचार है क्या?' श्री राकेश मुनि जी ने सहजता से कहा कि 'उचाना तो जा ही रहे हो, संयोग से आज गुरुदेव का जन्मदिन भी है। मैं आपके बेटे के लिए गुरु-स्तुति में एक भजन बना देता हूँ, वहाँ सुना देना।' तब उनके बेटे 'अर्हम्' के लिए 'पूज सुदर्शन गुरुवर म्हारा, चरण-कमल मैं नमन करूँ' ये राजस्थानी-टच वाला भजन बनाकर दिया। अर्हम् ने गुरु-चरण में सुनाया। बाद में मुकेश जी ने गुरुदेव से उनके जन्मदिन पर प्रतिक्रिया पूछी। गुरुदेव ने बड़े दार्शनिक लहजे में फरमाया कि मैं तो इस जन्म-दिन पर यही कामना करता हूँ कि आगे से ये जन्म भी, मरण भी, सारे ही झंझट खत्म हो जाएं। उचाना से डूमरखां पधारे। जिस कोठी में गुरुदेव ठहरे थे, उन्हीं की पुरानी हवेली में करीब 120 वर्ष पूर्व तपस्वी श्री सेवकराम जी म. का घोर अभिग्रह पूरा हुआ था। जाट जाति के उन समृद्ध परिवारों में आज भी ये मान्यता है कि एक जैन सन्त हमारे घर आकर आशीर्वाद देकर गए थे उसके बाद ही उन घरों में इतनी समृद्धि आई है। नरवाणा में महावीर जयन्ती का कार्यक्रम था। हरियाणा के वित्तमंत्री श्री मांगेराम गुप्ता जी भी गुरु-भक्ति के कारण आए। 16 अप्रैल को रायकोट में पूज्यपाद सरलात्मा श्री सेठ जी म. सा. के सान्निध्य में गुरुदेव के शिष्य-रूप में वैरागी श्रेयांस की दीक्षा होनी थी। गुरुदेव ने इस अवसर पर शास्त्री श्री पद्म चन्द्र जी म. को भेजा। आनन्द रहा।

> गंगा के समान विलक्षण स्वभाव से रामराज्य फैलता है।
>
> –गुरु सुदर्शन

सुन्दर नगर लुधियाना का समाज समय-2 पर आकर गुरुदेव का चातुर्मास लेने के लिए भाव प्रदर्शित कर रहा था। जाखल आने पर उनका भाव 108 कारों का काफिला लेकर आने का बना। गुरुदेव को इतना अधिक श्रद्धा-प्रदर्शन कभी जंचा नहीं। जाखल की प्रवचन-सभा में गुरुदेव ने उन आयोजकों की प्रशंसा में एक शब्द भी नहीं कहा। केवल इसीलिए ताकि उन्हें आगे से इस तरह का प्रोत्साहन न मिले। श्रद्धेय श्री शास्त्री जी म. ने भी वहीं गुरुदेव के दर्शन किए। गुरुदेव ने सुनाम पधारकर सन् 1995 का अपना चातुर्मास सुन्दर नगर, लुधियाना का स्वीकृत किया।

पंजाब के हर क्षेत्र में गुरुदेव के पदार्पण से विशेष धर्मोद्धार हुआ। संगरूर से ही लुधियाना का युवक मण्डल विहारों में आने लगा। अहमदगढ़ मण्डी में श्री राकेश मुनि जी म. का प्रथम चातुर्मास होना था। अतः गुरुदेव ने उस क्षेत्र को विशेष पोषणा दी। स्वयं गुरुदेव ने भी सन् 1946 में बाबा जी म. की नेश्राय में अहमदगढ़ में चातुर्मास किया था। वे स्मृतियाँ गुरुदेव का पुनः-2 अतीत में ले जाती थीं।

अहमदगढ़ चातुर्मास का तो गुरुदेव जी म. ने बाद में भी बराबर ध्यान रखा। हर मुनि की हर आवश्यकता को दूर बैठे भी पूरा करना चाहते थे। उस साल एक दिन गुरुदेव जी म. ने श्री राकेश मुनि जी म. को पत्र में लिखा कि आपके सहयोगी श्री सुनील मुनि जी म. संवत्सरी पर प्रतिवर्ष उपवास के कारण उल्टियां आती हैं। इस वर्ष एक प्रयोग करना– 'उपवास से पहली शाम को आधा कच्चा पापड़ खा लें वमन नहीं होगा।' श्री सुनील मुनि जी ने प्रयोग किया और सफल रहा। उस वर्ष उल्टी नहीं हुई। उसके बाद कभी उल्टी नहीं हुई और सन् 1995 से पूर्व कभी रुकी नहीं।

गुरुदेव लुधियाना पधारे। अनेक उपनगरों की विनतियों को पूर्ण किया और अपनी मंगलमय वाणी का प्रसाद बाँटा। आत्मनगर

आवेश में किया गया कार्य पाप रूप बन जाता है।

–गुरु सुदर्शन

एवं होम्योपैथिक कॉलेज में प्रमुख समाज नेता श्री हीरा लाल जैन ने गुरुदेव का भावभीना स्वागत किया। पूज्य गुरुदेव द्वारा आचार्य-प्रवर श्री आत्माराम जी म. एवं श्रमण-प्रवर श्री फूलचन्द जी म. के प्रति की गई श्रद्धाभिव्यक्ति से सर्वत्र ही तत्रत्य जनता को विशेष संतुष्टि मिलती थी। दो जुलाई का प्रवचन सिविल लाइन्स में था। विशाल हॉल में कहीं भी जगह खाली नहीं थी। गर्मी, उमस भी काफी थी। पंखे, कूलर, ए.सी. के अभ्यासी श्रद्धालु श्रद्धाभाव से गुरुदेव के प्रवचन-श्रवण के लिए लालायित बैठे थे। उस दिन लुधियाना के मेयर माननीय श्री सत्यप्रकाश जी चौधरी भी विशेष रूप से आमंत्रित थे। वे जैन धर्म एवं जैन सन्तों के विषय में बड़े रोचक, तथ्यपूर्ण और श्रद्धापूरक शब्दों में बोले, पर उनकी आवाज धीमी थी और वक्तव्य भी कुछ लम्बा हो गया। तभी एक युवक खड़ा होकर उनसे कहने लगा कि हम अपने गुरुदेव का प्रवचन सुनने आए हैं, आप का नहीं। उसके इन वचनों से सारी सभा में सन्नाटा छा गया। आयोजकों को काफी शर्म महसूस हुई। जैसे तैसे करके मेयर साहब ने अपना भाषण पूरा किया। उनके बाद गुरुदेव ने प्रवचन प्रारम्भ किया। शुरू में ही गुरुदेव ने उस युवक के अभद्र आचरण के प्रति सारी सभा की ओर से मेयर सा. से क्षमा याचना की। इससे सभा की फिजा ही बदल गई और मेयर साहब भी गुरुदेव की महानता के आगे नतमस्तक हो गए। गुरुदेव किसी भी भक्ति का, चाहे छोटा या बड़ा हो, अपनी सभा में न स्वयं अपमान करते थे, न होने देते थे। इसके बाद भी मेयर सा. ने कई बार गुरुदेव के दर्शनों का लाभ लिया।

सुंदर नगर प्रवेश से पूर्व गुरुदेव ने शहर स्थानक में विराजमान श्री रत्न मुनि जी म. से मिलकर जाना ही समुचित समझा। गुरुदेव अपनी ओर से कभी व्यवहार में कमी नहीं आने देते थे। सुन्दर नगर में तो बस मेला ही था। प्रधान श्री दीपचन्द जैन के नेतृत्व में सारा समाज तथा श्री नीटू जैन एवं राकेश जैन के नेतृत्व में युवकों ने चातुर्मास में चार चाँद लगा दिए। गुरुदेव ने एक-2 घर को अपनी चरण-रज से पावन

आत्मा में पाप की प्रवृत्ति धर्म की शक्ति को नष्ट कर देती है।

—गुरु सुदर्शन

किया। हर वर्ग को, हर व्यक्ति को अपने प्रेमरस से सिंचित किया। मूर्ति पूजक समाज के लोग भी गुरुदेव की कृपा से सनाथ हुए। गुरुदेव ने नई-पुरानी कार्य कारिणी व नए-पुराने सभी चातुर्मासों की प्रशंसा की। घर-2 में तपस्या की ज्योति जगमगाने लगी। पूरे पंजाब में चातुर्मास की गूंज हुई। युवकों के मुख पर पहली बार 'जय सुदर्शन-गुरु सुदर्शन' का अमृत-घोष सुनने को मिला। पौषध, अठाई, मासखमणों की पूरी बहार आई। सुश्राविका रत्नी बाई जी ने 92 वर्ष की आयु में 2 अठाई व 21 दिन के व्रत किए।

लुधियाना के कांग्रेसी नेता श्री सुरेन्द्र डाबर ने कई बार गुरुदेव से मुख्यमंत्री सरदार बेअन्त सिंह जी को दर्शन कराने की अनुमति चाही। गुरुदेव ने उनकी प्रबल भावना को देखकर 'जो इच्छा' कहकर स्वीकृति दे दी। उनके आने से पूर्व सुरक्षा कारणों से पुलिस काफी सक्रिय रही। गुरुदेव को इतना तामझाम पसंद नहीं था, पर दखल नहीं दिया। सूर्यास्त के समय मुख्यमंत्री आए। उनको उम्मीद थी कि गुरुदेव नीचे ही मिलेंगे पर गर्मी होने से गुरुदेव ऊपर छत पर बरसाती में विराज गए थे। उन्होंने गुरुदेव से काफी बातें कीं। बहुत प्रभावित होकर उठे और कहने लगे कि आज तो भीड़ बहुत है, फिर कभी आपसे एकान्त में मिलने आऊँगा। अगले महीने अमृतसर के उद्योगपति सेठ नरेन्द्र जैन मुख्यमंत्री से मिलने चण्डीगढ़ गए। उन्होंने नरेन्द्र जी से कहा कि 'मैं आपके गुरुदेव के दर्शन करने तथा व्यक्तिगत चर्चा करने के लिए जाना चाहता हूँ, आप उनसे मेरे लिए समय ले लें।' श्री नरेन्द्र जी चण्डीगढ़ से सीधे ही गुरुदेव के चरणों में आए और मुख्यमंत्री जी की भावना बताई। गुरुदेव ने साफ मना कर दिया कि 'सरदार जी की सुरक्षा को हर समय खतरा रहता है, अतः यहां लाने की कोई जरूरत नहीं है। जरा-सी कोई वारदात हो गई तो सारे जैन समाज पर आँच आएगी।' नरेन्द्र जी चले गए। उसी शाम को चण्डीगढ़ में उग्रवादियों ने मुख्यमंत्री की हत्या कर दी।

झुक के रहना/नम्र बनना/शर्माना बड़े व्यक्तियों का आचरण है।

—गुरु सुदर्शन

गुरुदेव ने मुनियों को प्रेरणा दी कि भिन्न-2 स्कूलों में जाकर बालकों को नैतिकता और धर्म-शिक्षा का उपदेश दो, विशेषतः शराब व मांसाहार के विरोध में बालकों में संस्कार डालो। गुरुदेव की भावना पूरी हुई। बहुत से स्कूलों में लहर आई। कई स्कूलों के अध्यापकों ने बताया कि हमारे सैंकड़ों बालकों ने अण्डा खाना छोड़ दिया है। उन सभी स्कूलों के विद्यार्थियों की एक भाषण-प्रतियोगिता स्थानक में आयोजित की गई। बालकों के भाषण काफी शोधपूर्ण एवं प्रशंसनीय थे। निर्णायक मण्डल दुविधा-ग्रस्त था कि किसको, कौन-सी श्रेणी दी जाए। गुरुदेव ने अपने प्रवचन में फरमाया कि 'किसी भी बालक को दूसरा या तीसरा स्थान न दिया जाए। न ही किसी को ईनाम से वंचित रखा जाए। सभी बालक अच्छे हैं। अच्छा बोले हैं, अतः सभी प्रथम हैं'। गुरुदेव के निर्णय से निर्णायक दल की परेशानी भी दूर हुई तथा सभी स्कूल और छात्र भी प्रसन्न हुए।

श्री राकेश जैन ने पंजाब के सभी युवक-मण्डलों का एक अधिवेशन आयोजित कराया। पूज्य गुरुदेव ने दिन में तथा दिल्ली के प्रो. रतन जैन आदि वक्ताओं ने उसे रात्रि में संबोधित किया। जैन युवकों का उत्साह देखकर लगता था कि ये समाज में नई क्रांति ला सकते हैं। लेकिन धीरे-2 मार्गदर्शन के अभाव में उनकी शक्ति बिखर जाती है। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ के आचार्य श्री नित्यानन्द जी म. भी लुधियाना में चातुर्मास कर रहे थे। गुरुदेव का एवं उनका पारस्परिक प्रेमालाप एवं आवागमन होता रहता था। गुरुदेव को पेशाब की तकलीफ काफी बढ़ चली थी। कई डॉक्टर ऑप्रेशन की राय दे चुके थे, पर अभी गुरुदेव की मनः-स्थिति तैयार नहीं थी। अन्ततः सी. एम.सी. हस्पताल के प्रमुख डॉ. प्रकाश जोन्सन ने गुरुदेव को विश्वास दिलाया कि आपका ऑप्रेशन बिल्कुल निर्दोष पद्धति से होगा। कोई फीस नहीं लगेगी। रात को ग्लूकोज नहीं लगेगा तथा आपकी सभी संयम-मर्यादाओं का भी पूर्णतः पालन होगा। इस बात से गुरुदेव

अच्छे ख्यालात के आदमी मान लेते हैं, जिद्द नहीं करते एवं बात को तूल नहीं देते।
—गुरु सुदर्शन

सहमत हो गए। सब व्यवस्थाएँ सुचारु रहीं। उस समय का एक रोचक संवाद प्रस्तुत है—

ऑप्रेशन टेबल पर लेटे हुए गुरुदेव से डॉ. बोला 'आपको कोई चिन्ता तो नहीं?' गुरुदेव— 'चिन्ता मुझे नहीं, आपको है।' डा.— 'आपको कोई याद आता है क्या?' गुरुदेव— 'हाँ, बस अपने गुरुदेव, भगवान् तथा पाँच महाव्रत। डा.— 'क्या कोई शिष्य याद नहीं आता?' गुरुदेव— 'नहीं, शिष्य कोई याद नहीं आता। शिष्यों की रक्षा करता हूँ और अपना फर्ज निभाता हूँ।' तभी एनेस्थीसिया के डॉ. ने कहा मैं आपका आधा हिस्सा सुन्न करूँगा। गुरुदेव ने 'सुन्न' शब्द को शून्य की ओर घुमाते हुए कहा— 'यदि सारा ही शून्य कर दो, तो मजा आ जाए क्योंकि सर्वशून्य में ही आत्म-दर्शन होता है।' अन्त में डॉक्टर हंस कर कहने लगे— 'आप जैसा मजेदार मरीज पहले कभी नहीं दखा। हस्पताल से गुरुदेव को लकड़ी की कुर्सी पर बैठाकर सन्त उठाकर लाए। कमाल ये कि उसी दिन से गुरुदेव ने प्रवचन प्रारम्भ कर दिया।

चातुर्मास-समाप्ति से पूर्व लुधियाना शहर रूपा मिस्त्री गली की समाज विनति लेकर आई। गुरुदेव ने सप्रेम विनति स्वीकार की। शहर पधारे। श्रद्धेय श्री रतनमुनि जी म. से मधुर-मिलाप हुआ। उन्होंने आचार्य-प्रवर श्री आत्माराम जी म. का विशाल शास्त्र-भण्डार दिखाया। मुनियों ने 'महानिशीथ सूत्र' पढ़ने एवं लिखने की इच्छा व्यक्त की। वहाँ के भण्डार से बाहर किसी प्राचीन ग्रन्थ को ले जाने की अनुमति नहीं थी, अतः महाराज श्री ने उसकी फोटो कापी एक दो दिन में तैयार करके भिजवाने की पेशकश की, परन्तु सन्तों ने मूल पन्नों से ही पढ़ने की प्रार्थना की। अपनी उदारता का परिचय देते हुए श्रद्धेय श्री रतन मुनि जी म. ने सारा विशालकाय ग्रन्थ उनको दे दिया। श्री राकेश मुनि एवं श्री सुनील मुनि जी ने उसकी शीघ्र प्रतिलिपि करके साभार वापिस कर दिया।

जो उपकार मानता है वह बड़ा है।

—गुरु सुदर्शन

गुरुदेव अग्रनगर में विराजमान थे। श्री राकेश मुनि जी के पास 3-4 वर्ष पुरानी एक गर्म लोई थी। वजन में भारी थी। उससे पिण्ड छुड़ाकर नई लेने के इच्छुक थे। एक भाई ने विनति की। उसे तथा नई लोई को लेकर वे गुरुदेव के पास आए। गुरुदेव ने पुरानी लोई मंगाई। उसे देखकर फरमाया, 'अरे भोले, इसे अभी और चला ले'। इन शब्दों का करण्ट-सा असर हुआ। राकेश मुनि जी ने कहा, 'अच्छा, मैं इसे 5 साल और 31 दिसम्बर 2000 तक चला लूँगा।' सन् 2000 में वे नई लोई लेने के लिए काफी प्रयासरत थे। पर अनुकूलता नहीं बनी। तभी गोहाना में 1 जनवरी 2001 को मन्त्री जगदीश जैन ने एक लोई की विनति की, उसे फरस लिया।

लुधियाना से जगरावां पधारे। ऐसे रूट से गए जहाँ से जैन सन्तों का विचरण नहीं होता था। गुरुदेव ने सैंकड़ो सिक्ख भाइयों को 'वाहे गुरु' की कसम दिलाकर मांस, अण्डे और शराब का नियम कराया। सिक्खों में जैन सन्तों के प्रति विशेष श्रद्धा बनी।

जगरावां पूज्य श्री रूपचन्द जी म. की समाधि के कारण विख्यात है पर अब गुरुदेव के पदार्पण से जन-2 का तीर्थ बन गया था। वह प्रवास कई अर्थों में ऐतिहासिक रहा। वहाँ के कई विज्ञ श्रावकों ने गुरुदेव के महान् जीवन को बहुत करीब से देखा। गुरुदेव तेरापंथ भवन में भी ठहरे। वहाँ के कुछ श्रावक स्थानकवासी होते हुए भी दया-दान के विषय में भ्रम में थे। वस्तुतः आजकल स्वाध्याय की प्रेरणा और रुचि भी कहीं-2 भटकाव का कारण बन रही है। कुछ श्रावक केवल शब्दों को ही पकड़ कर रह जाते हैं और मिथ्या धारणाओं व प्ररूपणाओं के शिकार हो जाते हैं। जैसे कि कुछ लोगों ने ये धारणा बना ली कि 'हम रोगी को यदि औषधि देकर ठीक कर दें तो उसके ठीक होने पर वह जो भी पाप-पूर्ण क्रियाएँ करेगा, उसका सारा पाप हमको लगेगा। तर्कों के इस घुमाव को गुरुदेव ने इस प्रकार समझाया कि 'कोई मुनिराज यदि किसी पापी-अधर्मी

जब पुण्य उदय होता है तब अंतर की स्फुरणा पैदा होती है।

—गुरु सुदर्शन

को पाप छुड़ाकर सत्पथ पर प्रेरित करके धार्मिक बना दे। वह धर्म के बल से देवलोक में जन्म लेकर देवता बने तो जब वह देवता भोगादि सांसारिक क्रिया करेगा तो क्या उसका पाप उस मुनि को लगेगा?' गुरुदेव के इस स्पष्ट कथन से प्रश्नकर्ता बहुत समाहित हुए।

जगरावां में गुरुदेव के प्रवचन भावुकतापूर्ण होते थे। एक रविवार को उन्होंने अपने जीवन का ध्येय स्पष्ट करते हुए फरमाया, 'हमारे गुरु ने हमें सब कुछ दिया। अब तो यही भावना है कि वो दिन परम कल्याणकारी होगा, जिस दिन अपने गुरुभाई तपस्वी जी की तरह निःशल्य होकर, संथारा ग्रहण करके आत्म-कल्याण करूंगा। इन मुनियों से भी जो मेरा हर जगह साथ देते हैं, यही प्रार्थना करता हूँ कि मेरी भी उनकी तरह आराधना करवा देना। मुझे 72 दिन न सही, 72 घंटे का ही संथारा आ जाए।'

निर्भीक-वक्ता महामंत्री श्री मापेन्द्र जैन गुरुदेव की जीवन शैली से काफी गहराई तक परिचित और प्रभावित हुए तथा गुरुदेव के एवं उनके सन्तों के प्रति विशेष श्रद्धाशील बने।

जगरावां से रायकोट पधारे। वहीं पर पूज्यपाद श्री सेठ जी म., श्रद्धेय श्री रामप्रसाद जी म. का चिर-प्रतीक्षित मंगल-मिलन हुआ। पंजाब-हरियाणा का श्रद्धालु-वर्ग हजारों की संख्या में झलक पाने के लिए वहाँ उमड़ पड़ा। बहुत ही भावुकता-भरा माहौल रहा। स्वल्प काल ठहरना हुआ, पर स्नेह का निर्झर बहता ही रहा।

> कुशल व्यापारी वही है जिसकी रोकड़ में न एक पैसे की कमी हो एवं न वृद्धि हो।
> —गुरु सुदर्शन

चतुर्थ प्रहर

1. ढलते सूरज का तेज

हर रंग में जलवा है तेरे नूर का,
जिस फूल को भी सूंघता हूँ खुशबू तेरी ही आती है।

गुरुदेव का भाव बना कि जालन्धर, होशियारपुर आदि पंजाब के अग्रिम क्षेत्र भी फरस लें। रायकोट से विहार किया। पहला पड़ाव मुश्किल से चार कि.मी. पर था, पर चलना अशक्य हो गया। सन्तों ने एवं रायकोट समाज ने वापिस लौटने के लिए आग्रह किया। स्वयं गुरुदेव ने भी महसूस किया कि आगे चलना संभव नहीं है। बिना मन के वापिस लौटे। गुरुदेव का शरीर हार गया, घुटनों का दर्द जीत गया। जिस दर्द को 18-19 साल से दबाए हुए थे, आज उसी ने उनको तोड़कर रख दिया। फिर गुरुदेव लगभग साढ़े तीन महीने रायकोट में रुके। वहाँ की गुरु भक्ति, सेवा-भावना एवं धर्म श्रद्धा में काफी वृद्धि हुई। कुछ लोगों ने निवेदन किया कि ब्रादरी के भाइयों का पारस्परिक समझौता करा दो पर शारीरिक कष्टों में घिरे रहने से गुरुदेव उस ओर अधिक ध्यान नहीं दे सके। फिर भी गुरुदेव की उपस्थिति मात्र से समाज में एकता का वातावरण बना रहा।

आचार्य-प्रवर श्री नाना लाल जी म. के सुशिष्य श्री पारस मुनि जी म. भी गुरुदेव के दर्शनार्थ रायकोट पधारे। गुरुदेव का निश्छल स्नेह और आत्मीयता पाकर कृतकृत्य हुए। रायकोट में होली चातुर्मासी, महावीर

> आत्म कल्याण लज्जा, दया, संयम/धर्म अंतःकरण से होगा, आडंबर से नहीं।
> —गुरु सुदर्शन

जयन्ती तथा अक्षय-तृतीया महोत्सव सम्पन्न हुए। कई स्थानीय बहनें भी वर्षीतप में जुट गईं। कई भाई-बहनों ने प्रतिक्रमण याद किए।

गुरुदेव के घुटने जवाब दे चुके थे। रायकोट में स्थिर-वास की इच्छा नहीं बन पाई। हरियाणा में कहीं भी, विशेषतः जीन्द में रुकने का भाव था, लेकिन पहुँचा कैसे जाए, बड़ी भारी समस्या थी। सन्तो ने डोली का विचार रखा पर गुरुदेव के सामने फिर वही समस्या। मेरे कारण सन्तों को कष्ट होगा। मना करते रहे पर कोई विकल्प शेष नहीं था। महावीर जयन्ती के पास गुरुदेव ने डोली प्रयोग की हाँ भर ली। सन् 1996, का चातुर्मास सुनाम के लिए स्वीकृत किया।

रायकोट से विहार हुआ। सैंकड़ो नर नारियों की आँखों में आँसू थे। राम-वन गमन पर अयोध्या वासियों की पीड़ा पुनः रायकोट वासियों के नयनों में छलक और झलक रही थीं। पहले कभी डोली का प्रयोग न होने से उसकी रचना अस्पष्ट रही। डोली काफी भारी बनी। उस दिन 24 अप्रैल, 1996 थी। पहली बार डोली का प्रयोग हुआ। ये पूरे तीन साल तक चला। जब भी डोली में चले, मजबूरी में चले। डोली को सवारी के रूप में देश दर्शन के रूप में या धर्म प्रचार के साधन के रूप में कभी नहीं अपनाया। डोली में बैठने से पूर्व गुरुदेव हाथ जोड़ कर सिर झुकाते तथा बाद में सबसे क्षमा मांगते। मार्ग में जहाँ कहीं मुनिराज पानी आदि निपटाते, वहां कुछ दूर पैदल चले जाते। रायकोट से जिस दिन चले, उस दिन शहर की सीमा में नहीं बैठ सके। एक कि.मी. दूर जाकर ही बैठे। उस दिन गर्मी अधिक थी, रास्ता भी लम्बा था, पड़ाव पर पहुँचना मुश्किल हो गया। गुरुदेव की मनोव्यथा बेअंत थी।

शायद हमारे साये की किसी को जरूरत है,
इसलिए ए यारो! हम धूप में सफर करते हैं ॥

धूरी में आकर डोली का स्वरूप परिवर्तन किया गया। उसका सुफल ये रहा कि एक दिन में ही सीधे संगरूर आराम से आ गए।

पंचम आरे में प्रवचन औषधि रूप है।
—गुरु सुदर्शन

गुरुदेव अपनी दीक्षा भूमि में अनेक बार आए थे पर अधिक ठहरने का मौका नहीं लगा था। चातुर्मास प्रारम्भ होने में ढाई महीने शेष थे, अतः गुरुदेव ने दो महीने वहाँ लगाने का मन बनाया। सभी प्रबंधक गण इतने कुशल, विनीत और विचारशील थे कि हर कार्य आशातीत रूप से सफल होता था। भाई सुरेन्द्र जी की बहन विजयलक्ष्मी जैन (प्रिंसिपल, राजकीय स्कूल) पैरों की विकलांगता के कारण स्थानक में ऊपर चढ़ने में असमर्थ थीं। उनकी प्रवचन सुनने की भावना थी। स्थानक की लघुता को देखते हुए गुरुदेव ने समीपवर्ती 'राजकीय कन्या विद्यालय' में ठहरने का विचार बनाया। वहां उनकी भावना भी पूरी हुई। गर्मियों की छुट्टी के कारण स्कूल बन्द था। गुरुदेव के विराजने से धर्म-ध्यान के लिए खुल गया। शास्त्रों में वर्णित, उपवन, चैत्यों के समवसरण की याद ताजा हो जाती थी। कुछ दिनों बाद ही गुरुदेव को ज्वर हो जाने से प्रवचन बंद करना पड़ा।

गुरुदेव दृढ़ मनोबली थे। शरीर दुर्बल होने पर भी वाचस्पति गुरुदेव के पुण्य-स्मृति दिवस पर 27 जून को उपवास रखा। गर्मी बहुत थी, स्वास्थ्य नरम था। उपवास तो साता-पूर्वक हो गया पर पारणे में असाता रही। गुरुदेव की भावना तपस्या की निरन्तर रहती थी। भोजन के विषय में गुरुदेव बहुत ही स्वाद-विजयी थे। उन्हें मिठाई, नमकीन, तली हुई चीजें, अधिकतर ठण्डी वस्तुएँ, मलाई, दही, मेवा आदि का त्याग था। अधिकांश वस्तुएँ तो जीवन-पर्यन्त के लिए छोड़ी थी। जो शेष थी, उनका भी पक्खी से पक्खी का त्याग कर लेते थे। पाँच विगयों में से दिन में एक ही विगय लगाते थे। द्रव्यों की संख्या बहुत कम होती थी। संतों को भी स्वाद विजय की त्याग की प्रेरणा देते थे। गुरुदेव की भावना तपस्या की निरंतर रहती थी पर पारणे में दिक्कत हो जाने से कम कर पाते थे। वैसे उनकी आहार व्यवस्था तपस्या से कम नहीं थी।

एक रात पेड़ के नीचे गुरुदेव का पट्टा लगाया हुआ था। आधी रात

> गुरु हमेशा जीवन की गर्मी को ठंडक देते हैं।
>
> —गुरु सुदर्शन

को आंधी चलनी शुरू हुई। गुरुदेव उठे। संतों को आदेश फरमाया कि सभी अन्दर चलो। सब चले गए। अन्दर प्रवेश करते ही जोरदार कड़ाके की आवाज हुई। बाहर झांककर देखा। पता लगा कि जिस पेड़ के नीचे गुरुदेव, श्री जयमुनि जी म. व एक दो अन्य सन्त सोए थे, वही टूट कर गिरा था। प्रातः सूर्योदय पर जब पूरा नजारा देखा, तो एक भीषण उत्पात से बचने की राहत सबने महसूस की।

संगरूर में प्रसिद्ध अंग्रेजी भाषाविद् श्री आर.डी. अग्रवाल से श्री आदीश मुनि जी अंग्रेजी पढ़ने के इच्छुक थे, लेकिन अग्रवाल साहब किसी प्राचीन कटु अनुभव के कारण जैन सन्तों से परे रहते थे। उनके परम मित्र श्री प्रकाश चन्द जी एक बार उन्हें गुरुदेव के दर्शनार्थ लाए। पहली ही मुलाकात में वे गुरुदेव के परम अनुरागी बन गए। श्री आदीश मुनि जी म. को खूब अध्यापन कराया तथा बाद में भी कई बार गुरु दर्शन हेतु आए।

सुनाम प्रवेश से पूर्व लखमीरवाला गाँव में गुरुदेव विराजित थे। मकान में गर्मी थी। दरवाजे में तख्त लगा रखा था। जैनरेटर का शोर था। पूरी रात गुरुदेव को नींद नहीं आई। मन पर तन की दुर्बलता का भार था। चिंता घर करने लगी पर तुरन्त गुरुदेव संभले। चिन्ता चिन्तन में बदल गई। हृदय-विराजित अपने भगवान् वाचस्पति गुरुदेव की स्मृति में डूब गए। पुकार प्रार्थना बन गई। मानों गुरुदेव को साक्षात् करके कहने लगे 'हे गुरुदेव! मैं सुनाम में सन् 1948 के चातुर्मास में रोज दो-2 बार कथा करता था। इस बार एक बार भी करने की हिम्मत नहीं है। मुझे बल दो, कहीं लोग ये न कहें कि चार महीने बीमार ही रहे, एक भी कथा नहीं की।' प्रार्थना के ये मंजु स्वर रात भर हृदय से निकलते रहे और होठों पर मंडराते रहे। तभी अन्तरात्मा से आवाज आई, 'चिन्ता मत कर सब ठीक होगा। और यह आवाज शतप्रतिशत सही निकली। गुरुदेव संगरूर में संतों से बार-2 यही कहते थे कि इस बार चातुर्मास में मैं तो

जब अच्छे दिन आने होते हैं तो गुरु के प्रति श्रद्धा स्वतः पैदा होती है।
—गुरु सुदर्शन

आराम करूंगा। कथा तुम्हें ही करनी पड़ेगी। लेकिन हुआ ये कि मुनि मण्डल तो समय-2 पर आराम भी करता रहा, पर गुरुदेव पूरे चातुर्मास कथा फरमाते रहे।

प्यास बढ़ती ही गई जितना हम पीते गए।
तिश्नगी ऐसी भी होगी ये कभी सोचा न था ॥

गुरुदेव के सुनाम प्रवेश पर श्री नरेश मुनि जी म. वहाँ विराजित थे। बाद में बुढलाडा के लिए विहार किया। श्री वकील मुनि जी गुरु चरणों में रहे। श्री वकील मुनि जी ने काफी तपस्याएँ की। एक मास में 14-15 दिन का तप हो जाता था। यद्यपि हृदय रोग के कारण उनकी तपस्याएँ कई वर्ष से कम थीं, पर गुरुदेव का सान्निध्य उनके लिए वरदान रूप सिद्ध हुआ। उनकी तपस्या में गुरुदेव अपने हाथों से उनकी वैयावृत्य करते। गुरुदेव के पदार्पण मात्र से क्षेत्र में तपस्याओं की बहार आ गई। प्रधान जी की पुत्रवधू बहन रीना जैन ने 81 दिन की रिकार्ड तपस्या की। तपस्वी श्रावक राजकुमार जी का प्रण था कि जब तक गुरुदेव सुनाम विराजेंगे, हमारे घर में तपस्या का क्रम निरंतर चलेगा और अपने प्रण पर वह परिवार अटल रहा। 8-10 वर्ष के बालक-बालिकाओं ने अठाई तप किए। गुरुदेव अपने कष्ट के बावजूद दीर्घ तपस्वियों को दर्शन देने जाते थे।

मंत्री ऋषिपाल जी के सुपुत्र श्री संदीप जी ने चार महीने अपने आई.ए.एस. की पढ़ाई केवल इसीलिए स्थगित कर दी ताकि गुरुदेव के प्रवचनों का लाभ ले सकूं। बारह व्रतों का सूक्ष्म विश्लेषण सुनकर कई भव्यात्माओं ने व्रत लिए। सन्दीप जी भी उनमें से एक थे। प्रधान जी के सुपुत्र लक्षवीर जी ने चार महीने दिल्ली में व्यवसाय का त्याग रखा। यहां के युवकों की सेवा का आदर्श सर्वत्र चर्चित रहा। गुरुदेव ने कई अजैन एवं सिक्ख परिवारों में दर्शन देकर व्यसन त्याग कराए।

श्री उज्ज्वल जैन एक दिन गुरुदेव को अपने एक मित्र के घर

> शेष ग्रह नीचे परंतु गुरु की दशा ऊपर हो तो कोई खतरा नहीं।
> —गुरु सुदर्शन

ले गए। वे उस समय बराड़ सरकार में मंत्री थे। उन्होंने गुरुदेव की आवभगत की। अपना अहोभाग्य माना। गुरुदेव ने कहा 'मंत्री सा. हम आपसे एक चीज चाहते हैं। मंत्री जी सोचने लगे, 'इनके पैर में दर्द है, शायद कार चाहते होंगे'। बोले— 'फरमाओ'। गुरुदेव ने कहा— 'आज से मांसाहार नहीं करना'। सरदार जी हैरान रह गए। चरणों को हाथ लगाया, जीवन पर्यन्त के लिए नियम ले लिया। अपने घर को भी शुद्ध बनाया।

सुनाम चातुर्मास के प्रारम्भ में दिल्ली से प्रो. रतन जैन दर्शन करने आए। वे नेत्र रोग से पीड़ित थे। एक नेत्र की रोशनी जा चुकी थी, दूसरी को खतरा था। साथ ही असह्य दर्द भी रहता था। गुरुदेव उनकी पीड़ा से दयार्द्र हो उठे। प्रवचन में भावुक होकर कहने लगे 'रतन जी समाज का हीरा हैं। इसकी पीड़ा हमारे लिए भी पीड़ाकारी है। सब मिलकर शासन-देव से प्रार्थना करें कि इसकी पीड़ा शांत हो'। गुरुदेव की मंगल-कामना के साथ सहस्रों हाथ उठे और रतन जी भी भावुक हो गए। दो महीने बाद सुनाम आकर उन्होंने कथा में कहा था कि "मैंने सभी Hospitals और बड़े-2 नेत्र-विशेषज्ञों को दिखा लिया था। रोज ही दर्दनाशक दवा खाता था, पर मेरी पीड़ा में कोई कमी नहीं आ रही थी। गुरुदेव के कृपा-पूर्ण आशीर्वाद के बाद सारी पीड़ा शांत हो गई। एक दिन भी दवा नहीं खानी पड़ी और रोग जहाँ पर था वहीं पर रोक लग गई।"

पर्यूषणों से पूर्व गुरुदेव ने आज्ञा फरमाई कि आठ दिनों तक स्थानीय एवं बाहर का कोई भी भाई-बहन स्थानक में बिना मुँहपत्ती न रहे। उत्तर भारत में व्यापक स्तर पर ये प्रथम प्रयास था जो काफी सफल रहा। आज भी वहाँ के कई लोग ऐसे हैं, जो इस नियम के अभ्यासी हो गए हैं।

सुनाम से जीन्द जाने का लक्ष्य बना। जाखल में श्री नरेश मुनि जी म. ने, नरवाणा में श्री प्रकाश मुनि जी म. ने गुरुदर्शन किए। जीन्द

गरीबी में घबराओ मत, अमीरी में इतराओ मत, उदय-अस्त सूर्य समान है।
—गुरु सुदर्शन

पहुँचते ही नए साल की पहली तारीख पर छाई हुई गहरी धुंध ने आगे के धुंधले दिनों के संकेत बखूबी दे दिए।

जीन्द में स्थिरवास का मन लेकर आए थे। शरीर के आंतरिक रोग पुनः उभरने लगे। डॉ. सुरेश जैन की हर पल, हर क्षण की गहन देखभाल से गुरुदेव जीन्द में रुके रहे। 16 अप्रैल को उन्हीं के 'नाथ नर्सिंग होम' में दिल्ली के प्रसिद्ध सर्जन सी.एम. गोयल के हाथों ऑप्रेशन हुआ। ऑप्रेशन के बाद पैरों में भयंकर सियाटिका दर्द चालू हो गया। असह्य वेदना कई दिन रही। काफी दिनों में उसका निराकरण हो पाया।

जीन्द में ही वर्षीतप के पारणे हुए। अब तक आते-आते ये पारणे वार्षिक महोत्सव का रूप लेने लगे थे। कई स्थानीय बहनों ने भी शुरू किए। जिनमें स्कीम के प्रधान जी एवं शहर के मंत्री जी दोनों की धर्मपत्नियाँ भी थी।

गुरुदेव का सन् 1997 का चातुर्मास जीन्द में ही हुआ। एक जनवरी से 15 नवम्बर तक साढ़े दस महीने वहीं पर विराजे। 1959 के बाद किसी एक स्थान पर ये गुरुदेव का सबसे लम्बा प्रवास था। प्रारम्भ के 5-6 महीने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की गिरावट के रहे।

गुरुदेव ने भगवती सूत्र की सामूहिक वाचना शुरू की। जब उनकी स्थिति और बिगड़ने लगी तो दिल्ली के प्रख्यात डॉ. एस.पी. गुप्ता का संयोग मिला। उनके उपचार से एकदम सुखद परिवर्तन आया। गुरुदेव ने कथा प्रारम्भ की और पूरे जीन्द नगर में रौनक और तपस्या में भी एक करण्ट सा आ गया। 17-18 वर्ष के युवकों ने मासखमण कर दिए। श्री खजानचन्द जैन रिढ़ाणा वालों ने 77 वर्ष की वृद्ध अवस्था में 53 दिन की व्रत-तपस्या करके उत्तर भारत में एक कीर्तिमान बनाया।

चातुर्मास के पश्चात् पानीपत की ओर विहार हुआ। सफीदों में श्री सत्यप्रकाश मुनि जी ठाणे 3 का चातुर्मास अपनी सुहावनी छटा के

चंद्र/सूर्य पर राहु की जितनी छाया है उतना ही प्रकाश मंद ऐसे ही अविनयभाव से ज्ञान का प्रकाश मंद पड़ जाता है। —गुरु सुदर्शन

साथ सम्पन्न हुआ था। गुरुदेव ने वहाँ की रचना देखी कि किस तरह से उन्होंने अपने संयम, प्रवचन व मधुर व्यवहार से क्षेत्र को जगाया। जब सफीदों वाले को चातुर्मास दिया था तो सब मायूस थे कि गुरुदेव ने हमें छोटे सन्तों का चातुर्मास दिया है। पर गुरुदेव ने फरमाया था है कि 'अभी मत कहो, चातुर्मास के बाद बताना कि क्या कमी रह गई। लेकिन कमी का क्या काम था? गुरुदेव का पुण्यातिशय इतना प्रबल था कि जिस भी शिष्य पर हाथ रख देते, वही प्रस्तर से प्रतिमा बन जाता था।

एक बुत मैंने तराशा, हो गई सबको खबर,
शहर के पत्थर सभी अपना पता देने लगे ॥

पानीपत पधारे। मुनि-सम्मेलन हुआ। जन-भावनाओं का उफनता सैलाब पुरानी सभी दृष्ट और कल्पित धारणाओं के किनारे तोड़ रहा था। जन-भाषाएँ उस भीड़ को 5 हजार से ऊपर आँक रही थी। पानीपत वालों ने गुरुदेव को रोकते-2 एक कल्प ले ही लिया। अंबाला श्रीसंघ गुरुदेव के चातुर्मास के लिए प्रयत्नशील था। गुरुदेव के जी.टी. रोड पर पधारते ही वे और सक्रिय हो गए।

घरौण्डा पधारे। यहां पर गुरुदेव ने एक नया ही कार्यक्रम प्रारम्भ किया—चमड़ा मुक्ति का। यह कार्यक्रम धीरे-2 महा-अभियान का रूप ले गया। स्कूल के प्रांगण में विद्यार्थी, अध्यापक एवं प्रबंधक गण, तीनों स्तरों पर कोई भी चमड़े के जूते, चप्पल, बैल्ट, बैग और पर्स आदि पहन कर न आए, ऐसा प्रथम प्रयास घरौण्डा के जैन स्कूल में हुआ। फिर तो करनाल, कुरुक्षेत्र अंबाला, सढ़ौरा, नरवाणा, जगरावां आदि अनेक स्थानों पर स्कूलों की प्रबंधक समितियों ने लिखित रूप में चमड़ा मुक्ति नियम लागू करने के प्रण गुरुदेव के चरणों में समर्पित किए।

करनाल में विराजते हुए गुरुदेव ने उस इलाके के तीन-चार उपेक्षित ग्रामों की भी सुध ली। श्री राकेश मुनि जी एवं श्री नरेन्द्र मुनि जी को धर्म-देशना के लिए भेजा। शाहपुर, काछवा, मंजूरा, नीसिंग, दादूपुर आदि

जितनी मात्रा में विश्वास उतना ही धर्म प्राणवान, नहीं तो देव, पत्थर, गुरु मांस पिंड, धर्म कागजों का पुलिंदा होगा। —गुरु सुदर्शन

गाँवों का एक संघ बन गया। उस स्वल्पकालीन प्रवास का सुखद परिणाम ये रहा कि वहाँ दो बहनों ने सन् 1998 में तथा दो ने सन् 1999 में वर्षीतप किया। मास-खमण एवं वर्षीतपों की ये उज्जवल परम्परा वहाँ काफी समय चलती रही। कुरुक्षेत्र में श्री आनन्दऋषि जी म. के सुशिष्य प्रवर्तक श्री कुन्दन ऋषि जी म. से सौहार्द-पूर्ण मिलन हुआ।

गुरुदेव ने सन् 1998 का अपना चातुर्मास अम्बाला शहर के लिए स्वीकार किया। प्रवेश पर अम्बाला श्री-संघ का उत्साह पूरे अरूज पर था। केसरिया पटका गले में डाले हुए सैंकड़ों प्रमुख लोगों, युवकों एवं भाई बहनों ने गुरुदेव का स्वागत किया। स्थानक-प्रवेश से पूर्व साध्वी श्री स्वर्णा जी म. को दर्शन दिए।

गुरुदेव ने अम्बाला में समाज की राजनीति में उलझे बिना हर छोटे बड़े कार्यकर्ता का सम्मान बढ़ाया। अक्षय तृतीया के पारणे पी.के.आर. स्कूल में पहली बार जितनी शानदार व्यवस्था के साथ हुए, उसकी गुरुदेव ने जी-भरकर प्रशंसा की। वहाँ पर मुनिराजों का प्रवचन भी हुआ, फिर आत्मानन्द जैन स्कूल में भी प्रवचन किया।

इस वर्ष पूज्य गुरुदेव ने श्री नरेन्द्र मुनि जी म. का प्रथम स्वतंत्र चातुर्मास नाभा (पंजाब) में करवाया। चातुर्मास में उन्हें कुछ प्रवचन सामग्री की आवश्यकता थी। जिसके लिए उन्होंने अंबाला विराजित श्री गुरुदेव के चरणों में समाचार भेजा। श्री जय मुनि जी म. ने प्रवचन सामग्री दी और पूज्य गुरुदेव ने उस मौके कृपापत्र भेजा। जिसमें पूज्य गुरुदेव ने स्वयं अपने हाथों से लिखा– 'नरेन्द्र मुनि! तेरे भंडारे हमेशा भरे रहेंगे।' उसी दिन से श्री नरेन्द्र मुनि जी म. स्वयं को भरपूर महसूस करते हुए प्रसन्न रहते हैं।

अम्बाला में गुरुदेव की प्रेरणा से श्री राजेन्द्र मुनि जी म. सूर्योदय के समय धर्म की कक्षा लगाते थे। एक दिन गुरुदेव गैलरी में टहल रहे थे। दूसरी तरफ युवक पढ़ रहे थे। गुरुदेव को कमरे में जाना था। रास्ता

रूप के साथ शील व मधुरता हो तो सोने पर सुहागा, विपरीत हो तो चंद्रमा में कलंक।
—गुरु सुदर्शन

युवकों के पास से होकर था। गुरुदेव ने सोचा कि यदि मैं इधर से निकला तो सबको उठना पड़ेगा इससे पढ़ाई में बाधा पड़ेगी। अतः कमरे में आने के लिए गुरुदेव पहले पीछे जीने से ऊपर चढ़े, फिर सारे हॉल की विशाल छत पार की, फिर बड़े जीने से उतर कर कमरे में पहुँचे। घुटनों के दर्द के कारण काफी हाँफ तो गए पर अध्ययन में अंतराय नहीं होने दी। उनकी करुणा और विवेक-दृष्टि अपार थी।

10 जून को बरसात शुरू हुई। मध्याह्न और सायं का आहार नहीं आ सका। 11 की प्रातः कुछ देर के लिए बरसात रुकी तो थोड़ा सा जल आ गया पर फिर बरसात शुरू। शाम तक चलती रही। दोपहर में संतों ने विनति की कि अपने घुटनों पर दर्द-नाशक दवा लगवा लो। दर्द तो असह्य था। प्रतिदिन दवा लगती थी पर उस रोज लगवाने से मना कर दिया। कारण पूछा तो कहने लगे कि 'दवाई लगवाने में हाथ खराब होंगे। उन्हें धोने के लिए पानी बरतना पड़ेगा। पानी अल्प है, किसी मुनि के पीने के काम आ जाएगा। मेरे दर्द से ज्यादा सन्तों की प्यास बड़ी है'। कई बार विनति करने पर भी गुरुदेव ने उस रोज दवा नहीं लगवाई।

23 जून को पानीपत में श्री विनयमुनि जी म. के ऊपर अचानक उष्ण परीषह का मारणान्तिक कष्ट आया। संघ, समाज एवं मुनियों के परामर्श से गुरुदेव ने उनको पानीपत व राजाखेड़ी श्री संघ के अधीन कर दिया। इससे उनको जीवन-दान मिला। डाक्टरों, साथी मुनियों एवं प्रत्यक्ष-दर्शियों के अनुसार उनका बचना भी अपने आप में एक करिश्मा ही था। गुरुदेव ने श्री राजेन्द्र मुनि जी म. को उनकी सेवा में भेजा। श्री विनय मुनि जी म. की अस्वस्थता, के कारण उपचार आदि में दोष लगने के कारण गुरुदेव ने उनको दीक्षा छेद का प्रायश्चित्त दिया।

चातुर्मास से पूर्व ज्ञानगच्छीय श्री जुगराज जी म., श्री अमृत मुनि जी म. ठाणे 3 भी पधारे। गुरुदेव सदा से ही इस विचार के रहे हैं कि सभी साधु-साध्वियों को अपने संघ की समाचारी के अनुरूप ही चलना

> जिन्हें मन को समझाना है उनके लिए गुरु/शास्त्र उपयोगी हैं।
>
> —गुरु सुदर्शन

चाहिए। परस्पर वन्दना, एक पाटे पर बैठना, सम्मिलित आहार आदि ये सब अपने-2 संघ की व्यवस्थाएँ हैं, इनको कभी विवाद का विषय नहीं बनाना चाहिए। समाचारी के नाम पर समाज को दिग्भ्रान्त करना, विषम वातावरण बनाना या उत्कृष्टता-निकृष्टता का प्रदर्शन करना भी गुरुदेव को पसन्द नहीं था। 'प्रवचन-सभा में साध्वियाँ पट्टे पर बैठेंगी तो हम प्रवचन-सभा में नहीं जाएँगे', ऐसा जब श्री अमृतमुनि जी ने कहा, तो गुरुदेव ने ये विषय उन्हीं के ऊपर छोड़ दिया। वहाँ पर विराजमान श्रमणसंघीय साध्वियों को नीचे जमीन पर बैठकर प्रवचन सुनने हेतु बाध्य करने के लिए गुरुदेव ने स्पष्ट इंकार कर दिया। बाद में कुछ आपसी विचार-विमर्श के बाद अमृतमुनि जी स्वतः ही तैयार हो गए।

आषाढ़ी चातुर्मासी पर अंबाला में इतने पौषध हुए, जितने कभी संवत्सरी पर भी नहीं होते थे। उस दिन सचमुच ही संवत्सरी जैसी शोभा थी और अगले दिन इतनी तेज बारिश हुई कि प्रवचन भी नहीं हो सका, जैसे कि संवत्सरी से अगले दिन सर्वत्र प्रवचन बन्द रहता ही है। अंबाला में 8-10 वर्षीतप प्रारम्भ हुए तथा अठाइयाँ व मासखमण भी प्रभूत मात्रा में हुए। प्रधान श्री रतन चन्द जैन अपने सहयोगियों के साथ दिन भर सेवा में लगे रहते थे। उनकी प्रधानगी में 1983 में भी गुरुदेव का बरनाला चातुर्मास हुआ था। उन्होंने गुरुदेव की हर आज्ञा का श्रद्धा-सहित पालन किया। चमड़ा मुक्ति अभियान के कार्य में गुरुदेव का इतना जोर था कि अकेले अगस्त के महीने में ही एक हजार से ऊपर भाई बहनों को जीवन भर के लिए चमड़े से बनी वस्तुओं के सेवन का त्याग करवाया।

इसी चातुर्मास में गोहाना से एक युवक दर्शनार्थ आया। दिल्ली में हुए किसी झगड़े के कारण मानसिक अवसाद ग्रस्त होकर आत्महत्या के लिए प्रेरित हो रहा था। तीन बहनों का इकलौता भाई। शादी-शुदा, दो छोटे-2 बच्चे, अपनी व्यथा-कथा श्री राकेश मुनि जी को कही। उन्होंने गुरुदेव को अर्ज की। गुरुदेव ने युवक को अपने पास बुलाया। सिर पर

> साधना के दौरान जिन्हें गुरु कृपा प्राप्त है वह मुक्ति के पास हैं।
> —गुरु सुदर्शन

हाथ रखा। आज्ञा दी-सारी चिन्ता यहीं छोड़ जा। इन शब्दों ने जादू सा असर किया। आज तक युवक प्रसन्न है।

चातुर्मास में प्रतिदिन गुरुदेव बड़ी संलेखना का पाठ अवश्य सुनते रहे। ज्यादा से ज्यादा समय स्वाध्याय सुनने में बिताते। उनकी इच्छा होती थी कि मैं स्वयं स्वाध्याय पढ़ूं पर पढ़ते-2 सिर में दर्द होने लगता था अतः मुनियों से सुना करते। इसके लिए उन्होंने कई मुनियों को नियुक्त कर रखा था। अलग-2 समय पर मुनि आगमों की स्वाध्याय सुनाया करते थे। बड़ी संलेखना के पाठ पर गुरुदेव अधिक एकाग्र हो जाते थे।

श्री सुनील मुनि जी एवं श्री आदीश मुनि जी ने आचारांग से प्रारंभ करके 28-30 आगम गुरुदेव को सुनाए। दिन के चार प्रहरों में लगभग दो प्रहर का समय स्वाध्याय श्रवण में ही बीतता था।

पर्युषणों में जितनी अठाइयाँ अम्बाला में हुईं, उतनी उत्तर भारत में कहीं नहीं हुई, ये एक नया ही चमत्कार रहा।

वहां-वहां पे मैं सजदे में सर झुकाता हूँ।
जहां-जहां से ए गुरुवर! तेरा कारवां गुज़रता है ॥

क्रोध के वशीभूत होने पर मुक्ति द्वार पर अर्गला लग जाती है।
—गुरु सुदर्शन

2. छिपते सूर्य की लालिमा
(अन्तिम छः महीने)

साथ तेरा मिला तो सकून पाया दिल ने,
वरना समझते थे जहां में खुद को अकेला।

सूर्य अस्त होता है, लेकिन एकदम नहीं होता। उसके लक्षण दिखाई देने लगते है। पश्चिम दिशा लाल हो जाती है, पक्षी घोसलों में लौटने लगते हैं, फूल मुरझाने लगते हैं, चमगादड़ मंडराने लगते हैं, सारी प्रकृति में उदासी की काली चादर उतरने लगती है, लेकिन काम करने वाले कारीगर उन सब परिस्थितियों से निरपेक्ष होकर केवल सूर्य की किरणों को ही देखते रहते हैं। और जब सूर्य अस्त हो जाता है, तब कहते हैं कि ये सब कुछ एकदम अचानक ही हो गया। ऐसे ही पूज्य गुरुदेव के जीवन के साथ भी घटित हुआ। आगामी 6 महीनों में जो-2 घटनाएँ घटी, यदि उनको उस महान् दुर्घटना से जोड़कर देखें तो पता लगेगा कि ऐसा होने के कई लक्षण प्रकट हो चुके थे। पर किसी ने उनको समझा ही नहीं। दीवार पर इबारतें लिखी जा चुकी थी, पर उनको पढ़ने वाला, समझने वाला कोई नहीं था।

अम्बाला से पटियाला जाने का कोई भाव नहीं था। सोचते थे कि अम्बाला से सीधे कैथल होते हुए जीन्द पहुँच जाएँ तथा डोली से छुटकारा पाकर स्थिरवास कर लें। लेकिन पेशाब की कुछ चिकित्सा अपरिहार्य दिखाई देने लगी। वह सुविधा चंडीगढ़ और पटियाला में थी। पटियाला का विचार बना। श्री संघ पटियाला गुरुदेव का आगमन पाकर खुशी से झूमने लगा। समाज ने गुरुदेव से प्रार्थना की, गुरुदेव! आप हमें प्रवेश की निश्चित तिथि बता दें, हम स्वागत में 1008 व्यक्ति सीमा पर खड़े करेंगे। गुरुदेव अब इन सब चीजों से उदासीन हो चले थे। फरमाया कि

> हमारा जीवन हमारे दिमाग द्वारा निर्मित होता है।
> —गुरु सुदर्शन

हमें ऐसे स्वागत नहीं करवाने। इसकी जगह सहज भाव से सामायिक करो। हमारा जिस दिन मौका होगा पहुँच जाएंगें।

अम्बाला का विहार ऐतिहासिक था। एक छोटी सड़क से जा रहे थे। तभी एक मोटर साइकिल सवार भीड़ की अधिकता के कारण खुद को संभाल नहीं सका और दिग्भ्रमित होने के कारण डोली से टकरा गया। श्री आदीश मुनि के कूल्हे में ठोकर लगी। डोली का संतुलन बिगड़ गया, गुरुदेव को भी धक्का लगा। पर संभल गए। घन्नौर पहुँचते ही श्री नरेन्द्र मुनि जी, श्री नवीन मुनि जी, आदि मुनिराज भी डोली की सेवार्थ पहुँच गए। श्री नरेन्द्र मुनि जी ने नाभा में अपना प्रथम स्वतंत्र चातुर्मास किया था। गुरुदेव की अपार कृपा से बड़ा प्रभावपूर्ण तथा शान्ति क्रान्ति वाला चौमास रहा। डाक्टरों ने गुरुदेव का परीक्षण करके पाया कि अभी ऑप्रेशन की कोई जरूरत नहीं है यद्यपि इसीलिए पटियाला पधारे थे।

एक कल्प पूरा होने पर गुरुदेव ने स्थानक से विहार किया तथा महावीर भवन में एक प्रवचन करके लाल बाग में श्री पद्म जैन की कोठी पर तीन दिन विराजे। लाल बाग में पटियाला के राजा की महारानी श्रीमती परनीत कौर गुरुदेव के दर्शनार्थ आई। गुरुदेव ने उनको मांसाहार के पूर्ण त्याग की प्रेरणा दी। उनकी भावभीनी प्रार्थना पर गुरुदेव उनके महल में भी दर्शन देने पधारे। रानी ने गुरुदेव को अपना महल दिखाया। गुरुदेव ने उनको संयम सुमेरु श्री मयाराम जी म. की पटियाला में दीक्षा तथा उनके द्वारा कौन्सिल के सेना अध्यक्ष सरदार गुरुमुखसिंह को जैन धर्मानुरागी बनाने का प्रसंग सुनाया, जिसे सुनकर रानी साहिबा बड़ी प्रभावित हुई। वहाँ से डॉ. रमेश जैन की कोठी पर एक दिन विराजे। उनके कला-कौशल से गुरुदेव को अनेक बार आराम मिला था तथा अन्य मुनिराज भी उनके उपचार से लाभान्वित हुए थे। फिर कई दिन तक धुंध का लम्बा प्रकोप चला। पुनः स्थानक आने पर गुरुदेव की प्रेरणा से 10-12 बहनों ने प्रतिक्रमण याद किया।

दिमाग एक कूप समान है इसमें शांति का आगाध जल भी पाया जा सकता है एवं आत्मा की विस्मृति में डूबा भी जा सकता है। —गुरु सुदर्शन

पटियाला से विहार हुआ। मौसम खराब था पर चल दिए। अगले दिन रास्ता लम्बा था। आकाश भी बादलों से घिरा था। अब बरसा कि अब बरसा। 21कि.मी. समाणा मण्डी पहुँच कर ही दम लिया। रास्ते में एक जगह डोली में भी Fracture हुआ, उसे ठीक करवाया गया। मकान भी काफी ठंडा मिला। वयोवृद्ध श्री वकील मुनि जी का तो उस दिन आयम्बिल भी था। गुरुदेव अपनी थकावट को अपने मन ही मन समेटे हुए थे। अगले दिन शहर में पधारे। वहाँ एकाकी सन्त श्री सरपंच मुनि जी गुरुदेव के दर्शन करके बड़े प्रफुल्लित हुए।

जब समाणा से विहार हुआ तो जीन्द से श्री राजेन्द्र मुनि जी म. एवं श्री रोहित मुनि जी को डोली-वहन करने के लिए चीका मण्डी बुला लिया गया। चीका में गुरुदेव प्रथम बार ही पधारे थे। बड़ा उल्लासमय वातावरण बना। कई दिन रुककर कैथल पधारे। श्री पवन जैन की साबुन फैक्ट्री में चारों दिशाओं से दर्शनार्थियों का भारी समूह उमड़ा। कैथल में रोहतक के परम गुरुभक्त श्री ईश्वर जैन के सहयोग से डॉ. ए.के. बोहरा आए। उनके उपचार से गुरुदेव काफी ठीक हो गए। 11 फरवरी को अकस्मात् ही श्री शान्ति चन्द्र जी म. को जोरदार हृदयाघात हो गया। उसी समय डाक्टरी सहायता मिल गई। पहले दिन स्थानक में ही उपचार मिला किन्तु देहली के विख्यात डॉ. विमित जैन के आने के पश्चात् उनके परामर्श से महाराज श्री को डॉ. अशोक जी के हॉस्पिटल में स्थानान्तरित कर दिया गया। हार्ट अटैक की खबर सारे उत्तरी भारत में प्रसारित हो गई। दूर-नजदीक के प्रायः सभी श्री-संघों ने आकर साता पृच्छा की। गुरुदेव ने अपने सभी मुनिराजों को वहीं पर बुला लिया। स्थानक-भवन छोटा होने से अग्रवाल धर्मशाला में सभी स्थानान्तरित हो गए। छोटा-सा कैथल क्षेत्र देखते-देखते सुविशाल बन गया। गुरुदेव के आज्ञानुवर्ती सभी 27 मुनिराज वहाँ पर एकत्रित हुए। 28 फरवरी को मुनि-सम्मेलन में हजारों गुरु भक्त श्रद्धालु गुरुदर्शन-हेतु आए। गुरुदेव ने अपने मुनिराजों के 6 चातुर्मास फरमाए। इस वर्ष का मुनि-सम्मेलन कई अर्थों में अनूठा

धर्मात्मा के लिए सदैव सतयुग/चौथा आरा है।

—गुरु सुदर्शन

था। गुरुदेव के जीवन-काल का यह अंतिम मुनि सम्मेलन था जिसमें उनके अधीनस्थ सभी मुनिराज एकत्रित हुए। गुरुदेव ने प्रत्येक सन्त को अपना भरपूर प्यार दुलार दिया।

सब कुछ खुदा से मांग लिया, तुझको मांग कर,
उठते नहीं हैं हाथ मेरे, अब दुआ के बाद ॥

अब भी कई मुनिराज उस समय गुरुदेव द्वारा प्रदर्शित अनन्त कृपा की, करुणा की कहानियाँ भावविभोर मन से सुनाते हैं। कई सन्तों को बातचीत में ये भी संकेत दिया कि 'मेरे जीवन-दीप में तेल खत्म होने को है, पंछी उड़ने वाला है'। गुरुदेव ने सबको हित-शिक्षाएँ दी, अनेक आज्ञाएँ फरमाई। एक दिन प्रातः प्रतिक्रमण से पूर्व सब मुनिराजों को एकत्रित करके फरमाने लगे–

1. हर रत्नाधिक मुनिराज अपने साथी मुनिराज के मान-सम्मान का पूरा ध्यान रखें।
2. सभी लघु मुनिराज अपने रत्नाधिकों की पूरी विनय-भक्ति करें। उनकी आज्ञा बिना कोई कार्य न करें।
3. सब मुनिराज अष्टमी, पक्खी को व्रत, अमल, एकाशना आदि तपस्या यथाशक्य करने की कोशिश करें।

25 फरवरी को प्रातःकाल आदेश फरमाया कि "तुम सभी आज दिन में मुझे अपने विचार लिखकर दो कि मेरे बाद किस तरह की व्यवस्था में रहना चाहते हो। मैं सबके पत्र पढ़कर फाड़ दूँगा। किसी की बात किसी को बताऊंगा नहीं। फिर मैं उसके आधार पर या स्वतंत्र रूप से निर्णय करूँगा। गुरुदेव के इस आदेश से सब सन्त सकते में आ गए कि ये विषय अचानक कैसे चला दिया। न जाने गुरुदेव क्या सोच रहे हैं, आदि। सन्तों ने ये भी कहा कि 'जो आप उचित समझें, कर देना, लिख देना, हमें मंजूर है। और यदि राय ही लेनी है तो कुछ गीतार्थ मुनियों की ले लो। सब छोटे-2 मुनियों को लिखने की क्यों कह रहे हो'। परन्तु

संयम और त्याग चिंताहरण मंत्र हैं।
–गुरु सुदर्शन

गुरुदेव ने कह दिया कि सब संत समझदार हैं, सब लिखें। अधिकांश मुनियों ने उस दिन अपने विचार लिख कर गुरुदेव को सौंप दिए। ऐसा लोकतांत्रिक कदम पहली बार देखने में आया था।

श्री शांति मुनि जी म. का उपचार चल रहा था। कुछ टैस्ट बाकी थे जो दिल्ली में ही हो सकते थे। श्री आदीश मुनि जी के भी कुछ टेस्ट दिल्ली में होने थे। इन सब बातों के आधार पर गुरुदेव ने सन् 1999 का अपना चातुर्मास दिल्ली रोहिणी, सैक्टर 3 करने का संकेत दिया, यद्यपि परिपूर्ण स्वीकृति नहीं फरमाई थी। यदि कोई सन्त किसी भाई-बहन से गुरुदेव का चातुर्मास रोहिणी का कहता, तो गुरुदेव उसे फौरन टोक देते थे कि ऐसा मत कहो, न जाने उनके मन में क्या था?

सम्मेलन के पश्चात् सन्तों के विहार हुए। श्री शांति मुनि जी म. की सेवा में श्री राजेन्द्र मुनि जी म. आदि सन्तों को छोड़ा। उन्होंने घोर परिश्रम करके क्षेत्र में जैन अजैन लोगों की श्रद्धा को काफी मजबूती प्रदान की। गुरुदेव ने दिल्ली के लिए नया ही रास्ता चुना। पुण्डरी, नीसिंग, मंजूरा से घरौण्डा, फिर जी.टी. रोड के रास्ते दिल्ली। सारे रास्ते गुरुदेव सुप्रसन्न रहे, लेकिन विहार, पड़ाव व समय की न्यूनाधिकता के विषय में स्वयं कोई निर्णय नहीं लिया। यही फरमाते रहे कि 'डोली सन्त उठाते हैं, अतः उनसे ही पूछो'। गाँवों में कहीं कोई असुविधा भी हुई, तो उन्होंने कोई शिकायत नहीं की। नाराजगी उनसे कोसों दूर हो गई थी। निषेध तो मानो उनके शब्द-कोष से ही नहीं, विचार कोष से भी निकल गया था।

मंजूरा गाँव में रविवार लगाया। दो बहनें वर्षीतप कर रही थी। गुरुभक्त बिजेन्द्र जैन आदि ने सेवा में कमाल किया। बड़ा आनन्द मंगल रहा। घरौण्डा पधारे। वहाँ संयम-निष्ठ श्री प्रेमचन्द जी म., जो तपस्वी श्री रोशनलाल जी म. के लघुभ्राता व शिष्य हैं, उनसे मिले। गुरुदेव उनके कमरे में नीचे गए। जमीन पर बैठ गए। कहने लगे कि "मैंने आपके

बिगड़ी में काम आने वाले को बड़प्पन स्वतः मिल जाता है।
—गुरु सुदर्शन

गुरुदेव के चरणों में सन् 1979 में अपने जीवन की आलोचना की थी। अब 20 वर्ष हो चुके हैं। आपको उन्हीं का रूप मानकर अब 20 वर्षों की आलोचना के संबन्ध में चर्चा करना चाहता हूँ। मैं इस संसार से खाली नहीं जाना चाहता। आलोचना करके शुद्ध होकर जाऊंगा। मेरा आप पर सहज विश्वास है। तब श्री प्रेमचन्द जी म. संकोच करने लगे। गुरुदेव ने फरमाया– "आप संकोच न करें।" फिर आलोचना करके तदनुसार प्रायश्चित स्वीकार किया। बाद में सन्तों से कहा 'अब मैं पूरी तरह निश्चिन्त हो गया हूँ। अब जीवन लीला कभी भी समाप्त हो जाए।'

घरौण्डा से राजाखेड़ी पधारे। गुरुदेव ने बड़ा भावुक प्रवचन किया। प्रवचन करते-करते फरमाया कि 'राजाखेड़ी में मैं अंतिम बार आया हूँ, फिर सम्भवतः मेरा दोबारा आना न हो। इस घोषणा से लोग चकित हो गए। कइयों की आँखों में आँसू आ गए। लोग सोच बैठे थे कि रोहिणी चातुर्मास के बाद गुरुदेव को पानीपत स्थिरवास कराएंगे, तब राजाखेड़ी तो पधारेंगे ही।

फिर मिलेंगे कभी इस बात का वादा करो।
हमसे और एक मुलाकात का वादा करो ॥

गुरुदेव पानीपत पधारे। उसी दिन श्री जय मुनि जी म. के पैर में मोच आ गई। गुरुदेव ने अपने से ज्यादा उनका ध्यान रखा। अग्रवाल मण्डी, गांधी मण्डी दोनों जगह भरपूर रौनक रही। गुरुदेव के पावन पदार्पण की खुशी में लाला जियालाल जैन, राजाखेड़ी वालों के परिवार के सभी 24 सदस्यों ने मरणोपरान्त नेत्रदान के फार्म भरे तथा और भी सैंकड़ों लोगों से भरवाए। युवकों के मन में समाज सेवा और आत्म-बलिदान की इस शुभ भावना को देखकर गुरुदेव को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसी परिवार की फैक्ट्री में, दर्शन देकर गुरुदेव समालखा पधारे। महावीर जयंती का कार्यक्रम हुआ।

समालखा में 27 मार्च की रात्रि को गुरुदेव सोए हुए थे कि अचानक

गुरु आज्ञा मानने का मन नहीं जबरदस्ती भी मानें तो फायदा है जैसे बच्चे को दवाई जबरदस्ती दो तो भी फायदा है। –गुरु सुदर्शन

पट्टे से नीचे गिर गए। गुरुदेव के निजी प्रयास से एवं दो मुनियों के सहयोग से गुरुदेव पट्टे पर पुनः लेट गए। छाती में चोट आई। सोनीपत आने के बाद पलस्तर लगवाया।

वीर जयंती पर छाती में दर्द होने से गुरुदेव का प्रवचन फरमाने का विचार नहीं था। पाँच संदेश लिखकर अपने ही नाम से प्रसारित करने की आज्ञा फरमा कर मुनियों को दिए। 1.सब भाई बहनें चमड़े से बनी वस्तुओं का त्याग करें। 2.सभी रेशमी वस्तुओं का त्याग करें। 3.जीते-जी रक्तदान और मरणोपरान्त नेत्रदान का भाव बनाएँ। 4.एक वर्ष में महावीर का जीवन चारित्र अवश्य पढ़ें। 5.आगामी अक्षय तृतीया से वर्षीतप के भाव बनाएँ। जब नीचे प्रवचन चल रहा था तो प्रभु वीर की जयन्ती का ख्याल करके गुरुदेव का मन भी प्रवचन करने को हुआ। नीचे पधार कर पावन प्रवचन फरमाया। वहाँ से विहार कर ला. महावीर प्रसाद जैन के 'सन्मति राइस मिल' में एक दिन विराज कर गन्नौर पधारे। वाचस्पति गुरुदेव की जन्मभूमि राजपुर में एक दिन लगाया। ला. जय नारायण जी ने सपरिवार गुरुभक्ति का लाभ लिया। गुरुदेव 3 अप्रैल को सोनीपत मण्डी में पधारे। 4 अप्रैल को जैन मंदिर में प्रवचन था। प्रवचन में जाने से पूर्व गुरुदेव ने प्रवचनकार मुनियों को आदेश फरमाया कि 'आज मेरा जन्म दिन है, प्रवचन में इस विषय में कुछ न बोला जाए तथा धर्मोपदेश के अलावा और कोई चर्चा न की जाए। 5 ता. को वहाँ से विहार हुआ। 6-7 अप्रैल नरेला में लगी। 8ता. को नरेला से कोई 4 कि.मी. चले थे। नवकारसी के बाद सड़क के एक किनारे बैठकर सन्त पानी ग्रहण कर रहे थे। गुरुदेव के इर्द गिर्द सब सन्त बैठे थे तभी एक ट्रक दिल्ली की ओर से तथा एक ट्रक नरेला की तरफ से आया। दोनों पूरी तेजी में थे। उस समय स्वयं गुरुदेव तथा तीन सन्त बहुत थोड़े अन्तर में ट्रकों की चपेट में आते-2 बचे। मौत आते-2 टल गई। सबने गुरुदेव के चरण छूए। गुरुदेव ने कहा– 'सन्तों के पुण्य से बचाव हो गया'। उस दिन अलीपुर रुके। वहाँ से यादव नगर पधारकर क्षेत्र को अपनी कृपा से सनाथ किया।

> सेवा कार्य में सदा कमाई होती है चाहे किसी कार्य में टोटा हो।
>
> –गुरु सुदर्शन

11 अप्रैल रविवार को गुरुदेव ने यादव नगर से शालीमार बाग प्रवेश किया। पूरी दिल्ली में असीम उल्लास और उमंग थी। वैसे तो सोनीपत से ही 40-50 भाईयों का मण्डल साथ आता था पर आज तो हजारों भाई बहन स्वागत में थे। दिल्ली वाले न जाने क्या से क्या कह रहे थे पर गुरुदेव किसी और ही दुनिया में थे। उस दिन प्रवचन में सारा हॉल खचाखच भरा था। गुरुदेव ने अपने जीवन का अंतिम प्रवचन प्रारम्भ किया। शुरू में भजन के ये बोल थे–

गाओ मंगल-गान, जय तीर्थंकर।
सबका हो कल्याण, जय तीर्थंकर ॥टेक॥

जीवन की अंतिम वेला है,
तन रोगों से घिरा हुआ है।
है तपोधनी का ध्यान, जय तीर्थंकर ॥

श्रोता इन शब्दों को सुनकर बेचैन हुए। वे सोच रहे थे कि अभी तो दिल्ली आए हैं। चौमास होगा, सम्भवतः स्थिरवास भी हो जाए, पर गुरुदेव तो कुछ और ही कहे जा रहे थे। प्रवचन पूरा हुआ। गुरुदेव अन्दर से परम शान्त, कृतकृत्य हो गए थे। भीड़ आई और चली गई।

साध्वी संयमप्रभा 'कमल' जी लघु साध्वियों की पढ़ाई के लिए समय चाहती थी। गुरुदेव ने तत्काल श्री जय मुनि जी म. को आदेश दिया कि इन्हें भाइयों की उपस्थिति में पूरा समय दो। गुरुदेव सबको देने में लगे हुए थे, कोई कृपा से खाली न रह जाए। शालीमार आते ही भूख खत्म हो गई। प्रवचन में नीचे आना भी सीढ़ी चढ़ने उतरने के कारण कठिन हो गया। 14 अप्रैल संक्रांति के दिन नीचे पधारे। स्थानक में ऊपर-नीचे कहीं तिल धरने की भी जगह नहीं थी। उसके बाद ऊपर से ही मंगल-पाठ का दान देने लगे। जीन्द के डॉ. सुरेश जैन आए। गुरुदेव की तबीयत देखकर घबरा गए। उनके अनुसार गुरुदेव का दिल्ली-आगमन ठीक नहीं था। फिर भी कुछ उपचार-परिवर्तन की चर्चा मुनियों से करके चले गए।

गुरु कृपा एवं धैर्य से सिद्धि प्राप्ति होती है।
–गुरु सुदर्शन

18 ता. को अक्षयतृतीया के पारणे हुए। श्री शांति मुनि जी म. की अनुपस्थिति काफी खल रही थी। श्री राकेश मुनि जी पारणों की सब व्यवस्था संभाल रहे थे। भीड़ की अधिकता एवं पाण्डाल की विशालता को देखकर ये निर्णय हुआ कि कोई सन्त नहीं बोलेगा। गृहस्थ ही स्वयं स्टेज संभालेंगे। समाज प्रमुख श्री किशोरी लाल जी ने बड़े भावुक स्वर में भावना भाई कि 'गुरुदेव शालीमार में डोली में बैठकर पधारे हैं, किन्तु हम यहां पर गुरुदेव की इतनी सेवा, आराधना करेंगे कि ये ठीक होकर अपने पैरों से चलकर रोहिणी में पधारेंगे।' गुरुदेव के सान्निध्य में करीब 50 भाई-बहनों ने वर्षी-तप के पारणे किए। इससे अधिक संख्या में नए वर्ष के लिए शुरू हुए। गुरुदेव उस दिन गर्मी होने के बावजूद भी दो घंटे तक पण्डाल में बैठे रहे, बिना सहारे के, बिना पैरों को हिलाए-डुलाए। वह सौभाग्यशाली दिन अंतिम ही था, जब गुरुदेव किसी प्रवचन-सभा में विराजमान हुए। गुरु-चरणों में सुदीर्घ वर्षी-तप करने वाले भाई-बहनों की शृंखला में और नाम भी निरन्तर जुड़े। कार्यक्रम समाप्त होने पर स्थानीय प्रबन्धकों ने गुरुदेव की ढीली तबीयत को देखते हुए दो सूचना-पट्ट लिखकर टंगवा दिए कि 'मौन दर्शन करें'। गुरुदेव को पता लगा तो तत्काल उतारने के आदेश फरमाए। जिन्दगी भर किसी के ऊपर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया तो आज कैसे लगाते। सब तपस्वियों को गुरुदेव ने सप्रेम साधुवाद दिया। सबके लिए गुरुदेव का एक बोल और एक दृष्टिपात ही पर्याप्त था।

हमें सिर्फ और सिर्फ तू ही चाहिए।
न तेरे जैसा न तेरे सिवा और कोई ॥

अगले दिन सर गंगा राम हॉस्पिटल में टेस्टिंग के लिए जाने का विचार बना। गुरुदेव ने कई स्थानों पर अपने मुनियों को स्वयं पत्र लिखें। प्रो. रतन जैन ने डॉ. सोगानी से समय की व्यवस्था कर ली। शालीमार में कथा करने का दायित्व सतियों को देकर दो तीन दिन में वापिस लौटने

> समय तो गिरता/उठता है पर अपने को कभी न गिरने दो।
> —गुरु सुदर्शन

की सोचकर 20ता. को प्रातः ही करोल बाग के लिए चल दिए। 21ता. को प्राचीन राजेन्द्र नगर में श्री शिखर चन्द जी जैन के आवास पर ठहरे। हॉस्पिटल वहाँ से एक डेढ़ फर्लांग की दूरी पर स्थित है। गर्मी में कोठियाँ मुनियों के लिए प्रायः असाताकारी ही रहती हैं। और गुरुदेव तो काफी कमजोरी महसूस कर रहे थे, फिर भी उन्होंने एक बार भी ये नहीं कहा कि यहाँ मुझे अनुकूलता नहीं है।

गंगाराम हॉस्पिटल में गुरुदेव किसी उपचार के लिए नहीं गए थे। तीन चार शारीरिक व्याधियों की टैस्टिंग करानी थी। 1. दोनों घुटनों के लिए एम.आर.आई. टैस्ट कराना था। 2. कई महीनों से गुरुदेव के कानों में साँय-2 की आवाज गूंजती थी, उसके लिए Audiometry Test, 3. नसों की शक्तिमत्ता की जाँच के लिए Nerve Conduction Test तथा 4. मूत्राशय की क्षति मापने के लिए CMG Test कराना था। 21 ता. को हॉस्पिटल पहुँचे। उस दिन हॉस्पिटल की गवर्निंग बॉडी के अध्यक्ष डॉ. सामा गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुए। कहने लगे कि 'सारा हॉस्पिटल आपकी सेवा में हाजिर है। हर कार्य निःशुल्क होगा। हम आपको यहाँ से पूरी तरह रोग-मुक्त करके भेजना चाहते हैं। उस दिन गुरुदेव के Audiometry तथा M.R.I. Test हुए। डॉक्टर लोग गुरुदेव को हस्पताल में ही रखना चाहते थे पर गुरुदेव की वहाँ रहने की इच्छा नहीं थी। श्री राजकुमार जी जैन के माध्यम से अपनी भावना डाक्टरों के सामने रख दी। वे सहमत हो गए।

24 ता. को प्रातः सूर्योदय पर गुरुदेव कोठी के आंगण में श्री आदीश मुनि जी के साथ टहल रह थे कि जोरदार चक्कर आना शुरू हो गया। उनको पट्टे पर लिटाया गया। शरीर में पसीना आया तथा कुछ उल्टी हुई। Vertigo का मामला समझा गया। गुरुदेव भारी बैचेनी में थे। सन्तों से कहा कि 'मुझे संथारा करवा दो'। पर सन्तों को ऐसा कोई लक्षण दिखाई नहीं दिया कि गुरुदेव की स्थिति गम्भीर है। सन्तों ने निवेदन किया कि

संकट के समय महापुरुषों की याद आती है यदि तब भी उसे याद करके अपना लो तो गिरने से बच जाओगे। —गुरु सुदर्शन

तबीयत संभल जाएगी, आप दवा ले लो। गुरुदेव ने फिर कहा कि 'यदि संथारा नहीं करवाते, तो व्रत ही करवा दो'। सब सन्त उस विषय में भी लाचार ही थे क्योंकि हस्पताल के निकट आए हुए थे, दवा चालू थी। यदि शरीर में कुछ जाएगा ही नहीं, तो तबीयत और अधिक खराब ही होगी, सबका ऐसा चिन्तन बना। प्रातः 10 बजे शरीर में और घबराहट हुई। रक्तचाप नीचे गिरकर 60/40 तक आ गया। डॉ. जी.बी. जैन ने तुरन्त संभाला। कोठी में ही ग्लूकोज लगा दिया। सब ठीक हो गया। दोपहर बाद केन्द्रीय कृषि मन्त्री श्री सोमपाल जी शास्त्री अपने प्रिय मित्र श्री नन्द किशोर जी जैन के साथ दर्शन करने आए। शास्त्री जी गुरुदेव के पुराने शिष्य एवं अनुरागी रहे हैं। वे आधा घंटा रहे पर तबीयत ठीक न होने के कारण गुरुदेव उनसे अधिक बात नहीं कर पाए। मुजफ्फर नगर से बहन चंचल जी परिवार सहित गुरु चरणों में बैठी रही। गुरुदेव ने भावुकता में कहा– 'तपस्विनी बहन! अपने तपोबल से मुझे ऐसा आशीर्वाद दो कि मेरी आज की रात आराम से निकल जाए'। शाम को गुरुदेव का आसन बाहर छज्जे में किया गया। जब उन्हें बाहर लाया जा रहा था तो फिर चक्कर आया। मुनियों ने उन्हें बाहों में भरकर पट्टे पर लिटाया। सब सन्त चिंतित हुए। रात भर बारी-2 से जागने की व्यवस्था बनाई।

24 ता. की रात गुरुदेव ने बेचैनी में ही काटी, लेकिन किसी से कुछ नहीं कहा। मुनिराज यही समझते रहे कि ठीक हो रहे हैं। 25 ता. को प्रातः थोड़ा सा दूध लिया। गर्मी बढ़ रही थी, रविवार था। संतों को प्रवचन के लिए भेज दिया। आगंतुकों की भीड़ बढ़ रही थी। कमरे में घुटन थी। गत शाम से ही साँस लेने में दिक्कत आ रही थी। दर्शनार्थियों के लिए निवेदन किया गया कि दूर से ही दर्शन कर लें। आज गुरुदेव ने कुछ नहीं कहा कि दूर से करने दो या पास से। 24 ता. से ही चेहरे पर सोजिश थी तथा दांई बाजू में भी कुछ दर्द था। डॉ. जी.बी. जैन ने अपनी आशंका को दूर करने के लिए ई.सी.जी. की। रिपार्ट नार्मल थी।

अक्ल के दीवाने गुरु से दूर रहते हैं, गुरु से संपर्क मिलाना आत्मा का धंधा है,
अक्ल तो गोरख धंधा है। –गुरु सुदर्शन

गुरुदेव ने श्री राधेश्याम जी को कहा कि 'मुझे 26 ता. को सीएमजी टैस्ट नहीं कराना। मुझे सोमवार को सुबह-2 शालीमार ले जाना'। उनकी आज्ञा में सब सन्तों ने स्वीकृति में सिर हिला दिया। साँस की समस्या बढ़ती गई। गुरुदेव ने श्री जय मुनि जी म. से कहा कि मेरे गुरु भाई श्री रामप्रसाद जी म. को मेरी तबीयत के बारे में समाचार लिख दो। उन्होंने उत्तर दिया कि 'मौखिक खबर भिजवा दी है, कोई जाने वाला मिलेगा तो पत्र भी लिख देंगे', 11 बजे के लगभग डॉ. जे. के. जैन आए। उन्हाने कोठी में गर्मी की अधिकता को देखते हुए गुरुदेव को हस्पताल ले जाने पर जोर दिया। डॉ. जी.बी. जैन भी इसी विचार के थे। सब की राय बन जाने पर गुरुदेव ने भी सहमति दे दी। शरीर में बैठने की हिम्मत नहीं थी, अतः डोली की बजाय स्ट्रेचर पर लगभग 12 बजे हस्पताल ले गए।

अस्पताल जाते ही विभिन्न उपचार शुरू हो गए। गुरुदेव को आक्सीजन लगा दी गई। एक डॉक्टर ने टैस्टिंग के लिए भीतरी (Artery) धमनी से रक्त लेना शुरू किया। जीवन में प्रथम बार इस तरह खून लिया जा रहा था। वह बार-2 सुईं घुसाता, बार-2 निकालता। बड़ी कष्टकारी प्रक्रिया थी, लेकिन गुरुदेव ने उफ तक नहीं की। चेहरे पर भी शिकन तक नहीं आने दी। हाथ से कुछ खून बाहर भी बहा। कपड़े भी खराब हो गए पर गुरुदेव शान्त थे। डाक्टरों ने स्पष्ट कर दिया कि चिन्ता की कोई बात नहीं है। तीन चार घंटे में पूरा आराम हो जाएगा। दो दिन से पेशाब नहीं आ रहा था। Lasix का टीका देने से खुलकर पेशाब आ गया। मन का बोझ कम हुआ। सुश्रावक बाबू केसर दास जी काफी देर तक गुरुदेव के पास बैठ रहे। गुरुदेव के चेहरे पर और हृदय में गहरी शान्ति छाई हुई थी। बस साँस लेने में ही तकलीफ महसूस कर रहे थे। उसके लिए उनको नैबुलाइजर लगाया तो काफी राहत महसूस हुई। श्री रामचन्द्र जी जैन के सुपुत्र श्री विजय जैन इस कार्य में काफी सहायता कर रहे थे। काफी समय से वे गुरुदेव की चिकित्सा-व्यवस्था से जुड़े हुए थे। गुरुदेव की आहार की इच्छा नहीं थी, हल्का-सा पेय-पदार्थ लिया।

क्रोध अंदर पचेगा तो रसायन एवं बाहर निकलेगा तो जहर बनेगा।
—गुरु सुदर्शन

गुरुदेव ने मुनियों से कहा कि आज रात यहाँ कमरे में आदीश मुनि को मत सुलाना। यदि ये रात भर जागेगा तो इसको सिर में तकलीफ हो सकती है। इसे मकान पर ही सुलाना। कुछ सन्तों ने रात को अस्पताल में रहने का विचार बनाया और रात को गुरुदेव की सेवा में दो-2 घण्टे जागने की व्यवस्था बनाई।

गुरुदेव को साँस लेने में परेशानी हो रही थी। उल्टी आई, पर चैन नहीं पड़ी। गर्मी महसूस हो रही थी। डॉ. जे.के. जैन आए। उपचार से सन्तुष्ट थे। रविवार होने से उस दिन हस्पताल का कोई बड़ा डॉ. नहीं था। एक जूनियर डॉ. मनीष वैश्य व्यवस्था संभाल रहा था। सन्त आ जा रहे थे। कोई भी अनिष्ट के प्रति आशंकित नहीं था। शाम 5.45 के करीब श्री राकेश मुनि जी ये सोचकर गुरुदेव के लिए दूध लेने गए कि गुरुदेव ले लेंगे तो ठीक है, वर्ना और कोई सन्त ले लेगा। गुरुदेव ने कह दिया था कि सूर्यास्त से पहले ही ग्लूकोज तथा आक्सीजन सब हटा लिए जाएं। डाक्टरों ने तथा सन्तों ने आज्ञा स्वीकार की। एक डॉक्टर ने रात को एक इंजैक्शन लगाने की आज्ञा मांगी पर उसे भी स्पष्ट इंकार कर दिया। गुरुदेव को आशंका थी कि मुझे कहीं दमा तो नहीं हो जाएगा। पर डॉक्टर ने ऐसी किसी सम्भावना को साफ नकार दिया।

गुरुदेव शांत भाव से लेटे थे। साँस में बेचैनी थी। 6.00 बज चुके थे। शाम की कार्रवाई पूरी करने के लिये डॉ. मनीष जी आए। आक्सीजन लगाई पर थोड़ी देर बाद उतार दी। सन्तों से कहा कि इन्हें बैठाओ तथा खाँसी कराओ, ताकि साँस की नली में कहीं बलगम जमा हो, तो निकल जाए। दोनों तरफ से श्री जय मुनि जी म. एवं श्री आदीश मुनि जी म. ने गुरुदेव को सहारा देकर बैठाया और कहा 'गुरुदेव! खाँसो!' पर गुरुदेव नहीं खाँसे। आवाज सुननी बंद हो गई, गर्दन थोड़ी लटक गई। उस समय 6.15 बजे थे। दोनों को कुछ समझ नहीं आया। डॉ. ने गुरुदेव को फिर पलंग पर लिटाया। शोर मचाया कि 'ये लाओ,

श्रावक घर की आग से बचकर साधु शरण में, यदि वहां भी निंदा चुगली की आग है तो हैरानी है।
—गुरु सुदर्शन

वो लाओ'। छाती को दबाने लगे। उसी समय डॉ. नागेश जैन एवं डॉ. बी. सी. बंसल भी आ गए। चारों तरफ शोर मच गया। जीवन-रक्षक उपचारों के लिए भाग-दौड़ होने लगी। सन्तों के पूछने पर डॉ. नागेश ने बताया कि 'गुरुदेव जा चुके हैं। इनके बचने की अब कोई आशा नहीं है।' डॉ. सोगानी की प्रतीक्षा की गई। चारों ओर मातम छा गया। कोठी से भी बाकी सन्त पहुँच गए। सब का सब कुछ लुट गया था। सन्तों ने असीम धैर्य का सहारा लेते हुए गुरुदेव के वस्त्र बदले। चार लोगस्स का ध्यान किया। शरीर से ममता का बन्धन हटाया। उसे वोसिरा कर शालीमार बाग श्री संघ को सौंप दिया। श्री संघ के प्रधान ला. रतन लाल जैन, महामंत्री शान्ति कुमार जैन, समाज नेता किशोरी लाल जैन, सुरेश जैन आदि को कुछ आवश्यक निर्देश दिएः

1. एक रात्रि से अधिक शरीर को न रखा जाए। 2. अंतिम यात्रा में विमान पर सिक्कों की बौछार न की जाए। 3. हैलीकॉप्टर से पुष्प वृष्टि न कराई जाए। 4. गुरुदेव के फोटो न बाँटे जाएँ। 5. गुरुदेव के नाम से कोई संस्था या समाधि आदि न स्थापित की जाए।

साढ़े सात बजे के लगभग सभी नौ सन्त हॉस्पिटल से अपना सामान समेट कर, भरे दिल से, भरी आँखों से, अंधेरी गैलरियों और अंधेरी सड़कों को पार करते हुए कोठी में लौट आए। सबने प्रतिक्रमण किया। महाप्रलय हो चुका था। द्रव्य और भाव दोनों सूर्य अस्त हो गए थे।

आपको तो बिछुड़ने का भी तरीका न आया।
जाते-2 खुद को हमारे दिल में ही छोड़ गए ॥

दिल्ली में गुरुदेव की सेवा में कुल नौ सन्त थे। कैसा अजब संयोग था कि गुरुदेव के सब वरिष्ठ शिष्य उस समय गुरुदेव के पास में नहीं थे। दृढ़ संयमी श्री प्रकाश मुनि जी म. ठाणे 3 कांधला में, महाप्रभावी शास्त्री श्री पद्मचन्द्र जी म., पंडित रत्न श्री विनय मुनि जी म. ठाणे 4 राजाखेड़ी में, शान्त मूर्ति श्री शांतिचन्द्र जी म. ठाणे 6 सफीदों में और मनोहर व्याख्यानी

गुरु ने शिष्य को विनयवान कह दिया तो संपूर्ण प्रशंसा कर दी।
—गुरु सुदर्शन

श्री नरेश मुनि जी म. ठाणे 4 रोड़ी में विराजमान थे। दूर बैठे सब शिष्यों के मन भी, वचन भी और आत्मा भी बिलख रहे थे। जैसे अंतिम समय में गौतम जी प्रभु महावीर से वियुक्त होकर विषाद भाव को प्राप्त हुए थे, कुछ वैसी ही दशा सब शिष्यों की थी। गुरुदेव के गुरुभ्राता पूज्यपाद सरलात्मा सेठ श्री प्रकाश चन्द जी म., आगम-ज्ञान-रत्नाकर पूज्य श्री रामप्रसाद जी म. ठाणे 8 टोहाणा में विराजमान थे।

6.15 बजे गुरुदेव ने अंतिम सांस ली। 6.30 बजे से ये समाचार जंगल की आग की तरह सर्वत्र फैलने लगा। हजारों स्थानों से परस्पर फोन खड़कने लगे। एकदम तो किसी को भी इस घटना पर विश्वास ही नहीं हुआ। लोगों के दिल धड़कने लगे, हाथ काँपने लगे, सिर चकराने लगे और आँखों से अविरल आँसू बहने लगे। उत्तर भारत के प्रायः सभी जैन श्री सघों ने व्यक्तिगत या सामूहिक बड़े या छोटे समूहों में गुरुदेव के अंतिम दर्शन के लिए प्रस्थान कर दिया।

जब हॉस्पिटल से सभी नौ संत कोठी पर आए तो वहाँ भी सैंकड़ों लोग एकत्रित हो गए। वातावरण में घोर नीरवता थी। बस बीच-2 में लोगों के फूट-2 कर रोने की आवाजें सुनाई दे रही थी। सब लोग मुनिराजों को सांत्वना देने की कोशिश में थे किन्तु न तो मुनियों के पास पहुँचने का हौंसला होता था, न कुछ कहने-सुनने का। नौ बजे के लगभग शालीमार बाग श्रीसंघ के कार्यकर्ता हॉस्पिटल से कुछ आवश्यक कागजी कार्रवाई पूरी करके गुरुदेव के पार्थिव शरीर को लेकर कोठी के बाहर आए। श्री किशोरी लाल जी ने एक जोरदार आवाज लगाई, 'हम गुरुदेव को शालीमार बाग लेकर जा रहे हैं'। ये आवाज सुनकर सारी भीड़ उधर भागी। वहाँ से श्रावक-गण शरीर को शालीमार बाग लाए। सब लोग रो रहे थे कि हमारा दावा था कि गुरुदेव को यहाँ से ठीक करके भेजेंगे, पर ये तो प्रलय ही हो गया।

सेवा पांच प्रकार की होती है— गुरु/पितृ/प्रभु/दीनजन एवं समाज की।
—गुरु सुदर्शन

कल तक तो कहते थे कि, बिस्तर से उठा जाता नहीं,
आज दुनियां से चले जाने की, ताकत आ गई ॥

10 बजे गुरुदेव का शरीर आम जनता के दर्शनार्थ शालीमार बाग के स्थानक हॉल में रख दिया गया। समाचार मिलते ही हजारों नर-नारियों की भीड़ दर्शन करने उमड़ पड़ी। रात 2.30 बजे तक लाइन नहीं टूटी। प्रातः 4.00 बजे फिर वही गुरु-भक्तों की अंतहीन पंक्ति दर्शनार्थ शुरू हो गई।

बड़े गौर से, सुन रहा था ज़माना,
तुम्हीं सो गए, दास्तां कहते-2 ॥

उधर कोठी में सब सन्त उदास बैठे थे। भले ही आँखों का पानी थम गया था पर दिलों में आँसुओं का दरिया बह रहा था। उस रात को प्रायः सभी सन्त जागते रहे। कोई थोड़ी देर लेट भी गया, तो फिर शीघ्र उठ खड़ा हुआ। प्रातः काल उठकर सबने प्रतिक्रमण किया। सूर्योदय हुआ। सब संत सामान बांधकर चल पड़े। दिल भी भारी थे, पैर भी भारी थे। रास्ते में स्थान-2 पर श्रद्धालु मिलते गए, भीड़ बढ़ती गई। प्रेमबाड़ी पुल उतरने तक एक हजार आदमी हो गया। जब शालीमार बाग की सीमा में प्रवेश किया, तो बड़ा कारुणिक, हृदय-विदारक दृश्य था।

सोचा न था ये शक्स भी, इतनी जल्दी साथ छोड़ देगा।
जो हमें उदास देख कर, कहता था– 'मैं हूँ ना' ॥

स्थानक के नीचे दर्शनार्थियों की भारी भीड़ थी। हजारों लोग पंक्तिबद्ध आगे बढ़ रहे थे। आज वे गुरुदेव के अंतिम दर्शन करने को आतुर थे। मुनिराज भीड़ के बीचोंबीच आगे बढ़े। हॉल में चढ़े। गुरुदेव के शरीर के पास न जाकर सीधे चौथी मंजिल पर बरसाती में चढ़ गए। अब उनके लिए हॉल में रह ही क्या गया था? बरसाती में श्री संघ के प्रमुखों को बुलाकर कुछ दिशा निर्देश दिए। फिर सभी संत गैलरी में आकर एक

मान्यता, परंपरा एवं गुरु से टूटने वाला साधु पिछड़ जाएगा।
—गुरु सुदर्शन

कोने में बैठ गए। उस समय दिल्ली के भिन्न-2 स्थानों से 8-10 साधु और 50 के लगभग सतियाँ वहाँ पधारे।

हॉल में दर्शनार्थियों की पंक्तियाँ तेजी से आगे बढ़ रही थी। बीच-2 में 'जब तक सूरज चाँद रहेगा, गुरुवर तेरा नाम रहेगा,' 'माँ सुन्दरी के लाल की– जय सुदर्शन लाल की,' 'आगे आगे बढ़ते जाओ– जय सुदर्शन कहते जाओ' आदि नारे गगन-मण्डल को भी और लोगों के दिलों को भी चीर रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार 50 हजार से ऊपर लोगों ने उस समय गुरुदेव के पार्थिव शरीर के दर्शन किए। कई क्विंटल गोले शरीर पर डाले गए। एक हजार के लगभग चादर व दोशालें शरीर के ऊपर ओढ़ाए गए या शरीर-स्पर्श करा के लोग अपने साथ ले गए।

दर्शनों का क्रम जब चल ही रहा था, तभी एक और हृदय-विदारक समाचार मिला कि मुम्बई में श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर आचार्य-प्रवर श्री देवेन्द्र मुनि जी म. का देवलोक गमन हो गया। सब को हार्दिक दुःख हुआ। मुनिराजों एवं सतियों ने चार-2 लोगस्स का ध्यान करके दिवगंत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

एक बजे के लगभग गुरुदेव का शरीर हॉल से नीचे उतार कर, नीचे खड़े ट्रक के ऊपर विमान में रखा गया। गुरुदेव के सांसारिक परिवार के सदस्यों को श्रीसंघ ने विशेष कार्ड प्रदान कर विमान के साथ बैठने की सुविधा प्रदान की। कई हजार की जनमेदिनी साथ थी। भयंकर गर्मी थी तो भी कई लोग नंगे पैर साथ-2 चल रहे थे। शालीमार से प्रेमबाड़ी पुल, अशोक विहार, त्रीनगर, शास्त्री नगर, आनन्द पर्वत पुल, न्यू रोहतक रोड़, लिबर्टी, फिल्मिस्तान, पहाड़ी धीरज, चाँदनी चौंक होता हुआ विमान सायं 6.00 बजे के लगभग अपनी अंतिम मंजिल 'निगम बोध घाट' पर पहुँचा। अन्तिम यात्रा के सारे रास्ते में विभिन्न श्री संघों, संस्थाओं, गुरुभक्तों ने स्वप्रेरणा से ही खाद्य एवं पेय पदार्थों का वितरण किया। निगम बोध पर एक लाख से ऊपर की श्रद्धालु-संख्या थी। चारों ओर की

श्रावक साधु की नहीं साधना की प्रशंसा करें।
—गुरु सुदर्शन

सड़कें कारों, बसों एवं अन्य वाहनों के कारण जाम हो गई थी। केन्द्रीय कृषिमंत्री श्री सोमपाल जी शास्त्री को संस्कार-स्थल तक पहुँचने में एक घंटे से ऊपर तक मशक्कत करनी पड़ी। कई पुलिस वालों के अनुसार निगम-बोध पर इतनी भारी भीड़ किसी भी संस्कार में आज से पहले नहीं हुई थी। उस अथाह भीड़ में कोई आँख ऐसी नहीं थी जो आँसू न बहा रही हो और कोई दिल ऐसा नहीं था जो फूट-2 कर न रो रहा हो।

सूर्यास्त से पहले ही चिता तैयार हो गई। गुरुदेव के संसारपक्षीय लघुभ्राता सेठ प्रकाश चन्द्र जैन ने चिता को मुखाग्नि दी। भीड़ धीरे-2 अपने-अपने गंतव्यों पर चली गई। बाद में शालीमार बाग श्रीसंघ के तत्वावधान में पुष्प चयन आदि कार्य सम्पन्न हुए।

29 अप्रैल को शालीमार बाग में गुरुदेव की स्मृति में विशाल श्रद्धांजलि सभा रखी गई। हजारों भाई-बहनों की उपस्थिति थी। सैकड़ों संस्थाओं ने अपने श्रद्धांजलि-पत्र श्रीसंघ के महामंत्री को सौंपे। गुरुदेव के प्रायः सभी सन्तों ने भी अपने विचार रखे।

ये नहीं कि खुशियों के पल, कम थे जिंदगी में,
पर तेरा ना होना सब पर, भारी पड़ गया।

30ता. को ही गुरुदेव के सभी नौ सन्तों ने शालीमार बाग से विहार कर दिया। 2 मई रविवार को सोनीपत पहुँचे। वहाँ गुरुदेव के ज्येष्ठ सुशिष्य तपस्वीराज श्री प्रकाश चन्द जी म., महाप्रभावी शास्त्री श्री पद्मचन्द्र जी म. आदि सन्तों से अश्रुपूरित मिलन हुआ। जैन मंदिर के विशाल हॉल में श्रद्धांजलि कार्यक्रम रखा गया। दो दिन बाद सब सन्तों ने गोहाना के लिए प्रस्थान किया। वहाँ पर शान्त-मूर्ति श्री शांति मुनि जी म., श्री राजेन्द्र मुनि जी म. आदि से बड़ा भावुकता-पूर्ण मिलन हुआ। कुल 22 मुनिराज इकट्ठे हुए। 9 मई रविवार को पुनः समस्त उत्तरी भारत की ओर से विशाल श्रद्धांजलि सभा हुई। श्रद्धेय श्री शास्त्री जी म. ने, श्री राकेश मुनि जी से प्राप्त, गुरुदेव का हस्त-लिखित एक

करनी थोड़ी कर लो पर कपट ना करो।
—गुरु सुदर्शन

पत्र पढ़ कर सुनाया गया। दूसरा गुरुदेव ने अपने आज्ञानुवर्ती सभी 26 सन्तों के लिए जो व्यवस्था-पत्र बनाया था वो चिरं. आदीश मुनि के पास रखा था, विचार बना कि जब सभी 26 सन्त एकत्रित हो जाएँ, तब उसे खोला जाए।

चूंकि गोहाना में केवल 22 मुनिराज ही थे, श्री नरेश मुनि जी म. ठाणे 4 सिरसा की तरफ विराजित थे इसलिए उसे खोला नहीं गया। चातुर्मास के उपरान्त सम्भावित 26 सन्तों के महासम्मेलन तक उसका उद्घाटन स्थगित कर दिया गया। तब तक अंतरिम व्यवस्था के रूप में गुरुदेव के ज्येष्ठ शिष्य तपस्वीराज श्री प्रकाश मुनि जी म. को संघ व्यवस्था सौंपी गई। उन्होंने अपने मुखारविन्द से गुरुदेव के द्वारा कैथल में 28 फरवरी को फरमाए गए 6 चातुर्मासों पर उसी रूप में स्वीकृति की घोषणा फरमाई। गुरुदेव के गगन-भेदी जयकारों के साथ श्रद्धांजलि सभा संपन्न हुई। गोहाना में ही शालीमार बाग श्रीसंघ मुनि-चरणों में आया और गुरुदेव के देवलोक गमन के पश्चात् उनके तीन पार्थिव अवशेषों—भस्म, दुशाले एवं डोली के विषय में मार्गदर्शन चाहा। श्री प्रकाश मुनि जी म. आदि वरिष्ठ सन्तों ने गुरुदेव की भावना एवं अपनी मुनि-परम्परा के आदर्शों के अनुरूप ही इन तीनों का निर्दोष, निरवद्य समाधान करते हुए फरमाया कि 1.भस्म को यमुना की सूखी रेत में उंडेल दिया जाए। 2. दुशालों को निर्धनों में वितरित कर दिया जाए तथा 3. डोली को भंग कर दिया जाए। मुनिराज नहीं चाहते थे कि गुरुदेव के पश्चात् उनके कुछ स्मृति-चिह्नों को लेकर समाज में जड़-पूजा प्रारम्भ हो। इस समाधान से सभी समाहित हुए। कुछ दिन ठहर कर सब मुनिराजों ने अपने-2 चातुर्मास-स्थलों के लिए विहार कर दिया। 1999 के समग्र चातुर्मास सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए।

उद्यन्त्वमूनि सुबहूनि महामहांसि,
चन्द्रोप्यलं भुवन-मण्डल-मण्डनाय।

बड़ों की बात झुठलाने वाले की किस्मत झूठी हो जाती है।
—गुरु सुदर्शन

सूर्यादृते न तदुदेति न चास्तमेति,
येनोदितेन दिनमस्तमितेन रात्रिः ॥

अर्थात् गगन-मण्डल में कितने ही तेजस्वी नक्षत्र और तारागण उदित हो जाएँ, चन्द्रमा भी भले ही सारे विश्व में रोशनी भर दे, परन्तु सूर्य के अलावा किसी और के उदय व अस्त का कोई महत्त्व नहीं है। सूर्य के उदय होने पर ही दिन होता है और सूर्य के अस्त होते ही रात्रि हो जाती है।

दूध में मीठास स्वभाव है खटाई स्वभाव नहीं, ऐसे ही आत्मा में होश स्वभाव है जोश स्वभाव नहीं।
—गुरु सुदर्शन

परिशिष्ट

1. गुरुदेव के बाद संघ व्यवस्था

पूज्य गुरुदेव की यादों में भीगा जन-मानस उस पत्र के उद्घाटन की प्रतीक्षा करता रहा था, जो गुरुदेव जी म. आगामी व्यवस्था के सम्बन्ध में लिखकर गए थे। मुनियों ने उस कार्य के संपादनार्थ जीन्द को चुना। 10 फरवरी को 26 सदस्यीय मुनिमण्डल एकत्र हुआ। 13 फरवरी 2000 के रविवार को पत्र जनता की सेवा में प्रस्तुत करना था, अतः मुनियों ने 10 ता. को वह पत्र खोला, जिसकी शब्दावली हैः—

श्री गुरवे नमः   श्री वीतरागाय नमः

उत्तराधिकारी का चयन

मेरी निश्राय में 26 मुनिराज आज्ञानुवर्ती हैं। 26 मुनिराजों में अनेक मुनिराज इस पद के पूर्णतया योग्य व समर्थ हैं, पर श्री राजेन्द्र मुनि जी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करता हूँ। सब मुनिराज मेरे इस चयन को पूरे मनोयोग से स्वीकार करेंगे। इससे वरिष्ठ जो मुनिराज हैं, वो सब इसे पूरा प्यार व मार्गदर्शन देते रहेंगे। कनिष्ठ मुनिराज पूर्ण विनय करेंगे और सब मुनिराज इसकी आज्ञा में विचरेंगे।

विशेष कोई कारण उपस्थित हो तो श्री राजेन्द्र मुनि नीचे लिखी समिति से परामर्श लेकर अपना निर्णय देंगें—

अहंकारी आदमी प्रदर्शन जरूर करेगा।

—गुरु सुदर्शन

वरिष्ठ समितिः–

1. श्री प्रकाश चन्द्र जी महाराज
2. श्री शास्त्री पद्म चन्द जी म.
3. श्री शान्ति मुनि जी म.
4. श्री विनय मुनि जी म.
5. श्री जय मुनि जी म.
6. श्री नरेश मुनि जी म.

ये सभी मुनिराज संघशास्ता के कार्य में पूरा मार्ग-दर्शन देते रहेंगे। 1. विशेष प्रसंग पर सर्व-सम्मत राय देकर संघशास्ता के कार्य को सहज बनाएंगे। 2. जो सिंघाड़ा मुनियों का विचरे, यदि उसके संयोग से कोई वैरागी बन गया, परिपक्व होने पर उसे दीक्षा दी जाए। पहले वैरागी से पूछ लिया जाए कि किस मुनिराज के शिष्य बनेंगे, उसके कथनानुसार ही वैरागी उस मुनि को सौंप दिया जाए। 3. एक घंटा प्रतिदिन मौन किया जाए।"

गुरुदेव जी म. के प्रत्येक शब्द पर श्रद्धा-सुमन समर्पित करते हुए सब मुनियों ने उस पत्र को मान्य किया। (श्री मनोज मुनि जी तथा विशाल मुनि जी इस समूची प्रक्रिया से असंबद्ध रहे।)

जब सब मुनियों ने श्री राजेन्द्र मुनिजी को वह अधिकार पत्र सौंपा तो उन्होंने अपनी अनिच्छा प्रकट कर दी। मुनियों ने उन्हें जिम्मेदारी संभालने के लिए आग्रह किया पर उन्होंने इंकार कर दिया।

11ता. को फिर मुनिमंडल बैठा और उनका निर्णय पूछा। वे अपने पूर्व निर्णय पर ही अटल रहे। फिर गहन विचार-चर्चा हुई। अन्ततः श्री राजेन्द्र मुनि जी म. ने गुरुदेव के पत्र को श्री प्रकाश मुनि जी म. के चरणों में भेंट कर दिया। उन्होंने मुनिमण्डल की सहमति से सभी अधिकार शास्त्री श्री पद्म चन्द्र जी म. को सौंप दिए।

13ता. को 15-20 हजार की उत्सुक जनता के मध्य सारी प्रक्रिया को समझाते हुए गुरुदेव जी म. के मुनियों की बनी नई व्यवस्था बताई गई। इस निर्णय पर भी समग्र जनता ने अपनी श्रद्धान्वित स्वीकृति की

श्रावकों को देखकर संयम पालने वाले साधु दंभी हैं।
—गुरु सुदर्शन

मोहर लगाई। चूँकि 'संघशास्ता' विशेषण पूज्य गुरुदेव जी म. के साथ अविभाज्य रूप से जुड़ चुका था, अतः उनके उत्तराधिकारी के लिए 'संघनायक' विशेषण लगाया गया। आचार्य परम्परा का प्रचलन न होने से इसी तरह के विशेषण ही उपयुक्त माने जाते हैं।

मुनिमंडल ने श्रद्धेय श्री प्रकाश मुनि जी म. के गौरव, सुदीर्घ पर्याय व तपस्वी जीवन की महत्ता को रेखांकित करते हुए उन्हें 'महास्थविर' तथा 'तपस्वी राज' इन दो विशेषणों से मंडित करने का मन बनाया। श्रद्धेय श्री शान्ति मुनि जी म. को 'शान्तमूर्ति' विशेषण से नवाजा गया। गुरुदेव जी म. द्वारा निर्दिष्ट समिति तो वही रही, बस श्री शास्त्री जी म. की जगह समिति में श्री राजेन्द्र मुनि जी म. को सम्मिलित कर लिया गया।

श्री संघनायक जी म. के पदारोहण के बाद 'श्री सुंदरी शांति साध्वी संघ' के अन्तर्गत सभी साध्वियों को, जिनकी वर्तमान संघ प्रमुखा श्री संयमप्रभा 'कमल' जी म. हैं, उन्हें अपने संघ में 'आज्ञाप्राप्त' महासाध्वियों के रूप में शमिल किया गया।

पूज्य संघनायक 'शास्त्री' श्री पद्म चन्द जी म. ने सन् 2000 से 2016 तक मुनिसंघ का अतिकुशलता पूर्वक संचालन किया। उन्होंने जिनशासन एवं धर्मसंघ में आध्यात्मिक उन्नत्ति के नए-2 आयाम स्थापित किए।

29 अप्रैल 2016 को शालीमार बाग, दिल्ली में ही उनका भी देवलोक गमन हो गया। पूज्य श्री संघनायक जी म. के पश्चात् संघ व्यवस्था का अंतरिम दायित्व पुनः पूज्य श्री महास्थविर जी म. के हाथों में आ गया।

वर्तमान संघ व्यवस्था

2016 के चातुर्मास के पश्चात् सफीदों मण्डी (हरियाणा) में सभी मुनिराज एवं महासाध्वियों का महासम्मेलन आयोजित हुआ। 29 जनवरी 2017 को जिसमें सर्वसम्मति से पूज्य गुरुदेव के सुशिष्य मनोहर व्याख्यानी

जिन्हें संयम में/उपासना में रस आ जाता है उन्हें दूसरों के दोष नजर नहीं आते।
—गुरु सुदर्शन

श्री नरेश मुनि जी म. सा. को संघ प्रमुख के रूप में 'संघ संचालक' पद पर अधिष्ठित किया गया। संघ के अनेक वरिष्ठ मुनिराजों को शोभा व सम्मान सूचक अलंकरण प्रदान किए गए, जिसमें पूज्य गुरुदेव के वरिष्ठ शिष्य महास्थविर पूज्य श्री प्रकाश चन्द्र जी म. को 'गणाधीश', विनयमूर्ति पूज्य श्री विनय मुनि जी म. को 'संघाधार', पं. रत्न पूज्य श्री जय मुनि जी म. को 'बहुश्रुत', राजर्षि पूज्य श्री राजेन्द्र मुनि जी म. को 'त्याग शिरोमणि' विशेषण से अलंकृत किया गया। चारों उपरोक्त महामुनिराजों सहित, करुणा पुरुष श्री राकेश मुनि जी म., तपस्वी श्री सुधीर मुनि जी म., परम विचक्षण श्री सत्यप्रकाश मुनि जी म. एवं वात्सल्यनिधि श्री नरेन्द्र मुनि जी म., इन आठ मुनिराजों की परामर्शदातृ समिति बनाई गई। पूज्य संघनायक 'शास्त्री' श्री पद्म चन्द्र जी म. की तरह ही सभी प्रशासनिक अधिकार पूज्य श्री संघ संचालक जी म. सा. के अधीन रहेंगे सर्व सम्मति से ये निर्णय लिया गया।

वर्तमान सन् 2022 में आपकी आज्ञा में 39 मुनिराज एवं आज्ञा प्राप्त 49 साध्वियां विचरण कर रही हैं। मुनिराजों में 18 मुनिराज पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के साक्षात् शिष्य तथा शेष 21 मुनिराज प्रशिष्य हैं। मुनि संघ की प्रकृति के अनुरूप ही **'संयम-सेवा-स्वाध्याय-विनय-गुरु सुदर्शन संघ की जय'** ये संघ का अधिकृत नारा बन गया है। पूज्य श्री संघ संचालक जी म. के कुशल नेतृत्त्व में चतुर्विध संघ आगे से आगे बढ़ रहा है।

श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पावन चरणों में ये ही प्रार्थना है कि ये मुनि संघ एवं साध्वी संघ संयम-सेवा-स्वाध्याय एवं विनय में यूं ही आगे बढ़ता रहे।

"ये संघ सदा जयवंत रहा – जयवंत रहे हरदम,।
बढ़ता ही रहा, बढ़ता ही रहे – सब मुनियों का संयम"।

गुरु चिंतन का कारण बनते हैं, दुनिया चिंता का।

—गुरु सुदर्शन

2. गुरु-सुदर्शन-संघ-स्तुति

(तर्ज़ः– हम भूल गए रे हर बात)

गुरुदेव सुदर्शन लाल, तुम्हारा संघ सुदर्शन है।
चलता संयम की चाल, तुम्हारा संघ सुदर्शन है ॥

1. ये असली चंदन की माला, और प्रेम का धागा है डाला,
मुनियों की माला के मेरू, तू ही सौरभ भरने वाला।
हम हुए हैं मालामाल, तुम्हारा संघ सुदर्शन है ॥

2. यह माला वर देने वाली, अभिमंत्रित कर देने वाली,
तुमने इस पर है जाप किया, इसमें आत्मिक शक्ति डाली।
सब संकट देती टाल, तुम्हारा संघ सुदर्शन है ॥

3. ब्रह्मा बन रचने वाले हो, विष्णु हो तुम रखवाले हो।
इस माला के शिव शंकर हो, दोषों को हरने वाले हो,
की है करनी है संभाल, तुम्हारा संघ सुदर्शन है ॥

4. नकली मोती का काम नहीं, इन मुनियों का कोई दाम नहीं, (इन सतियों...)
भावों की बहुत ऊंचाई है, गा सकते हम गुणग्राम नहीं।
झुकता सबका ही भाल, तुम्हारा संघ सुदर्शन है ॥

5. नवपद के अन्तिम चारों पद, देकर के दिया है पंचम पद,
पद देकर ध्यान रखा तुमने, नहीं आने पाए मन में मद।
पंचम गुण स्थान निहाल, (चारों ही संघ निहाल) ॥

तुम्हारा संघ सुदर्शन है ॥

साधु/श्रावक समाज के दो पैर हैं – कभी अड़ना नहीं, एक ऊपर एक जमीन पर।
–गुरु सुदर्शन

3. पूज्य गुरुदेव के चातुर्मासों की सूची

दीक्षा : 18 जनवरी 1942, संगरूर शहर (पंजाब)

क्रम	सन्	स्थान	क्रम	सन्	स्थान
1	1942	सढ़ौरा	28	1969	अलवर
2	1943	चांदनी चौक, दिल्ली	29	1970	चांदनी चौक, दिल्ली
3	1944	बड़ौत	30	1971	बड़ौत
4	1945	हांसी	31	1972	जीन्द
5	1946	अहमदगढ़	32	1973	गन्नौर
6	1947	मूनक	33	1974	रोहतक
7	1948	सुनाम	34	1975	होशियारपुर
8	1949	जीन्द	35	1976	जालन्धर
9	1950	चांदनी चौंक, दिल्ली	36	1977	फरीदकोट
10	1951	पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली	37	1978	समालखा
			38	1979	रोहतक
11-17	1952-58	चांदनी चौक, दिल्ली	39	1980	सफीदों
			40	1981	गोहाना
18	1959	बड़ौत	41	1982	जीन्द
19	1960	रोहतक	42	1983	बरनाला
20	1961	अमृतसर	43	1984	सोनीपत
21	1962	होशियारपुर	44	1985	रोहतक
22	1963	अमृतसर	45	1986	सिरसा
23	1964	सोनीपत	46	1987	गोहाना
24	1965	रोहतक	47	1988	गन्नौर
25	1966	मूनक-जाखल	48	1989	कान्धला
26	1967	भटिण्डा	49	1990	नरवाणा
27	1968	जयपुर	50	1991	सोनीपत

आत्म विवेक/गुरु आज्ञा एवं लोक परलोक का ख्याल ही आत्मा को टिका सकता है।
—गुरु सुदर्शन

क्रम	सन्	स्थान
51	1992	शालीमार बाग, दिल्ली
52	1993	त्रिनगर, दिल्ली
53	1994	बड़ौत
54	1995	सुन्दर नगर, लुधियाना
55	1996	सुनाम
56	1997	जीन्द
57	1998	अम्बाला

देवलोक-गमन– 25 अप्रैल, 1999 शालीमार बाग, दिल्ली

राज्यवार सूची– हरियाणा-23, पंजाब-14, दिल्ली-13
उत्तर-प्रदेश-5, राजस्थान-2

निश्राय			
1.	श्रद्धेय श्री बनवारी लाल जी म.	सन् 1947	कुल 1
2.	श्रद्धेय श्री अमींलाल जी म.	सन् 1949	कुल 1
3.	श्रद्धेय वाचस्पति गुरुदेव श्री मदन लाल जी म.	सन् 42, 43, 45	कुल 3
4.	श्रद्धेय योगीराज श्री राम जी लाल जी म.	सन् 1952	कुल 1
5.	श्रद्धेय भण्डारी श्री बलवन्तराय जी म.	सन् 53, 63, 85	कुल 4
6.	श्रद्धेय श्री मूलचन्द जी म.	सन् 1944	कुल 1
7.	श्रद्धेय स्वामी फूलचन्द जी म.	सन् 64-66, 68-70	कुल 6
8.	श्रद्धेय बाबा श्री जग्गूमल जी म.	सन् 46, 50, 51, 54-58	कुल 8
9.	श्रद्धेय श्री नेकचंद जी म.	सन् 48	कुल 1
10.	अपनी निश्राय में	सन् 59 से 62, 67, 71 से 84, 86 से 98	कुल 32

यदि गुरु से ज्ञान नहीं मिला तो फिर कहीं नहीं मिलेगा, सूर्य के बिना कौन प्रकाश पुंज हो सकता है।
—गुरु सुदर्शन

4. भगवन् श्री जी के संवेदना पत्रः

पूज्य गुरुदेव के देवलोकगमन के पश्चात् गुरुदेव के ही गुरुभ्राता भगवन् श्री रामप्रसाद जी म. के संवेदना पत्रः–

टोहाना 26-04-1999ः– श्री जय मुनि जी इत्यादि ठाणे नौ, सभी संतों को हम सब की ओर से यथायोग्य। हमारा छत्र भंग हो गया, सिंहासन उखड़ गया, श्री मयाराम जी म. तथा गुरुदेव मदनलाल जी म. के स्थान की पूर्ति करने वाला भी गया, अब उस स्थान की पूर्ति कौन करेगा? आप सभी सन्त चरणों में हैं, सौभाग्यशाली हैं। मैं अभागा दूर बैठा आँसू बहा रह हूँ **"इतनी भी जगह मिल न सकी कूए-यार में"**।

शास्त्री जी दूर, प्रकाश जी दूर, शांति जी दूर, नरेश जी दूर ये दूरियाँ कितनी भीषण बन गई। सभी सोचते होंगे, काश! चरणों में होते। पर होते भी तो क्या कर पाते। सुन्दर जी तो कहते थे कि गुरु महाराज के शरीर में तो Testing का भी दम नहीं है। कल समाचार मिला साँस की नली में रुकावट है। मैंने कहा Misunderstanding है। पेशाब की नली में रुकावट होगी, उसी के लिए Admit होना पड़ा है। पर मेरी बात गलत, सूचना सत्य से भी आगे पहुँच गई।

सुदर्शन-आँखों के लिए अदर्शन हो गए। हृदय और प्राणों से जाना तो असंभव है, उन्हें हृदय तथा प्राणों में संजोकर रखेंगे। अब और कोई चारा नहीं।

पत्र फिर लिखूँगा। और ना जाने क्या-2 मन में बाढ़-सी है। अभी तो आप सब अपनी बाढ़ को रोकने का प्रयास करें। मेरे कमजोर दिल पर ठेस-लक्ष्मण पर शक्ति-प्रहार हुआ है। अब कोई सुषेण, हनुमान या संजीवनी नहीं, जो उनको जिलाकर हमारे हृदय-व्रणों को लग जाए। मुझे तो Heart की वजह से खबर ही सुबह दी गई, जानकर रोकी गई। ये रोकने वालों की गंभीरता, पर मेरी विवशता।

गुरु की पहुँच मन/इंद्रिय/शरीर सबसे ऊपर है।
–गुरु सुदर्शन

सभी ढ़ाढ़स रखें। सेठ जी म. मूकभाव से मेरे शब्दों के साथ हैं। अन्य सभी मुनि भी। पुनः यथायोग्य।

मेरी संक्षिप्त श्रद्धांजलि-2

मेरे गुरु तुल्य गुरुभ्राता, पितृ तुल्य गुरुभ्राता, ऋषभ पुत्रों के लिए भरत तुल्य गुरुभ्राता, हम दोनों को अकेले असहाय छोड़कर चले गए।

दिल की वीरान बस्ती तुम्हें ढूंढती है, तुम्हें पुकारती है। तुम्हारी याद में पत्थर पिंघलकर आँसू बन गए हैं। आहत दिल स्वर-मूर्छना भूल गया है। हमारी आशाएँ टूट गई, अरमानों के महल ढह गए, अपनेपन का सागर सूख गया। तेरी कृपा से शून्य हम मृत-जैसे हो गए। आप तो मृत भी अमृत हो गए, अमर हो गए।

कनक-मण्डन-मण्डित-गण्डया, जघन-देश निवेशित-वीणया।
अमर-राजपुरे सुरकन्यया तव यशो विमलं परिगीयते॥

देवलोक-कन्याएँ भी वीणा स्वर-सहकृत तुम्हारा यशोगान कर रही हैं। गुरुदेव के बाद आपको सर्वस्व अर्पण किया, उसे कभी वापिस मांगने का प्रश्न ही नहीं, पर उसके एवज में जो मिला, उसे स्वीकार करना चाहिए। पर दुर्बल मन में उसे स्वीकार करने का साहस नहीं।

चाहे आँसू मिले चाहे मोती मिलें, दोनों ही को बराबर समझता चलूँ।
तेरी जानिब से इन्कार गर हो गया, देने वाले की तौहीन हो जाएगी॥

आपके जीवन को मैं अपना जीवन, आपकी कार्य-शैली को अपना लक्ष्य तथा आदर्श मानता रहा हूँ। आपमें मैंने अपने अन्तर की शान्ति, समता तथा साधना को सदैव प्रमुख माना।

आप गए, इतना सुनने मात्र से मेरा रोमांच बिलख उठा, आंखों में आँसू, कण्ठ से स्वर गायब हो गए।

क्रोध आदि आत्मा का एक्सीडेंट है– बाहर के एक्सीडेंट तो मात्र शरीर का नुकसान करते हैं।
—गुरु सुदर्शन

सम्पूर्ण जीवन का साधना-महल भूकम्प-कम्पित हो उठा, अतीत की यादों का बांध-सा टूट गया, जिसे कलमांकित करना सहज नहीं। धीरे-2 कोई सुनने वाला मिलता रहेगा, पढ़ने वाला मिलता रहेगा, तो कुछ लिख सकूँगा। अभी तो मनोबल जुटा नहीं पा रहा।

आप सब मुनियों पर सदैव कृपा रखी है, सदा रहेगी, पर अब स्वयं आप सबका कृपाकांक्षी हूँ। आप सबकी कृपा को ही दिवंगत गुरुभ्राता की कृपा समझकर गुजारा कर लूँगा। दिलों की बातें भाषा और कलम की अपेक्षा आँखे ही ज्यादा कहती और सुनती हैं।

"मज़ा जब था कि तुम सुनते मुझी से दास्तां मेरी।
कहाँ से लाएगा कासिद! बयां मेरा जबां मेरी ॥

गुरु महाराज गए, बहुत कुछ गया। तपस्वी जी म. गए, तो भी बहुत कुछ गया। आप गए तो सब कुछ गया।

"सर्वमप्याप्यते वस्तु, पौरुषेण धनेन वा
न भ्राता प्राप्यते क्वापि, त्वादृशस्तु विशेषतः"

पौरुष या धन से सब कुछ मिल सकता है, पर ऐसा भाई कहाँ मिलता है जिसमें गुरु तथा पिता की भी सम्पूर्ति निहित हो।

आज मेरी श्रद्धा के फूल भी उदास-2 हैं, पर क्या करूँ, इन उदास-2 फूलों को ही श्रद्धाञ्जलि में डाल रहा हूँ। वो स्वीकार करें। मुनिसंघ स्वीकार करे तथा जनता-जनार्दन स्वीकार करे। इति शम्।

धैर्य/क्षमा/सत्यनिष्ठा/विशुद्ध सेवाभाव से वक्ता की वाणी में विशेष ताकत पैदा होती है।
—गुरु सुदर्शन

5. तेरे दर पे दी दस्तक

तर्जः– बेवफा तेरा यूं मुस्कराना

–पण्डित रत्न श्री रामप्रसाद जी म.

ए सुदर्शन मुनि जी तुम्हारे, दर पे दस्तक दी मस्तक झुकाया।
हो गए आपके पुण्य दर्शन, और दर्शन से सब कुछ है पाया ॥टेक॥

1. उच्च संस्कारों में जन्म लेकर, ऊंचे माता-पिता की कृपा से,
धर्म पाया गुरु-शरण पाई, जग्गूमल बाबा जी की दया से।
अपने साहस तथा योग्यता से, संघ में अपना गौरव बढ़ाया ॥

2. नाथूलाल जी दादा गुरु ने, ऐसी संजीवनी दृष्टि डाली,
बने अंकुर से तुम कल्प तरुवर, पुष्प फल से लदी डाली-डाली।
ऊँची श्रद्धा के सोपान पाकर, ऊँची मंजिल पे खुद को चढाया ॥

3. गुरुवर वाचस्पति-श्री-चरण में, रह के संयम की ज्योति जलाई,
उतरे व्याख्यान के क्षेत्र में जब, गुरुओं जैसी ही ख्याति है पाई,
आपकी सुनके तर्जे-बयानी, किसका दिल है नहीं गुदगुदाया ॥

4. पिता-तुल्य लघु गुरु-भ्राता, श्री तपस्वी जी पाए थे साथी,
हम मिले छोटे-छोटे से कमसिन, गुरु-भ्राता की हमपे कृपा थी।
किया शिक्षित सभी ओर से ही, बन सका जितना हमको बनाया ॥

5. विद्युद्दीपों सी शिष्यावली में, करंट डाला भरी जगमगाहट,
चमके सब ही विनय-शील से हैं, संघ की कितनी की है सजावट।
अपना प्रतिनिधि बना भेजते हैं, क्षेत्र प्रत्येक है मुस्कराया ॥

6. गुरुओं ने पदवी की दौड़ छोड़ी, और हमसे भी बिल्कुल छुड़ाई,
योग्यता किन्तु आचार्य पद की, ऐसी भर दी कि चमके सदा ही,
आपके चरणों में रह के हमने, शान्ति-क्रान्ति का हर गीत गाया ॥

जिसे धर्म मिला वो कच्ची बात नहीं कहेगा।
–गुरु सुदर्शन

6. पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के-

नाम	माता	पिता
1. गणाधीश श्री प्रकाशचन्द्र जी म.	श्रीमती चमेली देवी जी	श्री पन्नालाल जैन भंसाली
2. संघनायक शास्त्री श्री पद्मचन्द्र जी म.*[1]	श्रीमती कलावती देवी जी	श्री श्यामलाल जैन गर्ग
3. कृपानाथ श्री शान्तिचन्द्र जी म.*[2]	श्रीमती सरस्वती देवी जी	श्री स्वरूपचंद जैन गर्ग
4. संघाधार श्री विनय मुनि जी म.	श्रीमती सोना देवी जी	श्री मोतीराम जैन गर्ग
5. बहुश्रुत श्री जय मुनि जी म.	श्रीमती बोहती देवी जी	श्री पन्नालाल जैन गर्ग
6. संघ संचालक श्री नरेश मुनि जी म.	श्रीमती प्रकाशवती जी	श्री वकीलचन्द जैन सिंगल (श्री वकील मुनि जी)
7. त्याग शिरोमणी श्री राजेन्द्र मुनि जी म.	श्रीमती अनारकली जी	श्री रामगोपाल जैन सिंगल
8. करुणा पुरुष श्री राकेश मुनि जी म.	श्रीमती चन्द्रावती जी	श्री बनवारीलाल जैन गर्ग
9. तपस्वीराज श्री सुधीर मुनि जी म.	श्रीमती प्रकाशवती जी	श्री वकीलचंद जैन सिंगल (श्री वकील मुनि जी)
10. समता विभूति श्री सत्यप्रकाश जी म.	श्रीमती रामोदेवी जी	श्री हुक्मचंद जैन गर्ग
11. वात्सल्यनिधि श्री नरेन्द्र मुनि जी म.	श्रीमती चमेली देवी जी	श्री जयप्रकाश जैन गर्ग
12. ओजस्वी वक्ता श्री अचल मुनि जी म.*[3]	श्रीमती धन्नो देवी जी	श्री रामकिशन जैन गर्ग
13. कविरत्न श्री सुनील मुनि जी म.	श्रीमती इलायची देवी जी	श्री प्रकाशचन्द जैन गोयल
14. प्रवचन भास्कर श्री अजित मुनि जी म.	श्रीमती जैनमती जी	श्री श्यामलाल जैन सिंगल
15. मधुर गायक श्री नवीन मुनि जी म.	श्रीमती गीता देवी जी	श्री पारसदास जैन सिंगल
16. कुशल वक्ता श्री मुकेश मुनि जी म.	श्रीमती दर्शना देवी जी	श्री चन्द्रभान जैन गर्ग
17. तपस्वी रत्न श्री वकील मुनि जी म.*[4]	श्रीमती सोना देवी जी	श्री त्रिलोकचंद जैन सिंगल
18. संघ हनुमन्त श्री आदीश मुनि जी म.	श्रीमती रमेश देवी जी	श्री जिनेन्द्र जैन 'भाभू'
19. सरलमना श्री श्रीपाल मुनि जी म.	श्रीमती राजदुलारी जी	श्री चारित्र जैन गर्ग
20. मधुर वक्ता श्री रोहित मुनि जी म.	श्रीमती राममूर्ति देवी जी	श्री महावीर सिंह खरब
21. मधुर गायक श्री अजय मुनि जी म.	श्रीमती रामदुलारी जी	श्री वीरसेन जैन गर्ग
22. तपस्वी श्री श्रेयांस मुनि जी म.	श्रीमती वेदो देवी जी	श्री लहणा सिंह मलिक

* **दिवंगत।** 1. शास्त्री श्री पद्मचन्द्र जी म.—29.04.2016, शालीमार बाग, दिल्ली
2. श्री शान्तिचन्द्र जी म.— 08.04.2005, त्रिनगर, दिल्ली

-सुशिष्य-रत्न (संघस्थ)

	तिथि	स्थान	तिथि	दीक्षा स्थान
1.	18.08.1939	देहली	02.02.1958	चांदनी चौक, दिल्ली
2.	22.09.1940	देहली (मदीना)	02.02.1958	चांदनी चौक, दिल्ली
3.	17.09.1941	देहली (नगूरा)	02.02.1958	चांदनी चौक, दिल्ली
4.	05.06.1949	बुटाना	30.01.1967	मूनक
5.	27.10.1956	बुटाना	15.02.1973	बुटाना
6.	25.08.1956	बड़ौत (हिलवाड़ी)	26.11.1973	गन्नौर
7.	02.06.1959	सोनीपत (महावटी)	18.01.1979	सोनीपत
8.	10.07.1960	सोनीपत (सांधल)	18.01.1979	सोनीपत
9.	08.12.1960	बड़ौत (हिलवाड़ी)	16.02.1981	बड़ौत
10.	19.07.1965	बुटाना	07.12.1981	गोहाना
11.	29.11.1966	गोली	07.12.1981	गोहाना
12.	10.10.1966	गांगोली	24.04.1983	भठिण्डा
13.	29.11.1967	गोहाना	13.12.1985	गोहाना
14.	07.08.1969	देहली (बिटानी)	13.12.1985	गोहाना
15.	22.09.1970	सुनाम (नगूरा)	02.03.1987	रोहतक
16.	09.02.1971	सोनीपत	02.12.1987	सोनीपत
17.	15.05.1933	हिलवाड़ी	19.04.1988	बालोतरा
18.	30.08.1971	जाखल	15.02.1989	जाखल
19.	30.12.1975	लुधियाना	23.02.1994	सोनीपत
20.	01.08.1979	गुमाणा	23.02.1994	सोनीपत
21.	07.06.1971	बड़ौत	06.10.1994	बड़ौत
22.	18.01.1979	राजाखेड़ी	16.06.1995	रायकोट

* **दिवंगत**। 3. श्री अचल मुनि जी म.– 31.12.2019, सिविल लाईन, लुधियाना
4. श्री वकील मुनि जी म.– 13.09.2001, स्कीम न. 5, जींद

7. गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के -

नाम	माता	पिता	जतिथि
1. श्री सौरभ मुनि जी म.	श्रीमती रोशनी देवी	श्री सुलेखचन्द जैन मित्तल	15.02.1981
2. श्री पीयूष मुनि जी म.	श्रीमती कौशल्या देवी	श्री ज्ञानचन्द जैन चौधरी	18.12.1972
3. श्री प्रणीत मुनि जी म.	श्रीमती परमेश्वरी देवी	श्री ओमप्रकाश जैन मित्तल	01.01.1983
4. श्री पुनीत मुनि जी म.	श्रीमती कृष्णा देवी	श्री पवन जैन गोयल	23.07.1985
5. श्री दिनेश मुनि जी म.	श्रीमती संतोष देवी	श्री भरतराम जैन गर्ग	02.10.1983
6. श्री विनीत मुनि जी म.	श्रीमती सुशीला देवी	श्री महावीर जैन गर्ग	01.02.1987
7. श्री शीतल मुनि जी म.	श्रीमती शान्ति देवी	श्री पितराम जैन सिंगल	07.11.1985
8. श्री वीरेन्द्र मुनि जी म.	श्रीमती दर्शना देवी	श्री रामशरण जेन गोयल	18.09.1986
9. श्री जयन्त मुनि जी म.	श्रीमती सुनीता देवी	श्री मेघराज जैन गर्ग	22.10.1991
10. श्री ताराचन्द जी म.*	श्रीमती ईश्वरी देवी	श्री सुंदरदास मुंजाल	1941
11. श्री अक्षय मुनि जी म.	अभिभावक माता श्रीमती जगमति जैन	श्री रमेश चन्द्र जैन गर्ग	11.08.1993
12. श्री समकित मुनि जी म.	श्रीमती सरिता जैन	श्री मुनेन्द्र जैन मित्तल	02.04.1994
13. श्री नवनीत मुनि जी म.	श्रीमती पुष्पा रानी	श्री राजेन्द्र जैन गोयल	25.07.1994
14. श्री अर्हम् मुनि जी म.	श्रीमती मधु जैन	श्री देवराज जैन नाहटा	13.11.1994
15. श्री अतिशय मुनि जी म.	श्रीमती पान्ना देवी	श्री रामजी दास बंसल	06.10.1994
16. श्री निपुण मुनि जी म.	श्रीमती रेखा देवी	श्री जयपाल जी शर्मा	01.08.1998
17. श्री अखिल मुनि जी म.	श्रीमती पिंकी जैन	श्री अजित कुमार जैन लोढ़ा	23.08.1999
18. श्री निखिल मुनि जी म.	श्रीमती नीलम रानी	श्री संजीव जी बंसल	06.02.2002
19. श्री विजय मुनि जी म.	श्रीमती ज्ञानी देवी	श्री बसंत लाल जैन	21.08.1964
20. श्री रजत मुनि जी म.	श्रीमती नीलम जैन	श्री सुभाष जैन बंसल	18.12.2003
21. श्री नीरज मुनि जी म.	श्रीमती मूर्ति देवी जी	श्री टेकराम जी	01.10.2001
22. श्री संयम मुनि जी म.	श्रीमती शैली जैन	श्री आनंद जैन 'भाभू'	24.09.2000

* **दिवंगत**। श्री ताराचन्द जी म. 13 मई 2010 (सुन्दर नगर, लुधियाना)

-प्रशिष्य-रत्न (संघस्थ)

स्थान	दीक्षा दिन	दीक्षा स्थान	गुरु का नाम
1. बड़ौत	29.01.2001	समालखा	गणाधीश श्री प्रकाशचन्द्र जी म.
2. रोड़ी (सिरसा)	29.01.2001	समालखा	संघनायक शास्त्री श्री पद्मचन्द्र जी म.
3. खावड़ा कलां	15.02.2003	टोहाना	संघाधार श्री विनय मुनि जी म.
4. टोहाना	15.02.2003	टोहाना	त्याग शिरोमणी श्री राजेन्द्र मुनि जी म.
5. हिसार (कोथ)	01.02.2004	हिसार	संघनायक शास्त्री श्री पद्मचन्द्र जी म.
6. गन्नौर	01.02.2004	हिसार	संघनायक शास्त्री श्री पद्मचन्द्र जी म.
7. पिल्लूखेड़ा	24.01.2007	शालीमार बाग, दिल्ली	ओजस्वी वक्ता श्री अचल मुनि जी म.
8. रतिया	24.01.2007	शालीमार बाग, दिल्ली	कविरत्न श्री सुनील मुनि जी म.
9. भटिण्डा	24.01.2007	शालीमार बाग, दिल्ली	वात्सल्यनिधि श्री नरेन्द्र मुनि जी म.
10. मुल्तान नगर (पाक.) रतिया	20.02.2009	जींद	करुणा पुरुष श्री राकेश मुनि जी म.
11. शंकरनगर (दिल्ली) बस्ती (यू.पी.)	09.02.2011	सोनीपत मण्डी	तपस्वीराज श्री सुधीर मुनि जी म.
12. पश्चिम विहार (दिल्ली)	09.02.2011	सोनीपत मण्डी	समता विभूति श्री सत्यप्रकाश जी म.
13. नरवाना (कलौदा)	09.02.2011	सोनीपत मण्डी	संघ संचालक श्री नरेश मुनि जी म.
14. हांसपुर	09.02.2011	सोनीपत मण्डी	कविरत्न श्री सुनील मुनि जी म.
15. मानसा	12.05.2013	सै.-3, रोहिणी, दिल्ली	ओजस्वी वक्ता श्री अचल मुनि जी म.
16. किरठल (बड़ौत)	12.05.2013	सै.-3, रोहिणी, दिल्ली	संघ संचालक श्री नरेश मुनि जी म.
17. जण्डियाला (पंजाब)	21.02.2018	बुढलाडा	ओजस्वी वक्ता श्री अचल मुनि जी म.
18. बुढलाडा (पंजाब)	21.02.2018	बुढलाडा	ओजस्वी वक्ता श्री अचल मुनि जी म.
19. सींक (सफीदों) (हरियाणा)	18.01.2019	पाली (राजस्थान)	संघ हनुमन्त श्री आदीश मुनि जी म.
20. मानसा (पंजाब)	10.02.2019	मूनक (पंजाब)	मधुर वक्ता श्री रोहित मुनि जी म.
21. रोहतक (हरियाणा)	23.10.2020	बड़ौत (यू.पी.)	संघ संचालक श्री नरेश मुनि जी म.
22. समाना (पंजाब)	09.12.2021	जींद (हरियाणा)	समता विभूति श्री सत्यप्रकाश जी म.

8. घटनाएं जो इतिहास बन गई

1. एक भाई गुरुदेव के चरणों में आया। गुरुदेव ने कुछ लिखने के लिए उससे पैन मांगा। आगन्तुक आनाकानी-संकोच करने लगा। गुरुदेव ने पूछा– क्यों? आखिर कारण क्या है? आगन्तुक गर्दन नीची करके बोला– गुरुदेव! पैन नहीं है सिर्फ ऊपर की टोपी (Cap) है। गुरुदेव मुस्कुराए फिर तुरंत गंभीर होकर फरमाने लगे– 'आने वाला समय ऐसा आएगा जब साधु-साध्वियों के मुँह पर सिर्फ मुहपट्टी ही रह जाएगी।' अन्दर से संयम के दर्शन नहीं होंगे।
2. एक भाई ने गुरुदेव से पूछा– गुरुदेव! धर्म की सीधी-सरल सी व्याख्या कृपा करो क्योंकि हर एक धर्मोपदेशक अलग-अलग व्याख्या बताते हैं। जिससे धर्म समझने में दुविधा ही पैदा होती है। गुरुदेव फरमाने लगे 'क्यों भाई! आपको पाप समझ में आता है? भाई ने एकदम कहा– 'हाँ गुरुदेव, पाप तो बड़ी जल्दी समझ में आ जाता है'। गुरुदेव बोले 'ऐसा करो पाप छोड़ते चले जाओ, धर्म तो स्वतः ही हो जाएगा'। आगन्तुक प्रसन्न भी हुआ और संतुष्ट भी।
3. एक भाई गुरुदेव के चरणों में आया। उसके चेहरे पर तनाव की लकीरें और क्रोध की अग्नि दहक रही थी। गुरुदेव ने पूछा– 'क्या बात है?' आगन्तुक बोला– गुरुदेव, इस शहर में बहन की शादी की थी। आज फिर उसका फोन आया है। घर में झगड़ा है। आज तो फैसला करके ही जाऊँगा।' गुरुदेव ने सुना और कहा 'थोड़ी देर शांति से बैठ! ले मंगलपाठ सुन और अपने घर जा, बहन के घर नहीं जाना।' श्रद्धा और समर्पण के तहत वो भाई सीधा अपने घर गया। घर पहुंचते ही बहन का फोन आ गया "भाई! आने की जरूरत नहीं है, बात निबट गई है।"
4. पूज्य गुरुदेव चाँदनी चौंक में अपने वाचस्पति गुरुदेव के चरणों में

बड़ों की टोक हो तो जीवन मंजेगा, संयम पलेगा।
—गुरु सुदर्शन

विराजमान थे। एक बालक वाचस्पति गुरुदेव को वंदना करके बोला "गुरु जी, मेरी मम्मी ने मुझे भेजा है। मुझे आप नवकार मंत्र सिखा दो। वाचस्पति गुरुदेव के पास भीड़ थी अतः उन्होंने गुरुदेव की तरफ ईशारा किया कि "जाओ उन से सीख लो।" वह बालक गुरुदेव के चरणों में आया और बोला, "आपको नवकार मन्त्र आता हो तो मुझे सिखा दो"। गुरुदेव ने बालक की बात सुनकर उद्घोष किया कि "भविष्य में ऐसा वक्त आएगा कि साधु-साध्वियों से ये भी पूछना पड़ेगा कि आपको नवकार मंत्र भी आता है या नहीं।"

5. एक बहन गुरुदेव के चरणों में आकर रोने लगी। गुरुदेव ने पूछा तो बोली– "गुरुदेव! शादी को 10 साल हो गए हैं। घर में कोई फूल (बच्चा) नहीं खिला, आप कोई मंत्र कृपा करो।" गुरुदेव फरमाने लगे– "प्रातः उठकर अपनी सास के चरण छुआ करो"। बहन बोली "उनसे तो मेरा झगड़ा रहता है।" गुरुदेव बोले– "मेरे पास तो यही मंत्र है।" समय अच्छा था जो गुरुदेव की बात जंचने लगी और घर जाकर सास के चरण छुए। सास ने भी धीरे-2 पुरानी बातों को दरकिनार करके आशीर्वाद देना शुरू कर दिया। उस घर में वर्ष भर में ही बेटे ने जन्म ले लिया।

6. पवन जी (अहीर माजरा) वालों का किसी रोगोपचार हेतु पश्चिम विहार होम्योपैथिक सिक्ख डॉ. के पास जाना हुआ, रोग के साथ डॉ. सा. को ये भी बता दिया कि डॉ. सा. दवाई ऐसी लिखना जो रात को न लेनी पड़े। ये शब्द सुनते ही डॉ. सा. यकायक बोले– क्या आप श्री सुदर्शन मुनि जी म. के शिष्य हो? पवन जी बोले हां, हम शिष्य तो गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के ही हैं, पर आपको ये कैसे पता लगा? अतीत की यादों को सहलाते हुए डॉ. सा. बोले– बात ऐसी है कि बहुत साल पहले मेरे पिता जी का चाँदनी चौंक होम्योपैथिक क्लीनिक था तथा वहीं पर गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. जैन स्थानक में विराजमान थे। केसरी चन्द पालावत उनके

> जो गुरु के दिल में स्थान बना लेता है, वो मुक्ति की टिकट पा लेता है।
> –गुरु सुदर्शन

अनन्य भक्त थे, उन्होंने गुरुदेव से जिक्र किया कि मैं होम्योपैथिक दवाई लेने डॉ. सा. के पास जाऊंगा। गुरुदेव बोले– मेरी भी दवाई लेते आना। पालावत जी बोले– गुरुदेव कौनसी? गुरुदेव बोले– मेरा नाम ले देना, वो अपने आप दे देंगे। पालावत जी ने डॉ. सा. से दवाई ले गुरुदेव विषयक जिक्र किया और मेरे पिता जी ने बड़ी सहजता से पुड़िया बनाकर दे दी। पालावत जी हैरान रह गए। ना गुरुदेव ने कुछ बताया, ना डॉ. सा. ने कुछ पूछा। उन्होंने अपने हृदय की शंका मेरे पिता जी के सन्मुख रख ही दी। वो बोले– "मुझे रात को स्वप्न में सफेद कपड़े पहने एक जैन मुनि दिखाई दिए और बोले कि कल तेरे पास केसरी चंद पालावत आएगा, उसे अमुक दवाई दे देना।" सिक्ख डॉ. के मुख से अपने आराध्य की अद्‌भुत घटना सुन श्रावक पवन जी ने स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया। धन्य हैं हम, जो हमें ऐसे विलक्षण गुरुदेव मिले।

7. बचपन में गुरुदेव रोहतक में तपस्वी श्री निहाल चन्द जी म. से बहुत लगाव रखते थे। बाल्यकाल के दौरान एकदा उनके चरणों में बैठे थे। तभी एक भाई दर्शन करके गया। उसके जाने के बाद तपस्वी जी ने गुरुदेव से कहा 'इस भाई के पेट में जलेबी है'। गुरुदेव सोचने लगे कि तपस्वी जी म. ज्ञानी हैं, अतः इसके पेट की जलेबी देख ली होगी। बात को और अधिक पुष्ट करने के लिए गुरुदेव ने आस-पास के कई हलवाइओं से पूछा कि फलां आदमी आपके यहाँ से जलेबी लेकर गया है क्या? कहीं पर भी बात पुष्ट नहीं हुई। अन्ततः फिर तपस्वी जी म. के चरणों में पहुँचकर सारी बात सुनाई। तो वे खूब हँसे। कहने लगे 'तू बहुत भोला है। समझा नहीं। उस आदमी के बारे में मैं यह कह रहा था कि वह कपट करता है। कपट को जलेबी कहते हैं। जैसे जलेबी में कई घुमाव होते हैं, ऐसे ही कपटी भी घुमावदार बातें करते हैं।'

8. सन् 1946 अहमदगढ़ चातुर्मास में गुरुदेव के प्रवचनों में भारी भीड़

> समकित बिना क्रिया लाभकारी नहीं। जैसे त्यौहारों पर विशेष भोजन बनता है पर पंडित को जिमाए बगैर बच्चों को भी नहीं दिया जाता। –गुरु सुदर्शन

रहती थी। एक दिन गुरुदेव ने दया का माहात्म्य सुनाया। एक ग्यारह वर्षीय बालक इतना प्रभावित हुआ कि उसने सोचा-आज मैं दिन में अधिक से अधिक दया के कार्य करूँगा। एक जगह उसको बलगम में फँसी हुई मक्खी नजर आई। अग्लान भाव से उसने उसे निकाला और बचा लिया। स्कूल जाते समय उसने सड़क पर पड़ा हुआ केले का छिलका उठाया ताकि कभी कोई फिसल न जाए। स्कूल से आते समय उसने एक वृद्ध व्यक्ति को सड़क पार करवा दी। खुश होकर शाम को वह बालक गुरुचरणों में आया तथा कहने लगा कि 'हे गुरुदेव! मेरे इन तीन कामों में से कौन-सा ज्यादा जरूरी और अधिक दया रूप था? बालक का प्रश्न सुनकर गुरुदेव मुस्कराए तथा पूज्य बाबा जी म. के चरणों में ले गए। उन्हीं के सान्निध्य में उस प्रश्न का उत्तर देते हुए फरमाने लगे— 'तुम दिन में तीन बार भोजन करते हो। इनमें से कौन-सा जरूरी है? बालक कहने लगा कि 'तीनों ही जरूरी हैं।' तब गुरुदेव ने उसी आधार पर उस बालक को समझाया कि दया का हरेक काम आत्मा को शक्ति और पुष्टि देता है, इसलिए तुम्हारे तीनों काम जरूरी और महत्वपूर्ण हैं। तथा इनके अलावा भी जो काम दया भाव से करोगे, वही जरूरी हो जाएगा।

9. सन् 1941 में गुरुदेव का वैराग्यकाल था। तब गुरुदेव अहमदगढ़ मण्डी में वाचस्पति गुरुदेव के चरणों में रहते थे। वे हर रविवार को बहुसूत्री श्री नाथूलाल जी म. की सेवा में धूरी जाया करते। उनके तात्विक प्रवचन व छोटे-2 कथानक गुरुदेव को बहुत पसन्द आते थे। श्री बहुसूत्री जी म. के मन में अपने पौत्र शिष्य के प्रति अगाध वात्सल्य था। एक दिन प्रवचन से पूर्व श्री बहुसूत्री जी म. ने कहा, 'सुदर्शन जी, मेरी कथा में एक शब्द 'के नाम जेरे' प्रायः आता है, ऐसा लोग कहते हैं। तुम आज गिनना कि कितनी बार मेरे मुँह से ये शब्द निकलता है।' गुरुदेव ने कथा सुनी। बाद में पूछने पर बोले 'भगवन्, शुरू-2 में दो-चार बार तो मैं गिनता रहा, लेकिन बाद में कथा में इतना मगन हो गया कि मैं गिनना भूल गया'। कुछ देर बाद

अग्नि पर मक्खन रखा, छाछ ना निकली तो व्यर्थ, ऐसे ही तप करते वक्त
कषाय शांत नहीं हुए तो तप व्यर्थ। —गुरु सुदर्शन

श्री बहुसूत्री जी म. ने फरमाया, 'जिन्हें संयम और गुरु-उपासना में रस आ जाता है, उन्हें बड़ों के दोष नजर नहीं आते। जैसे जब किसी दुकानदार की दुकान पर ग्राहकों का मेला लगा हुआ हो, तब उस दुकानदार को बाजार में होने वाली घटनाएँ नजर नहीं आती'।

10. एक बहन गुरुदेव के चरणों में आई और कहने लगी कि 'गुरुदेव, मैं बीमार चल रही हूँ। कल करवा-चौथ का दिन है। व्रत करूँ तो डर लगता है कि तबीयत बिगड़ न जाए। ऐसी स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए। व्रत करूँ या नहीं?' गुरुदेव ने करवा चौथ के वास्तविक लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए उसे कहा कि 'एक साल तक पतिदेव से न लड़ने का नियम कर लो, तुम्हारा सही करवे का व्रत हो जाएगा। पति की कल्याण-कामना तो तभी पूरी होगी, जब घर में कलह नहीं होगी।'

11. दिल्ली में एक सुशिक्षित बेरोजगार युवक गुरुदेव के दर्शन करने आता था। गुरुदेव के प्रवचनों से उसे बड़ा लगाव था। गुरुदेव ने उसे सामायिक करने की प्रेरणा दी और कहा कि सामायिक को निष्काम भाव से करना, इसमें लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति की याचना नहीं करनी। अगले दिन ही वह युवक प्रातःकाल ही सामायिक करने आया। सर्दी का मौसम था। उसने एक-2 करके कपड़े उतारने शुरू किए। गुरुदेव ने देखा कि वस्त्र उतारकर वह युवक एक शाल ओढ़कर बैठ गया। बिल्कुल शांत-भाव से ध्यान-लीन हो गया। उसे सर्दी की अनुभूति भी नहीं हो रही थी। किसी के आने-जाने से भी वह प्रभावित नहीं हो रहा था। गुरुदेव उसकी दृश्यमान मुख-मुद्रा से ही प्रभावित हो गए। बाद में पूछने पर पता चला कि सामायिक में भौतिक फल की आकांक्षाओं को भी वह दूर रख पाया था। उसका ये सामायिक क्रम दैनिक बन गया और करिश्मा यह भी हुआ कि उस युवक की सात दिन में ही एक अच्छे स्थान पर नौकरी लग गई। पर उसकी सामायिक पूर्ववत् चलती रही।

12. गुरुदेव कटु शब्द सुनकर मौन हो जाते थे, छलकते नहीं थे। एक बार

स्वयं पर Control विरले ही करते हैं, जो कर पाते हैं वे कल्याण के पात्र होते हैं।
—गुरु सुदर्शन

गुरुदेव ने बताया था कि मैं नवदीक्षित था। किसी के घर गर्म पानी लेने गया। बहन देखकर क्रोध में पूछने लगी 'क्यों आया है?' मैंने कहा– 'गर्म पानी चाहिए, यदि आपके घर रखा हो तो थोड़ा दे दो।' जली-भुनी वह औरत बोलने लगी– 'इतने तालाब और कूए भरे पड़े हैं, उनमें से निकाल ले। यदि गरम ही चाहिए तो अंगीठी जला लेता, गर्म कर लेता या अपना घर बसा लेता।' उसकी ये बात सुनकर मुझे दशवैकालिक सूत्र की याद आई, जिसमें निर्देश है– **'अणासए जे उ सहिज्ज कण्टए, वईमए कन्नसरे स पुज्जो'** कटु-वचन सुनने वाला ही पूजनीय होता है। और मैं बिना किसी प्रत्युत्तर या प्रतिक्रिया के वापस मुड़ लिया।

13. गुरुदेव जब बालक थे, तब एक दिन उनके पड़ोस में काफी मायूसी छाई हुई थी। वे उनके घर के अन्दर गए। जाकर देखा कि एक छोटा-सा बच्चा बेहोश पड़ा था। उसकी माँ ने उसे किसी बात पर गुस्से में आकर पीट दिया था और ज्यादा पिटाई के कारण वह बेहोश हो गया। उसकी माँ उसे दूध पिलाने की कोशिश कर रही थी। कुछ लोग उसे सहला रहे थे, लेकिन लड़का पूरी तरह खड़ा नहीं हो पा रहा था। गुरुदेव ने तुरन्त नवकार-मंत्र सुनाना शुरू कर दिया और बालक थोड़ी ही देर में खड़ा हो गया। परिवार को खुशी हुई और गुरुदेव की नवकार मंत्र पर श्रद्धा बढ़ी।

14. एक स्थान पर दो सगे भाईयों का आपस में झगड़ा था। झगड़े के कारण कोर्ट में केस चल रहा था। दोनों ही पेशी से पहले गुरुदेव से मंगलपाठ सुनने के लिए आए। दोनों ही गुरुदेव के भक्त थे और दोनों ने ही वाचस्पति गुरुदेव की गुरुधारणा ले रखी थी। गुरुदेव ने उन्हे बैठने को संकेत किया। दोनों भाई बैठ गए। गुरुदेव कहने लगे, 'तुम दोनों आपस में ही भाई नहीं हो, मेरे भी भाई हो।' 'कैसे?' 'क्योंकि जिन गुरुओं की गुरुधारणा आपने ली, जिनके आप शिष्य हो, उन्हीं के हम हैं, इसलिए तुम दोनों मेरे भाई हो। मैं नहीं चाहता कि मैं ऐसी

आचरण में भद्दापन एवं अडियल वृत्ति है तो बाहर के पूजा पाठ सभी ढकोंसला है।
–गुरु सुदर्शन

मंगली सुनाऊँ कि जिससे मेरा एक गुरुभाई जीते, दूसरा हारे। तुम दोनों जीतो, ऐसी मांगलिक सुनाना चाहता हूँ।' दोनों भाई गुरुदेव को निहारने लगे। फिर दोनों की आपस में नजर मिली। नजरों में घृणा की जगह प्रेम का जन्म हो चुका था। गुरुदेव ने उस होते हुए परिवर्तन को परखा। पुनः वार्ता-क्रम जारी रखते हुए बोले– 'तुम दोनों अपने-2 केस वापस ले लो, तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।' दोनों भाईओं ने गुरुदेव के चरण छुए और केस वापस लेने का तुरन्त निर्णय ले लिया।

15. पंजाब में गुरुदेव का विचरण चल रहा था। एक गाँव में गुरुद्वारे में ठहरे। गुरुदेव का यही दृष्टिकोण रहता था कि जिस धर्म स्थान पर ठहरें, उसकी मर्यादा का पालन अवश्य करना चाहिए। किसी भी धर्म और सम्प्रदाय की भावनाओं की उपेक्षा करके हम उनकी सद्‌भावनाओं को नहीं जीत सकते। उस गुरुद्वारे का ग्रंथी प्रातःकाल बहुत जल्दी गुरुद्वारे में आया और गुरुदेव तथा सभी संतों से कहने लगा कि मैं कुछ देर गुरुग्रंथ साहिब का पाठ करूंगा। आप इतनी देर खड़े रहिए, ये हमारी सिख-परम्परा है। गुरुदेव ने अपनी परम्परा समझाई, लेकिन ग्रंथी नहीं माना। वातावरण को सुखद बनाए रखने के लिए गुरुदेव खुद भी खड़े रहे तथा संतों को भी खड़े किए रखा। गुरुदेव के सौम्य व्यवहार से वह ग्रंथी बहुत प्रभावित हुआ। बाद में उसने अपने अभद्र व्यवहार के लिए क्षमा मांगी तथा कहने लगा कि– 'आप तो रब्ब हो, सच्चे वाहेगुरु हो। इस गुरुद्वारे में आने वाले हर जैन साधु की मैं इज्जत और सेवा किया करूँगा।'

16. पूज्य बाबा श्री जग्गूमल जी म. की सेवा में गुरुदेव जी म. चाँदनी चौंक दिल्ली में थे। एक दिन भिक्षाचरी के लिए गुरुदेव एक घर में पधारे। एक छोटा बालक तभी खाना खाने बैठा था, लेकिन उसकी मनपसन्द सब्जी नहीं बनने से रूठ गया और सब्जी की कटोरी एक ओर फैंक दी। गुरुदेव ने देख तो लिया, पर उस बालक को कुछ नहीं कहा। उस पर नजर अवश्य डाली। बच्चे की माँ को ख्याल था कि गुरुदेव बच्चे

किसी की रक्षा कर के/दान देकर/नियम का पालन करके/प्रवचन में आकर खुशी मिलती हो तो समझो तरणहार जीव है। –गुरु सुदर्शन

को कुछ कहेंगे, लेकिन गुरुदेव तो आहार लेकर वापस आ गए। 3 दिन बाद उसकी माँ से कहा कि बच्चे को भेजना। बालक आया तब गुरुदेव ने कहा कि– 'भोजन में जो माँ दे, वही खा लिया करो।' वह बालक कहने लगा कि– 'गुरुदेव, तीन दिन से कोशिश कर रहा हूँ और आज से नियम करता हूँ कि कभी भी भोजन को लेकर लड़ाई नहीं करूँगा।' गुरुदेव बड़े प्रसन्न हुए।

17. किसी विशाल संयुक्त परिवार में गुरुदेव का आहार के लिए पदार्पण हुआ। विचित्र संयोग था कि उस समय उस घर में चार प्रसूतियां हुई थीं। तीन बहनों को पुत्रों की प्राप्ति हुई थी तथा एक को पुत्री की। रिश्तेदार, मित्र आते थे। पुत्रवती देवियों को बधाई देने पहले जाते और कन्या की जननी के पास बाद में। लेकिन गुरुदेव ने कहा कि मैं पहले कन्या की माँ के कमरे में मंगलपाठ सुनाऊँगा। कुछ तो वह स्वयं ही आहत है, कुछ आगन्तुक मेहमान उपेक्षा करके उसकी भावनाओं को और आहत कर देते हैं। मैं उसे सान्त्वना एवं साहस देने का प्रयत्न करूँगा। गुरुदेव ने जब उस देवी को मंगलपाठ सुनाया तो वह भाव-विभोर हो गई और दुनिया से मिले ग़मों को भूल गई।

18. एक भटका हुआ जैन युवक गुरुदेव को बाजार में मिला। कुछ नशे में था। फिर भी अपने गुरुओं की पहचान तो थी ही, सड़क पर सीधा लेट गया और प्रणाम करने लगा। मुँह से मद्य की दुर्गंध आ रही थी। गुरुदेव ने उस समय उससे वार्तालाप करना उचित नहीं समझा। चल दिए। अगले दिन उस युवक के पिता उसे दर्शन कराने लाए। तब वह सामान्य स्थिति में था। उसने गुरुदेव को सामान्य ढंग से वन्दना की। गुरुदेव ने कहा कि कल बाजार में तेरा रूप कुछ और था, अब कुछ और है। सकुचाते हुए उसने पूछा, 'गुरुदेव! क्या आप कल मुझे देखकर डर गए थे?' गुरुदेव ने कहा– 'मैं कल तो नहीं घबराया, लेकिन आज घबरा रहा हूँ। क्योंकि कल तो तुम्हारी हालत दया के काबिल थी, तुझपे मुझे रहम आ रहा था, लेकिन अब मुझे ये घबराहट

> कषाय में वृद्धि साधना/उपासना में त्रुटि पैदा कर देती है।
>
> –गुरु सुदर्शन

है कि तुम्हारा भविष्य क्या होगा? क्या फिर तुम उसी अंधी गली के राहगीर बनोगे?' गुरुदेव समझाते रहे और वह युवक सिर हिलाता रहा। क्रमशः हृदय-परिवर्तन हुआ और वह नया आदमी बनकर वहाँ से बाहर निकला।

19. सन् 1968 में गुरुदेव का जयपुर चातुर्मास था। एक दिन गुरुदेव एक जौहरी के घर दर्शन देने पधारे। जौहरी ने ढेरों जवाहरात सामने रखे और कहने लगा— 'गुरुदेव, इन जवाहरात को अपने चरण लगा दो, इनकी कीमत बढ़ जाएगी।' गुरुदेव ने फरमाया— 'इनकी बढ़े न बढ़े, तुमने यदि अपने आचरण को सुधार लिया, तो तुम्हारी कीमत निश्चित ही बढ़ जाएगी।'

20. सन् 1950 में गुरुदेव दिल्ली चाँदनी चौंक में थे। एक दिन दरीबा में कूचा सेठ में आहार के लिए एक दिगम्बर जैन के घर गए। 3 साल का बच्चा रोटी खा रहा था। आधी रोटी बची थी। बोला— 'गुरुजी को दूंगा।' माँ व पिता ने कहा— 'ये तो झूठी है।' बच्चा जिद्द कर गया। गुरुदेव बोले— 'यही देने दो, हमारी दृष्टि में भाव का महत्व है।' लेकर स्थानक आए। बाबा जी को सब बात बताई। बाबा जी म. बोले— 'ये रोटी मुझे दे, मैं खाऊँगा, झूठ सच क्या होता है।' आगे जाकर उस बच्चे को बहुत लगन लगी।

21. सन् 1950 में गुरुदेव दिल्ली चाँदनी चौंक में विराजमान थे। आचार्य श्री गणेशी लाल जी म. भी वहीं विराजित थे। उस वर्ष उन्हें अलवर चौमास करना था पर बीमार हो गए, अतः चाँदनी चौंक में इकट्ठा ही चातुर्मास हुआ। आपस में बहुत प्रेम और सौहार्द का वातावरण रहा। एक दिन आचार्य श्री बोले— 'सुदर्शन जी, थैं कित्ता वर्ष हुआ व्याख्यान करते?' गुरुदेव बोले— 'मेरे गुरु म. ने सन् 1945 में ही मुझे कथा क्षेत्र में डाल दिया था।' आचार्य श्री ने कहा— 'कभी अपने को भी कथा सुनाई? जिस दिन अपने को सुना दी, समझना उसी दिन सही कथा की है। भीड़ को नहीं देखना कि सुन रही है या नहीं।'

> तोलकर बोलने वाला आगम का वाक्य बोलता है।
>
> —गुरु सुदर्शन

गुरुदेव ने इस बात को सारी उम्र याद रखा। यही कारण है कि उनकी कथनी और करनी एक थी।

22. गुरुदेव चाँदनी चौंक के कूचा सेठ में एक घर में एक दिन गोचरी के लिए पधारे। एक माँ अपने बच्चे को धमका रही थी– 'तुझे मौत भी नहीं ने जाती।' गुरुदेव ने सुन लिया, बोले– 'बहन, इस बच्चे को मैं ले जाऊं?' 'नहीं म., आपको नहीं दूंगी।' गुरुदेव हास्य रस बिखेरते हुए बोले– 'तो क्या मैं मौत से भी बुरा हूँ, जो मना कर रही हो?'

23. सन् 1950 में चाँदनी चौंक में आचार्य श्री गणेशी लाल जी म. ने गुरुदेव को एक बार फरमाया– 'हम बेकार हैं।' गुरुदेव ने पूछा– 'कैसे?' आचार्य श्री बोले– 'बे' का अर्थ है 'दो'। 'कार' का अर्थ है 'कार्य करने वाला'। हम दो कार्य करते हैं– अपना भी कल्याण करते हैं, संसार का भी।' यदि बेकार का यही अर्थ है तो सचमुच गुरुदेव सारी उम्र 'बे-कार' रहे।

24. गुरुदेव को प्रारंभ से ही बातों का रस नहीं रहा। जब गुरुदेव दिल्ली चाँदनी चौंक में थे तो एक भाई रोज आता। एक दिन बोला– 'गुरुदेव, मेरे पास कोई काम नहीं है।' गुरुदेव ने कहा– 'धर्म का शरणा रखो, दो तीन घण्टे माला फेरा करो।' 'मैं तो बात करने आया था।' गुरुदेव बोले– 'मेरे पास समय नहीं है।' गुरुदेव 9 साल दिल्ली रुके, एक चिट्ठी तक कहीं नहीं लिखवाई। बाबा जी म. की सेवा करना और प्रवचन सुनाना, यही काम था। कभी बात कर लेते तो बाबा जी कहते– 'शास्त्र पढ़ो, बातों में कुछ नहीं रखा।' जिस की नीवें इतनी गहरी जमाई गई हों, भला वो महाविशाल वट वृक्ष क्यों न बनता?

25. एक जगह किसी घर में गुरुदेव दर्शन देने पधारे। घर में कई तस्वीरें थीं। घर के सभी सदस्यों ने अपने अलग-अलग भगवान्, देवता बैठा रखे थे। गुरुदेव के श्रीमुख से सहज ही निकला– 'अगर तुम इतने देवों की बजाय एक अकेले सत्य भगवान् की पूजा करो, तो किसी की जरूरत नहीं।' घर का मुखिया बोला– 'गुरु म., टेढ़ा मामला है'।

अभी तक यह जिंदगी खुले आसमान तले खड़ी है, यदि प्रभु प्रार्थना की छत बनाओगे तो सुरक्षित हो जाएगी। –गुरु सुदर्शन

गुरुदेव ने फरमाया— 'दुनिया सत्य को टेढ़ा मानती है, किन्तु हमें सीधा लगता है।'

26. किसी क्षेत्र में गुरुदेव के पास एक भाई आया। बोला-'आज हमारी समाज की मीटिंग है, मंगली सुनाओ'। सुना दी। फिर बोला— 'और कुछ फरमाओ।' गुरुदेव ने फरमाया— 'अपने ऊपर ब्रेक लगाओ'। 'कैसे?' गुरुदेव बोले— 'तू लड़े बिना रह नहीं सकता, आज लड़ना नहीं।' उसे सामायिक करवा दी। मीटिंग बढ़िया हुई। शांति रही। बाद में एक श्रावक आकर बोला— 'गुरुदेव, आपने उस 'पतन्दर' को रोक लिया। वह गुरुदेव से बोला— 'ऐसा सुना है किसी ने मुझे 'पतन्दर' कहा है?' गुरुदेव मौन रहे। वह स्वयं फिर बोला— परन्तु सामायिक करके मेरा मन शान्त हो गया। आगे लडूंगा नहीं।

27. एक समृद्ध जैन भाई ने अपनी बेटी की शादी पर एक करोड़ रू. खर्च किया। जहां जाता, वहीं चर्चा करता। एक बार गुरुदेव के सामने भी कर बैठा। गुरुदेव उसके धन-व्यय (अपव्यय) से प्रभावित नहीं हुए। उल्टे, उपालम्भ देते हुए बोले— 'इसमें क्या खास बात है। अपने परिवार के लिए सब करते ही हैं। तेरी दिलेरी तब है जब किसी गरीब की बेटी की शादी में धन लगाए और साथ ही तेरे सगे भाई की जवान बेटी घर में कुँवारी बैठी है, तूने उसके लिए कभी कुछ सोचा?' सेठ जी नई दृष्टि लेकर वहाँ से गया।

28. सन् 1943 में बड़े गुरुदेव वाचस्पति श्री मदन लाल जी म. का चातुर्मास चाँदनी चौंक था। गुरुदेव भी साथ ही थे। एक दिन गुरुदेव बाहर से आए व अपने आसन पर बैठकर किताब पढ़ने लगे। वाचस्पति गुरुदेव ने उन्हें बुलाकर कहा, 'आज एक काम बाकी रह गया।' गुरुदेव बोले, 'मुझे ध्यान नहीं आया।' बड़े गुरुदेव बोले, 'पाँव पौंछने थे।' गुरुदेव ने एकदम पोंछे। बड़ों की रज पौंछना आत्मा पर चढ़ी कर्मरज उतारना है।

29. जण्डियाला गुरु में बड़े गुरुदेव श्री वाचस्पति जी म. का अंतिम समय

ज्ञान बिना मोह जीतना बच्चों जैसी बात है।

—गुरु सुदर्शन

चल रहा था। एक दिन गुरुदेव उनके चरणों में बैठे हुए थे। बड़े गुरुदेव बोले– 'तूने क्या पाया?' गुरुदेव ने उनके चरण पकड़ के कहा– 'मैंने ये पाए हैं।' बड़े गुरुदेव प्रसन्न होकर बोले– 'अच्छा, तू भरत है और ये मेरी पादुकाएँ हैं।'

30. नरवाना के धनाढ्य सेठ श्री कृष्ण गोपाल जी गुरुदेव के अनन्य भक्त हैं। सारे इलाके में उनका रौब है। उनकी एक बेटी मधु की हिसार में शादी हुई। कुछ समय बाद उसकी हत्या कर दी गई। विरोध स्वरूप सारा नरवाना बंद रहा। पूरी मिनिस्ट्री श्रावक जी के साथ में थी। वो हिसार गए, हजारों आदमी साथ में थे। लड़के वाले भाग गए अतः बच गए। कृष्ण गोपाल जी गुरुदेव के पास आए, सान्त्वना मिली। उधर वे सभी लड़के वाले जेल में बन्द हो गए। तब गुरुदेव राजाखेड़ी में थे। श्री कृष्ण गोपाल जी को गुरुदेव ने कहा– 'बहुत समय हो गया, अब उनकी जमानत हो जाने दो'। उन्होंने फौरन आज्ञा मानी व केस वापस ले लिया। यद्यपि उनका परिवार विरोध में था, पर 'गुर्वाज्ञा गरीयसी'–गुरु आज्ञा बड़ी है।

31. एक दिन गुरुदेव ने श्री नरेन्द्र मुनि जी म. से कहा– 'नवकार मंत्र याद है?' वो बोले– 'जी गुरुदेव, याद है।' गुरुदेव ने मुस्कराते हुए कहा– 'नहीं, तुझे याद नहीं है।' दो-तीन बार यही ना और हाँ होती रही। अन्त में गुरुदेव ने स्पष्ट करते हुए कहा– 'क्या नवकार मंत्र के सभी गुण याद हैं?' 'नहीं गुरुदेव, सभी गुण तो याद नहीं है।' 'यदि सभी गुण याद नहीं, तो पूरा नवकार मन्त्र याद नहीं माना जा सकता। अब पहले सभी गुणों को याद करो।' गुरुदेव के संकेत को पा श्री नरेन्द्र मुनि जी म. प्रणत हो गए।

32. फरवरी 1999 में गुरुदेव जी म. कैथल पधारे। प्रवचन के लिए 'संगम बैंकट हॉल' का चयन किया। मालिक को पता लगा तो अतिप्रसन्न हुए। कहने लगे– 'सौभाग्य है हमारे यहां गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. पधारेंगे। वे तो मेरे गुरु हैं। दस साल पहले वे कैथल पधारे

ज़हर पीने वाले ही अमृत बाँट सकेंगे।

–गुरु सुदर्शन

थे। मैंने उनके दर्शन किए। तब उन्होंने मुझे पोल्ट्री फार्म का कारोबार बन्द करने के लिए कहा था। मैंने धीरे-2 वह पाप का धंधा बन्द कर दिया और आज जो भी हमारी अच्छी स्थिति है वह भी उन्हीं की कृपा के कारण है।' पिता-पुत्र दोनों गुरुदेव के चरणों में आए। गुरुदेव ने उन्हें पहचान लिया। सेठ जी ने भाव-विभोर होकर बैंकट हॉल में कथा की विनति की तथा कहने लगे— 'आपके पधारने की खुशी में एक क्विंटल लड्डू बँटवाऊंगा।' गुरुदेव ने उन्हें मना किया कि हमारी कथाओं में प्रसाद नहीं बंटता। रविवार को प्रवचन में बहुत रौनक हुई। एक अजैन भाई को गुरुदेव ने कर्मणा जैन बना दिया था। कई महीनों से उसका अमेरिका जाने का पासपोर्ट नहीं बन रहा था, गुरुदेव के दर्शन करने के बाद दो दिन में ही बन गया।

33. शालीमार बाग निवासी श्री उग्रसैन जी के सुपुत्र श्री प्रमोद जैन गुरुदेव के अनन्य श्रद्धालु, परम सेवा-भावी, धर्मनिष्ठ युवक हैं। 1992 में वे सी.ए. के पेपर दे रहे थे। उन्होंने जब से सी.ए. में प्रवेश लिया था तभी से गुरुदेव के चरणों में आते थे। मंगलपाठ सुनते थे। सात पेपरों में से उनका छठा पेपर बहुत खराब हुआ। सातवाँ पेपर देने का मन नहीं था। गुरुदेव के चरणों में अपनी सारी बात रखी। गुरुदेव ने एकदम कहा कि 'छठे पेपर की तो चिन्ता मत कर। सातवां पेपर जरूर दे'। हौंसला बना। आज्ञा पाकर सातवां पेपर दिया। परिणाम आया और सारा परिवार दंग रह गया कि सभी पेपरों में पास तथा छठे पेपर में और सभी पेपरों से ज्यादा नम्बर आए थे।

34. श्री प्रमोद जैन आई.ए.एस. जम्मूवासी गुरुदेव के विशेष भक्त हैं। सन् 1998 में एक वर्ष की इंग्लैण्ड यात्रा के बाद भारत लौटे। घर बाद में गए, पहले गुरुदेव के चरणों में कृतज्ञता प्रकट करने अम्बाला आए। एक रात वहीं लगाई। प्रवचन में सामायिक करके बैठे। स्वयं भी कुछ देर बोले। उन्होंने बताया कि मैं कई वर्षों से विदेश जाने का इच्छुक था, लेकिन सरकारी लालफीताशाही के कारण कुछ बात बन नहीं रही

ईमानदारी की जड़ें बहुत गहरी होती हैं।

—गुरु सुदर्शन

थी। गुरुदेव के दर्शन करने आया और अपनी समस्या इनके चरणों में रखी। अपनी कृपा बरसाते हुए गुरुदेव ने कहा– 'Try, Try, Try. एक ही आदेश को गुरुदेव तीन बार कहकर मौन हो गए। आशा की किरण लिए मैं फिर प्रयास में जुट गया। दो बार कार्यक्रम फाइनल होने के बावजूद इंकारी हो गई। मन टूट रहा था, फिर गुरुदेव का आदेश वाक्य याद आ जाता 'Try, Try, Try. मैं फिर प्रयत्न में जुट गया और तीसरी बार मुझे सफलता मिली। जब मेरी भावना पूरी हुई, तब मुझे समझ आया कि तीन बार Try शब्द का क्या रहस्य था।

35. चार अप्रैल 1999 को दिल्ली शालीमार बाग से एक बस गुरुदेव के दर्शनार्थ सोनीपत में गई थी। श्री किशोरी लाल जी देहरे वाले भी उस बस में थे। वार्धक्य के कारण स्मृतिलोप एवं चित्तविक्षेप रहता था। सोनीपत जाकर कहीं गुम हो गए। सोनीपत का चप्पा-2 छान लिया। दिल्ली, समालखा, देहरा, जहां-2 दिमागों ने गवाही दी, वहीं तलाशी करवाई। पर नहीं मिले, पुलिस ने भी प्रयास किया। परिवार, रिश्तेदार सब परेशान, 5 ता. को बरोटा गांव में उनके सुपुत्र श्री ओम प्रकाश जी गुरुदेव के चरणों में आए। सब घटनाचक्र सुनाया। गुरुदेव ने उन्हें एक पाठ लिखवाया। और कहा कि '11 दिन तक पाठ करो'। उनके जाने के बाद मुनियों ने गुरुदेव से पूछा 'क्या लाला जी आ जाएंगे?' गुरुदेव ने सहज भाव से कहा– 'ये पाठ मैं उसी को देता हूँ, जिसका कार्य सिद्ध होना होता है। लाला जी को आना है और जल्दी आना है। ग्यारह दिन पाठ का तो विधान है।' 6 ता. को नरेला में मध्याह्न के पश्चात् एक मुनि को सूचना मिली कि ला. किशोरी लाल जी मिल गए हैं तथा घर पहुँच गए हैं। गुरुदेव को सूचित करने वो मुनि अन्दर गए, कहने लगे कि ला. किशोरी लाल जी मिल गए हैं। गुरुदेव ने मुस्कराते हुए कहा– 'मुझे पता है।'

36. किसी डॉ. ने गुरुदेव को कहा कि आप अपना वजन नाप लेना।

ज्ञान बिना मोह जीतना बच्चों जैसी बात है।

–गुरु सुदर्शन

गुरुदेव जींद में डॉ. सुरेश जैन के नर्सिंग होम पर गए। पूछा कि वजन तोलने की मशीन है? डॉ. सा. ले आए। जब तोलने के लिए खड़े हुए तो डॉ. सा. ने स्क्रीन को साफ करने के लिए जमी हुई धूल पर फूँक मार दी। गुरुदेव ने मशीन वापस कर दी क्योंकि वायुकाय की विराधना से असूझता हो गया था। वहां से चलकर गुरुदेव लगभग एक कि. मी. दूर किसी और डॉक्टर के यहां वजन करवा के आए।

37. 26 जनवरी 1994, गुरुदेव शालीमार बाग में प्रातः श्री आदीश मुनि जी को साथ लेकर भ्रमणार्थ जा रहे थे। बी. एम. पश्चिमी ब्लाक से जाते हुए देखा कि एक गाय बुरी तरह तड़फ रही है। उसकी उस दशा से गुरुदेव भाव-विह्वल हो गए। कारण समझ नहीं आया। श्री आदीश मुनि को आदेश दिया कि किसी भाई को बुलाकर लाओ। वे श्री पवन कुमार जी (राजाखेड़ी) को बुलाकर लाए। गुरुदेव ने सारी स्थिति भाई को दिखाई तथा गाय की रक्षा का दायित्व दिया। उस भाई ने बड़े कठिन परिश्रम से उस गाय की रक्षा की। गाय आसन्न-प्रसवा थी। बछड़ा अन्दर मरा हुआ था। गाय की जान खतरे में थी। कठिनाई से मृत वत्स को निकाला गया तथा गाय को ठीक होने में कई दिन लगे। गुरुदेव बराबर उस गाय की जानकारी लेते रहे तथा भाई को उत्साहित करते रहे। गुरुदेव की दया-भावना तथा सूझबूझ ने गोमाता की रक्षा कर दी। श्री पवन कुमार जी का कहना था कि मैं उन्हीं दिनों एक भीषण पारिवारिक संकट में फंसने के करीब था। गुरुदेव की कृपा से तथा गाय की रक्षा करने से जल्दी ही बच निकला।

38. गुरुदेव का हरियाणा के गांवों में विचरण हो रहा था। एक गांव में एक आर्य समाजी भाई आया और धार्मिक चर्चा करते-2 कहने लगा कि 'आप तो नास्तिक हैं, क्योंकि आप ईश्वर को नहीं मानते'। गुरुदेव वाद-विवाद में उलझना नहीं चाहते थे केवल उसको दुष्टि देने के उद्देश्य से फरमाने लगे कि 'हमने ईश्वर के लिए, भगवान् के लिए घर-परिवार छोड़ा, संसार का त्याग किया, संयम पालते हैं। तूने ईश्वर

नारी को सताना, घर में दीवाली के दिन दीपक बुझाना है।
—गुरु सुदर्शन

के लिए क्या छोड़ा?' वह बोला, 'मैंने तो कुछ नहीं त्यागा'। गुरुदेव ने समझाया, 'जब तूने प्रभु के नाम पर कुछ त्याग ही नहीं किया, तो तेरी आस्तिकता किस काम की? आस्तिक तो हम हैं, जिन्होंने प्रभु के लिए सब कुछ छोड़ दिया'। और वह भाई सन्तुष्ट हुआ।

39. सन् 1952 या 1953 की घटना है। चाँदनी चौंक बारादरी में प्रवचन का समय होने वाला था। करवा चौथ का दिन था। तभी एक बालक गुरुदेव के पास आया कि हमारे घर में माता जी, पिता जी लड़ रहे हैं, हम तो परेशान हो गए, आप कृपा कर दो। पूज्य बाबा जी म. तक बात पहुँची। उन्होंने फरमाया कि 'कथा थोड़ी देर में कर देना। इनके घर का क्लेश मिटाने के लिए मंगलपाठ सुना आ और कुछ समझा आ।' गुरुदेव उस घर पर पधारे। दोनों पति-पत्नी काफी क्षुब्ध स्थिति में थे। दुखित इतने थे कि आत्महत्या तक की भी नौबत आ सकती थी। गुरुदेव ने हल्का-सा इशारा किया और वे दोनों गुरुदेव के साथ ही प्रवचन में आ गए। करवाचौथ होने के कारण गुरुदेव ने अपने प्रवचन में पति-पत्नी के पारस्परिक कर्तव्यों का उल्लेख किया। और दोनों को मार्ग मिला। शान्ति का माहौल बना तथा उजड़ने के कगार पर खड़ा एक परिवार दोबारा बस गया।

40. गुरुदेव किसी बड़े शहर में चातुर्मास हेतु विराजमान थे। पर्यूषणों के दिन समीप थे। दो बच्चों को लेकर एक पिता आया। मांगलिक सुनकर जाने लगा तो गुरुदेव ने पूछा— 'अब किधर जाओगे?' पिता ने कहा— 'बच्चे नहीं मानते, इन्हें सिनेमा दिखाने ले जा रहा हूँ।' बेटा कहने लगा "पिता जी झूठ बोलते हैं, ये सिनेमा के लिए कह रहे थे, मैंने कहा हम पहले गुरुदेव के दर्शन करेंगे।" भाई झेंप गया। गुरुदेव ने सारी स्थिति को अपनी पैनी नजर से भाँप लिया। फिर गुरुदेव ने उसे दायित्व का बोध कराया और उसे तथा बच्चों को सिनेमा का कुछ दिनों के लिए नियम दिलवाया तथा सामायिकें करवाई।

41. गुरुदेव ने चाँदनी चौंक में रहते हुए कितने ही घरों को धर्मदृष्टि दी।

> विभूषा (श्रृंगार) करने से संयम भूसा बन जाता है।
> —गुरु सुदर्शन

पारिवारिक कटुताओं को मिटा उन्हें जीवन जीने की कला सिखलाई। एक युवक गुरुदेव के चरणों में आकर कहने लगा 'दुनिया में मेरे दो दुश्मन हैं'। गुरु म. ने पूछा कि कौन-2? तो वह बोला, 'एक मेरी माँ और दूसरे पिता'। गुरुदेव ने माता-पिता का महत्व बताने का बड़ा सुन्दर ढंग अपनाया। बोले– 'तेरे दो नहीं, तीन दुश्मन हैं'। युवक समझ नहीं पाया कि तीसरा कौन है। गुरुदेव ने फरमाया– 'तीसरा मैं हूँ। क्योंकि मैं तुझे माता-पिता की सेवा करने और आज्ञा मानने को कहूंगा। ये तुझे बुरा लगेगा और तू मुझे भी दुश्मन समझेगा'। वह युवक शर्मसार हो गया। धीरे-2 गुरुदेव ने उसे समझाकर शांत किया और उनकी पारिवारिक कटुता दूर करवाई।

42. एक श्रावक गुरुदेव के चरणों में बैठा था। कहने लगा, 'घर में क्लेश है, मन बड़ा परेशान रहता है।' गुरुदेव ने उससे कहा, 'तुम्हारी जेब में कितने नोट हैं?' ये सुनकर श्रावक हैरान हो गया कि ये संत भी रुपए के चक्कर में आ गए। फिर भी जेब से निकालकर दो नोट दे दिए। गुरुदेव ने पूछा, 'इन नोटों के छपने का साल कौन सा है?' श्रावक ने उत्तर दिया– एक सन् 1950 का, एक सन् 1954 का। गुरुदेव ने पूछा, 'क्या इन दोनों की कीमत में कोई फर्क है?' श्रावक बोला, 'नहीं, दोनों की समान कीमत हैं।' अब गुरुदेव ने नोट उसकी जेब में रखवा दिए और विषय को स्पष्ट करते हुए फरमाने लगे, 'जैसे इन दो नोटों के साल भिन्न हैं, पर कीमत भिन्न नहीं है, ऐसे ही यदि तुम अपने बड़े और छोटे बच्चों को समान दृष्टि से देखो तो क्लेश नहीं रहेगा। एक बेटा 4 साल पहले पैदा हो गया, दूसरा चार साल बाद, तो इससे क्या फर्क पड़ता है। इस फर्क को तर्क (नष्ट) कर दो, घर का नरक अर्थात् क्लेश मिट जाएगा।' श्रावक की आँखों में आँसू आ गए। गुरुदेव समझ गए कि ये आँसू पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त के हैं और सुधार की प्रकिया प्रारंभ हो गई है। बात वहीं रोक दी गई, लेकिन परिणाम की ओर गुरुदेव सतर्क थे। घर ठीक होने के बाद ही उन्हें आत्मसंतोष हुआ।

> गुरुमुखी शिष्य पूर्व-दिशा है, जिसमें सूर्य उगेगा, मनमुखी पश्चिम दिशा है, जिसमें सूर्य डूबेगा।
> –गुरु सुदर्शन

43. एक युवक गुरुदेव के पास विनति लेकर आया कि मेरी धर्मपत्नी अस्वस्थ है, उसे मंगल पाठ सुनाने की कृपा करना। श्री बाबा जी म. की आज्ञा लेकर घर गए। मकान के प्रारंभिक अंधेरे-से कमरे में किसी के कराहने रोने की आवाज-सी आई। गुरुदेव रुकने लगे। तो उस युवक ने कहा– 'गुरुदेव आगे पधारो'। गुरुदेव आगे बढ़े, पर मन वहीं अटक गया। आगे उसकी धर्मपत्नी बैठी थी। ठीक-सी थी, बीमारी के विशेष लक्षण नहीं दिखे। पूछा– 'क्या तकलीफ है?' 'गुरुदेव, जुकाम चल रहा है, अभी डॉक्टर से दवा लेकर आया हूँ। आप मंगल-पाठ सुनाने की कृपा करें।' गुरुदेव ने पुनः पूछ लिया– 'उस कमरे में कौन कराह रहा है? नितान्त उपेक्षा भाव से युवक ने उत्तर दिया– 'वो तो हमारी बुढ़िया माँ है, बीमारी का मक्कर (बहाना) भर रही है'। गुरुदेव ने बातों के पीछे की असलियत को भांप लिया। कहने लगे, 'मैं मांगलिक तो सुनाऊँगा, पर यहाँ नहीं, जहाँ तुम्हारी माँ है, वहाँ सुनाऊँगा। तुम्हारी बीवी को मंगली सुननी है, तो वहीं आकर सुने'। गुरुदेव वहाँ पधारे। बुढ़िया की हालत पूछी, उसके दिल के दर्द को समझा। लड़के को उसका कर्तव्य समझाया। पत्नी-भक्त बनने की बजाय मातृ-भक्त बनने की प्रेरणा दी। इससे लड़का तो मसले को समझा ही, पत्नी भी समझ गई। चरण छुए। बुढ़िया प्रसन्न हो गई और गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता जताते हुए कहने लगी– 'तेरे खूब सारे चेले हों, तेरी खूब सेवा करें'। गुरुदेव मन ही मन प्रसन्न होकर लौटे। बाबा जी म. को आकर बताया तो वो भी बहुत प्रसन्न हुए।

44. बारादरी में गुरुदेव के पास एक धर्म निष्ठ श्रावक आता था। हर क्रिया में विवेक रखता था। अपने प्रत्येक उपकरण की प्रतिलेखना करता था। आसन, पुस्तक, धोती, मुँहपत्ती सबकी प्रतिलेखना करता था। गुरुदेव को उसकी ये द्रव्य क्रियाएँ अच्छी तो लगती थी लेकिन उसे भाषा का विवेक बिल्कुल नहीं था। एक बार गुरुदेव ने उसे मूंछ की प्रतिलेखना करते देखा, तो हास्य का पुट देते हुए कहा– 'श्रावक जी, थोड़ी जीभ की भी प्रतिलेखना भी कर लिया करो'। श्रावक जी

> जिस घर में हर रोज़ प्रातः उठते ही सामायिक-आराधना होती रहेगी
> वहाँ सदा सर्वदा लक्ष्मी का बसेरा रहेगा। –गुरु सुदर्शन

समझ गए। तदनन्तर उसके स्वभाव और भाषा में अन्तर आ गया।

45. एक नवविवाहित दम्पती बम्बई से बारादरी आए। उन्हें ऐसी जानकारी थी कि वाचस्पति गुरुदेव श्री मदन लाल जी म. दिल्ली बारादरी में विराजमान हैं। वहाँ आकर पता चला कि वे नहीं, उनके शिष्य हैं। वह जोड़ा दर्शन करने ऊपर आया। कहने लगा कि 'हमें वापस बम्बई जाना है, पंजाब जा नहीं सकते। आप वाचस्पति गुरुदेव के शिष्य हैं अतः हमें आशीर्वाद दो'। गुरुदेव फरमाते थे कि तब तक हमें इस 'आशीर्वाद' की बला का कुछ पता नहीं था। क्योंकि जैन परम्परा के अनुसार सन्त आशीर्वाद नहीं, धर्म-संदेश देते हैं। गुरुदेव कुछ देर असमंजस में रहे। वह युवक गुरुदेव की परेशानी को समझ गया और कहने लगा, 'आप उलझो नहीं, हम किसी और चीज का आशीर्वाद आपसे नहीं मांग रहे। हम तो आपसे यही मार्गदर्शन रूपी आशीर्वाद चाहते हैं कि मैं इसको सही समझूं तथा ये मुझे सही समझे।' गुरुदेव उस युवक के प्रबुद्ध चिन्तन से बड़े प्रभावित हुए और कहने लगे 'हमारा ऐसा आशीर्वाद तो सदा ही तुम्हारे साथ है'। आपसी सही समझ का यह सूत्र गुरुदेव को बड़ा अच्छा लगा।

46. एक युवक गुरुदेव से कहने लगा– 'आपके कहने से बेला, तेला तो मैं कर नहीं सका। पर अब तो तीन दिन भूखा रहना पड़ेगा'। गुरुदेव ने कारण पूछा तो बताने लगा कि घरवाली पीहर गई है। माँ को खाना बनाना नहीं आता। अतः तीन दिन भूखा मरने की नौबत आ गई। पत्नी के प्रति उस युवक की अन्ध-भक्ति देखकर गुरुदेव ने उसे कहा भाई, जब तक तेरी शादी नहीं हुई थी, तब तक माँ के हाथ का ही भोजन करता था। अब शादी होने के बाद तुझे माँ के हाथों में से दुर्गन्ध आने लगी। तुझे शर्म आनी चाहिए। पत्नी की इतनी ज्यादा गुलामी भी अच्छी नहीं है।' फिर गुरुदेव ने वासुदेव श्रीकृष्ण का प्रसंग सुनाया जिसमें उन्होंने अपने शिक्षाचार्य से वरदान मांगा था कि मैं जीवन-भर अपनी माँ के हाथ का भोजन करता रहूँ। गुरुदेव के मंगल

सच्चे साधु की निंदा-चुगली करी तो पर-भव में धर्म-बोधि प्राप्त नहीं होगी।
—गुरु सुदर्शन

उपदेशों का इतना गहरा असर उसके मन पर पड़ा कि उसने माँ का कभी अपमान नहीं किया।

47. गुरुदेव ने कितने ही युवकों की अंधकारपूर्ण जिन्दगी में धर्म की किरणें फैलाई थीं। एक युवक आया। गुरुदेव ने उससे उसका नाम पूछा तो कहने लगा कि– 'सुदर्शन'। अपने नाम-राशि उस युवक के प्रति कुछ आत्मीयता-सी जगी और उसे सप्त कुव्यसन का त्याग कराने लगे तो पता चला कि वह नियमित रुप से मदिरा का सेवन करता है। गुरुदेव ने एक विशिष्ट अंदाज में उससे कहा, 'या तो अपनी आदत बदल ले या फिर ये 'सुदर्शन' नाम बदल ले। दोनों एक साथ नहीं चल सकते'। वह युवक कुछ देर तो सोचने लगा, फिर अपना संकल्प दृढ़ करते हुए बोला, 'ये नाम तो नहीं बदलूंगा क्योंकि इससे आपकी याद आती रहेगी। हाँ, शराब पीने की आदत छोड़ देता हूँ'। यूं कल्याण किया उसका।

48. एक सुशिक्षित युवक दर्शनार्थ आया। उसने तीन विषयों में M.A. किया था। विदेश जाने का इच्छुक था। गुरुदेव ने पूछा, 'नवकार-मन्त्र याद है?' कहने लगा– 'बचपन में किया था, अब तो नहीं है'। इस पुरानी चीज को छोड़ो, कोई नई चीज बताओ'। गुरुदेव के फरमाया– 'शाश्वत चीजें कभी पुरानी नहीं पड़ती। सूर्य का प्रकाश, वायु का स्पन्दन, जल की जीवनोत्पादकता सदा से थी, है और रहेगी। ऐसे ही महामन्त्र नवकार भी कभी पुराना नहीं पड़ता'। गुरुदेव के तर्कों से, प्रेम पूर्ण समझाने से वह इतना प्रभावित हुआ कि विदेश जाने से पूर्व सामायिक के 9 पाठ सीखे तथा नियमित सामायिक करने लगा।

49. एक धनी परिवार का बालक पढ़ता तो बहुत था पर परीक्षा में पास नहीं होता था। एक ही कक्षा में तीन-2 बार फेल होना परिवार के लिए चिन्ता का विषय था। एक दिन उस बालक के माता-पिता ने गुरुदेव के पास आकर समस्या रखी और मंत्र मांगने लगे। उस वक्त तो गुरुदेव ने उन्हें टाल दिया, पर एक दिन आहार के लिए उनके घर

किसी दीन-दुखी, अनाथ का अपमान करोगे तो आपके पुण्य का देवता आपसे रूठ जाएगा।
—गुरु सुदर्शन

पधारे। पूछा, 'लड़के का अध्ययन-कक्ष देखना चाहता हूँ।' माता-पिता बोले, 'उसमें तो उसके सिवा और कोई जाता नहीं' गुरुदेव ने कहा, 'पर हम तो गुरु हैं, हमें तो वह नहीं रोकेगा।' ये कहकर उसके कमरे में प्रवेश किया। कमरा क्या था, अश्लील चित्रशाला थी। पुस्तकों के नाम पर जासूसी या फिल्मी उपन्यास थे। गुरुदेव ने उन्हें समझाया कि असली समस्या क्या है। आप समझते हो, लड़का पढ़ता रहता है, लेकिन इसकी पढ़ाई का विषय पाठ्यक्रम नहीं, नाविल हैं। लड़के को भी अपनी गलती का अहसास हुआ। सारा स्वरूप बदल लिया। उस वर्ष वह अपनी कक्षा में सर्वप्रथम आया।

50. एक भाई ने गुरुदेव से निवेदन किया कि— 'मैं आपका फोटो चाहता हूँ।' गुरुदेव जी म. ने उसे मना करने की बजाय फरमाया, 'मैं भी अपना फोटो चाहता हूँ,'। भाई बड़ा प्रसन्न हुआ और कहने लगा— 'फिर तो ठीक है, मैं अभी फोटोग्राफर को लेकर आता हूँ।' गुरुदेव ने उसे अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा— 'ऐसा फोटोग्राफर लाना जो मेरी आत्मा का फोटो खींच ले, ताकि आत्मा पर लगे कषायों को देखकर उनका परिमार्जन कर सकूं। ऊपर के फोटो की मुझे कोई जरूरत नहीं है, न हम खिंचवाते हैं।' भाई उस विषय में असमर्थ था, अतः चुपचाप गुरुदेव को श्रद्धा-सहित वन्दन कर चला गया।

51. चाँदनी चौंक में गुरुदेव के प्रवचन में एक भाई नित्यप्रति आता। लेकिन उसके बैठने का स्थान एक खास भाई के पीछे ही होता। कई बार भीड़ भी होती तो भी सब को लांघ कर वहीं बैठता। गुरुदेव ने उसकी स्थान-आग्रह-वृत्ति को पहचान लिया और एक दिन पूछ लिया कि 'भाई, तुम फलां भाई के पीछे ही क्यों बैठते हो?' उस भाई के उत्तर ने गुरुदेव को भी चकित कर दिया। वो कहने लगा 'मैं अपने से आगे बैठे हुए उस भाई की बालों की चोटी देखा करता हूँ। यदि वह उठी हुई हो तो हिसाब लगाता हूँ कि आज मार्किट तेज रहेगा। यदि चोटी पड़ी हुई हो तो मार्किट धीमा रहेगा। और उसी आधार पर फिर

> जैसे नोट मस्ती में गिनते हो ऐसे ही प्रभु नाम भी मस्ती में ले लिया
> तो मंदिर जाने की जरूरत नहीं रहेगी। —गुरु सुदर्शन

सट्टा लगाता हूँ।' लोगों की ऐसी मनोवृति देखकर गुरुदेव को आश्चर्य भी हुआ और अफसोस भी। फिर उस भाई को धर्म-दृष्टि दी।

52. गुरुदेव यू.पी. में पधारे। एक गाँव में एक परेशान आदमी आया। विनति करने लगा— 'गुरुदेव! इकट्ठी तीन मंगली सुना दो।' गुरुदेव को तीन मंगली इकट्ठी सुनने का प्रयोजन समझ नहीं आया। पूछने पर वह बोला— 'मेरे घर में पानी के नल में गन्दा पानी निकलता है, एक मंगली उसके लिए कि साफ निकले। मेरी लड़की को ससुराल वालों ने छोड़ा हुआ है। दूसरी उसके लिए कि वे उसे ले जाएँ। मेरी भैंस ने कई दिनों से दूध देना छोड़ा हुआ है, तीसरी उसके लिए कि दूध देना चालू कर दे।' गुरुदेव उस की धर्म के प्रति समझ को देख आश्चर्य-चकित रह गये।

53. सन् 1960 के रोहतक चातुर्मास के पश्चात् गुरुदेव ने अपने पावन गुरुओं के दर्शन गोहाना में किए। एक दिन वाचस्पति गुरुदेव ने पूछा, 'ये बताओ कि अंकुश झेलने वाला बड़ा है या अंकुश लगाने वाला?' गुरुदेव तो सुनने के लिए हाजिर थे, अतः चुप रहे। अन्ततः वाचस्पति गुरुदेव ने ही अपना विवेचन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि— 'इन दोनों में अंकुश झेलने वाला बड़ा है। और चूंकि तुम अंकुश झेलने में समर्थ हो, इसलिए तुम बहुत बड़े हो'।

54. 1998 में गुरुदेव ने तपस्वी श्री नरेन्द्र मुनि जी म. का स्वतंत्र चातुर्मास नाभा (पंजाब) में करवाया। चार मई को गुरुदेव का मंगल-पाठ सुनकर अम्बाला से चले। उसी दिन दोपहर को उन्हें गुरुदेव का पत्र मिला। लिखा था— 'मैंने वाचस्पति गुरुदेव से तेरे लिए झोली फैलाकर मांगा है कि नरेन्द्र मुनि का स्वास्थ्य ठीक रहे और उन्होंने मेरी पुकार सुनी है, ऐसा मेरी आत्मा कहती है। तू पूर्ण स्वस्थ रहेगा।' गुरुदेव के हृदय से निकले स्नेहोद्गार शत-प्रतिशत सफल हुए। वे लगभग 6 महीने तक स्वतंत्र विचरण करते रहे। उन्हें और शारीरिक कष्ट तो क्या आना था, कभी जुकाम भी नहीं हुआ।

सच्चे साधु के लिए हर क्षण ही दीक्षा-दिवस है, खुशी का मौका है।
—गुरु सुदर्शन

55. 1996 में संगरूर प्रवास। लुधियाना से श्री वृद्धि जैन दर्शनार्थ आए। गुरुदेव ने पूछा— 'सामायिक करते हो?' श्रावक ने कहा— 'पहले तो नियमित करता था। एक बार सामायिक के समय मेरे कपड़ों से पर्स चोरी हो गया। उसके बाद सामायिक छोड़ दी।' गुरुदेव ने फरमाया— 'पर्स की चोरी से धन गया, ये द्रव्य का नुक्सान था। सामायिक छोड़ दी, ये आत्मा का नुक्सान है। इस नुक्सान से तो बच सकते हो'। इन दो वाक्यों ने ही उसकी सामायिक पुनः शुरू करवा दी।

56. 18 अगस्त 1998 को अंबाला में गुरुदेव के दर्शनार्थ जम्मू से एक श्रावक संजय जी आए। कहने लगे— 'गुरुदेव, नया काम शुरु किया है, आप हमारा ध्यान रखना'। गुरुदेव का उत्तर था— 'श्रावक जी, ध्यान तो हमें भगवान् का और अपने गुरुदेव का रहता है। जहां तक नए काम की बात है, इसमें तो तुम्हारा अपना पुण्य ही काम करेगा'।

57. एक बार नरवाणा में मुनिमण्डल गुरुदेव की उपासना में बैठा था। कोई प्रसंग चल निकला। अचानक गुरुदेव ने एक रहस्य प्रकट किया। कहने लगे— 'बाबा जी म.(श्री जग्गूमल जी म.) मुझे कहा करते सुदर्शन तू किसी का बुरा सोच नहीं सकता, बुरा कर नहीं सकता। और जो तेरे साथ बुरा करेगा, उसका भी भला हो नहीं सकता'। लगता है कि बाबा जी म. का यह वाक्य एक ऐतिहासिक सच्चाई है।

58. सन् 1967 में मूनक में श्री विनय मुनि जी म. की दीक्षा से पूर्व समाज दीक्षार्थी के लिए 'बानों' की व्यवस्था बना रहा था। किन्हीं विशेष परिवारों को 'बान' का अधिकार न देकर लॉटरी सिस्टम से कुछ नाम निकालने का फैसला हुआ। प्रवचन के बीच सभी परिवारों के नाम की पर्ची डालकर एक बालक से पर्ची निकलवानी थी। गुरुदेव जी म. की संगरूर-दीक्षा पर जिस घर में उनका 'बान' हुआ था और जो धर्म-पिता व धर्म-माता बने थे, उन्हीं की लड़की मूनक में विवाहित थी। गुरुदेव जी म. के मन में एक सात्विक-सी इच्छा बनी कि इस बहन को भी 'बान' का अवसर मिले। गुरुदेव ने अपनी इच्छा समाज

केवल भाषण और नारों से देश का उत्थान नहीं होगा, प्रत्येक नागरिक में नैतिक व धार्मिक कर्त्तव्यों का भान होना चाहिए। —गुरु सुदर्शन

को इसलिए नहीं बताई, क्योंकि इससे व्यवस्था प्रभावित होती। अपने हाथ से एक पर्ची पर उस परिवार का नाम लिखा और चादर के छोर पर बांधकर प्रवचन-सभा में पधार गए। उनके पधारने पर लाटरी निकालने का कार्यक्रम शुरू हुआ। एक पांच वर्ष के बालक से पर्चियां निकलवाई गईं। तब गुरुदेव जी ने अपनी चादर की पर्ची खोलकर दिखाई और अपनी इच्छा का इतिहास सुनाकर लोगों को गद्‌गद कर दिया।

59. धन और धनिकों के प्रति गुरुदेव की निस्पृहता का आलम ये था कि 1995 में लुधियाना के एक श्रावक ने गुरुदेव को विनति की कि– 'मैं आपके आदेश से एक करोड़ रुपए कहीं खर्च करना चाहता हूँ। अपना नाम मैं प्रकट नहीं करूँगा, आप कृपा कर दें।' मगर गुरुदेव ने उसकी पेशकश पर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्हें अहसास था कि धन एकत्र करने से साधु की संलिप्तता बढ़ती है और साधना में एकाग्रता नहीं रहती। श्री राकेश मुनि ने एक बार ये प्रश्न पूछ ही लिया कि 'गुरुदेव, यदि अन्य मुनियों की तरह आप धन एकत्र करने लगो तो कितना कर सकते हो?' गुरुदेव पट्टे पर लेटे हुए थे। सुनकर गंभीर हो गए। फिर थोड़ी देर बाद बोले 'राकेश, एक ही आवाज पर 100 करोड़ रुपया इकट्ठा हो सकता है। पर इससे लोगों की श्रद्धा खराब हो जाएगी। श्रद्धा अरबों-खरबों रुपयों से भी ज्यादा बहुमूल्य है।'

60. 1979 में रोहतक में बाबरा मोहल्ले वाली स्थानक में शाम के समय मनसुमरण जी गांधरे वाले एक सनातनी भाई को लेकर आए। कहने लगे– 'ये आपके बचपन का दोस्त है। दीक्षा से पहले आपसे मिला है। पहचानो जरा'। गुरुदेव ने गौर से देखा, तुरन्त उसको नाम लेकर संबोधित किया। 1937 के बाद 1979 अर्थात् 42 साल बाद पहचानना एक आश्चर्य से कम नहीं माना जाएगा। इसी तरह 1992 में दिल्ली जमना पार लक्ष्मी-नगर में विहार हो रहा था। एक कोठी के बाहर Nagpal House लिखा था। गुरुदेव की अन्तश्चेतना स्फुरित

संघ/परिवार की सेवा और सुरक्षा करना भी स्वयं की ही सेवा और सुरक्षा करना है।
–गुरु सुदर्शन

हुई। कहने लगे। ये मेरा बचपन का परिचित है'। एक भाई को अंदर भेजकर पता करवाया और वही व्यक्ति मिला जिसके बारे में गुरुदेव ने फरमाया था।

61. 1975 में गुरुदेव के चरणों में वै. श्री राजेन्द्र जी एवं श्री राकेश जी ज्ञानार्जन कर रहे थे। उन्हें पंजाब विश्व-विद्यालय की परीक्षा देनी थी। लुधियाना केन्द्र था। वहाँ एक-दो महीने वैरागियों को छोड़ना था। सिविल लाईन्स के प्रधान सुश्रावक श्री रामप्रसाद जी ने विनति की कि 'वैरागियों को हमारे घर छोड़ दो। हर तरह की अनुकूलता रहेगी। इनके लिए अलग वातानुकूलित कमरा रहेगा। एक नौकर और एक कार इनके लिए 24 घंटे हाजिर रहेंगे।' पर गुरुदेव ने उनकी विनति स्वीकार न करके माधोपुरी में सुश्रावक श्री दुनीचन्द जी को इस सेवा का लाभ दिया। वे स्वयं किराए पर रहते थे। ऊपर के कमरे में वैरागी रहे। एक दरवाजा, दो खिड़कियाँ, भीषण गर्मी में पढ़ाई करके उन्हें जो अंक प्राप्त हुए वे ए.सी. कमरे में शायद नहीं मिलते। दूसरे, उन्हें संयम-साधना के लिए भी तो तैयार करना था। इसी तरह अगले वर्ष दोनों को जालंधर फैंटनगंज मण्डी में श्री तरसेम जी के आवास पर ठहराया। ठहराने से पूर्व गुरुदेव स्वयं कमरों का सूक्ष्म निरीक्षण करने आए। ये देखने के लिए कि कहीं कमरे में अश्लील चित्र आदि चीजें तो नहीं। उन्हें हर बात का ध्यान रहता था।

62. 1973 के दिसम्बर माह के अंतिम दिनों में गन्नौर से रोहतक की ओर विहार हो रहा था। एक रात स्वप्न आया कि एक बहुत बड़ी मीनार गिर गई। सुबह प्रतिक्रमण से पूर्व मुनियों को बताया कि संभवतः पंजाब-केसरी श्री प्रेमचन्द जी म. के सम्बन्ध में ये स्वप्न सूचित कर रहा है। और जनवरी के प्रथम सप्ताह में उस दिव्य आत्मा के देवलोक-गमन का समाचार मिल गया।

63. गुरुदेव बामनौली गांव में पधारे थे। एक जमींदार भाई आया। नई-2 दौलत कमाई थी। ऐब आने शुरू हो गए, धन क्षीण होने लगा। गुरुदेव

> आवश्यकता से ज्यादा पानी पौधे को गला सकता है, तो माँ-बाप का ज्यादा लाड़-प्यार भी बच्चों का भविष्य बिगाड़ सकता है। —गुरु सुदर्शन

के पास आकर कहने लगा, 'मेरे घर पधारने की कृपा करो।' नए भाई की भावना को सम्मान देते हुए उसके घर गए। कमरे में एक कोने में उसने रुपयों का ढेर लगा रखा था। कहने लगा, 'मैंने सुना है कि आप बड़े चमत्कारी हैं। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि आप लाख रुपयों की इस ढेरी पर अपने चरण छुआ दो। इससे मेरी दौलत अखूट हो जाएगी'। गुरुदेव जी म. बोले, 'भक्त, मेरे चरण से ही कुछ नहीं होगा। अपना आचरण शुद्ध बना। तभी तेरी संपत्ति सुरक्षित रह सकेगी। मेरे पैर छुआने के बाद भी यदि तू जुआ, शराब नहीं छोड़ेगा तो ये संपत्ति बचने वाली नहीं है।' गुरुदेव ने दृष्टि दी और वह मान गया।

भाई राधेश्याम जी (बुटाना वाले) से सुनी घटनाएं

64. 1986 में गुरुदेव जी म. रोडी में थे। मैं (राधेश्याम) और भाई रामनिवास दर्शन करने गए हुए थे। गुरुदेव से जिक्र किया कि यू.पी. मध्य प्रदेश व बिहार के बार्डर पर 'अनपरा' में काम करने का विचार बना रहे हैं पर मन को एक चिन्ता खाए जा रही है कि देश की जनता दूर-2 से आकर दिल्ली में काम करती है और एक हम हैं कि दिल्ली से बाहर जाकर काम करेंगे। गुरुदेव के मुखारविन्द से तुरन्त एक वाक्य निकला और हमारा समाधान हो गया, 'बणिए की तो वहीं दिल्ली है, जहाँ काम हो' उनकी वो कृपा बरसी कि वर्णन नहीं कर सकते। 'अनपरा' हमारा भविष्य और भविष्य का आधार बन गया।

65. 1987 में हमारी माता जी को पेट की तकलीफ चल रही थी। काफी टैस्ट हुए। उस समय दिल्ली के एकमात्र उच्च-कोटि के डायोग्नोस्टिक सैंटर-'दीवानचन्द नर्सिंग होम' में उनका अल्ट्रासाऊण्ड और सी.टी. स्कैन करवाया गया। दोनों रिपोर्टों में ये साफ आ गया कि लीवर का कैंसर है। मन और तन दोनों टूट गए। उन्हें डॉक्टर जे. के. जैन के नर्सिंग होम में दाखिल करवा दिया। मन कुशंकाओं के घेरे में घिर गया। हमारी दो मौसियां भी पिछले दो सालों में आगे-पीछे गुजरी थीं। कहीं तीसरी अनहोनी न हो जाए इसलिए मन दुविधा-ग्रस्त था।

जैसे नींव का गीलापन नींव को कमजोर कर देता है ऐसे ही हमारे कारण
माँ-बाप के आंखों में नमी हमारे ही पुण्य को कमजोर करती हैं। —गुरु सुदर्शन

दो तीन दिन बाद पूज्य गुरुदेव तथा श्रद्धेय श्री तपस्वी जी म. का गोहाना में मिलन हुआ। उन दोनों महापुरुषों ने संयुक्त रूप से माता जी के रोग के बारे में विचार किया। अगले ही दिन हमें दिल्ली पत्र मिला। लिखा था कि 'तुम्हारी माता जी को कैंसर नहीं हो सकता।' डॉ. जे.के. जैन को हमने वो पत्र दिखाया। वह भी हैरान। दीवानचन्द्र की रिपोर्ट को कैसे नकारा जाए? कई डाक्टरों को बुलाकर राय ली। अन्ततः प्रयोग के तौर पर उन्हें 8-10 दिन नए किस्म का Treatment दिया। दस दिन बाद अल्ट्रा साउण्ड और सी.टी. स्कैन दीवानचन्द्र में ही करवाए। और आश्चर्य ये कि रिपोर्ट बिल्कुल नार्मल। इतनी साफ कि मानों ये दिक्कत कभी हुई ही न हो। उस दिन के बाद माता जी को चाहे कोई भी बिमारी आई पर वो तकलीफ कभी नहीं। मैं तो गुरु म. का तथा श्री तपस्वी जी म. का कोई दिव्य चमत्कार मानकर ही मन का समाधान कर लेता हूँ।

66. 1992 में शालीमार चातुर्मास पूर्ण कर गुरुदेव जी म. जे.के. जैन एम. पी. की कोठी पर पधारे। हम सुबह-2 दर्शन के लिए गए। प्रतिक्रमण पूरा हो चुका था। संत वंदना कर रहे थे। बीच में ही गुरुदेव जी म. ने मुझे संकेत करते हुए कुछ शब्द कहे– 'क्या हैदराबाद में आदमी नहीं रहते? वहां काम करने से तुम्हारी चिन्ता दूर हो सकती है'। यद्यपि हैदराबाद में हमारी न कोई रिश्तेदारी थी, न जानकारी, न भाई बरादरी। पर गुरुदेव जी म. के वचनों का अटल विश्वास था कि वहीं काम होगा और हुआ भी, खूब काम चला। दूरी का संकोच भी मन में नहीं आया। और आश्चर्य तो ये कि एक महीने में दुकान का मुहूर्त भी हो गया। सहयोगी भी मिलते गए और प्रगति होती गई।

तेरी कृपा से जल में स्थल मिलता है।
मन की समस्या का हल मिलता है।

67. एक बहन गुरुदेव के श्री चरणों में आई और बोली– "गुरुदेव! मेरे बेटे का रिश्ता हो गया है लेकिन अब वो शादी के लिए मना कर रहा

जिनके अंदर बड़ों के लिए आदर और छोटों के लिए प्यार नहीं, उनका धर्मस्थनों में किया धर्मध्यान कल्याण नहीं कर सकता। –गुरु सुदर्शन

है। आप श्री जी कृपा करो। उसे समझाओ।" गुरुदेव ने साफ और स्पष्ट लहजे में उस बहन को कहा– "मैं तो दीक्षा के लिए समझाता हूँ" गुरुदेव के श्रीमुख से मर्यादापूर्ण भाषा और भाव सुनकर उस बहन का सिर श्रद्धायुक्त हो श्री चरणों में झुक गया।

68. गुरुदेव ने एक बार दिल्ली में चन्दनबाला की कथा कई दिनों तक प्रवचन के माध्यम से सुनाई और समां बांधा। एक फिल्म निर्माता भी प्रवचनों में निरंतर आता। एक दिन गुरुदेव को बोला– "चन्दनबाला की कथा सुनकर तो आत्मा हिल गई। हम इस कहानी पर फिल्म बनाना चाहते हैं। पूज्य गुरुदेव ने तुरंत मना कर दिया।

69. पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में एक श्रद्धालु आया और बोला गुरुदेव! मेरा नाम और फोन नम्बर लिख लो। याद भी रखना। गुरुदेव फरमाने लगे– भाई! हमें तो दो बातें याद रखनी हैं– 1. प्रभु की आज्ञा और 2. गुरु के वचन। भाई शर्मिंदा हो चला गया।

70. पूज्य गुरुदेव जब अपने बड़े गुरुओं के श्रीचरणों में वैराग्यावस्था में थे। पटियाला में एक भाई ने गुरुदेव से प्रश्न किया कि– "माँ-बाप की सेवा जरूरी है या गुरु की।" पूज्य गुरुदेव ने फरमाया– "सेवा तो दोनों की ही जरूरी है। घर में रहो तो माँ-बाप की और साधु बनों तो गुरु की सेवा तन-मन लगाकर करें।" आगन्तुक भाई गुरुदेव के उत्तर से संतुष्ट भी हुआ और प्रसन्न भी।

71. एक बार गुरुदेव का एक सहपाठी श्रीचरणों में आया और गुरुदेव से बोला– "साधुपने में मन लगा या नहीं" गुरुदेव ने मुस्कुराकर कहा– "तू खुद बन कर देख, क्योंकि खाण्ड (मीठा) का स्वाद दूध नहीं बता सकता, पीने वाला ही बता सकता है।"

72. एक युवक गुरुदेव के चरणों में आया। गले में उसके किसी साधु की फोटो का लॉकेट लटक रहा था। गुरुदेव ने उससे पूछा– "शराब पीता है?" उसने हाँ कहा तो गुरुदेव फरमाने लगे– "लॉकेट की तो शर्म कर ले।" युवक समझ गया।

छोटे बनकर रहोगे तो बड़ों के नजदीक रहोगे।

–गुरु सुदर्शन

73. एक ठेकेदार गुरुदेव के चरणों में आया और बोला कोई उपदेश दो। गुरु महाराज ने उसे अपने पास बैठाया। थोड़ी देर बाद पूछा– "मांगलिक सुनोगे या उपदेश"। उसने कहा– 'उपदेश'। तो गुरुदेव ने फरमाया– "तुम सरकार की बेइमानी तो नहीं छोड़ सकते पर अपने पार्टनर से कभी बेइमानी नहीं करनी"। उसने बात मानी और शीघ्र ही गुरु कृपा से निहाल हो गया।

74. गुरुदेव एक घर में दर्शन देने पधारे। बेटा कुर्सी पर बैठा था और पिताजी उसके पास खड़े थे। गुरुदेव ने देखा। जब वो बेटा गुरु दर्शन के लिए स्थानक में आया तो गुरु महाराज ने उसे कहा, "बाप के सामने कभी कुर्सी पर नहीं बैठना"।

75. दिल्ली में एक पंजाबी भाई प्रतिदिन गुरुदेव का प्रवचन सुनने आता। पर शराब नहीं छोड़ पा रहा था। एक दिन गुरुदेव के पास बैठकर रोने लगा। गुरुदेव ने फरमाया– "जैसे मेरे सामने रो रहे हो, कभी बोतल के सामने कर भी ऐसे ही रो देना।" उसने वही तरीका अपनाया और सचमुच ही उसे शराब से छुटकारा मिल गया।

मजाक और पैसा हमेशा सोच-समझकर उड़ाना चाहिए।
–गुरु सुदर्शन

9. गुरु सुदर्शन उवाच

पूज्य गुरुदेव प्रवचन-कला के सिद्ध-सास्वत पंडित थे। सन् 1945 में मात्र तीन वर्ष की दीक्षा-पर्याय में ही प्रवचन-क्षेत्र में उतरे और जीवन के अन्तिम समय तक प्रवचन की मन्दाकिनी बहाते रहे। भाषण-कला में उन्हें ऐसा कमाल हासिल था कि जिस सभा में बैठ गए वह सभा उनकी हो गई और जिस क्षेत्र में एक बार चरण धर दिए वह सदा-2 के लिए उनका हो गया। जब वे भाव-विभोर होकर बोलते थे तो लगता था मानो कोई तपःपूत ऋषि अपने अनुभवों का विश्व-कोष उंडेल रहा हो या हिमालय-शिखर पर बैठे साक्षात् शिव ही भूतल पर गंगाधारा लुढ़का रहे हों।

गुरुदेव के प्रवचनों से हजारों दिलों की धधकती धरती पर शान्ति का मेघ-माली बरसा है और लाखों रिसते घावों पर सान्त्वना की मरहम लगी है। वेदों की ऋचाएँ, उपनिषदों के सूक्त, पुराणों के श्लोक, जैन आगमों की गाथाएँ, कुरान की आयतें और बाइबिल के सूत्र सभी एकाकार होकर उस एक गंगोत्री-धार में प्रवाहित होते हैं। प्रस्तुत है गुरुदेव के द्वारा फरमाए गए कुछ सूत्र एवं मुक्ता-कण, जिनमें 'गागर में सागर' न्याय से जीवन का सम्पूर्ण दर्शन निहित है।

1. क्रोध नहीं आता है

1. स्वाध्याय शील को, 2. आत्म-स्वरूप-दर्शी को, 3. बड़ों की कृपा लेने वाले को, 4. निर्जरा के लिए तप करने वाले को, 5. सर्वात्म भाव-दर्शन करने वाले को, 6. अपने दोष बारीकी से देखने वाले को।

2. नवयुवक संकल्प लें

1. शादी में दहेज नहीं लेंगे, 2. दोस्तों को लड़की नहीं दिखाएँगे, 3. शादी में पैसा ज्यादा खर्च नहीं करेंगे, 4. पत्नी को तलाक नहीं देंगे, 5. पर-स्त्री गमन नहीं करेंगे, 6. अश्लील फिल्में नहीं देखेंगे।

> द्वेष की गांठ कैंसर की गांठ से भी ज्यादा खतरनाक होती है।
>
> —गुरु सुदर्शन

3. गुरु भक्ति करने से

1. गुरु के दिल में इज्जत होती है, 2. समस्त संशय दूर होते हैं, 3. शास्त्रीय ज्ञान प्रामाणिक होता है, 4. समाधि मिलती है, 5. अष्ट सिद्धि प्राप्त होती हैं, 6. लोक-कीर्ति प्राप्त होती है, 7. देवों व मानवों से पूजा मिलती है।

4. स्वतन्त्रता के बादः क्या खोया, क्या पाया

1. दर्शन खोया, प्रदर्शन पाया, 2. धर्म खोया, भ्रष्टाचार पाया, 3. साहस खोया, निराशा पाई, 4. सादगी खोई, फैशन पाया, 5. ईमान खोया, बेईमानी पाई, 6. स्वतन्त्रता खोई, स्वच्छंदता पाई, 7. सहानुभूति खोई, स्वार्थ पाया, 8. शान्ति खोई, क्रांति पाई, 9. मन्दिर खोया, सिनेमा पाया, 10. सदाचार खोया, दुराचार पाया, 11. विश्वास खोया, अविश्वास पाया, 12. दूध खोया, चाय पाई. 13. मानवता खोई, दानवता पाई, 14. नम्रता खोई, अभिमान पाया, 15. आत्मिकता खोई, भौतिक-ज्ञान पाया, 16. प्रभुता खोई, पशुता पाई, 19. स्वास्थ्य खोया, इलाज पाया।

5. कौन बनेगा लोक-प्रिय

1. जो निष्कपट हृदय हो, 2. पर-निन्दा न करने वाला हो. 3. सर्व-हितेच्छु हो, 4. निःस्वार्थ-सेवी हो, 5. मधुर स्वभाव वाला हो, 6. वाणी का विवेक रखता हो, 7. लंगोट का पक्का हो, 8. पापकार्य से डरने वाला हो, 9. दोष-दृष्टि वाला न हो।

6. संयम रखो

1. सन्त के सामने मन का, 2. जनता के सामने वाणी का, 3. राजा के सामने नयनों का।

7. क्षुद्र और शूद्र

1. अपना दोष दूसरे पर थोपने वाला, 2. छोटी-सी भूल को अधिक तूल देने वाला, 3. शास्त्र व गुरुओं की बातों का अपलाप करने वाला, 4. सज्जनों को अपमानित करने वाला, 5. धर्मदाता गुरु व जन्मदाता

> मेरी भावना और 12 भावना का चिन्तन करें तो कभी चिंता नहीं सताएगी।
> —गुरु सुदर्शन

माता-पिता के दोष देखने वाला, 6. जिस हांडी में खाए उसी में छेद करने वाला 7. गिरगिट की तरह स्वार्थपूर्ति-हेतु रंग बदलने वाला, 8. नेकी के बदले बदी देने वाला।

8. खता खाता है

1. मूर्खों से राय लेने वाला, 2. दुष्टों से प्रेम जोड़ने वाला, 3. तथ्य से मुंह मोड़ने वाला, 4. हमेशा प्रमाद में रहने वाला, 5. शक्तिशाली से विरोध करने वाला।

9. अच्छे दिन आने के लक्षण

1. बुद्धिमानों से सलाह लेना, 2. सज्जनों से प्रेम करना, 3. कटु सत्य को स्वीकार करना, 4. पुरुषार्थी बनना।

10. संभलो

1. जब शरीर में रोग आने लगे, 2. जब मान-सम्मान अधिक मिलने लगे, 3. जब भोजन बढ़िया मिलने लगे, 4. जब स्वाभिमान को ठेस लगे, 5. जब विरोधी विरोध कर रहा हो।

11. श्रेष्ठ घर के 20 लक्षण

1. जहाँ आपस में मनमुटाव न हो, यदि हो तो 24 घण्टे में दूर हो जाए, 2. रोगी तथा जरूरतमन्द की सुविधा का ख्याल हो, 3. आपाधापी, चोरी-छिपे खाने व बचाने की आदत न हो, 4. छोटे बड़े का सलीका हो, 5. वर्ण, जाति व धन का मापदण्ड न हो, धर्म की पूजा हो, 6. काम-चोरी की आदत न हो, 7. काम का बँटवारा हो, 8. छोटी भूल व गल्ती को तूल न दिया जाए, 9. मनोमनी पाप न हो, 10. बालकों में धर्म-संस्कार हों, 11. स्वच्छता का दिग्दर्शन हो 12 अतिथि-सेवा, सहधर्मी-सेवा व साधु-साध्वी को निर्दोष आहार देने का भाव हो, 13. घर की गुप्त बात घर से बाहर न जाए, 14. अविश्वासी पुरुष का घर में आना-जाना न हो, 15. रोगी के अतिरिक्त सब सूर्योदय से पूर्व जाग जाएँ व इष्ट-स्मरण करें,

शुद्ध आलोचना से समाधि मरण प्राप्त होता है।
—गुरु सुदर्शन

16. घर के आसपास सज्जनों का वास हो, 17. सामाजिक रीति तथा रिवाज का पालन हो, 18. फिजूलखर्ची न हो, 19. रुढ़ियों को प्रोत्साहन न हो, 20. आहार-शुद्धि हो।

12. सीखो कुछ रामायण से

1. व्यसनों से मुक्ति हो(दशरथ को शिकार का व्यसन, श्रवण मरा), 2. किसी को वचन दो तो सोच समझकर दो (दशरथ ने कैकयी को दो वर दिए) 3. नीच की संगति न कीजिए (कैकयी ने मन्थरा की संगति की) 4. पितृभक्ति (राम वन गए), 5. भ्रातृ प्रेम (भरत का राम से प्रेम) 6. पतिव्रता-धर्म का पालन (सीता की तरह) 7. बलिदान की भावना (सुमित्रा ने लक्ष्मण को वन भेजा) 8. वासना के शिकार न बनें (रावण बना) 9. स्वामि-भक्ति (हनुमान)।

13. ये नहीं, तो वो भी नहीं

1. अपनी भूलों से शिक्षा न पाई, तो भगवान् भी आपका सुधार नहीं कर सकता. 2. बच्चों में धर्म संस्कार न डाले, तो खानदान की इज्जत सुरक्षित नहीं रहेगी, 3. समय पर नहीं खेले, तो कभी नाम नहीं कमाओगे, 4. अपनी आत्मा के दर्शन नहीं किए, तो परमात्मा के दर्शन भी नहीं होंगे, 5. धन के आकर्षण से नहीं निकले, तो धर्म का वास्तविक फल नहीं मिलेगा, 6. अपनी आत्मा पर विश्वास नहीं किया, तो कोई धर्मक्रिया सफल नहीं होगी, 7. अपने अधिकारी बड़ों की आज्ञा नहीं मानोगे तो जनता की निगाहों में गिर जाओगे, (जन्मदाता, विद्यादाता, धर्मदाता संसार में खड़ा करने वाला, ये चार बड़े होते हैं) 8. झूठ को दलीलों से सत्य सिद्ध करना नहीं छोड़ोगे, तो आपकी सत्य बात भी कोई नहीं मानेगा।

14. कामयाबी की चाबी

1. अगर माँ बाप के सामने झुकते रहोगे, तो स्त्री व जवानी जो नशा भरती है वो नशा नहीं भरेगा, 2. गुरुओं के सामने झुकते रहोगे, तो वो

स्वाध्याय से आत्मप्रकाश प्राप्त होता है।
—गुरु सुदर्शन

ताकत मिलती रहेगी, जो हर रुकावट को दूर कर देगी, 3. गुप्त दान देते रहोगे तो आँख मिचौली करने वाली लक्ष्मी, कभी धोखा नहीं देगी, 4. माँ की गोद, विद्यालय, धर्मस्थान व सत्साहित्य सुसंस्कारों के केन्द्र हैं। इनकी कुंजी जिनको मिल गई, वो कभी कंगाल नहीं होंगे, 5. सादा खानपान और पहनावा रखोगे तो दुनिया की वो तीखी नजरें जो कई बार पत्थरों को भी फाड़ देती है, उनसे बचे रहोगे, 6. आहार-विहार में संयम रखोगे तो वे रोग जो कभी-2 पहलवानों को भी हिला देते हैं, पास नहीं आएंगे, 7. अपने दोषों के प्रति जागरूक रहोगे तो वो समय कभी नहीं आएगा, जिस समय अकेले में पश्चात्ताप करना पड़े, 8. मौत आपके सिर पर खड़ी है, यदि ये विश्वासपूर्वक समझ लोगे तो आपसे वो भूले नहीं होगी, जिनकी शुद्धि न हो सके, 9. यदि आप स्वीकृत टेक और मर्यादा व धर्म-सिद्धान्त की रक्षा हेतु अपनी जान की बाजी लगा दोगे, तो कोई वस्तु दुर्लभ नहीं होगी, 10. यदि आपकी इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि आत्मा के अनुशासन में चलती रहेंगी, तो आप कभी किसी के गुलाम नहीं बनोगे, 11. बोली का गुर जिसको मिल गया, वह कभी निरादर नहीं पाएगा।

15. करते रहिए, पाते रहिए

1. गुरुभक्ति करिए, धर्मतत्व स्वतः मिल जाएगा, 2. माता-पिता की निर्मल सेवा कीजिए, लक्ष्मी मिलेगी, 3. सच्चे हृदय से प्रार्थना करिए, प्रसन्नता मिलेगी, 4. किसी दीन की सेवा कीजिए, आनन्दानुभूति होगी, 5. मन में उत्साह बनाए रखिए, सदा जवानी बनी रहेगी, 6. अपना कर्तव्य पूरा करते रहिए, संसार में यश मिलेगा, 7. दान और परोपकार करते रहिए, मरकर भी अमर हो जाओगे, 8. आलोचना करते रहिए, आराधना हो जाएगी।

16. मुश्किल है, पंचम आरे में...

1. अपने छोटे से छोटे दोष भी दूर करने का विवेक आना बड़ा मुश्किल है, 2. अपने गुणों को कम समझकर हजम करने का विवेक आना बड़ा मुश्किल है, 3. अपना स्वार्थ छोड़कर परमार्थ साधने का विवेक आना

> साधु और श्रावक, समाज के दो पैर हैं अतः दोनों की सतत् गति आवश्यक है।
> —गुरु सुदर्शन

बड़ा मुश्किल है, 4. न्याय-मार्ग और धर्ममार्ग पर दृढ़ता व अस्खलित भाव से चलने का विवेक आना बड़ा मुश्किल है, 5. कृतघ्न और विरोधी का भी बुरा न सोचने का विवेक आना बड़ा मुश्किल है, 6. सच्चे हितैषी को परखने का विवेक आना बड़ा मुश्किल है, 7. बाह्य आकर्षणों को छोड़कर धर्म-श्रवण की तल्लीनता का विवेक आना बड़ा मुश्किल है, 8. धर्म-सिद्धान्त को जीवन के प्रत्येक व्यवहार में स्थान देने का विवेक आना बड़ा मुश्किल है, 9. अपने मान सम्मान को भूल कर समाज के कार्यों में धन लगाना व अपनी सूझ-बूझ से सामाजिक कार्यों में प्राण फूंकने का विवेक आना बड़ा मुश्किल है।

17. खुदा को नापसन्द है

1. घमण्ड से चढ़ी हुई आँखें 2. झूठ बोलने वाली जीभ 3. निर्दोष का खून बहाने वाले हाथ 4. अनर्थ की कल्पना करने वाला मन 5. बुराई की ओर ले जाने वाले पैर 6. झूठी गवाही देने वाली जुबान 7. भाई-भाई में फूट डालने वाला इंसान।

18. अमृत-कुण्ड

1. कोमल चित्त, 2. मीठी वाणी, 3. निर्मल दृष्टि, 4. क्षमायुक्त शक्ति, 5. नय प्रमाण से युक्त बुद्धि, 6. दीनता नाशक लक्ष्मी, 7. शील युक्त रूप, 8. अभिमान रहित ज्ञान, 9. उदारता युक्त स्वामित्व।

19. सौ नम्बर का पेपर

1. आपको जल्दी क्रोध तो नहीं आता? 2. आप बहस में जल्दी तो नहीं उतरते? 3. आपको उत्तेजना जल्दी तो नहीं आती? 4. आप एकदम निर्णय तो नहीं लेते? 5. आप दूसरों की भूलों पर हँसते तो नहीं? 6. आपको अपनी आलोचना बुरी तो नहीं लगती? 7. आप काम को बोझ तो नहीं समझते? 8. आपका स्वभाव चिड़चिड़ा तो नहीं? 9. आप दूसरों की सुविधा की उपेक्षा तो नहीं करते? 10. पूर्वोक्त 9 में सत्य बोलने पर 10 नं.।

> जहाँ झगड़े की संभावना हो वहाँ मौन हो जाओ क्योंकि खामोशी से झगड़े का फाटक बंद हो जाता है। —गुरु सुदर्शन

20. सफल कार्यकर्ता के गुण

1. प्रामाणिकता 2. अनासक्ति 3. उदार दृष्टिकोण 4. सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध 5. अहिंसा में विश्वास 6. समय की नियमितता 7. कर्तव्य निष्ठा।

21. कभी मत भूलिए

1. सत्ता एवं अधिकार पाकर न्याय को 2. समय का प्रवाह बह जाने पर भी अपने पर किए उपकार को 3. ऐश्वर्य पाकर धर्म को 4. विवाह के बाद माता-पिता को 5. व्यापार एवं व्यवहार करते समय सत्य को 6. अनुचित कार्य की ओर कदम उठाते समय भगवान को 7. गरीब एवं अभाव-ग्रस्त के लिए सहयोग प्रदान को 8. बीमार होने पर मन, जिह्वा पर नियन्त्रण रखने को 9. क्रोध आने पर अपने आपको।

22. क्या बनो, क्या न बनो

1. समालोचक बनो, निन्दक नहीं 2. खरे बनो, खारे नहीं 3. प्रेमी बनो, पागल नहीं 4. मितव्ययी बनो, कंजूस नहीं 5. क्षमाशील बनो, डरपोक नहीं 6. न्यायी बनो, निर्दयी नहीं 7. सज्जन बनो, दुर्जन नहीं 8. उत्साही बनो, जल्दबाज नहीं 9. चतुर बनो, चालाक नहीं 10. पुरुषार्थी बनो, आलसी नहीं 11. नम्र बनो, चापलूस नहीं 12. दृढ़ बनो, हठी नहीं 13. मानव बनो, दानव नहीं 14. सावधान बनो, बहमी नहीं 15. सरल बनो, मूर्ख नहीं 16. दयालु बनो, क्रूर नहीं 17. धीर बनो, सुस्त नहीं 18. मस्त बनो, लापरवाह नहीं।

23. मूर्ख नर

1. दान में अंतराय करने वाला, 2. धर्म-चर्चा के समय बातें करने वाला, 3. भोजन के समय क्रोध करने वाला, 4. उपकारी का उपकार न मानने वाला, 5. अपनी बड़ाई हाँकने वाला, 6, शक्ति होने पर भी सेवा न करने वाला, 7. बिना कारण लड़ाई करने वाला, 8. सज्जनों का अपमान करने वाला, 9. दान देकर अहंकार करने वाला, 10. शान्त कलह को पुनः

> यदि अपनी शांति चाहते हो तो औरों की शांति कभी भी भंग न करो।
> —गुरु सुदर्शन

उभारने वाला, 11. बिना कारण हँसने वाला, 12. संकरी गली में दौड़ने वाला।

24. दस कल्प वृक्ष

1. रूपवान होकर शीलवान् होना 2. ज्ञानी होकर विनम्र होना 3. अधिकारी होकर न्यायशील होना 4. धनी होकर दानी होना 5. समर्थ होकर क्षमाशील होना 6. गुणवान् पुरुषों का सम्पर्क करना 7. पुण्यानुबंधी पुण्य 8. आदर्श माता-पिता 9. आदर्श शिक्षादाता 10. सम्यग्ज्ञान।

25. सीख, भाई, सीख

1. क्रोध की आग बरसाकर शान्ति की फुलवारी मत जलाइए 2. जल्दबाजी में कोई काम करके जिन्दगी-भर आँसू मत बहाइए 3. समय पर सही सोचकर काम कीजिए। यश और सफलता के मधुर फल से तृप्ति अनुभव कीजिए 4. दुःख को मेहमान समझकर उसका स्वागत कीजिए और प्रतीक्षा कीजिए। सुख का सन्मित्र भी उसके पीछे-पीछे आ रहा है।

26. गुरु-आराधना के गुर

1. श्रद्धापूर्ण हृदय हो 2. सरल, मीठी वाणी हो 3. ज्ञानमय चक्षु हों 4. कष्ट सहने की क्षमता हो 5. स्वार्थ का बलिदान हो 7. वैराग्य की लहर हो 7. अभिमान से दूर हो 8. आज्ञानुसार आचरण हो।

जब गुस्सा आए तो मौन कर लो और चिन्तन करो – गुस्से से मेरा ही नुकसान है।
—गुरु सुदर्शन

गुरु सुदर्शन आरती

(तर्ज़– जय जगदीश हरे)

गुरुदेव सुदर्शन जी, गुरुदेव सुदर्शन जी।
भाव-वन्दना उनकी, है दुख-मोचन जी ॥टेक॥
नाम स्मरण करते ही, मन की कली खिलती (मेरे)
ज्ञान, ध्यान, जप, तप की, प्रेरणा है मिलती ॥1॥
मन की हर चिंता का, समाधान होता (है)
माँ की गोद में बालक, है निर्भय सोता ॥2॥
जन्म स्थान रोहतक था, थे सुन्दरी नन्दन (तुम)
पिता चंदगी के सुत, को शत-शत वन्दन ॥3॥
बाबा जग्गूमल के, पीछे चल-चल कर (हाँ)
पाए मदन लाल जी, पावनतम गुरुवर ॥4॥
जीवन को चमकाया, धर्मोद्योत किया (था)
दुखित-खिन्न जनता को, सच्चा स्नेह दिया ॥5॥
दर्शन, प्रवचन, चिंतन, संयम अनुपम था (हाँ)
करुणा, दया, क्षमा का, पावन संगम था ॥6॥
ली संगरूर में दीक्षा, पाया संयम धन (हाँ)
शालीमार दिल्ली है, पुण्य भूमि पावन ॥7॥
सबके हृदय में बैठे, सबके सहारे हो (तुम)
पावन चरण-शरण से, नाव किनारे हो ॥8॥
अपनी कृपा का हम पर, सदा हाथ रखना (तुम)
दूर न जाने देना, हमें साथ रखना ॥9॥

'गुरुदेव की गरिमा'

सुदर्शन मुनि जी! आपका यश चन्द्रमा की भांति फैलेगा,
तुम्हारी सम्पदा आचार्यों जैसी होगी।

–बहुसूत्री दादगुरुदेव श्री नाथूलाल जी म.

"जितनी शीघ्रता से सुदर्शन जी की पुण्याई उदय में आई है, उतनी जल्दी अन्यत्र कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती।"

–व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव श्री मदनलाल जी म.

"सुदर्शन मुनि के क्या कहने,
ये तो एक दिन आचार्य भी बन सकता है।"

–तपस्वी श्री फकीरचन्द जी म.

"सुष्ठु दर्शनं यस्य सः सुदर्शनः"
अर्थात् जिनके दर्शन मंगलकारी हैं, ऐसे श्री सुदर्शन मुनि हैं।

–आ. श्री आनन्द ऋषि जी म.

"सुदर्शन मुनि का चित्त इतना निर्मल एवम् निश्छल है,
जो न किसी का बुरा सोच सकता है और न बुरा कर सकता है।"

–बाबा श्री जग्गूमल जी म.

"औरों के दीए तो घी और तेल से जलते हैं, पर
श्री सुदर्शनलाल जी म. तो इतने पुण्यवान हैं कि इनके
दीए तो पानी से भी जल जाते हैं।"

–घोर तपस्वी श्री बद्रीप्रसाद जी म.

"भारत-भर के जैन आचार्यों को एक पलड़े में रख लें और दूसरे पलड़े में श्री सुदर्शनलाल जी म. को रखें,
तो भी इनका पलड़ा ही भारी रहेगा।"

–भगवन् श्री रामप्रसाद जी म.